परिक्रमा महामंत्र की

साध्वी सिद्धप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिक्रमा महामंत्र की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिक्रमा महामंत्र की

साध्वी सिद्धप्रभा 'बैंगलोर'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
लाडनूं - ३४१ ३०६ (राज.)

© **जैन विश्व भारती, लाडनूं**

द्वितीय संस्करण : 2013

मूल्य : ₹130.00 मात्र

मुद्रक : श्री वर्द्धमान प्रेस, नवीन शाहादरा, नई दिल्ली

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगल भावना

नमस्कार महामंत्र जैन धर्म में आस्था का केन्द्र रहा है। आज भी कितने-कितने लोग इष्ट महामंत्र का कितना-कितना जप करते हैं। इस महामंत्र के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान करने का प्रयास प्रस्तुत ग्रंथ में किया गया है। लेखिका साध्वीजी और गहरा अध्ययन करें तथा उपयोगितापूर्ण साहित्य का सृजन करती रहें।

सुजानगढ़ **युवाचार्य महाश्रमण**
३० दिसम्बर, २००८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशीर्वचन

साहित्य लेखन की अनेक विधाएं हैं। उसमें एक है संवाद शैली। इस शैली की विशेषता प्रश्नोत्तर के माध्यम से गंभीर बात को सरलता से प्रस्तुत करना है। इसके द्वारा प्रश्न का उत्तर बिना एक क्षण गंवाए पाठक पा लेता है। इस शैली के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी ज्ञान के नए शिखर पर चढ़ने की कोशिश कर सकता है।

साध्वी सिद्धप्रभाजी 'परिक्रमा महामंत्र की' पुस्तक के माध्यम से जैन तत्त्वज्ञान की बारीकियों को सहज सरल भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साध्वी कंचनकुमारीजी 'लाडनूं' की तत्त्वज्ञान में सहज रुचि है। उनके समीप रहकर साध्वी सिद्धप्रभाजी ने उसे अपनी लेखनी का विषय बनाया। प्रसन्नता की बात है। 'परिक्रमा महामंत्र की' पुस्तक जैन धर्म, तत्त्वज्ञान और जैन इतिहास की त्रिपदी की जानकारी के साथ जन-जन के मन में नमस्कार महामंत्र के प्रति आस्था उत्पन्न कर सकी तो इसकी स्वतः सार्थकता है।

सुजानगढ़ **महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
२५ दिसम्बर, २००८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वकथ्य

नमस्कार महामंत्र जैनों का प्राचीन मंत्र है। यह जैनत्व का प्रतीक है। चाहे दिगम्बर हो या श्वेताम्बर सम्पूर्ण जैन समाज में समान रूप से प्रतिष्ठित है। यत्किंचित् जैनेत्तर समाज भी इसका आराधक रहा है। इसमें व्यक्ति विशेष की पूजा को नहीं, गुणों की पूजा को महत्त्व दिया गया है।

नमस्कार मंत्र 'महामंत्र' क्यों ?

नमस्कार महामंत्र चौदह पूर्वों का सार है। विश्व की सम्पूर्ण ज्ञान राशि चौदह पूर्वों में समायी हुई है। इसकी गहराई में जाना, सम्पूर्ण श्रुतसागर की गहराई में जाना है। यह महामंत्र हजारों-हजारों मंत्रों का उद्गम-स्थल हैं। मंत्र में एक शक्ति की आराधना होती है, जबकि महामंत्र स्वयं शक्तियों का पुंज है। शक्ति का अक्षयकोष है। अतः यह मंत्र ही नहीं महामंत्र है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शब्दों में नमस्कार मंत्र के 'महामंत्र' होने के चार हेतु हो सकते हैंह्न

१. यह आत्मा को जागृत करता है।

२. यह मार्गदाता है।

३. यह दुःखमुक्ति का मार्ग है।

४. इससे बुद्धि का ऊर्ध्वारोहण होता है।

नमस्कार महामंत्र कामनापूर्ति अथवा इच्छापूर्ति का मंत्र नहीं है, बल्कि इच्छा व कामना को सम्पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए शक्तिशाली मंत्र है। इससे सुषुप्त शक्तियां जागृत होती हैं। महामंत्र की विधिपूर्वक साधना व आराधना से साधक कर्म की सूक्ष्म से सूक्ष्मतम परतों को हटाता हुआ आत्म स्वभाव में रमण करने लग जाता है, आत्म स्वरूप में अवस्थित हो जाता है।

एक दशक पूर्व में साध्वीश्री कंचनकुमारीजी 'लाडनूं' साथ दक्षिण-यात्रा के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लिये गयी। वहां मैंने नमस्कार महामंत्र के दो पदह्नणमो अरहंताणं व णमो लोए सव्वसाहूणं पर छोटी सी प्रश्नोत्तरी तैयार की, किन्तु उस समय उतना ध्यान नहीं गया। अभी ३ वर्ष पूर्व मैंने साध्वीश्री के पास अपनी भावना व्यक्त की कि मैं नमस्कार महामंत्र पर कुछ लिखना चाहती हूं। साध्वीश्री की सहज स्वीकृति पाकर मैंने प्रस्तुत प्रश्नोत्तरी का प्रारम्भ किया। तदर्थ आगम, महामंत्र से संबंधित अन्य साहित्य और शोध पत्रों का भी अध्ययन किया। अध्ययन के दौरान विशेष रूप से मुझे अभिभूत किया आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति 'एसो पंच णमुक्कारों' ने।

मैंने तो नमस्कार महामंत्र के अथाह सागर में एक बूंद जितनी जानकारी को प्रश्नोत्तर के रूप में संकलित करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लगभग १५७५ प्रश्नोत्तर है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट में महामंत्र की साधना के कुछ प्रयोग और कुछ विशेष जानकारी भी दी गई है। आशा है महामंत्र से सम्बंधित जिज्ञासा रखने वाले जिज्ञासुओं को इससे यत्किंचित् समाधान मिल सकेगा।

युगप्रधान पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, युवामनिषी युवाचार्यश्री महाश्रमणजी और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का मंगल आशीर्वाद, प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रत्येक कार्य की भांति प्रस्तुत कार्य का भी आधार है।

साध्वी कंचनकुमारीजी 'लाडनूं' का कदम-कदम पर मार्गदर्शन और साध्वीश्री मलययशाजी का सहयोग इसमें निमित्तभूत रहा ही, साथ ही गुरुकुलवासिनी साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी व साध्वीश्री श्रुतयशाजी ने भी मुझे मार्गदर्शन दिया। युवारत्न बजरंगजी जैन का प्रोत्साहन और विजयराजजी मरोठी के सुझाव कार्य सम्पूर्ति में सहयोगी रहे है। मैं इन सबके प्रति और प्रत्यक्ष व परोक्ष में जिस किसी का भी सहयोग रहा हो, उन सबके प्रतिह्न

कृतज्ञोऽस्मि! कृतज्ञोऽस्मि!! कृतज्ञोऽस्मि!!!

मेरा यह प्रथम व प्रारंभिक प्रयास है। नमस्कार महामंत्र में आस्था रखने वाला हर श्रद्धालु इसे पढ़े, जिससे श्रद्धा और अधिक बलवती बन सकेगी। ऐसा विश्वास है।

१९ अक्टूबर २००८ **साध्वी सिद्धप्रभा**
किशनगढ़ (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

१. नमस्कार महामंत्र १
२. णमो अरहंताणं ११
३. वर्तमान चौबीसी (वर्तमान चौबीसी चार्ट) ५३
४. णमो सिद्धाणं ८१
५. णमो आयरियाणं ११५
६. णमो उवज्झायाणं १४१
७. णमो लोए सव्वसाहूणं १७७

परिशिष्ट-१

- नमस्कार महामंत्र के विभाग, पद, सम्पदाएं तथा अक्षर प्रमाण। २२७
- नमस्कार मंत्र के वर्ण और तत्त्व २२८
- तीर्थंकर और केवली में अन्तर २२९
- दस आश्चर्य २३२
- मोक्ष को अनेक कोणों से जानने के बिन्दु २३४
- सिद्धात्मा में अतीत और वर्तमान की दृष्टि से भेद की जानकारी के बिन्दु २३५
- चौदह पूर्व का ज्ञान २३७

परिशिष्ट-२

- नमस्कार महामंत्र की कुछ अभ्यास पद्धतियां २३९
- नमस्कार महामंत्र उपासना २४१
- अर्हं की उपासना २४३
- ॐकार उपासना २४५

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- नवपद उपासना २४७
- चैतन्य केन्द्रों पर नमस्कार महामंत्र का ध्यान २४९
- ग्रह दोष शांति उपासना (मंत्र) २५१
- वज्र पंजर कवच २५६
- आत्म सुरक्षा कवच २५८

परिशिष्ट-३

- सहायक ग्रंथों की सूचि २५९

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिचय

साध्वी सिद्धप्रभा 'बैंगलोर'

जन्म : मृगसर शुक्ला ८, वि. सं. २०३१, पाली (राज.)

शिक्षा : एम.ए. अहिंसा शांति शोध (जैन विश्व भारती, लाडनूं)

दीक्षा :

- समणी : वि. सं. २०४७ कार्तिक कृष्णा ८, पाली (राज.)
  गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के कर कमलों द्वारा।
- यात्रा : नेपाल, बिहार, बंगाल, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान।
- श्रमणी दीक्षा : वि. सं. २०५०, कार्तिक कृष्णा सप्तमी
  राजलदेसर (राज.)
  गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के कर कमलों द्वारा
- यात्रा : साध्वी कंचनकुमारीजी 'लाडनूं' के साथह्न
  राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तमिलानाडु, गुजरात, हरियाणा, पंजाब।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमस्कार महामंत्र

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमस्कार महामंत्र

प्रश्न १. जैन धर्म में महामंत्र किसे माना गया है?

उत्तरह्नणमोक्कार मंत्र को।

प्रश्न २. नमस्कार महामंत्र में किसे नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नपंच परमेष्ठी को।

प्रश्न ३. नमस्कार महामंत्र में कौन-कौन आते हैं?

उत्तरह्नअरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु।

प्रश्न ४. नमस्कार महामंत्र का मूल पाठ क्या है?

उत्तरह्नणमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ऐसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

प्रश्न ५. नमस्कार महामंत्र के पद कितने?

उत्तरह्नपांच पद।

प्रश्न ६. नमस्कार महामंत्र में अक्षर कितने?

उत्तरह्न३५।

प्रश्न ७. नमस्कार महामंत्र में किन-किन पदों में कितने-कितने अक्षर हैं?

उत्तरह्ननमस्कार महामंत्र में प्रथम पद मेंह्न७, दूसरे पद मेंह्न५, तीसरे पद मेंह्न७, चौथे पद मेंह्न७, पांचवें पद मेंह्न९ अक्षर है।

प्रश्न ८. नमस्कार महामंत्र में कितने अक्षर लघु एवं कितने गुरु हैं?

उत्तरह्ननमस्कार महामंत्र में ११ लघु और २४ गुरु है।

प्रश्न ९. नमस्कार महामंत्र में ह्रस्व कितने व दीर्घ कितने?

उत्तरह्ननमस्कार महामंत्र में २० ह्रस्व और १५ दीर्घ है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १०. नमस्कार महामंत्र में कितने पूर्वों का ज्ञान समाहित है?

उत्तरह्न चौदह पूर्वों का।

प्रश्न ११. महामंत्र की रचना कब हुई?

उत्तरह्न द्रव्यतः आदि भावतः अनादि।

प्रश्न १२. महामंत्र के दूसरे नाम क्या है?

उत्तरह्न णमोक्कार मंत्र, णमुक्कार मंत्र, नवकार मंत्र, महाश्रुतस्कन्ध आदि।

प्रश्न १३. महामंत्र शाश्वत है या अशाश्वत?

उत्तरह्न द्रव्य, गुण और अर्थ से महामंत्र शाश्वत है।

प्रश्न १४. नवकार मंत्र को महामंत्र क्यों कहा गया?

उत्तरह्न सब मंत्रों में श्रेष्ठ होने के कारण।

प्रश्न १५. नमस्कार महामंत्र से बनने वाला लघु मंत्र कौन-सा है?

उत्तरह्न अ-सि-आ-उ-सा।

प्रश्न १६. नमस्कार महामंत्र की भाषा क्या है?

उत्तरह्न प्राकृत।

प्रश्न १७. नमस्कार महांमत्र में किसे नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्न नमस्कार महामंत्र में किसी व्यक्ति विशेष को नहीं अपितु, जो वीतरागी आत्मा है, या त्यागी आत्मा है उन सभी को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न १८. नमस्कार महामंत्र का अधिष्ठाता देव कौन?

उत्तरह्न कोई नहीं, क्योंकि यह मंत्र सर्वशक्तियों से ऊपर है, सारे देव इसके सेवक हैं।

प्रश्न १९. नमस्कार महामंत्र का जाप स्त्री, पुरुष या नपुंसक कौन से लिंग वाले कर सकते हैं?

उत्तरह्न यह किसी लिंग विशेष से बंधा हुआ नहीं है। सभी लिंग वाले इसकी साधना कर सकते हैं।

प्रश्न २०. माला और अनुपूर्वी में कितने नवकार गिने जाते हैं?

उत्तरह्न माला में १०८ और अनुपूर्वी में १२०।

प्रश्न २१. माला को नवकरवाली क्यों कहा है?

उत्तरह्न हाथों की अंगुलियों के बारह पोर होते हैं। उन पर नौ बार जाप करने से एक माला पूरी होती है अतः माला को नवकरवाली भी कहते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २२. पंच परमेष्ठी के आद्याक्षर से कौन सा बीज मंत्र बनता है?

उत्तरह्नओम् (ॐ)।

प्रश्न २३. नमस्कार महामंत्र का जाप कौन सी दिशा में करना चाहिये?

उत्तरह्नउत्तर या पूर्व दिशा में।

प्रश्न २४. नमस्कार महामंत्र का जाप कौन से आसन में करना चाहिए?

उत्तरह्नजिस आसन में आप स्थिरता से बैठ सके।

प्रश्न २५. नमस्कार महामंत्र के जाप का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

उत्तरह्न१. मानसिक समता का विकास। २. आत्मशक्तियों का जागरण। ३. आध्यात्मिक उज्ज्वलता और ४. निर्विघ्न साधना की पूर्णता।

प्रश्न २६. क्या नमस्कार महामंत्र के जप से भौतिक कामनाएं भी पूर्ण होती है?

उत्तरह्नकामनाएं पूर्ण न हो ऐसी बात नहीं है पर, भौतिक कामनाओं की पूर्ति इसका मूल उद्देश्य नहीं है।

प्रश्न २७. नमस्कार महामंत्र का उल्लेख कौन-कौन से सूत्र में आया है?

उत्तरह्नआवश्यक, भगवती, दशाश्रुतस्कन्ध और चन्द्रप्रज्ञप्ति में।

प्रश्न २८. नमस्कार करने से किसे फायदा होता है?

उत्तरह्नपंच परमेष्ठी को नमस्कार करने वाली आत्मा को ही फायदा होता है, न कि पंच परमेष्ठी को।

प्रश्न २९. पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने से (वंदना करने से) क्या लाभ होता है?

उत्तरह्न१. सकाम निर्जरा होती है। २. नीच गोत्र कर्म का नाश होता है। ३. ऊंच गोत्र कर्म का बंध होता है।

प्रश्न ३०. छह आरे में से किस आरे में पंच परमेष्ठी रहते हैं?

उत्तरह्नअवसर्पिणी काल के ३-४ आरे में पंचपरमेष्ठी और पांचवें आरे में आचार्य, उपाध्याय और साधुह्नये तीन पद रहते हैं। उत्सर्पिणी काल के ३-४ आरे में पांचों परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न ३१. पांच परमेष्ठी में भव करने वाले कितने हैं?

उत्तरह्नसिद्ध भवातीत हैं। अरिहंत उसी भव में मोक्ष जाते हैं, शेष तीन पद वाले भव कर भी सकते हैं और नहीं भी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३२. अरिहंत बड़े या सिद्ध?

उत्तरह्नउपकार की दृष्टि से अरहंत बड़े और गुणों (कर्मक्षय) की दृष्टि से सिद्ध भगवान बड़े हैं।

प्रश्न ३३. महामंत्र में गुण की पूजा होती है या व्यक्ति विशेष की?

उत्तरह्नगुणों की।

प्रश्न ३४. चार गति में से किस गति के जीव नवकार मंत्र बोल सकते हैं?

उत्तरह्नचारों गति के जीव।

प्रश्न ३५. वर्तमान में हम कितने परमेष्ठी के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं?

उत्तरह्नअरिहन्त व सिद्ध को छोड़कर शेष तीनों परमेष्ठी के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं। पंचम काल की दृष्टि से।

प्रश्न ३६. पांच पदों में सबसे अधिक संख्या किसकी है?

उत्तरह्नसिद्धों की, क्योंकि वे अनन्त है।

प्रश्न ३७. गुरु शिष्य को नमस्कार कहां करते हैं?

उत्तरह्न'णमो लोए सव्वसाहूणं' पद में (भाव से)। वैसे गुरु अपने से रत्नाधिक साधु को भी वंदना करते हैं।

प्रश्न ३८. पंच परमेष्ठी (पांच पदों) का जाप क्यों करना चाहिए?

उत्तरह्न१. णमो अरहंताणं-आवरण-मूर्च्छा और अंतराय को क्षीण-उपशान्त करने के लिये। २. णमो सिद्धाणंह्नशाश्वत आनन्द की अनुभूति के लिए। ३. णमो आयरियाणंह्नबौद्धिक चेतना की सक्रियता के लिए। ४. णमो उवज्झायाणंह्नमानसिक-शांति और समस्या समाधान के लिए। ५. णमो लोए सव्वसाहूणंह्नकामवासना को क्षीण-उपशान्त करने के लिए।

प्रश्न ३९. नमस्कार मंत्र को महामंत्र क्यों कहा गया है?

उत्तरह्नयह मंत्र सब मंत्रों में श्रेष्ठ और चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचाने वाला होने के कारण इसे महामंत्र कहा गया है।

प्रश्न ४०. मंत्र सिद्धि के लक्षण क्या है?

उत्तरह्नमंत्र सिद्धि के लक्षणह्न१. आंतरिक शक्ति का विकास २. चित्त की प्रसन्नता ३. ज्योतिदर्शन ४. आनन्द अश्रु ५. प्रकाशमय शरीर ६. पुलकन ७. इच्छाशक्ति का विकास ८. पौद्गलिक पदार्थों की अनुकूलता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ४१. पांच पद में देव पद कितने और गुरु पद कितने?

उत्तरह्नपांच पदों में से अरहंत और सिद्ध ये दो देव और शेष तीन पद गुरु के हैं।

प्रश्न ४२. पंच परमेष्ठी में से स्त्री कितने पद पा सकती हैं?

उत्तरह्नदो। (सिद्ध और साधु)

प्रश्न ४३. पंच परमेष्ठी में नव तत्त्व में से कौन-कौन से तत्त्व होते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध मेंह्नदो। जीव और मोक्ष। शेष चार परमेष्ठी में मोक्ष को छोड़कर आठों ही तत्त्व होते हैं।

प्रश्न ४४. पंच परमेष्ठी में किस-किस में कितना-कितना श्रुतज्ञान होता है?

उत्तरह्नअरहंत व सिद्ध केवलज्ञान सहित होते हैं। अंतिम तीन में जघन्य पांच समिति, तीन, गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन माता का ज्ञान और उत्कृष्ट १४ पूर्व का ज्ञान हो सकता है।

प्रश्न ४५. पंच परमेष्ठी एक साथ अधिक से अधिक कितने और कहां मिलते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध को छोड़कर शेष चार परमेष्ठी महाविदेह क्षेत्र में निरन्तर मिलते हैं।

प्रश्न ४६. पंच परमेष्ठी में सकाम-अकाम मरण कितने करते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध में मरण नहीं। अरहंत सकाम-मरण, शेष तीन सकाम-अकाम दोनों मरण कर सकते हैं। इसमें सबकी मान्यता एक नहीं है।

प्रश्न ४७. पांच परमेष्ठी में प्रत्यक्षज्ञानी कितने?

उत्तरह्नप्रथम दो पदह्नअरहंत और सिद्ध।

प्रश्न ४८. पंच परमेष्ठी कौन सी योनि में उत्पन्न होते हैं?

उत्तरह्नमनुष्य की योनि तीन प्रकार की होती हैह्न१. कूर्मोन्नत २. शंखावर्त्त और ३. वंशी पत्र।

अरहंत-कुर्मोन्नत योनि में। भावी सिद्धह्नकूर्मोन्नत व वंशीपत्र योनि में। शेष तीनह्नवंशीपत्र योनि में उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न ४९. किस वार को कौन से परमेष्ठी का ध्यान करना चाहिये?

उत्तरह्न	**परमेष्ठी**	**वार**
	अर्हन्तों का	ह्नसोमवार, मंगलवार
	सिद्धों का	ह्नबुधवार
	आचार्यों का	ह्नगुरुवार
	उपाध्यायों का	ह्नशुक्रवार
	साधुओं का	ह्नशनिवार, रविवार।[1]

१. श्री मानतुंगाचार्यविरचित नमस्कार मंत्र स्तवनम्, गाथा २२।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ५०. किस तिथि में कौन से परमेष्ठी का ध्यान करना चाहिए?

उत्तरह्न	परमेष्ठी	तिथि
	अर्हन्तों का	ह्ननंदाह्न१,६,११
	सिद्धों का	ह्नभद्राह्न२,७,१२
	आचार्यों का	ह्नजयाह्न३,८,१३
	उपाध्यायों का	ह्नरिक्ताह्न४,९,१४
	साधुओं का	ह्नपूर्णाह्न५,१०,१५।[१]

प्रश्न ५१. नमस्कार महामंत्र के पांच पदों का कौन-कौन से तत्त्व में ध्यान करना चाहिए?

उत्तरह्न	पद	तत्त्व
	अर्हन्तों का	ह्नपृथ्वी तत्त्व में
	सिद्धों का	ह्नआकाश तत्त्व में
	आचार्यों का	ह्नजल तत्त्व में
	उपाध्यायों का	ह्नतैजस तत्त्व में
	साधुओं का	ह्नवायु तत्त्व में।[२]

प्रश्न ५२. पंच परमेष्ठी की कौन-कौन से महीने में आराधना करनी चाहिये?

उत्तरह्न	परमेष्ठी	महिने
	अर्हन्तों की	ह्नकार्तिक और चैत्र में
	सिद्धों की	ह्नवैशाख और मार्गशीर्ष में
	आचार्यों की	ह्नपौष, ज्येष्ठ, भाद्रपद व आश्विन में
	उपाध्यायों की	ह्नमाघ और आषाढ़ में
	साधुओं की	ह्नफाल्गुन व श्रावण मास में।[३]

प्रश्न ५३. नव ग्रहों के संदर्भ में पंच परमेष्ठी का स्मरण किस प्रकार किया जा सकता हैं?

उत्तरह्न	परमेष्ठी	ग्रह
	अर्हन्त	ह्नचन्द्र और शुक्र के रूप में
	सिद्ध	ह्नसूर्य और मंगल के रूप में
	आचार्य	ह्नगुरु और बुध के रूप में
	उपाध्याय	ह्नकेतु के रूप में
	साधु	ह्नशनि और राहु के रूप में।[४]

१. श्री मानतुंगाचार्यविरचित नमस्कार मंत्र स्तवनम्, गाथा २१।
२. श्री मानतुंगाचार्यविरचित नमस्कार मंत्र स्तवनम्, गाथा ७।
३. श्री मानतुंगाचार्यविरचित नमस्कार मंत्र स्तवनम्, गाथा २३,२४।
४. श्री मानतुंगाचार्यविरचित नमस्कार मंत्र स्तवनम्, गाथा १४।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ५४. नमस्कार महामंत्र क्या करता है?

उत्तरह्नसर्व पापों का नाश।

प्रश्न ५५. नमस्कार महामंत्र कौन सा मंगल है?

उत्तरह्नसर्व मंगलों में प्रथम मंगल है। इसे लोकोत्तर मंगल भी कहा जाता है।

प्रश्न ५६. नमस्कार महामंत्र में ऐसा कौन सा पद है जिसमें वेश से या भावों से चारों पदों को आना ही पड़ता है?

उत्तरह्न'णमो लोए सव्वसाहूणं' पद में।

प्रश्न ५७. आचार्य अनेक प्रकार के होते हैं जैसेह्नकलाचार्य, शिल्पाचार्य, विद्याचार्य, गणाचार्य, वाचनाचार्य, धर्माचार्य आदि। नमस्कार महामंत्र में कौन से आचार्य को नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नधर्माचार्य को।

प्रश्न ५८. पंच परमेष्ठी में लेश्यायुक्त कितने पद है?

उत्तरह्नसिद्ध को छोड़ कर, शेष चार।

प्रश्न ५९. नमस्कार मंत्र का सबसे प्राचीन उल्लेख कहां मिलता है?

उत्तरह्नखारवेल के शिलालेख में। प्रथम दो पद्य।

प्रश्न ६०. आगमों के अनुसार नवकार मंत्र का पूरा नाम क्या है?

उत्तरह्नपंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध (नमोकार महामंत्र)।

प्रश्न ६१. नमस्कार मंत्र के एक अक्षर के स्मरण से कितने सागरोपम नरकायुष्य बंध कर्मों का नाश होता है?

उत्तरह्नसात।*

प्रश्न ६२. नमस्कार महामंत्र के एक पद के स्मरण से कितने सागरोपम नरकायुष्य संबंधी कर्मों का नाश होता है?

उत्तरह्नपचास।*

प्रश्न ६३. पूर्ण नमस्कार महामंत्र के स्मरण से कितने सागरोपम नरकायुष्य संबंधी कर्मों का नाश होता है?

उत्तरह्नपांच सौ।*

प्रश्न ६४. नौ लाख नमस्कार महामंत्र के जप से क्या होता है?

उत्तरह्ननरक से मुक्ति।*[१]

१. प्रश्न ६३ से ६६ का उत्तरह्नजैन भारती, मई २००७ का अंक, पृ. २९, आचार्य वादिमसिंह रचित गाथाएं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ६५. नमस्कार महामंत्र के मात्र एक बार स्मरण से कौन सा जीव धरणेन्द्र बना?

उत्तरह्नसर्प का जीव।

प्रश्न ६६. पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने के हेतु क्या है?

उत्तरह्नअर्हत् को नमस्कार करने सेह्नमोक्ष मार्ग का बोध। सिद्ध को नमस्कार करने सेह्नशाश्वत मोक्ष की ओर दृष्टि। आचार्य को नमस्कार करने से आचार की सम्पन्नता। उपाध्याय को नमस्कार करने सेह्नविनय का विकास। साधु को नमस्कार करने सेह्नसंयम जीवन में सहायता।[१]

प्रश्न ६७. नमस्कार की स्थिति कितनी होती है?

उत्तरह्नउपयोग की अपेक्षा से नमस्कार की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त है और लब्धि की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट साधिक छियासठ सागर की होती है।[२]

प्रश्न ६८. नमस्कार की निष्पत्ति क्या है?

उत्तरह्ननमस्कार महामंत्र का जाप करने से इस लोक में अर्थ, काम, आरोग्य, अभिरतिह्नपुण्य की निष्पत्ति और परलोक में सिद्धि, स्वर्ग, सुकुल में जन्म आदि की उपलब्धि होती है।

---

१. आवनि, ९०३।
२. आवनि, ८९४

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो अरहंताणं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो अरहंताणं

प्रश्न १. नमस्कार मंत्र के प्रथम पद में किसे नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नअरहंत भगवान को।

प्रश्न २. अरहंत भगवान को अन्य किन-किन नामों से पुकारा जाता है?

उत्तरह्नसर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वीतराग, जिन, तीर्थंकर, केवली, भगवान, पुरुषोत्तम, अरिहंत, अरहंत, अरूहंत, अरहा, अरिहा आदि।

प्रश्न ३. णमो अरहंताणं के स्थान पर कोई णमो अरूहंताणं या णमो अरिहंताणं का उच्चारण करते हैं, तो इन तीनों का अर्थ क्या है?

उत्तरह्न'अरहंत'ह्नसब कुछ जानने वाले, अपने ही स्वभाव में रमण करने वाले अरहंत कहलाते हैं।

'अरिहंत'ह्नचार घनघाति कर्म शत्रुओं का नश करने वाले अरिहंत कहलाते हैं।

'अरूहंत'ह्नसम्पूर्ण कर्म रूप अंकुर के जल जाने से, क्षय हो जाने से जो संसार में पुनः उत्पन्न नहीं होते, वे अरूहंत कहलाते हैं।

प्रश्न ४. 'णमो अरहंताणं' पद में अक्षर कितने हैं?

उत्तरह्नसात।

प्रश्न ५. णमो अरहंताणं में कितने अक्षर गुरु और कितने अक्षर लघु है?

उत्तरह्नगुरुह्न४ (मो, हं, ता, णं)। लघुह्न३ (ण, अ, र)।

प्रश्न ६. णमो अरहंताणं में कितने अक्षर ह्रस्व और कितने दीर्घ हैं?

उत्तरह्नह्रस्वह्न५ (अ, र, हं, णं)। दीर्घह्न२ (मो. ता)।

प्रश्न ७. तीर्थंकरों की परम्परा कब से हैं?

उत्तरह्नअनादिकाल से।

प्रश्न ८. अरहंत भगवान का जन्म कहां होता है?

उत्तरह्नकर्मभूमि में।

प्रश्न ९. कर्मभूमि किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजहां असि, मसि, कृषि आदि कर्म होता हो, उसे कर्मभूमि कहते हैं।

प्रश्न १०. कर्मभूमि कितनी हैं? नाम बताइये?

उत्तरह्नकर्मभूमि पन्द्रह हैंह्न५ भरत, ५ ऐरवत और ५ महाविदेह।

प्रश्न ११. क्या ऐसा भी कोई क्षेत्र है, जहां तीर्थंकर का जन्म नहीं होता?

उत्तरह्नहां, अकर्मभूमि।

प्रश्न १२. अकर्मभूमि किसे कहते है?

उत्तरह्नजहां असि-मसि-कृषि आदि कर्म नहीं होता। जहां मनुष्य कल्प-वृक्षों से ही अपना जीवन यापन करते हैं, उसे अकर्मभूमि कहते हैं।

प्रश्न १३. अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं जहां न तो अरहंत का जन्म होता है और न ही विचरण होता है?

उत्तरह्नअकर्मभूमि के ८६ क्षेत्र हैंह्न५ हेमवय, ५ हिरण्यवय, ५ हरिवास, ५ सम्यक्वास, ५ उत्तरकुरु, ५ देवकुरु और ५६ अन्तर्द्वीप। यहां अरहंतों का न जन्म होता है और न ही विचरण।

प्रश्न १४. पन्द्रह कर्मभूमि में तीर्थंकरों की संख्या समान होती है क्या?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १५. किस-किस कर्मभूमि में अरहंतों का विराजना शाश्वत है?

उत्तरह्न५ महाविदेह में।

प्रश्न १६. वर्तमान में जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में कौन से तीर्थंकर का विचरण हो रहा है?

उत्तरह्नकिसी का नहीं।

प्रश्न १७. अतीत में इसी भरतक्षेत्र में क्या कोई तीर्थंकर हुये?

उत्तरह्नहां। इस अवसर्पिणी काल में ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर हुये।

प्रश्न १८. भविष्य में इस भरत क्षेत्र में क्या कोई तीर्थंकर होंगे?

उत्तरह्नहां। इस अवसर्पिणी काल में तो नहीं। परन्तु, आने वाले उत्सर्पिणी काल के तीसरे आरे में श्रेणिक का जीव 'महापद्म' नाम से प्रथम तीर्थंकर होंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १९. भविष्य में (उत्सर्पिणीकाल में) होने वाली चौबीसी के नाम बताये?

उत्तरह्न

१. महाप्रद्म	१३. सर्वभावित
२. सूरदेव	१४. निष्कषाय
३. सुपार्श्व	१५. निष्पुलक
४. स्वयंप्रभ	१६. निर्मम
५. सर्वानुभूति	१७. चित्रगुप्त
६. देवश्रुत	१८. समाधि
७. उदय	१९. संवर
८. पेढालपुत्र	२०. अनिवृत्ति
९. पोहिल	२१. विजय
१०. सप्तकिर्ती	२२. विमल
११. मुनिसुव्रत	२३. देवोपपात
१२. अमम	२४. अनन्तविजय।

प्रश्न २०. बीस विहरमाण के नाम बताइये?

उत्तरह्न

१. श्री सीमन्धरस्वामी	११. श्री व्रतधरस्वामी
२. श्री युगमिंदरस्वामी	१२. श्री चन्द्राननस्वामी
३. श्री बाहुस्वामी	१३. श्री चन्द्रबाहुस्वामी
४. श्री सुबाहुस्वामी	१४. श्री भुजंगस्वामी
५. श्री सुजातस्वामी	१५. श्री ईश्वरस्वामी
६. श्री स्वयंप्रभस्वामी	१६. श्री नेमिप्रभस्वामी
७. श्री ऋषभाननस्वामी	१७. श्री वीरसेनस्वामी
८. श्री अनंतवीर्यस्वामी	१८. श्री महाभद्रस्वामी
९. श्री सुरप्रभस्वामी	१९. श्री देवयशस्वामी
१०. श्री विशालप्रभस्वामी	२०. श्री अजितवीर्यस्वामी

प्रश्न २१. बीस विहरमाण अभी किन-किन क्षेत्रों में विराजमान हैं?

उत्तरह्नप्रथम चार जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में।
पांच से आठ पूर्व धातकी खण्ड के महाविदेह में।
नौ से बारह पश्चिम धातकी खण्ड के महाविदेह में।
तेरह से सोलह पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के महाविदेह में।

सतरह से बीस पश्चिम पुष्कारार्ध द्वीप के महाविदेह में।

प्रश्न २२. वर्तमान में ऐरावत क्षेत्र में अरहंत भगवान है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं। क्योंकि भरत क्षेत्र की तरह ही ऐरवत में कालचक्र का परिवर्तन होता है।

प्रश्न २३. वर्तमान में इस मनुष्य लोक में कोई अरहंत विद्यमान है? यदि है तो कहां पर?

उत्तरह्नहां। वर्तमान में मनुष्य लोक में अरहंत विद्यमान हैह्नमहाविदेह क्षेत्र में। यहां सर्वकाल और सर्वसमय में अरहंत विचरण करते हैं। जिन्हें हम बीस विहरमाण के नाम से जानते हैं।

प्रश्न २४. बीस विहरमान महाविदेह क्षेत्र से विचरण करते हुए भरत क्षेत्र में आ सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २५. बीस विहरमाण में हमारे सबसे निकट कौन से अरहंत विराजमान है?

उत्तरह्नश्री सीमन्धर स्वामी।

प्रश्न २६. श्री सीमन्धर स्वामी कौन सी दिशा में विराज रहे हैं?

उत्तरह्नईशाण-कोण में।

प्रश्न २७. बीस विहरमाण तीर्थंकरों का जन्म कब हुआ?

उत्तरह्नवर्तमान चौबीसी के सतरहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथजी के निर्वाण के बाद एक ही समय में बीस विहरमाण का जन्म हुआ।[1]

प्रश्न २८. बीस विहरमाण की दीक्षा कब हुई?

उत्तरह्नवर्तमान चौबीसी के बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथजी के निर्वाण के बाद सबने एक ही समय में दीक्षा ग्रहण की।[2]

प्रश्न २९. बीस विहरमाण का देहमान कितना?

उत्तरह्न५०० धनुष।

प्रश्न ३०. बीस विहरमाण का आयुष्य कितना?

उत्तरह्न८४ लाख वर्ष पूर्व का।

प्रश्न ३१. बीस विहरमाण सिद्धावस्था को कब प्राप्त होंगे?

उत्तरह्नजम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की आगामी चौबीसी के सातवें तीर्थंकर श्री

१. वीतराग-वंदना, पृ. ११४
२. वीतराग-वंदना, पृ. ११४

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उदयानाथजी का निर्वाण होने के बाद एक ही समय में मोक्ष पधारेंगें।[1]

प्रश्न ३२. बीस विहरमाण की शिष्य सम्पदा कितनी?

उत्तरह्नप्रत्येक तीर्थंकर के ८४-८४ गणधर, १०-१० लाख केवलज्ञानी और एक-एक अरब साधु-साध्वियां।

प्रश्न ३३. अरहंतों का कितने द्वीप में विचरण होता है?

उत्तरह्नअढ़ाई द्वीप मेंह्नजम्बूद्वीप, धातकी खण्ड और अर्धपुष्कर। अढ़ाई द्वीप को मनुष्यलोक या मध्यलोक भी कहते हैं।

प्रश्न ३४. मनुष्यलोक में एक समय में एक साथ अधिक से अधिक कितने तीर्थंकर हो सकते हैं?

उत्तरह्न१७० (एक सौ सत्तर)।

प्रश्न ३५. १७० तीर्थंकर एक साथ कब विचरे थे?

उत्तरह्नदूसरे तीर्थंकर अजीतनाथजी के समय में।

प्रश्न ३६. कम से कम कितने तीर्थंकर हो सकते हैं?

उत्तरह्न२० (बीस)।

प्रश्न ३७. अरहंत तीन लोक में से कितने लोक में होते हैं?

उत्तरह्नदो लोक मेंह्नमध्य लोक व अधो लोक (सलिलावती विजय की अपेक्षा)।

प्रश्न ३८. तीर्थंकरत्व उपार्जन के समय भव्य आत्मा किस स्थिति में होता है?

उत्तरह्नतीर्थंकरत्व उपार्जन के समय सम्यक्त्व, साधुत्व या श्रावकत्व इन तीन में से कोई एक हो तब ही उन्हें तीर्थंकरत्व संभव हो सकता है।

प्रश्न ३९. तीर्थंकर नाम कर्म का बंध कौन से शरीर से होता है?

उत्तरह्नऔदारिक शरीर से।

प्रश्न ४०. अरहंत-पद प्राप्ति के कितने उपाय हैं?

उत्तरह्न२० (बीस)।

प्रश्न ४१. अरहंत पद प्राप्ति के २० उपाय कौन से हैं?

उत्तरह्नज्ञाता सूत्र के अनुसार २० उपाय निम्नलिखित हैंह्न१. अरिहंत वात्सल्य २. सिद्ध वात्सल्य ३. प्रवचन वात्सल्य ४. गुरु वात्सल्य ५. स्थविर वात्सल्य ६. बहुश्रुत वात्सल्य ७. तपस्वी वात्सल्य ८. अभीक्ष्ण

१. वीतराग-वंदना, पृ. ११४

ज्ञानोपयोग ९. दर्शन १०. विनय ११. आवश्यक १२. निरतिचार १३. क्षणलव-ध्यान १४. तप १५. त्याग १६. वैयावृत्त्य १७. समाधि १८. अपूर्व ज्ञानग्रहण १९. श्रुत-भक्ति २०. प्रवचन प्रभावना।

प्रश्न ४२. तीर्थंकरत्व प्राप्ति के २० उपायों की आराधना श्रावक कर सकता है?

उत्तरह्नहां। श्रावक ही क्यों? चौथे गुणस्थानवर्ती अविरत सम्यक्दृष्टि श्रावक भी २० उपायों में से काफी उपायों की आराधना कर तीर्थंकर नाम कर्म का बंध कर लेता है।

प्रश्न ४३. भावी तीर्थंकर का जीव ५६३ भेदों में से कितने भेदों में आता है?

उत्तरह्न३८ भेदों में से।

१२ देवलोक + ९ लोकान्तिक + ९ ग्रेवैयक + ५ अनुत्तर विमान + ३ नरक (प्रथम)। ३८ के पर्याप्ता।

प्रश्न ४४. भावी तीर्थंकर का आगमन किस गति से होता है?

उत्तरह्नदेवगति और नरकगति से।

प्रश्न ४५. अरहंत के आगमन को क्या कहते हैं?

उत्तरह्नदेवलोक से आगमन को च्यवन और नरक से आगमन को उद्वर्तन कहते हैं।

प्रश्न ४६. होनहार तीर्थंकर के गर्भ कल्याणक के कितने माह पूर्व ही विशेष प्रभाव दिखने लग जाता है?

उत्तरह्नछह माह पूर्व।

प्रश्न ४७. क्या तिर्यंच गति में तीर्थंकर नाम कर्म की सत्ता रहती है?

उत्तरह्ननिकाचित तीर्थंकर नाम कर्म की अपेक्षा तिर्यंच गति में तीर्थंकर नाम कर्म बंध की सत्ता नहीं रहती।

प्रश्न ४८. निकाचित और अनिकाचित तीर्थंकर नाम कर्म का बंध किस गति में होता है?

उत्तरह्ननिकाचित तीर्थंकर नाम कर्म का बंध-मनुष्य गति में और अनिकाचित का सामान्यतः नरक और देवगति में।

प्रश्न ४९. भावी तीर्थंकर का जीव तीर्थंकरत्व निकाचन के पूर्व यदि नरक गति का आयुष्य बांध लिया हो तो भव पूर्णकर कहां जाता है?

उत्तरह्ननरक गति में और तीसरी नरक तक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ५०. नरक में अन्य नैरयिकों की अपेक्षा भावी अरहंत को पीड़ा कम होती है या ज्यादा?

उत्तरह्नकम।

प्रश्न ५१. तीर्थंकर नाम-कर्म का पुण्य उपार्जित कर आयुष्य बांधा हो तो वह जीव आयुष्य पूरा कर कहां जायेगा?

उत्तरह्नवैमानिक देवलोक में।

प्रश्न ५२. च्यवन से पूर्व भावी अरहंत व अन्य देवों की स्थिति समान होती है?

उत्तरह्ननहीं। अन्य देव मनुष्य लोक में आने के भय से भयभीत होकर छह मास पूर्व ही फूल की भांति मुर्झा जाते हैं, म्लान हो जाते हैं, परन्तु भावी अरहंत अंतिम समय तक कान्तिमय और प्रसन्न रहते हैं।

प्रश्न ५३. तीर्थंकर नाम कर्म की स्थिति कितनी?

उत्तरह्नअनिकाचित तीर्थंकर नाम कर्म की उत्कृष्ट स्थिति अंतः कोटाकोटि सागर-प्रमाण और निकाचित तीर्थंकर नाम-कर्म की अंतः कोटाकोटि सागर के संख्यातवें भाग से लेकर कुछ कम दो पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर है।

प्रश्न ५४. तीर्थंकर गोत्र का बंध कौन से गुणस्थान में होता हैं?

उत्तरह्नचौथे गुणस्थान से आठवें गुणस्थान तक होता है। आठवें गुणस्थान के समय के सात भाग ($^{१}/_{७}$) किये जाए तो पहले भाग में बंधता है शेष भाग में नहीं।

प्रश्न ५५. तीर्थंकर नाम कर्म बंधक जीवों की संख्या अधिक है या मनुष्यों की?

उत्तरह्नतीर्थंकर नाम कर्म बंधक जीवों की।[१]

प्रश्न ५६. शुभ नामकर्म की ४२ प्रकृतियों में से कौन सी प्रकृति सर्वोत्तम है?

१. **तीर्थंकर नाम कर्म बंधक जीव कुछ नरक में और अधिकांश देवलोक में होते हैं। मनुष्य भव में तीर्थंकर नाम कर्म का बंध कर देवलोक जाने वाले जघन्य पल्योपम और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम प्रमाण आयुष्य वाले देव होते हैं। एक पल्योपम भी असंख्य पूर्वों का होता है। कोई भी तीर्थंकर उत्कृष्ट एक लाख पूर्व तक ही विचर सकते हैं। यदि एक तीर्थंकर एक लाख पूर्व तक विचरे और उनके बाद दूसरे हो और वे सब एक सागरोपम की स्थिति के देवों में से ही आते रहे, तो वहां देवलोक में तीर्थंकर नाम कर्म बंधक देव कितने होने चाहिए? कम से कम बीस तो सदा रहते ही है। ऐसी स्थिति में तीर्थंकर नाम कर्म बंधक जीव भी अभी देवलोक में इतने मौजूद है जितने गर्भज मनुष्य भी अभी इस लोक में नहीं है।**

उत्तरह्नतीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति।

प्रश्न ५७. अन्य जीवों की अपेक्षा सम्यक्त्व प्राप्ति से पूर्व अरहंत की अवस्था कैसी होती है?

उत्तरह्नउत्तम से उत्तम। जैसेह्नपृथ्वीकाय में चिन्तामणि रत्न के रूप में, अप्काय में तीर्थजल के रूप में, तेजस् काय में मंगलदीप के रूप में, वायुकाय में वसन्तकालीन पवन के रूप में, वनस्पतिकाय में कल्पवृक्ष व आम्रवृक्ष के रूप में, द्वीन्द्रिय में दक्षिणावर्त्त शंख के रूप में, तिर्यंञ्च पंचेन्द्रिय में उत्तम हस्ति या अश्व के रूप में होते हैं।

प्रश्न ५८. अरहंत प्रत्यक्ष होते हैं या परोक्ष?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न ५९. अरहंत के कल्याणक कितने होते हैं?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न ६०. पंच कल्याण कौन-कौन से?

उत्तरह्न१. च्यवन २. जन्म ३. दीक्षा ४. केवलज्ञान और ५. निर्वाण।

प्रश्न ६१. च्यवन किसे कहते हैं?

उत्तरह्नतीर्थंकर के गर्भागमन का दूसरा नाम च्यवन है।

प्रश्न ६२. अरहंत भगवान के तीर्थंकर नाम कर्म का प्रदेशोदय कब से प्रारंभ होता है?

उत्तरह्नच्यवन कल्याणक से।

प्रश्न ६३. अरहंत च्यवन के समय प्राकृतिक विशेषताएं क्या होती हैं?

उत्तरह्नज्ञातासूत्र के अनुसारह्न'पक्षी विजयसूचक शब्द बोलते है। सुरभियुक्त शीतल मंद पवन भी प्रदक्षिणावर्त होकर बहता हुआ भूमि का स्पर्श करता है। सम्पूर्ण पृथ्वी शस्य से आच्छादित एवं हरी-भरी रहती है। जनपद पुलकित होता है।

प्रश्न ६४. अरहंत भगवान के च्यवन नक्षत्र की क्या विशेषता है?

उत्तरह्नअरहंत का जिस नक्षत्र में च्यवन होता है। उसी नक्षत्र में जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक होता है।

प्रश्न ६५. भावी अरहंत का कितने ज्ञान के साथ गर्भागमन होता है?

उत्तरह्नतीन ज्ञान के साथह्न१. मतिज्ञान २. श्रुतज्ञान और ३. अवधिज्ञान।

प्रश्न ६६. तीर्थंकर की माता की गर्भ स्थिति कैसी होती है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नप्रच्छन्न। गर्भ में जर, रुधिर आदि अशुद्धियां नहीं होती।[1]

प्रश्न ६७. क्या गर्भ से तीर्थंकर की पहचान होती है?

उत्तरह्नहां। जिस समय तीर्थंकर का गर्भागमन होता है उस समय इन्द्रासन चलायमान होता है। तीनों लोक में सुखानुभूति होती है और माता चौदह शुभ स्वप्न देखती है।

प्रश्न ६८. चौदह शुभ स्वप्न कौन से हैं?

उत्तरह्न१. ऐरावत हाथी २. वृषभ ३. शार्दूलसिंह ४. लक्ष्मी देवी ५. पुष्पमाला ६. चन्द्रमा ७. सूर्य ८. इन्द्रध्वज ९. पूर्ण कलश १०. पद्म सरोवर ११. क्षीर समुद्र १२. देव विमान १३. रत्न राशि १४. निर्धूम अग्नि।

प्रश्न ६९. भावी अरहंत की मां के अतिरिक्त चौदह महास्वप्न और कौन देखती है?

उत्तरह्नचक्रवर्ती सम्राट् की मां।

प्रश्न ७०. भावी अरहंत का देवलोक या नरक से आगमन में चौदह स्वप्नों में कुछ अन्तर आता है क्या?

उत्तरह्नहां। जब भावी तीर्थंकर का नरक से आगमन होता है तो उनकी माता देव विमान के स्थान पर 'भवन' का शुभ स्वप्न देखती है।

प्रश्न ७१. अरहंत के पंच कल्याणक कितनी गति के जीव मनाते हैं?

उत्तरह्नदो गति केह्नदेव और मनुष्य।

प्रश्न ७२. तीर्थंकर का जन्म कब होता है?

उत्तरह्नतीर्थंकर का जन्म जब सर्व-ग्रह उच्चस्थिति में हो, बलवान् हो, शुभ निमित्त प्राप्त हुये हो, शुभ जन्य योग में आये हो, शुभ लग्न का नवांश हो तब अर्धरात्रि में अरहंत का जन्म होता है।

प्रश्न ७३. तीर्थंकर की माता तीर्थंकर को जन्म देने के बाद अन्य पुत्र को जन्म देती है या नहीं?

उत्तरह्नदे सकती है। १९वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी का मल्लकुमार नाम का छोटा भाई था। २२वें तीर्थंकर नेमिनाथजी का रथनेमी छोटा भाई था।

प्रश्न ७४. अरहंत का जन्म कौन से वंश में होता है?

उत्तरह्नअरहंत का जन्मह्नउग्रकुल, भोगकुल, राजकुल, इक्ष्वाकुकुल, क्षत्रियकुल हरिवंशकुल तथा इसी प्रकार के अन्य उत्तमकुल वाले वंशों में होता है।

१. आवचू १ पृ. १३५।

प्रश्न ७५. क्या रात्रि में कभी अंधकार दूर होता है?

उत्तरह्नहां। अरहंत के जन्म के समय रात्रि का अंधकार कुछ समय के लिए दूर हो जाता है। सदा से अंधकारमय रहने वाला क्षेत्र नरक में भी कुछ समय के लिए प्रकाश हो जाता है।

प्रश्न ७६. अरहंत के जन्म से किन जीवों को सुखानुभूति होती है?

उत्तरह्नअरहंत के जन्म से नैरयिक, मनुष्य, जलचर, स्थलचर, खेचरादि प्राणियों को स्वर्गवासी देवों की तरह अपूर्व सुख की प्राप्ति होती है।

प्रश्न ७७. अरहंत के जन्म के समय किनका आसन चलायमान होता है?

उत्तरह्नप्रथम देवलोक के इन्द्र 'शक्रेन्द्र' का।

प्रश्न ७८. अरहंत के जन्म के समय प्रसूति का काम कौन करती है?

उत्तरह्नदेवलोक की ५६ दिग्कुमारियां।

प्रश्न ७९. ५६ दिशाकुमारियों का क्या काम होता है?

उत्तरह्न दिशा	कार्य
अधोदिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	अशुचि निवारण।
ऊर्ध्वदिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	गंधोदक वृष्टि।
पूर्व दिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	दीपों से प्रकाश वर्षा।
पश्चिम दिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	वीजन-पंखों से हवा।
उत्तरदिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	चामर डुलाकर गीत गाना।
दक्षिणा दिशा से आने वाली आठ कुमारियों द्वाराह्न	जल भरे कलश धारण करना।
विदिशा से आने वाली चार कुमारियों द्वाराह्न	दीपक हाथ में लेकर गीत गाना।
विदिशा से आने वाली चार कुमारियों द्वाराह्न	नाला काटने का कार्य सम्पादित करना।

प्रश्न ८०. अरहंत का जन्मोत्सव कौन मनाते हैं?

उत्तरह्नदेवलोक के ६४ इन्द्र।

प्रश्न ८१. अरहंत का जन्मोत्सव कहां मनाते हैं?

उत्तरह्नमेरू पर्वत पर पाण्डुकवन में।

प्रश्न ८२. पाण्डुकवन में अभिषेक शीला कैसी होती है?

उत्तरह्नअर्धचन्द्राकार। पांच सौ योजन लम्बी, चार योजन मोटी, मध्य में २५० योजन चौड़ी व मोटी होती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ८३. जन्मोत्सव मनाने के लिए अरहंत के शरीर को मेरू पर्वत पर कौन ले जाता है ?

उत्तरह्नशक्रेन्द्र। शक्रेन्द्र स्वयं के विकुर्वित (परिकल्पित) पांच रूप से प्रभु को ले जाते हैं। एक रूप से प्रभु को अपने करतल में ग्रहण करते हैं। एक से पीछे रहकर छत्र धारण करते हैं। दो रूप से दोनों और चंवर बींजते हैं और एक से हाथ में वज्र धारण कर तीर्थंकर भगवान के आगे चलते हैं।

प्रश्न ८४. क्या ६४ के ६४ इन्द्र मेरू पर्वत पर भगवान को ले जाने के लिए उनके जन्म स्थान पर आते हैं ?

उत्तरह्ननहीं। एक शक्रेन्द्र जन्म स्थान पर आते हैं और शेष ६३ इन्द्र सीधे मेरू पर्वत पर ही जन्माभिषेक के लिए पहुंचते हैं।

प्रश्न ८५. तीर्थंकर इस जन्म में कितनी उत्तम पदवियों को प्राप्त कर सकते हैं ?

उत्तरह्नकम से कम चारह्नसम्यक्त्वी, साधु, केवली और तीर्थंकर। अधिक से अधिक ६ह्नउपरोक्त के अतिरिक्त चक्रवर्ती और माण्डलिक राजा।

प्रश्न ८६. लोक में उद्योत कब होता हैं ?

उत्तरह्नठाणं सूत्र के अनुसार लोक में उद्योत होने के चार कारण हैंह्नअरहंत भगवान के चार कल्याणकह्नजन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण।

प्रश्न ८७. भावी अरहंत का पालन-पोषण किसके द्वारा होता हैं ?

उत्तरह्नपांच धायमाताओं द्वाराह्न१. क्षीरदात्रीह्नदुग्ध पान कराने वाली। २. मज्जन-धात्रीह्नस्नानादि कराने वाली। ३. मंडनधात्रीह्नशृंगार कराने वाली। ४. खेलन-धात्रीह्नक्रीड़ा करानेवाली। ५. अंगधात्रीह्नगोदी में उठाकर फिरनेवाली।

प्रश्न ८८. क्या भावी तीर्थंकर मां का स्तनपान करते हैं ?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ८९. तीर्थंकर की रूप सम्पदा कैसी होती है ?

उत्तरह्नउत्कृष्ट।

प्रश्न ९०. तीर्थंकर के गृहस्थावस्था में कौन सा गुणास्थान होता है ?

उत्तरह्नचौथा गुणस्थान।

प्रश्न ९१. क्या तीर्थंकरों का विवाह होता है ?

उत्तरह्नहां, जिन भावी तीर्थंकरों के भोगावली कर्म शेष रहते हैं, उनका विवाह होता है।

प्रश्न ९२. तीर्थंकर को दीक्षा के लिए कौन निवेदन करते हैं ?

उत्तरह्नलोकान्तिक देव।

प्रश्न ९३. अरहंत दीक्षा से पूर्व क्या करते हैं ?

उत्तरह्नवर्षीदान।

प्रश्न ९४. भावी अरहंत में वर्षीदान की भावना कब जागृत होती है ?

उत्तरह्नदीक्षा से एक वर्ष पूर्व।

प्रश्न ९५. वर्षीदान प्रतिदिन कितने समय तक दिया जाता है ?

उत्तरह्नप्रातःकाल एक प्रहर तक।

प्रश्न ९६. भावी अरहंत एक वर्ष में कितना दान देते हैं ?

उत्तरह्नप्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्राओं के हिसाब से एक वर्ष में ३ अरब, ८८ करोड़ ८० लाख स्वर्णमुद्राओं का दान करते हैं ?

प्रश्न ९७. भगवान द्वारा वर्षीदान करते समय कौन-कौन से देव सहयोगी बनते हैं ?

उत्तरह्न● सौधर्मेन्द्रह्नभगवान के हाथ में धन-राशि देता है।

● शक्रेन्द्रह्नयदि देवता बीच में दान लेने आ जाये तो उन्हें रोकने की व्यवस्था करता है।

● चमरेन्द्रह्नकिसी के हाथ में कम-ज्यादा न जाए, अतः समान वितरण की व्यवस्था देखता है।

● भवनपतिदेवह्नदूर के लोगों को विमान में बिठाकर लाते हैं।

● व्यन्तर देवह्नउन्हें वापस पहुंचाने की व्यवस्था करते हैं।

● ज्योतिष देवह्नविद्याधरों को दूर-दूर तक जाकर सूचना पहुंचाने का कार्य करते हैं।

नोट :ह्नशक्रेन्द्र के आदेश से कुबेर इस व्यवस्था को संभालता है। कुबेर जृंभक देवों द्वारा खोया, दबा, विस्मृत धन मंगवाता है।

प्रश्न ९८. वर्षीदान कौन जीव ग्रहण नहीं कर सकता ?

उत्तरह्नअभव्य जीव।

प्रश्न ९९. वर्षीदान क्यों देते हैं ?

उत्तरह्नशुभ नाम कर्म को भोगने के लिए।

प्रश्न १००. वर्षीदान में दी जाने वाली धन-धान्य की वृद्धि कौन करता है ?

उत्तरह्नजृम्भिकदेव।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १०१. अरहंत दीक्षा के लिए प्रस्थान करते समय उनकी शिविका कौन उठाते हैं?

उत्तरह्नमनुष्य और देवता।

प्रश्न १०२. अरहंत किनके पास दीक्षा लेते हैं?

उत्तरह्नस्वयं ही।

प्रश्न १०३. अरहंत दीक्षा लेते समय किन्हें नमस्कार करते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध भगवान को।

प्रश्न १०४. भावी अरहंत दीक्षा के समय केवल सिद्धों को ही नमस्कार करते हैं?

उत्तरह्नअरहंत कभी किसी के मार्ग का अनुसरण नहीं करते। वे स्वयं मार्ग की खोज करते हैं। उनके सामने कोई अर्हत् मार्ग-दर्शक नहीं होते। अतः सिद्धों को नमस्कार करके ही वे अपने मार्ग पर बढ़ते हैं।

प्रश्न १०५. अरहंत का लुंचन कौन करता है?

उत्तरह्नकोई नहीं। स्वयं ही अपना मुष्टि लुंचन करते हैं।

प्रश्न १०६. अरहंत कितनी मुष्टि लुंचन करते हैं?

उत्तरह्नपंचमुष्टि।

प्रश्न १०७. अरहंत का लुंचन कौन और किसमें ग्रहण करते है?

उत्तरह्नदेवराज शक्रेन्द्र वज्रमय थाल में।

प्रश्न १०८. देवता उन केशों को कहां प्रवाहित करते हैं?

उत्तरह्नक्षीरोदधि (क्षीर समुद्र) में।[1]

प्रश्न १०९. दीक्षा के समय अरहंत के कंधे पर इन्द्र क्या रखते हैं?

उत्तरह्नदेवदुष्य वस्त्र।

प्रश्न ११०. अरहंत दीक्षा के समय 'भन्ते' शब्द का प्रयोग करते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १११. अरहंत को 'सावज्जं जोग पच्छक्खामि' के साथ कौन सा चारित्र आता है?

उत्तरह्नसामायिक चारित्र।

प्रश्न ११२. दीक्षा लेते ही भावी अरहंत को कौनसा ज्ञान होता है?

उत्तरह्नमनःपर्यवज्ञान।

१. श्री भिक्षु आगम विषय कोष और अरहंत पुस्तक (शोध पत्र)।

प्रश्न ११३. भावी अरहंत दीक्षा देते हैं?

उत्तरह्नभगवान के साथ में दीक्षा ले ली हो तो ठीक, वरना छद्मस्थ अवस्था में किसी को दीक्षित नहीं करते।

प्रश्न ११४. क्या अरहंत छद्मस्थकाल में उपदेश देते है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ११५. भावी तीर्थंकर केवल ज्ञान प्राप्ति से पूर्व प्रवचन तो नहीं करते। परन्तु पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं?

उत्तरह्नहां, दे सकते हैं।

प्रश्न ११६. इन्द्र किसके द्वारा तीर्थंकर की स्तुति करता है?

उत्तरह्नइन्द्र 'शक्रत्थुई' अर्थात् शक्र स्तुति (नमोत्थुणं) के द्वारा।

प्रश्न ११७. अरहंत के शारीरिक अनुत्तर क्या-क्या होते हैं?

उत्तरह्नसंहनन, रूप, संस्थान, वर्ण, गति, सत्त्व, सार और उच्छ्वास आदि।

प्रश्न ११८. अरहंत का सौन्दर्य कैसा होता है?

उत्तरह्नवैराग्यवर्धक।

प्रश्न ११९. अरहंत का अधिक से अधिक आयुष्य कितना?

उत्तरह्न८४ लाख पूर्व का।

प्रश्न १२०. अरहंत का कम से कम आयुष्य कितना?

उत्तरह्न७२ वर्ष।

प्रश्न १२१. क्या तीर्थंकर और सामान्य केवली का आयुष्य समान होता है?

उत्तरह्ननहीं। सामान्य केवली का आयुष्य जघन्य ९ वर्ष और उत्कृष्ट देशोनक्रोड़ पूर्व का।

प्रश्न १२१. पन्द्रह कर्मभूमि में विचरने वाले सभी अरहंतों का आयुष्य समान होता है? या कम-ज्यादा?

उत्तरह्नमहाविदेह में विचरने वाले सभी अरहंतों का आयुष्य ८४ लाख पूर्व का होता है। भरत व ऐरावत क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य ७२ वर्ष और उत्कृष्ट ८४ लाख पूर्व का होता है।

प्रश्न १२३. अरिहंत बनने के लिये कितने कर्मों का नाश करना पड़ता है?

उत्तरह्नचार घाति कर्मों काह्न

१. ज्ञानावरणीय
२. दर्शनावरणीय
३. मोहनीय
४. अंतराय।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १२४. घाति कर्मों के क्षय होने से कौन से गुण प्रकट होते हैं?

उत्तरह्न१. ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होने सेह्नकेवलज्ञान।
२. दर्शनावरणीय कर्म का क्षय होने सेह्नकेवलदर्शन।
३. मोहनीय कर्म का क्षय होने सेह्नअनन्त चारित्र।
४. अंतराय कर्म का क्षय होने सेह्नअनन्त वीर्य।

प्रश्न १२५. अरहंत के चार घाति कर्मों में सर्वप्रथम कौन सा कर्म क्षय होता है?

उत्तरह्नमोहनीय कर्म। उसके बाद अंतर्मुहूर्त्त में ही शेष तीन घाति कर्म एक साथ क्षय हो जाते हैं।

प्रश्न १२६. भावी तीर्थंकर केवलज्ञान होने से क्या जानते-देखते हैं?

उत्तरह्नचारों गति व अजीव की सर्व पर्यायों को जानते-देखते हैं।

प्रश्न १२७. भावी अरहंत की साधना कैसी होती हैं?

उत्तरह्नस्वावलम्बी। वे देव-दानव-मानव का कभी सहारा नहीं लेते। सामने से आये सहारे को भी स्वेच्छा से स्वीकृत नहीं करते। न ही सहारे की अपेक्षा रखते।

प्रश्न १२८. अरहंत की आहारचर्या कैसी होती है?

उत्तरह्नअरहंत आवश्यकता से अधिक आहार नहीं लेते। प्रायः ऊनोदरी तप करते हैं।

प्रश्न १२९. अरहंत के छद्मस्थ काल में कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्न२२ परीषह।

प्रश्न १३०. अरहंत कौन से आसन में ध्यान करते हैं?

उत्तरह्नपद्मासन, पर्यंकासन, वीरासन, गोदोहिकासन, उत्कटुकासन आदि।

प्रश्न १३१. अरहंत की विहार चर्या कैसी होती है?

उत्तरह्नसमिति-गुप्ति युक्त।

प्रश्न १३२. अरहंत की शारीरिक शक्ति कितनी होती है?

उत्तरह्नअरहंत अनन्तबली होते हैं।

प्रश्न १३३. भावी तीर्थंकर का केवलज्ञान कैसा होता है?

उत्तरह्नस्व और पर को प्रकाश करने वाला।

प्रश्न १३४. क्या तीर्थंकर केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद नियमतः उपदेश देते हैं?

उत्तरह्नहां।[1]

१. उचू पृ. १३०।

प्रश्न १३५. केवली के दस अनुत्तर कौन-से?

उत्तरह्नस्थानांग सूत्र के अनुसार केवली के दश अनुत्तर निम्नलिखित हैंह्न

१. अनुत्तर ज्ञान	६. अनुत्तर वीर्य
२. अनुत्तर दर्शन	७. अनुत्तर क्षमा
३. अनुत्तर चारित्र	८. अनुत्तर निर्लोभता
४. अनुत्तर तप	९. अनुत्तर सरलता
५. अनुत्तर मार्दव	१०. लाघव।

प्रश्न १३६. अरहंत के केवलज्ञान की प्रभा कितने क्षेत्र में फैलती हैं?

उत्तरह्न१४ रज्जू प्रमाण वाले क्षेत्र में।

प्रश्न १३७. भावी अरहंत केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद तीर्थंकर कब कहलाते हैं?

उत्तरह्नतीर्थ चतुष्टय की स्थापना करने के बाद।

प्रश्न १३८. अरहंत कौन से तीर्थ की स्थापना करते हैं? जंगम या स्थावर?

उत्तरह्नजंगम।

प्रश्न १३९. तीर्थ चतुष्टय में कौन आते हैं?

उत्तरह्नसाधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका।

प्रश्न १४०. चार तीर्थ की स्थापना कहां होती है?

उत्तरह्नसमवसरण में।

प्रश्न १४१. समवसरण किसे कहते हैं?

उत्तरह्नतीर्थंकर भगवान के प्रवचन-स्थल को।

प्रश्न १४२. समवसरण की रचना कौन करता है?

उत्तरह्नदेवलोक के देव।

प्रश्न १४३. समवसरण की रचना भूमि पर होती हैं या ऊंचाई पर?

उत्तरह्नजमीन से ऊंचाई पर।

प्रश्न १४४. तीर्थंकरों का केवलज्ञान कितने द्वारों से वर्णित होता है?

उत्तरह्ननव द्वारों सेह्न१. समवसरण विधि द्वार २. सामायिक प्ररूपणा द्वार ३. रूप वर्णन द्वार ४. पृच्छा (संशय-निवारण) द्वार ५. व्याकरण द्वार ६. श्रोतृ परिणाम द्वार ७. वृत्ति दान (प्रीति दान) ८. देव माल्य द्वार ९. माल्यानयन द्वारा (तीर्थंकर की देशना के पश्चात् गणधर देशना द्वार।[1]

१. आवनि ५४३।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १४५. समवसरण कितने प्रदेश में होता है?

उत्तरह्नएक योजन भूमि प्रदेश में।

प्रश्न १४६. अरहंत कहां पर बैठकर प्रवचन करते हैं?

उत्तरह्नदेवनिर्मित रत्नमय सिंहासन पर बैठकर।

प्रश्न १४७. प्रवचन के समय तीर्थंकर का मुखमंडल किधर रहता है?

उत्तरह्नपूर्व की ओर।

प्रश्न १४८. अरहंत यदि पूर्वाभिमुख होकर विराजते हैं तो फिर शेष तीन दिशाओं में परिषद को दर्शन कैसे होते हैं?

उत्तरह्नदेवता उनका प्रतिरूप बनाते हैं।

प्रश्न १४९. अरहंत का वह प्रति रूप वैक्रिय होता है या औदारिक पुद्गलों का?

उत्तरह्नअरहंत का वह प्रतिरूप देवकृत वैक्रिय पुद्गलों का होता है। पर औदारिक शरीर के समान दिखाई देता है।

प्रश्न १५०. देशना से पहले अरहंत किसे नमस्कार करते हैं?

उत्तरह्नतीर्थ को।

प्रश्न १५१. अरहंत तीर्थ को नमस्कार कर प्रवचन करने का प्रयोजन क्या हैं?

उत्तरह्नअरहंत द्वारा तीर्थ को नमस्कार कर प्रवचन करने के तीन प्रयोजन हो सकते हैंह्न

१. तीर्थ के कारण ही तीर्थंकर कहलाते हैं।

२. पूजितपूजा-अर्हत् स्वयं पूजनीय होते हैं। उनके द्वारा तीर्थ की पूजा होने से तीर्थ की प्रभावना वृद्धिंगत होती है।

३. धर्म का मूल विनय हैह्नइसकी प्रस्थापना होती है।

प्रश्न १५२. अरहंत के देशना की राग क्या है?

उत्तरह्नमालकोश।

प्रश्न १५३. अरहंत के प्रवचन की भाषा कौन सी है?

उत्तरह्नअर्ध मागधी।

प्रश्न १५४. तीर्थंकर देशना क्यों देते हैं?

उत्तरह्नतीर्थंकर नाम-गोत्र-कर्म बंध का वेदन करने के लिए।

प्रश्न १५५. क्या तीर्थंकर परत्राता होते हैं?

उत्तरह्नहां। यद्यपि वे कृतकृत्य होते हैं, फिर भी भव्य जीवों को संसार-समुद्र से

पार पहुंचाने के लिए सामायिक, व्रत, जीवनिकाय और भावना विषयक धर्मोपदेश करते हैं।[1]

प्रश्न १५६. समवसरण की क्या विशेषता है?

उत्तरह्नसमवसरण की सर्वोपरि विशेषता है कि वहां देव-दानव-मानव-तिर्यंच सब बराबर बैठकर प्रवचन सुन सकते हैं।

प्रश्न १५७. समवसरण का अन्तः प्रदेश कितने भागों में विभक्त हैं?

उत्तरह्न१२ भागों में।

प्रश्न १५८. समवसरण की भूमि को कौन तैयार करता हैं?

उत्तरह्नवायुकुमार देव एक योजन प्रमाणभूमि में से कंकरादि दूर करते हैं, मेघकुमार देव सर्वरज को उपशांत करते हैं। व्यन्तरदेव चैत्य के मध्यभाग की तरह कोमल रत्नों की शिलाओं से फर्श बनाते हैं। ऋतु की अधिष्ठायिका देवियां जानु तक खिले हुये पुष्पों की वर्षा करती हैं।

प्रश्न १५९. समवसरण कितने कोस प्रमाण वाला होता है?

उत्तरह्न१२ कोस प्रमाण वाला।

प्रश्न १६०. भगवान की देशना कौन जीव नहीं सुन सकता?

उत्तरह्नअभव्य जीव।

प्रश्न १६१. समवसरण कब और कितने समय में तैयार किया जाता है?

उत्तरह्नजब भी आवश्यकता हो उस समय देव और असुर मिलकर क्षणभर में ही समवसरण का निर्माण कर देते हैं।

प्रश्न १६२. अरहंत भगवान के कितने गुण है?

उत्तरह्न१२ गुण।

प्रश्न १६३. १२ गुण कौन से हैं?

उत्तरह्नअनन्त चतुष्टयी और आठ प्रातिहार्य (विशेषता)।

प्रश्न १६४. अरहंत के १२ गुण स्वकृत होते हैं या परकृत?

उत्तरह्नअनन्त चतुष्टयी-स्वकृत। आठ प्रातिहार्यह्नदेवकृत (परकृत)।

प्रश्न १६५. अरहंत के अतिरिक्त आठ प्रातिहार्य और किसके होते हैं?

उत्तरह्नकिसी के नहीं।

प्रश्न १६६. सभी अरहंतों के प्रातिहार्य की संख्या समान होती है या कम-ज्यादा?

उत्तरह्नसमान।

१. दजिचू पृ. १११, आवनि २७।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १६७. आठ प्रातिहार्य कहां रहते हैं?

उत्तरह्नकेवलज्ञान की प्राप्ति के बाद सदा भगवान के साथ ही रहते हैं। ये प्रातिहार्य अरहंत की पहचान के विलक्षण चिह्न हैं।

प्रश्न १६८. अष्टमहाप्रातिहार्य कौन से हैं?

उत्तरह्न१. अशोक वृक्ष
२. पुष्पवृष्टि
३. दिव्यध्वनि
४. चामर
५. सिंहासन
६. भामण्डल
७. देवदुन्दुभि
८. छत्र।

प्रश्न १६९. अशोकवृक्ष की क्या विशेषता है?

उत्तरह्नयह सदा भगवान के मस्तक पर रहता है। सघन छाया वाला और एक योजन व्यापी होता है।

प्रश्न १७०. अशोकवृक्ष कितना ऊंचा होता हैं?

उत्तरह्नतीर्थंकर से बारह गुणा ऊंचा।

प्रश्न १७१. क्या अशोक वृक्ष की ऊंचाई सभी तीर्थंकरों के समय में समान होती है?

उत्तरह्ननहीं। ऋषभादि से पार्श्वनाथ तक तीर्थंकर की शरीर की ऊंचाई से बारह गुणा ऊंचाई होती है। किन्तु भगवान् महावीर के समवसरण में उसकी ऊंचाई ३२ धनुष की होती है।

प्रश्न १७२. पुष्पवृष्टि से क्या समझते हैं?

उत्तरह्न'पुष्पवृष्टि'ह्नफूलों की वर्षा। पुष्पवृष्टि में बरसाये जाने वाले पुष्प अधोमुखी वृतवाले, विकसित दलों वाले, पंचवर्णी, जल एवं स्थल से उत्पन्न, सुवासित मनोहर एवं देवों द्वारा विकुर्वित होते हैं।

प्रश्न १७३. दिव्य ध्वनि क्या है?

उत्तरह्नअरहंत की देशना के स्वरों को देवगण चारों ओर एक योजन विस्तृत करते हैं। प्रसारित ध्वनि देवकृत होने से दिव्य ध्वनि कहलाती है। यह पादतल में योजन व्यापी क्षेत्र में होती है।

प्रश्न १७४. चामर (चंवर) कितने होते हैं?

उत्तरह्न६४ (चौंसठ)।

प्रश्न १७५. भामण्डल किसके समान होता है?

उत्तरह्नदिव्य परमाणुओं से निर्मित दर्पण के समान।

प्रश्न १७६. दुंदुभि कहां बजती है?

उत्तरह्नअशोक वृक्ष के ऊपर योजन व्यापी क्षेत्र में दुंदुभि नाद होता है।

प्रश्न १७७. केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद अरहंत के चरण भूमि का स्पर्श करते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १७८. अरहंत के विचरण के समय देवता किसकी रचना करते हैं?

उत्तरह्ननौ-नौ स्वर्ण कमलों की।

प्रश्न १७९. यदि अरहंत के चरण भूमि का स्पर्श नहीं करते हैं तो फिर वे कैसे चलते हैं?

उत्तरह्नअरहंत देवनिर्मित एक हजार पंखुड़ियों वाले सुवर्ण कमल पर पादन्यास करते हुए विचरण करते है।

प्रश्न १८०. तीर्थंकर के आगमन की सूचना देने वाले को बधाई कौन देता है?

उत्तरह्न१. तीर्थंकर के आगमन की सूचना देने वाले को चक्रवर्ती साढ़े बारह लाख-प्रमाण सुवर्ण वृत्ति-दान में देते हैं, और उतने ही कोटि-प्रमाण सुवर्ण प्रीति-दान में देते हैं।

१. वासुदेव उतने प्रमाण वाला रजत देते हैं।

३. माण्डलिक राजा साढ़े बारह हजार प्रमाण वृत्ति दान और साढ़े बारह लाख-प्रमाण प्रीतिदान करते हैं।

इनके अतिरिक्त अन्य धनवान भी अपनी-अपनी भक्ति और वैभवनुसार नियुक्त-अनियुक्त पुरुषों को दान देते हैं।[1]

प्रश्न १८१. अरहंत समवसरण में कहां स्थित होते हैं?

उत्तरह्नअरहंत समवसरण में सिंहासन पर आकाश मार्ग में चार अंगुल के अंतराल में स्थित होते हैं।

प्रश्न १८२. अरहंत की देशना कितनी गति के जीव सुनते हैं?

उत्तरह्नतीन गति केह्नतिर्यंच, मनुष्य और देव।

प्रश्न १८३. अरहंत की देशना कहां तक सुनाई देती है?

उत्तरह्नअरहंत के चारों ओर एक-एक योजन में।

प्रश्न १८४. समवसरण के आस-पास कितनी दूरी तक का क्षेत्र उपद्रव रहित होता है?

१. अरहंत (शोध पत्र)।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नसमवसरण से चारों दिशा में २५-२५ योजन, ऊर्ध्व और अधोदिशा में साढ़े बारह-साढ़े बारह योजन तक का क्षेत्र उपद्रव रहित होता है।

प्रश्न १८५. अरहंत देशना के समय कौन से आसन में विराजमान होते हैं?

उत्तरह्नपद्मासन में।

प्रश्न १८६. क्या भगवान के समवसरण में देवता सामायिक ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नभगवान की देशना से प्रभावित हो मनुष्य और तिर्यंच देशव्रती या सर्वव्रती बनते हैं। यदि मनुष्य और तिर्यंच देशव्रती अथवा सर्वव्रती नहीं बनते है तो देवता सम्यक्त्व सामायिक ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न १८७. क्या तीर्थंकर की देशना खाली जाती है?

उत्तरह्ननहीं। कोई न कोई अवश्य प्रतिबोधित होता है। भगवान महावीर की प्रथम देशना का निष्फल होनाह्नएक आश्चर्य है।

प्रश्न १८८. क्या सभी तीर्थंकर पुरुष ही होते हैं?

उत्तरह्नहां। परन्तु भगवान मल्लिनाथजी का तीर्थंकर होना एक आश्चर्य है।

प्रश्न १८९. अरहंतों के विचरण के समय कांटों की स्थिति कैसी होती है?

उत्तरह्नअधोमुख वाले (नीचे मुंह किये हुए)।

प्रश्न १९०. जिस क्षेत्र में तीर्थंकर का विचरण होता है, वहां एक साथ कितनी ऋतुओं के फल होते हैं?

उत्तरह्नछह ऋतुओं के।

प्रश्न १९१. तीर्थंकर अवस्था में उपसर्ग आते हैं?

उत्तरह्ननहीं। भगवान् महावीर के उपसर्ग आये यह आश्चर्य हुआ।

प्रश्न १९२. अरहंत के सदा आगे चलने वाले अष्ट मंगल कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न१. स्वस्तिक
२. श्रीवत्स
३. कुंभ
४. भद्रासन
५. नंदावर्त
६. मीनयुगल
७. दर्पण
८. वर्धमान।

प्रश्न १९३. अभी कौन से अरहंत का शासन-काल चल रहा है?

उत्तरह्न२४वें तीर्थंकर भगवान महावीर का।

प्रश्न १९४. एक अरहंत दूसरे अरहंत से मिल सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं। यह नियमा है। त्रिषष्ठिशलाकापुरुष में से कोई भी समान पद वाले महापुरुष एक-दूसरे से नहीं मिलते।

प्रश्न १९५. त्रिषष्ठीशलाकापुरुष कौन से हैं?

उत्तरह्नत्रिषष्ठी अर्थात् ६३।

तीर्थंकर-चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-बलदेव
२४ + १२ + ९ + ९ + ९ = ६३।

प्रश्न १९६. अरिहंत पद द्रव्य, गुण और पर्याय में से क्या है?

उत्तरह्नअरिहंत पद एक अवस्था है। यह अवस्था चार घाति कर्म के क्षय से क्षायिक भाव के रूप में प्रकट होने से पर्याय है।

प्रश्न १९७. अरहंत पद शाश्वत है या अशाश्वत?

उत्तरह्नमहाविदेह की अपेक्षाह्नशाश्वत। भरत और ऐरावत की अपेक्षाह्न अशाश्वत।

प्रश्न १९८. भावी तीर्थंकर के गुरु कौन?

उत्तरह्नकोई नहीं, वे स्वयंबुद्ध है।

प्रश्न १९९. अरहंत के तीर्थंकर नाम कर्म का विपाकोदय कब से प्रारम्भ होता है?

उत्तरह्नकेवलज्ञान के बाद से।

प्रश्न २००. अरहंत में परोपकार की भावना का क्रम कब से प्रारम्भ होता है?

उत्तरह्नमनुष्य गति में प्रवेश करते ही।

प्रश्न २०१. अरहंत के कितने अतिशय है?

उत्तरह्न३४ अतिशय।

प्रश्न २०२. अतिशय किसे कहते है?

उत्तरह्नअतिशय अर्थात् विशेषता। ऐसी विशेषताएंह्नजो किसी सामान्य व्यक्ति में नहीं होती। अतिशय का दूसरा अर्थ हैह्नआनन्ददायी अल्फाकणों का विस्तार।

प्रश्न २०३. तीर्थंकरों के अतिशय स्वकृत होते हैं या परकृत?

उत्तरह्नसमवायांग सूत्र की वृत्ति के अनुसार ३४ अतिशय तीन भागों में विभाजित हैह्नजन्मकृतह्नचार अतिशय। कर्मक्षयजह्नपन्द्रह अतिशय, देवकृतह्नपन्द्रह अतिशय।

प्रश्न २०४. जन्मकृत अतिशय किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजन्म के साथ ही जिनके असाधारण विशेषताएं होती हैं। वे जन्मकृत अतिशय हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २०५. कर्मक्षयज अतिशय किसे कहते हैं?

उत्तरह्नचार घाति कर्मों के क्षय से उत्पन्न अतिशय को कर्मक्षयज अतिशय कहते हैं।

प्रश्न २०६. देवकृत अतिशय कब होते हैं?

उत्तरह्नकेवलज्ञान की प्राप्ति के बाद।

प्रश्न २०७. कर्मक्षयज और देवकृत अतिशय में क्या अन्तर है?

उत्तरह्नकर्मक्षयज अतिशय कर्मक्षय होने के बाद स्वतः हो जाते हैं जबकि देवकृत अतिशय देवों द्वारा किये जाते हैं।

प्रश्न २०८. अरहंत के शरीर में पसीना आता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २०९. अरहंत का श्वासोच्छ्वास कैसा होता है?

उत्तरह्नकमल जैसा सुगन्धित।

प्रश्न २१०. अरहंत भगवान आहार करते हैं?

उत्तरह्नहां, क्षुधावेदनीय कर्म की अपेक्षा।

प्रश्न २११. अरहंत के आहार-निहार की प्रक्रिया कैसी होती है?

उत्तरह्नअदृश्य।

प्रश्न २१२. जन साधारण की तरह अरहंत के मस्तकादि के बाल बढ़ते हैं?

उत्तरह्ननहीं। मर्यादा से अधिक बाल नहीं बढ़ते।

प्रश्न २१३. अरहंत के रक्त व मांस का रंग कैसा होता है?

उत्तरह्नश्वेत।

प्रश्न २१४. अरहंत भगवान कैसे हैं?

उत्तरह्नलोकोत्तर-पुरुष।

प्रश्न २१५. अरहंत के शारीरिक सम्पदा कैसी होती है?

उत्तरह्नअलौकिक।

प्रश्न २१६. अरहंत के तीर्थंकर नाम कर्म का भोग कब से चालू होता है?

उत्तरह्नतीर्थ चतुष्टय की स्थापना के बाद।

प्रश्न २१७. तीर्थ क्या होता है?

उत्तरह्नतीर्थ का शाब्दिक अर्थ हैह्नजो तरने में सहायक बनें। यहां तीर्थ का दो अर्थों में प्रयोग हुआ हैह्न१. तीर्थ अर्थात् प्रवचन। २. तीर्थ अर्थात् साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका।

प्रश्न २१८. अरहंत बोलते है क्या?

उत्तरह्नहां, योग की विद्यमानता में निश्चित ही बोलते हैं।

प्रश्न २१९. अरहंत भाषक है या अभाषक?

उत्तरह्नभाषक (योगों की अवस्था तक)।

प्रश्न २२०. अरहंत कब बोलते हैं?

उत्तरह्नपूर्वाह्न और अपराह्न में।

१. बृहत्कल्प भाष्य में देशना समय का उल्लेख करते हुए कहा हैह्न 'सूरोदयपच्छिमाए' सूर्योदय की प्रथम प्रहर में सूर्यास्त के पूर्व प्रहर में प्रभु देशना देते हैं।

२. हरिभद्रीय वृत्ति में पच्छिमाए का अर्थ पश्चिम अर्थात् अंतिम प्रहर किया है।

३. महावीर चरियं में प्रथम पौरसी व अंतिम पौरसी का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न २२१. तीर्थंकर का वाणी व्यवहार कैसा होता है?

उत्तरह्नअपूर्व।

प्रश्न २२२. तीर्थंकर के वचनातिशय कितने?

उत्तरह्न३५।

प्रश्न २२३. अरहंत भगवान की देशना अधर्ममागधी में होती है, फिर उसे मनुष्य, तिर्यंच, देवता कैसे समझ लेते हैं?

उत्तरह्नअरहंत भगवान की वाणी ३५ गुणों से युक्त होने के कारण सभी अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते हैं। यह भगवान की विशेषता है।

प्रश्न २२४. केवलज्ञान प्राप्त करने वाले सभी महापुरुष तीर्थंकर बनते हैं?

उत्तरह्ननहीं। जिनके तीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति का उदय हो, वे ही तीर्थंकर बनते हैं।

प्रश्न २२५. अरहंत के समवसरण में कितने प्रकार की परिषद होती है?

उत्तरह्न१२ प्रकार की।

प्रश्न २२६. १२ प्रकार की परिषद् में कौन-कौन आते हैं?

उत्तरह्नचार प्रकार के देव, चार प्रकार की देवियां, साधु, साध्वियां, श्रावक और श्राविकाएं।[1]

---

१. कोई ऐसा भी मानते हैंह्नचार प्रकार के देवता, चार प्रकार की देवियां, मनुष्य मनुष्यणी और तिर्यंच-तिर्यंचणी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २२७. तीर्थंकर के समवसरण में परिषद् किस-स्थिति में प्रवचन सुनती है?

उत्तरह्नतीर्थंकर के समीप दक्षिण-पूर्व दिशा में गणधर, उनके पीछे-पीछे क्रमशः केवली, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदहपूर्वी, ऋद्धिसंपन्न मुनि तथा अन्य सब मुनि बैठकर, उनके पीछे वैमानिक देवियां व साध्वियां खड़ी रहकर।

१. दक्षिण-पश्चिम दिशा में क्रमशः भवनपति, ज्योतिष्क और व्यन्तर देवों की देवियां खड़े रहकर।

२. उत्तर-पश्चिम दिशा में भवनपति, ज्योतिष्क और व्यन्तर देव खड़े रहकर।

३. उत्तर-पूर्व दिशा में वैमानिक देव, मनुष्य और महिलाएं खड़े-खड़े प्रवचन सुनते हैं। यह प्रथम परकोटे की अवस्थिति है।

दूसरे परकोटे में तिर्यंच (पशु-पक्षी), तीसरे में यान-वाहन और परकोटे के बाहर तिर्यंच भी होते हैं, मनुष्य और देव भी हो सकते हैं।[1]

प्रश्न २२८. समवसरण में श्रोतावर्ग के बैठने का व आने का क्रम कैसा हैं?

उत्तरह्नदक्षिणावर्त्त।

प्रश्न २२९. अरहंत भगवान की गति कौन सी?

उत्तरह्नमनुष्य गति।

प्रश्न २३०. अरहंत भगवान की जाति कौन सी?

उत्तरह्नपञ्चेन्द्रिय।

प्रश्न २३१. अरहंत की काया कौन सी?

उत्तरह्नत्रसकाया।

प्रश्न २३२. अरहंत के इन्द्रियां कितनी?

उत्तरह्नअरहंत के पांच इन्द्रियां द्रव्येन्द्रियां हैं, भावेन्द्रियां नहीं।

प्रश्न २३३. अरहंत के पर्याप्तियां कितनी?

उत्तरह्नछह पर्याप्ति।

प्रश्न २३४. अरहंत के प्राण कितने?

उत्तरह्नपांचह्न१. मन बल २. वचन बल ३. काय बल ४. श्वासोच्छ्वास प्राण ५. आयुष्य प्राण।

प्रश्न २३५. अरहंत सशरीरी है या अशरीरी?

उत्तरह्नसशरीरी।

१. आवनि, ५५६,५५८,५६०,५६३।

प्रश्न २३६. अरहंत के शरीर कितने?

उत्तरह्नतीनह्नऔदारिक, तेजस और कार्मण।

प्रश्न २३७. अरहंत के योग कितने?

उत्तरह्नपांचह्न१. सत्य मनोयोग २. व्यवहार मनोयोग ३. सत्यवचनयोग ४. व्यवहार वचनयोग ५. औदारिक काययोग।

प्रश्न २३८. अरहंत में उपयोग कितने?

उत्तरह्नउपयोग दोह्नकेवलज्ञान और केवलदर्शन।

प्रश्न २३९. अरहंत के कर्म कितने?

उत्तरह्नचार अघाति कर्महृवेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य।

प्रश्न २४०. भावी अरहंत कितने गुणस्थान का स्पर्श नहीं करते?

उत्तरह्नपांचह्न१, २, ३, ५ और ११वां।

प्रश्न २४१. अरहंत में गुणस्थान कितने?

उत्तरह्नदोह्न१३वां और १४वां।

प्रश्न २४२. अरहंत में पांच इन्द्रियों के २३ विषयों में से कितने विषय है?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २४३. अरहंत में मिथ्यात्व के दस बोलों में से कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २४४. अरहंत में जीव का भेद कौन सा?

उत्तरह्नएक चौदहवां।

प्रश्न २४५. क्या अरहंत पुण्य तत्त्व का उपार्जन करते हैं?

उत्तरह्नकेवल १३वें गुणस्थान में।

प्रश्न २४६. अठारह पाप में से अरहंत में कितने?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २४७. अरहंत में आश्रव के कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नशुभयोगाश्रव का प्रवाह १३ गुणस्थान तक सतत चालू रहता है।

प्रश्न २४८. अरहंत में संवर के कितने बोल?

उत्तरह्नअयोग संवर को छोड़ शेष चारों संवर होते हैं।

प्रश्न २४९. अरहंत भगवान निर्जरा करते हैं?

उत्तरह्नहां, चार अघाति कर्मों की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २५०. अरहंत के कर्म बंध होता है या नहीं?

उत्तरह्नहोता है। केवल सातावेदनीय का।

प्रश्न २५१. अरहंत में कितनी आत्मा?

उत्तरह्नछह (कषाय और वीर्य आत्मा को छोड़कर)।

प्रश्न २५२. अरहंत का दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नएकह्नइक्कीसवां।

प्रश्न २५३. अरहंत में लेश्या कितनी?

उत्तरह्नएकह्नशुक्ललेश्या।

प्रश्न २५४. कितनी लेश्या से निकले हुए जीव तीर्थंकर बन सकते हैं?

उत्तरह्नपांच लेश्या से। प्रथम तीन नरक तक की अपेक्षा नील और कापोत, बारहवें देवलोक की आगति की अपेक्षा तीन-तेज, पद्म व शुक्ल।

प्रश्न २५५. अरहंत में दृष्टि कौनसी?

उत्तरह्नसम्यक् दृष्टि।

प्रश्न २५६. अरहंत के चार ध्यान में से कितने ध्यान?

उत्तरह्नशुक्लध्यान के अंतिम दो चरण।

प्रश्न २५७. अरहंत का किस द्रव्य में समावेश होता है?

उत्तरह्नएकह्नजीवास्तिकाय में।

प्रश्न २५८. अरहंत कितने द्रव्यों का सहारा लेते हैं?

उत्तरह्नछहों द्रव्यों का।

प्रश्न २५९. अरहंत किस राशि में आते हैं?

उत्तरह्नजीव राशि में।

प्रश्न २६०. अरहंत में दीक्षा से पूर्व श्रावकत्व होता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २६१. अरहंत के १२ व्रतों में से कितने व्रत होते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २६२. अरहंत कितने करण-योग से त्याग करते हैं?

उत्तरह्नतीन करण और तीन योग से।

प्रश्न २६३. अरहंतावस्था में कौन सा चारित्र होता है?

उत्तरह्नएक पांचवांह्नयथाख्यातचारित्र।

प्रश्न २६४. भावी अरहंत दीक्षा से निर्वाण तक कितने चारित्र का स्पर्श करते हैं?

उत्तरह्नतीन चारित्र काह्नसामायिक चारित्र, सूक्ष्मसम्पराय चारित्र और यथाख्यात चारित्र।

प्रश्न २६५. अरहंत संसारी है या मुक्त?

उत्तरह्नसंसारी। क्योंकि उनके चार अघाति कर्म का क्षय होना बाकी हैं।

प्रश्न २६६. अरहंत में भाव कितने?

उत्तरह्नतीनह्न१. औदयिक, २. क्षायिक व ३. पारिणामिक।

प्रश्न २६७. अरहंत में क्षायोपशमिक भाव क्यों नहीं?

उत्तरह्नक्षयोपशम चार घाति कर्म का ही होता है। और अरहंत ने इन चार कर्म का क्षय कर दिया है।

प्रश्न २६८. अरहंत के उदय के तेतीस बोलों में से कितने बोल पा सकते हैं?

उत्तरह्नसातह्नगति-मनुष्य, काय-त्रस, लेश्या-एक शुक्ल, आहारता, संयोगिता, संसारता और असिद्धता।

प्रश्न २६९. अरहंत में उपशम के बोल कितने?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २७०. अरहंत में क्षायिक के आठ बोलों में से कितने?

उत्तरह्नचारह्नअनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य।

प्रश्न २७१. अरहंत में पारिणामिक भाव कौन सा?

उत्तरह्नजीवाश्रित।

प्रश्न २७२. अरहंत सरागी संयमी है या वीतरागी संयमी?

उत्तरह्नवीतरागी संयमी।

प्रश्न २७३. अरहंत स्वलिंग में होते हैं या अन्यलिंग में?

उत्तरह्नस्वलिंग में।

प्रश्न २७४. अरहंत सयोगी है या अयोगी?

उत्तरह्नदोनों। तेरहवें गुणस्थान और चौदहवें गुणस्थान के प्रथम दो समय की अपेक्षा सयोगी। चौदहवें गुणस्थान की शेष स्थिति की अपेक्षा अयोगी।

प्रश्न २७५. अरहंत के अरहंतावस्था के बाद कितने भव शेष रहते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं। वे सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो जाते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २७६. विकलांग मानव अरहंत की पदवी प्राप्त कर सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७७. क्या इन्द्रिय विकल मनुष्य अरिहंत बन सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७८. अरहंत का संहरण होता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७९. अरहंत का ध्यान किस रंग के साथ किया जाता है?

उत्तरह्नश्वेत रंग के साथ।

प्रश्न २८०. तेरह चैतन्य केन्द्रों में अरहंत का ध्यान कहां कराया जाता है?

उत्तरह्नज्ञान केन्द्र (चोटी का स्थान) पर।

प्रश्न २८१. अरहंत के प्रमुख शिष्य क्या कहलाते हैं?

उत्तरह्नगणधर।

प्रश्न २८२. अरहंत की कम से कम अवगाहना कितनी?

उत्तरह्नसात हाथ।

प्रश्न २८३. अरहंत की उत्कृष्ट अवगाहना कितनी?

उत्तरह्न५०० धनुष।

प्रश्न २८४. अरहंत का आयुष्य सोपक्रमी होता है या निरूपक्रमी?

उत्तरह्ननिरूपक्रमी। चरम शरीरी होने के कारण।

प्रश्न २८५. अरहंत भगवान को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है क्या?

उत्तरह्नजिस कर्मभूमि में हम रहते है वहां यदि सशरीर तीर्थंकर विचर रहे हो तो प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

प्रश्न २८६. अरहंत मन को काम में लेते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २८७. तीर्थंकर छद्मस्थ अवस्था में किन-किन कारणों से बोलते हैं?

उत्तरह्नचार कारणों से बोलते हैंह्न

१. याचना करने के लिए
२. मार्ग पूछने के लिए
३. आज्ञा के लिए
४. प्रश्नों के उत्तर देने के लिए।

प्रश्न २८८. अरहंत आराधक होते है या विराधक?

उत्तरह्नक्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति के पश्चात् भावी अरिहंत सदा आराधक ही होते हैं।

प्रश्न २८९. अरहंत में कषाय कितनी?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २९०. अरहंत पांच प्रकार की स्वाध्याय में से कितनी प्रकार की स्वाध्याय करते हैं?

उत्तरह्नमात्र एक प्रकार कीह्नधर्मकथा।

प्रश्न २९१. अरहंत का ज्ञान प्रत्यक्ष है या परोक्ष?

उत्तरह्नप्रत्यक्ष।

प्रश्न २९२. अरहंत किसको दीक्षा नहीं देते?

उत्तरह्नअभव्य जीव को।

प्रश्न २९३. अरहंत का संस्थान कौन सा?

उत्तरह्नसमचतुरस्र संस्थान।

प्रश्न २९४. अरहंत समुद्घात करते है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २९५. अरहंत के पारणे के समय कितनी स्वर्ण मुद्राओं की वृष्टि होती है?

उत्तरह्नबारह लाख स्वर्णमुद्राओं की।

प्रश्न २९६. अरहंत देव है या गुरु?

उत्तरह्नदेव।

प्रश्न २९७. अरहंत बड़े या सिद्ध?

उत्तरह्नउपकार की दृष्टि से अरहंत और कर्मक्षय की अपेक्षा सिद्ध।

प्रश्न २९८. अरहंत का संहनन कौन सा?

उत्तरह्नवज्रऋषभनाराच।

प्रश्न २९९. अरहंत पद में रहते हुये अरहंत भगवान आराधक होते हैं या विराधक?

उत्तरह्नआराधक।

प्रश्न ३००. अरहंत भगवान के गुरु कौन?

उत्तरह्नकोई नहीं। वे स्वयं जगद्गुरु है।

प्रश्न ३०१. अरहंत किनका कल्याण करते हैं?

उत्तरह्नभव्य जीवों का।

प्रश्न ३०२. अरहंत कथित वचनों पर श्रद्धा होना, यह क्या है?

उत्तरह्नसम्यक् दर्शन।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३०३. अरहंत के भवों की गणना कब से प्रारम्भ होती है?

उत्तरह्नसम्यक्त्व प्राप्ति के भव से।

प्रश्न ३०४. अरहंत के शरीर पर कितने लक्षण होते हैं?

उत्तरह्न१००८।

प्रश्न ३०५. किन जीवों का अरहंत भी उद्धार नहीं करते?

उत्तरह्नअभव्य जीवों का।

प्रश्न ३०६. अरहंत हंसते है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३०७. क्या वर्तमान में मनुष्य लोक से आत्माएं मोक्ष जा रही हैं?

उत्तरह्नहां, महाविदेह क्षेत्र से।

प्रश्न ३०८. भावी अरहंत कौन सी श्रेणी से आगे बढ़ते हैं?

उत्तरह्नक्षपक श्रेणी से।

प्रश्न ३०९. अरहंत में संज्ञा कितनी?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न ३१०. क्या तीर्थंकर की देह को आभूषण, बहुमूल्य वस्त्रों से सजाया जाता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३११. अरहंत छद्मस्थ है या वीतराग?

उत्तरह्नवीतराग।

प्रश्न ३१२. अरहंत को कौनसी क्रिया लगती है?

उत्तरह्न'ईर्यापथिक क्रिया।' तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा।

प्रश्न ३१३. अरहंत जंगम तीर्थ है या स्थावर?

उत्तरह्नजंगम।

प्रश्न ३१४. अरहंत प्रतिक्रमण करते हैं क्या?

उत्तरह्नअरहंत ऐसे तो प्रतिक्रमण नहीं करते। परन्तु व्यवहार निभाने के लिए और शुभयोगाश्रव को रोकने के लिए प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रश्न ३१५. अरहंत के अंतिम समय में वृद्धावस्था परिलक्षित होती है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३१६. अरहंत स्वामी है या सेवक?

उत्तरह्नसिद्धों की अपेक्षाह्नसेवक। शेष भव्य जीवों की अपेक्षा स्वामी।

प्रश्न ३१७. अरहंत के वात-पित-कफ जनित रोग होते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३१८. अरहंत प्रायश्चित्त तप करते है क्या?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३१९. अरहंत अनशन करते है क्या?

उत्तरह्नहां, संवत्सरी का उपवास करते हैं और अंतिम समय में संथारा करते हैं।

प्रश्न ३२०. अरहंत ध्यान करते हैं?

उत्तरह्नहां, शुक्लध्यान के तीसरे व चौथे पद का।

प्रश्न ३२१. अरहंत कायोत्सर्ग करते है क्या?

उत्तरह्नहां, द्रव्य कायोत्सर्ग करते हैं।

प्रश्न ३२२. अरहंत का मरण कौन सा?

उत्तरह्नपण्डित-मरण।

प्रश्न ३२३. अरहंत क्षमायाचना करते है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३२४. अरहंत अवस्था में अरहंत के कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्नग्यारह। वेदनीय कर्म के उदय से होने वालेह्न१. क्षुधा २. पिपासा ३. शीत ४. उष्ण ५. डांसमच्छर ६. चर्या ७. शय्या ८. वध ९. याचना १०. रोग ११. तृणस्पर्श।

प्रश्न ३२५. अरहंत सकर्मी है या अकर्मी?

उत्तरह्नसकर्मी।

प्रश्न ३२६. भावी अरहंत का जन्म कौन सा?

उत्तरह्नगर्भज-सन्नि पंचेन्द्रिय का।

प्रश्न ३२७. भावी अरहंत कौनसी योनि में उत्पन्न होते हैं?

उत्तरह्नकूर्मोन्नत योनि में।

प्रश्न ३२८. अरहंत चार गति में से कौन सी गति में ही होते हैं?

उत्तरह्नमनुष्य गति में ही।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३२९. भावी तीर्थंकर की आत्मा कब से कब तक द्रव्य तीर्थंकर कहलाती है?

उत्तरह्नतीर्थंकर नाम कर्म बंध के समय से लेकर तीर्थचतुष्ट्य की स्थापना के पूर्व समय तक।

प्रश्न ३३०. अरहंत के ३४ अतिशय और ३५ वचनातिशय जैसी अलौकिक विशेषताओं की प्राप्ति का कारण क्या है?

उत्तरह्नपुण्यानुबंधी पुण्य की सर्वोत्तम और परमोत्कृष्ट प्रकृति का उदय।

प्रश्न ३३१. अरहंत के गुणों की महानता का वर्णन कौन-कौन से सूत्रों में मिलता हैं?

उत्तरह्नऔपपातिक, भगवती, रायपसेणी, कल्पसूत्र आदि के मूल में तीर्थंकर के गुणनिष्पन्न विशेषण मिलते हैं।

प्रश्न ३३२. महाविदेह क्षेत्र की क्या विशेषता है?

उत्तरह्नवहां तीर्थंकर विरहकाल नहीं होता। हमेशा चौथा आरा जैसा ही कालक्रम रहता है।

प्रश्न ३३३. अरहंत के साथ तादात्म्य कैसे होता है?

उत्तरह्नआचारांग सूत्र में कहा है[1]ह्न

१. उनकी दृष्टि
२. उनका स्वरूपज्ञान
३. उनका आगमन
४. उनकी चैतसिक अनुभूति और
५. उनका सान्निध्य।

इन पांच प्रकारों से अरहंत के साथ तादात्म्य होता है।

प्रश्न ३३४. अरहंत कितने प्रकार के होते है?

उत्तरह्नठाणांग सूत्र के अनुसार अरहंत के तीन प्रकार हैह्न

१. अवधिज्ञानी अरहंतह्नच्यवन और जन्म कल्याणक के समय।
२. मनःपर्यवज्ञानी अरहंतह्नदीक्षा कल्याणक।
३. केवलज्ञानी अरहंतह्नकेवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक।

प्रश्न ३३५. अरहंत उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के कौन से आरे में होते हैं?

उत्तरह्नतीसरे व चौथे आरे में।

१. आचारांग, श्रुतस्कन्ध १, अध्ययन ५, उद्देश्य ४, सूत्र ५४७।

प्रश्न ३३६. अरहंत भगवान मोक्ष के चार मार्गों में से कितने मार्ग पर चलते है?

उत्तरह्नचारों ही मार्ग पर।

प्रश्न ३३७. अरहंत को आयुष्यपूर्ति के बाद क्या मिलता है?

उत्तरह्नमोक्ष।

प्रश्न ३३८. अरहंत कहां से सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्नकर्मभूमि से।

प्रश्न ३३९. अरहंत १४ प्रकार के दान में से कितने प्रकार का दान ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नसात प्रकार काह्न१. अशन २. पान ३. खादिम ४. स्वादिम ५. शय्या ६. औषध और ७. भेषज।

प्रश्न ३४०. अरहंत के प्रतिनिधि कौन?

उत्तरह्नआचार्य।

प्रश्न ३४१. क्या अभवी जीव तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकता हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३४२. पांच प्रकार के देवों में से अरहंत का कौन से देव में समावेश होता है?

उत्तरह्नदेवाधिदेव।

प्रश्न ३४३. तीर्थंकर नाम कर्म का बंध जीव को कितने भव बाद उदय में आता है?

उत्तरह्नतीसरे भव में।

प्रश्न ३४४. तीर्थंकर सब कुछ जानते हुए क्या नहीं जानते?

उत्तरह्नजीव की आदि।

प्रश्न ३४५. अरहंत क्या नहीं देखते?

उत्तरह्नस्वप्न।

प्रश्न ३४६. अरहंत क्या नहीं लेते?

उत्तरह्ननींद।

प्रश्न ३४७. अरहंत कितने दोषों से रहित होते हैं?

उत्तरह्न१८ दोषों से।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३४८. अठारह दोष कौन से हैं?

उत्तरह्न१. मिथ्यात्व
२. अज्ञान
३. मद
४. क्रोध
५. माया
६. लोभ
७. रति
८. अरति
९. निद्रा
१०. शोक
११. अलीक
१२. चौर्य
१३. मत्सरता
१४. भय
१५. हिंसा
१६. प्रेम
१७. क्रीड़ा
१८. हास्य।

प्रश्न ३४९. तीर्थ चतुष्टय की स्थापना से पूर्व और केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद इस बीच की स्थिति में भावी अरहंत का पांच पदों में से कौन से पद में समावेश होता है?

उत्तरह्न'णमो लोए सव्वसाहूणं' पद में।

प्रश्न ३५०. क्या अरहंत से दीक्षित साधु-साध्वी उनसे पहले मोक्ष जा सकते हैं?

उत्तरह्नहां, जा सकते हैं।

प्रश्न ३५१. अरहंत की गति कौन सी?

उत्तरह्नसिद्ध गति।

प्रश्न ३५२. अरहंत की आगति कौन सी? अर्थात् आयुष्य पूर्ण कर पुनः कौन सी गति में जाते हैं?

उत्तरह्नचार गति में से एक में भी नहीं।

प्रश्न ३५३. भावी तीर्थंकर के जीव के ५६३ भेदों में से कितने भेदों में आता है?

उत्तरह्न३८ भेदों में पर्याप्ता।

१२ देवलोक + ९ ग्रैवेयक + ५ अनुत्तर + ९ लोकान्तिक + ३ नरक (प्रथम)।

प्रश्न ३५४. घातकी खण्ड में एक समय में कितने तीर्थंकर जनम लेते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-४, उत्कृष्ट-८।

प्रश्न ३५५. जम्बूद्वीप में एक समय में कितने तीर्थंकर जन्म लेते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-२, उत्कृष्ट-४।

प्रश्न ३५६. अर्धपुष्कर में एक समय में कितने तीर्थंकर जन्म लेते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-४, उत्कृष्ट-८।

प्रश्न ३५७. अढ़ाई द्वीप में एक समय में कितने तीर्थंकर जन्म लेते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-१०, उत्कृष्ट-२०।

प्रश्न ३५८. इत्वरिक चारित्र कौन से तीर्थंकर के समय में होता है?

उत्तरह्नभरत व ऐरावत क्षेत्र में प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में।

प्रश्न ३५९. यावत्कथित चारित्र कौन से तीर्थंकर के समय में होता है?

उत्तरह्नभरत व ऐरावत क्षेत्र में मध्यवर्ती २२ तीर्थंकरों के शासनकाल में।

प्रश्न ३६०. अरहंत, जिन, केवली, वीतराग के कौन सा बंध होता है?

उत्तरह्नईर्यापथिक।

प्रश्न ३६१. ईर्यापथिक बंध की स्थिति कितनी होती है?

उत्तरह्नदो समय कीह्नप्रथम समय में बंधता है, दूसरे समय में उसका भोग होता है और तीसरे समय में वह क्षय हो जाता है।

प्रश्न ३६२. अरहंत के कौन-से तीन कर्मांश एक साथ क्षीण होते हैं?

उत्तरह्न१. ज्ञानावरणीय २. दर्शनावरणीय और ३. अंतराय।

प्रश्न ३६३. महाविदेह में विचरण करने वाले अरहंत कितने याम का धर्मोपदेश करते हैं?

उत्तरह्नचातुर्याम का।

प्रश्न ३६४. भरत व ऐरवत में अरहंत कितने याम का धर्मोपदेश करते हैं?

उत्तरह्नमध्यवर्ती २२ तीर्थंकर चातुर्याम का और प्रथम व अंतिम तीर्थंकर पंचयाम का धर्मोपदेश करते हैं।

प्रश्न ३६५. केवलज्ञान व केवलदर्शन प्राप्त अरहंत कौन से कर्मों का वेदन करते हैं?

उत्तरह्नचार अघाति कर्मों का।

प्रश्न ३६६. अरहंतों का देह परिमाण किससे मापा जाता है?

उत्तरह्नउत्सेधांगुल से।

प्रश्न ३६७. अरहंत कौन से शूर होते हैं?

उत्तरह्नक्षमाशूर।

प्रश्न ३६८. अरहंत कितने प्रकार के होतें हैं?

उत्तरह्नचार प्रकार केह्न

नामह्नअरहंत के नामह्नजैसे ऋषभादि।
स्थापनाह्नमूर्तियां चित्र आदि।
द्रव्यह्नभावी तीर्थंकरह्नजैसे श्रेणिक का जीव।
भावह्नअष्टमहाप्रातिहार्य से सम्पन्न।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३६९. अरहंत मोक्षावस्था को प्राप्त करते समय ऋजुगति से जाते हैं या वक्रगति से?

उत्तरह्नऋजुगति से।

प्रश्न ३७०. भावी अरहंत की आत्मा आर्य क्षेत्र की होती है या अनार्य क्षेत्र की?

उत्तरह्नआर्य क्षेत्र की।

प्रश्न ३७१. एक कालचक्र में कितनी चौबीसियां होती हैं?

उत्तरह्नदो।

प्रश्न ३७२. तीर्थंकर पदवीधर छह में कौन और नव में कौन?

उत्तरह्नछह में एकह्नजीव। नौ में एक जीव।

प्रश्न ३७३. क्या चौबीस तीर्थंकरों के सर्वसमय और सर्वक्षेत्र में चारित्र पांचों ही होते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

क्षेत्र	समय	चारित्र संख्या
१. पांच भरत, पांच ऐरवत	२२वें तीर्थंकर के समय में	सामायिक, सूक्ष्मसम्पराय, यथाख्यात।
२. पांच भरत पांच ऐरवत	प्रथम व चरम तीर्थंकर के समय में	पांचों ही चारित्र
३. पांच महाविदेह में	सर्वकाल में	सामायिक, सूक्ष्मसंपराय और यथाख्यात चारित्र।

प्रश्न ३७४. अरहंतों की सिद्धि कौन से अनशन में होती है?

उत्तरह्नपादोपगमन अनशन में।

प्रश्न ३७५. 'णमो अरहंताणं' पद में तीर्थंकर ही आते है या केवली भी आते हैं?

उत्तरह्नकेवलह्नतीर्थंकर ही। सामान्य केवली पांचवें पद में आते हैं।

प्रश्न ३७६. वीतराग और अरहंत में क्या अन्तर है?

उत्तरह्नवीतराग छद्मस्थ और केवली दोनों होते हैं जबकि अरहंत केवली ही होते हैं। वीतराग में ११वां, १२वां, १३वां, १४वां, गुणस्थान होता है। जबकि केवली में १३वां, १४वां दो ही गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न ३७७. आठ कर्मों की कितनी प्रकृतियां है? उसमें से अरहंत में कितनी?

उत्तरह्न१४८। अरहंत में अभी ८५ प्रकृतियां शेष हैं।

प्रश्न ३७८. अरहंत भगवान ने १४८ प्रकृतियों में कितनी क्षय की हैं? वे कौन सी हैं?

उत्तरह्नअरहंत भगवन ने ६३ कर्म प्रकृति को क्षय किया हैंह्न

ज्ञानावरणीय कीह्न५
दर्शनावरणीय कीह्न९
मोहनीय कीह्न२८
अंतराय कीह्न५
आयुष्य कीह्न३
नामकर्म कीह्न३

प्रश्न ३७९. अरहंत कृतकृत्य होते हैं। कुछ करणीय शेष नहीं रहता, फिर वे प्रवचन क्यों करते हैं?

उत्तरह्नजिज्ञासा के समाधान में प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया हैह्न'सव्वजग-जीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं' संसार के सब प्राणियों की रक्षा करने अर्थात् उन्हें पतन से बचाने के लिए तीर्थंकर प्रवचन करते हैं।

प्रश्न ३८०. अरहंत प्रथम या सिद्ध?

उत्तरह्नसिद्ध मुक्त हो गये इसलिये प्रथम तो सिद्ध ही हैं। किन्तु वर्तमान में अरहंत संसार को आध्यात्मिक मार्गदर्शन कराते हैं इस दृष्टि से वे प्रथम पद में हैं।

प्रश्न ३८१. अरहंत और सिद्ध में क्या अन्तर हैं?

उत्तरह्न	अरहंत	सिद्ध
१.	चार कर्मों को नष्ट करते हैं।	१. आठों ही कर्म नष्ट हो जाते हैं।
२.	शरीरयुक्त है।	२. शरीरमुक्त होते हैं।
३.	संसारी है।	३. सिद्ध है।
४.	आकारसहित हैं।	४. निराकार है।
५.	परोपकार के लिए प्रवचन करते हैं।	५. प्रवचन नहीं करते।

प्रश्न ३८२. अरहंत और केवली में क्या अन्तर हैं?

उत्तरह्नयद्यपि तीर्थंकर और केवलज्ञानी की ज्ञान-सम्पदा में कोई अन्तर नहीं होता। फिर भी तीर्थंकर पद महत्त्वपूर्ण होने के कारण कुछ अलग विशेषताएं हैं। अलग पहचान हैं।[1]

१. देखिये परिशिष्ट

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३८३. योग निरोध के बाद तीर्थंकर समवसरण में बोलते है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ३८४. तीर्थंकर का देहविलय हो जाने पर उनकी चिता की रचना कौन करते हैं?

उत्तरह्नदेवेन्द्र आभियोगिक देवों द्वारा चिता की रचना करवाते हैं।[1]

प्रश्न ३८५. तीर्थंकर की चिता का आकार कैसा होता है?

उत्तरह्नगोलाकार।

प्रश्न ३८६. तीर्थंकर की चिता की रचना कौन सी दिशा में होती है?

उत्तरह्नपूर्व दिशा में (एकान्त स्थान में)।

प्रश्न ३८७. तीर्थंकर की चिता को कौन प्रज्ज्वलित करता है?

उत्तरह्नतीर्थंकर की चिता पर अग्निकुमार देवों द्वारा अग्नि काय की विकुर्वणा कर अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

प्रश्न ३८८. भगवान की चिता बुझ जाने पर उनकी दाढ़ों को कौन ग्रहण करता हैं?

उत्तरह्नदेवेन्द्र! ऊपर की दाहिनी दाढ़ को शक्रेन्द्र, ऊपर की बायीं दाढ़ को ईशानेन्द्र, नीचे की दाहिनी दाढ़ को चमरेन्द्र (असुरेन्द्र) और नीचे बायी दाढ़ को बलीन्द्र (वैरोचनेन्द्र) ग्रहण करते हैं। शेष दाढ़ दांत, एवं अस्थि के टुकड़ों को देव-देवेन्द्र ग्रहण करते हैं। राजा, मनुष्य आदि भस्म ग्रहण करते हैं।

प्रश्न ३८९. अर्हत् की उपासना के लिए कौन सा मंत्र प्रचलित है?

उत्तरह्न'अर्हम्' मंत्र के द्वारा अर्हत् की उपासना की जाती है। अर्हं के अनेक प्रयोग मंत्र-शास्त्र में मिलते हैंह्न

- प्रथम प्रयोगह्नअर्हं का पूरे शरीर में न्यास करना।
- द्वितीय प्रयोगह्नअर्हं का कवच निर्मित करना।
- तृतीय प्रयोगह्ननाभि पर अर्हं की स्थापना कर उस पर ध्यान केन्द्रित करना। अर्हं का मृदु उच्चारण करते हुये अनुभव करनाह्ननाभि से अरुण रंग में अर्हम् की रश्मियां निकल रही है और पूरे शरीर के चारों ओर फैल रही हैं।

---

१. प्र. ३५७ से ३६१ तक (अरिहंत शोध पत्र)।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्तमान चौबीसी से संबंधित प्रश्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्तमान चौबीसी से संबंधित प्रश्न

प्रश्न १. वर्तमान चौबीसी के नाम बताइये?

उत्तरह्न १. भगवान ऋषभ प्रभु
२. भगवान अजित प्रभु
३. भगवान संभव प्रभु
४. भगवान अभिनन्दन प्रभु
५. भगवान सुमति प्रभु
६. भगवान पद्म प्रभु
७. भगवान सुपार्श्व प्रभु
८. भगवान चन्द्र प्रभु
९. भगवान सुविधि प्रभु
१०. भगवान शीतल प्रभु
११. भगवान श्रेयांस प्रभु
१२. भगवान वासुपूज्य प्रभु
१३. भगवान विमल प्रभु
१४. भगवान अनन्त प्रभु
१५. भगवान धर्म प्रभु
१६. भगवान शांति प्रभु
१७. भगवान कुंथु प्रभु
१८. भगवान अर प्रभु
१९. भगवान मल्लि प्रभु
२०. भगवान मुनिसुव्रतप्रभु
२१. भगवान नमि प्रभु
२२. भगवान अरिष्टनेमि प्रभु
२३. भगवान पार्श्व प्रभु
२४. भगवान महावीर प्रभु

प्रश्न २. वर्तमान में किनका शासनकाल चल रहा है?

उत्तरह्नभगवान महावीर स्वामी का।

प्रश्न ३. चौबीस तीर्थंकरों का शरीर प्रमाण क्या है?

उत्तरह्न तीर्थंकर	**शरीर**
१. ऋषभ	५०० धनुष
२. अजित	४५० धनुष
३. संभव	४०० धनुष
४. अभिनंदन	३५० धनुष
५. सुमति	३०० धनुष
६. पद्म	२५० धनुष
७. सुपार्श्व	२०० धनुष
८. चन्द्र प्रभु	१५० धनुष

९. सुविधि	१०० धनुष
१०. शीतल	९० धनुष
११. श्रेयांस	८० धनुष
१२. वासुपूज्य	७० धनुष
१३. विमल	६० धनुष
१४. अनन्त	५० धनुष
१५. धर्मनाथ	४५ धनुष
१६. शांति	४० धनुष
१७. कुंथु	३५ धनुष
१८. अर	३० धनुष
१९. मल्लि	२५ धनुष
२०. मुनिसुव्रत	२० धनुष
२१. नमि	१५ धनुष
२२. नेमि	१० धनुष
२३. पार्श्व	९ धनुष
२४. महावीर	७ हाथ।

प्रश्न ४. चौबीस तीर्थंकरों का वर्ण कौन सा?

उत्तरह्न
- चन्द्रप्रभु और सुविधिनाथ काह्नसफेद।
- पद्मप्रभु और वासुपूज्य काह्नलाल।
- मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि काह्नकाला।
- मल्लिनाथ और पार्श्वनाथ काह्ननीला।
- शेष सोलह तीर्थंकरों के शरीर का रंगह्नपीला।

प्रश्न ५. चौबीस तीर्थंकरों का निर्वाण स्थल कहां-कहां पर हैं?

उत्तरह्न
- भगवान ऋषभदेव काह्नअष्टापद।
- भगवान वासुपूज्य काह्नचम्पापुरी।
- भगवान नेमिनाथ काह्नगिरनार।
- भगवान महावीर काह्नपावापुरी।
- शेष २० तीर्थंकरों का सम्मेदशिखर।

प्रश्न ६. चौबीसी में कौन से तीर्थंकर ने कितनी तपस्या के बाद निर्वाण प्राप्त किया?

उत्तरह्न
- ऋषभदेव नेह्नछह की तपस्या के बाद।
- महावीर स्वामी नेह्नबेले की तपस्या के बाद।
- मध्यवर्ती २२ तीर्थंकरों ने उपवास के बाद निर्वाण प्राप्त किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ७. किस तीर्थंकर को किस तप के पश्चात् केवलज्ञान हुआ?

उत्तरह्न ● भगवान ऋषभदेव, मल्लिनाथ, पार्श्वनाथ और नेमिनाथ को तेले की तपस्या के पश्चात्।

● वासुपूज्य को उपवास के पश्चात्।

● शेष १९ तीर्थंकरों को बेले की तपस्या के पश्चात्।

प्रश्न ८. सबसे बड़ा छद्मस्थ-काल किसका?

उत्तरह्नभगवान ऋषभनाथ का (एक हजार वर्ष)।

प्रश्न ९. सबसे छोटा छद्मस्थ-काल किसका?

उत्तरह्नभगवान मल्लिनाथ का (डेढ़ प्रहर का)।

प्रश्न १०. तीर्थंकरों को दीक्षा लेने के कितने समय पश्चात् भिक्षा प्राप्त हुई?

उत्तरह्नभगवान ऋषभ को एक वर्ष बाद और शेष तीर्थंकरों को प्रथम भिक्षा दूसरे दिन प्राप्त हुई।

प्रश्न ११. तीर्थंकरों को प्रथम भिक्षा में क्या प्राप्त हुआ?

उत्तरह्नभगवान ऋषभ को प्रथम भिक्षा में इक्षुरस व शेष तीर्थंकरों को अमृतरस तुल्य परमान्न (क्षीर) प्राप्त हुआ था।

प्रश्न १२. चौबीस तीर्थंकरों में किस तीर्थंकर के अन्तर में तीर्थ विच्छेद हुआ?

उत्तरह्नचौबीस तीर्थंकरों में २३ अंतराल होते हैंह्नऋषभदेव से सुविधिनाथ पर्यन्त ८ आन्तरों में और शांतिनाथ से महावीर पर्यन्त ९ आन्तरों में तीर्थच्छेद नहीं हुआ।

१. सुविधि और शीतलनाथ के अंतराल मेंह्न१/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

२. शीतलनाथ और श्रेयांसनाथ के अंतराल मेंह्न१/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

३. श्रेयांसनाथ और वासुपूज्य के अंतराल मेंह्न३/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

४. वासुपूज्य और विमलनाथ के अंतराल मेंह्न१/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

५. विमलनाथ और अनन्तनाथ के अंतराल मेंह्न३/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

६. अनन्तनाथ और धर्मनाथ के अंतराल मेंह्न१/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

७. धर्मनाथ और शांतिनाथ के अंतराल मेंह्न१/४ पल्योपम तक तीर्थच्छेद।

प्रश्न १३. सभी तीर्थंकरों की दीक्षा कब हुई?

उत्तरह्नभगवान श्रेयांसनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, मल्लिनाथ, अरिष्टनेमि और पार्श्वह्नइन पांचों की पूर्वाह्न में और शेष १९ तीर्थंकरों की अपराह्न में दीक्षा हुई।

प्रश्न १४. वर्तमान चौबीसी में कौन से तीर्थंकर ने आहार करके दीक्षा ली?

उत्तरह्नभगवान सुमतिनाथजी।

प्रश्न १५. कितनी-कितनी तपस्या के साथ तीर्थंकरों की दीक्षा हुई?

उत्तरह्नमल्लिनाथजी और पार्श्वनाथजी ने तेले की तपस्या में, वासुपूज्यनाथजी ने उपवास की तपस्या में, शेष तीर्थंकरों ने बेले की तपस्या में दीक्षा ग्रहण की।

प्रश्न १६. कौन से तीर्थंकर पूर्वभव में चौदह पूर्व के ज्ञाता थे?

उत्तरह्नभगवान ऋषभ।

प्रश्न १७. ऋषभ को छोड़कर शेष तीर्थंकर पूर्वभव में कितने अंगों के ज्ञाता थे?

उत्तरह्नग्यारह अंगों के ज्ञाता थे।

प्रश्न १८. किस-किस तीर्थंकर ने कौन-कौन से आसन में निर्वाण को प्राप्त किया?

उत्तरह्नभगवान ऋषभ, महावीर और नेमिनाथह्नये तीन तीर्थंकर का पल्यंकासन और शेष २१ तीर्थंकर कायोत्सर्ग मुद्रा में निर्वाण को प्राप्त हुये।

प्रश्न १९. चौबीस तीर्थंकर में कितने तीर्थंकर विवाहित थे? जो अपनी संगिनी को छोड़कर दीक्षित हुये?

उत्तरह्नमल्लिनाथजी और नेमिनाथजी इन दोनों ने विवाह नहीं किया। शेष २२ तीर्थंकर अपनी संगिनी को छोड़कर दीक्षित हुये।

प्रश्न २०. कितने तीर्थंकरों ने कुमार पद एवं प्रथम वय में संयम स्वीकार किया?

उत्तरह्नवासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व और वर्धमान ने कुमार पद एवं प्रथम वय में संयम स्वीकार किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २१. कितने तीर्थंकरों ने राज्यपद को सुशोभित कर दीक्षा स्वीकार की?

उत्तरह्नवासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व और वर्धमानह्नइन पांच अर्हतों को छोड़कर शेष १९ अर्हतों ने राज्यपद को सुशोभित कर तीसरी वय में दीक्षा स्वीकार की।

प्रश्न २२. वर्तमान चौबीसी में कितने तीर्थंकर चक्रवर्ती पद को सुशोभित कर संयम मार्ग की ओर अपने कदम बढ़ाये?

उत्तरह्नतीन तीर्थंकरह्न१. शांतिनाथ २. कुंथुनाथ और ३. अरनाथ।

प्रश्न २३. इस अवसर्पिणी काल में सबसे पहले बारात किसकी गई?

उत्तरह्न२२वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि भगवान की।

प्रश्न २४. कौन से तीर्थंकर ने अपने माता-पिता को दीक्षित किया?

उत्तरह्नभगवान महावीर स्वामी।

प्रश्न २५. तीर्थंकर धर्मरूपी गंगा कहां प्रवाहित करते हैं?

उत्तरह्नआर्यक्षेत्र में।

प्रश्न २६. चौबीस तीर्थंकर के विहार क्षेत्र कौन-कौन से थे?

उत्तरह्नऋषभ, अरिष्टनेमि, पार्श्व और महावीरह्नये चारों तीर्थंकर आर्य और अनार्य दोनों क्षेत्र में विचरें, शेष २० बीस तीर्थंकर केवल आर्य क्षेत्र में।

प्रश्न २७. सबसे ज्यादा कौन से तीर्थंकर के गणधर थे?

उत्तरह्नअभिनन्दन स्वामी के ११६ गणधर थे।

प्रश्न २८. सबसे कम कौन से तीर्थंकर के गणधर थे?

उत्तरह्नभगवान पार्श्वनाथ के १० गणधर थे।

प्रश्न २९. चौबीस तीर्थंकर के कुल कितने गणधर थे?

उत्तरह्न१४५२।

प्रश्न ३०. चौबीस तीर्थंकर के कुल कितने साधु थे?

उत्तरह्न२८ लाख, ४८ हजार।

प्रश्न ३१. सबसे ज्यादा मुनि कौन से तीर्थंकर के हैं?

उत्तरह्नपद्म प्रभु के। (तीन लाख, तीस हजार)।

प्रश्न ३२. सबसे कम साधु कौन से तीर्थंकर के शासन काल में हुये?

उत्तरह्नभगवान महावीर के शासन काल मेंह्नचौदह हजार।

प्रश्न ३३. चौबीस तीर्थंकर का साध्वी परिवार कितना था?

उत्तरह्नअड़तालीस लाख सत्तर हजार आठ सौ (५८,७०,८००)।

प्रश्न ३४. सर्वाधिक साध्वी समूह कौन से तीर्थंकर के शासन काल में था?

उत्तरह्नचौथे अभिनंदनजी के छह लाख तीस हजार का।

प्रश्न ३५. सबसे कम कौन से तीर्थंकर का साध्वी मंडल था?

उत्तरह्नभगवान महावीर के छत्तीस हजार का।

प्रश्न ३६. अरिष्टनेमि प्रभु के शासन में दीक्षित होने वाले सगे भाई कितने थे?

उत्तरह्नगौतम आदि अट्ठारह भाई।

प्रश्न ३७. कौन से तीर्थंकर का प्रथम उपदेश खाली गया?

उत्तरह्नभगवान महावीर का।

प्रश्न ३८. एकाकी दीक्षा किसने ली?

उत्तरह्नभगवान महावीर ने।

प्रश्न ३९. वर्तमान चौबीसी काल में कितने अच्छेरे हुये?

उत्तरह्नअच्छेरे अर्थात् आश्चर्य। जो बात सामान्यतया नहीं होती, किन्तु आश्चर्य रूप में कभी-कभी घटित हो जाती है, उसे अच्छेरा कहते हैं। इस अवसर्पिणी काल में दस आश्चर्य हुये हैं।

प्रश्न ४०. दस आश्चर्य[1] कौन-कौन से?

उत्तरह्न १. उपसर्ग
२. गर्भहरण
३. स्त्रीतीर्थ
४. अप्रत्याख्यानी परिषद्
५. कृष्ण का अमरकंकागमन
६. सूर्य-चन्द्र का अवतरण
७. हरिवंश कुलोत्पत्ति
८. चमरोत्पात
९. एक सौ आठ सिद्ध
१०. असंयती की पूजा।

प्रश्न ४१. दस आश्चर्य में से कौन कौन से आश्चर्य किस-किस तीर्थंकर के समय में हुये?

उत्तरह्न
- ऋषभदेव के शासनकाल मेंह्नएक सौ आठ सिद्ध।
- सुविधिनाथजी के समय मेंह्नतीर्थ में असंयती की पूजा।
- शीतलनाथजी के समय मेंह्नहरिवंश कुल की उत्पत्ति।

---

१. देखिये परिशिष्ट.....।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- मल्लिनाथजीह्नस्वयं स्त्री तीर्थंकर हुये।
- नेमिनाथजी के समय मेंह्नश्री कृष्ण का अमरकंकागमन।
- शेष पांच आश्चर्य भगवान महावीर के शासन-काल में।

प्रश्न ४२. क्या दस कल्प[1] २४ ही तीर्थंकर के समय में साधु-साध्वियों के लिए अवश्य पालनीय हैं?

उत्तरह्नप्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के साधु-साध्वियों के लिये दसों ही कल्प अवश्य पालनीय है। मध्य के २२ तीर्थंकरों के समयह्न१. शय्यातरपिंड २. कृतिकर्म ३. व्रत और ४. ज्येष्ठ कल्पह्नये चार कल्प अवश्य पालनीय है। शेष छह कल्प का पालन जरूरी नहीं है। महाविदेह के लिये भी कल्प इसी प्रकार हैं।

प्रश्न ४३. भगवान ऋषभ और महावीर के बीच कितना अंतराल था?

उत्तरह्नएक कोटाकोटि सागरोपम से कुछ न्यून।

प्रश्न ४४. तीर्थंकर ऋषभ पूर्वभव में कौन से पद पर थे?

उत्तरह्नचक्रवर्ती पद पर।

प्रश्न ४५. शेष तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में क्या थे?

उत्तरह्नमांडलिक राजा।

प्रश्न ४६. किन-किन तीर्थंकरों के संतानें नहीं थी?

उत्तरह्न १. अजितनाथ
२. विमलनाथ
३. मल्लिनाथ
४. नमिनाथ
५. अरिष्टनेमि
६. पार्श्वनाथ।

प्रश्न ४७. वे कौन-कौन से तीर्थंकर है जिनकी जन्मस्थली अयोध्या है?

उत्तरह्नऋषभ, अजित, अभिनन्दन, सुमति व अनन्तप्रभु की।

प्रश्न ४८. नौवें तीर्थंकर सुविधि और बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का दूसरा नाम कौन सा है?

उत्तरह्नपुष्पदंत और रिट्ठनेमि।

प्रश्न ४९. तीर्थंकर के समय उत्कृष्ट प्रायश्चित्त कितने महिने का होता था?

उत्तरह्नप्रथम तीर्थंकर के समय बारह मास का, २२ तीर्थंकरों के समय में आठ मास का, चरम तीर्थंकर के समय छह मास का।

१. दस कल्पह्न१. अचेल २. औद्देशिक ३. शय्यातरपिण्ड ४. राजपिण्ड ५. कृतिकर्म ६. व्रतकल्प ७. पुरुष ज्येष्ठ ८. प्रतिक्रमण ९. मासकल्प १०. पर्यूषण कल्प।

प्रश्न ५०. ऐसे कौन-कौन से तीर्थंकर हैं, जिनका वर्णन वैदिक तथा बौद्धों के ग्रंथों में मिलता है?

उत्तरह्नमुख्य रूप से ऋषभ और अरिष्टनेमि का। अजित, संभव, सुमति, श्रेयांस, अनन्त, शांति, अर आदि का भी उल्लेख मिलता है।

प्रश्न ५१. मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि कौन-से वंश में उत्पन्न हुये?

उत्तरह्नहरिवंश में।

प्रश्न ५२. अवशेष तीर्थंकर कौन से वंश में उत्पन्न हुये?

उत्तरह्नइक्ष्वाकु।

प्रश्न ५३. किन-किन तीर्थंकरों के शासन काल में साध्वियों की अपेक्षा साधु अधिक हुये?

उत्तरह्ननवें, चवदहवें, पन्द्रहवें, सोलहवें तीर्थंकर के शासन काल में।

प्रश्न ५४. एक चौबीसी से दूसरी चौबीसी का कितना अन्तर हैं?

उत्तरह्नजघन्य अन्तर ८४ हजार वर्ष और उत्कृष्ट अन्तर १७ कोड़ाकोड़ी सागरोपम का है।

प्रश्न ५५. १६ प्रहर की देशना कौन-कौन से तीर्थंकर ने दी?

उत्तरह्नदो तीर्थंकरों नेह्न

१. भगवान अरिष्टनेमि ने केवलज्ञान होते ही १६ प्रहर की देशना दी।
२. भगवान महावीर ने निर्वाण के समय १६ प्रहर की देशना दी।

प्रश्न ५६. तीर्थंकरों ने सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् कितने भव किये?

उत्तरह्नश्री ऋषभदेव ने १३, चन्द्रप्रभु ने ७, शांतिनाथजी ने १२ भव, मुनिसुव्रतजी ने ९, अरिष्टनेमि ने ९ भव, भगवान पार्श्वनाथ ने १० भव, महावीर स्वामी ने २७ भव, शेष सभी तीर्थंकरों ने ३३ भव किये।

प्रश्न ५७. चौबीस तीर्थंकरों में सबसे कम शासन किसका चला?

उत्तरह्नभगवान पार्श्वनाथ का (२५० वर्ष)।

प्रश्न ५८. जैन धर्म का एक मात्र केन्द्र सरकार स्तर का अवकाश दिवस कौन सा है?

उत्तरह्नमहावीर जयन्ती।

प्रश्न ५९. २४ तीर्थंकरों के कुल कितने समवसरण हुये?

उत्तरह्नऋषभ भगवान के-८, अजितनाथजी से पार्श्वनाथजी तक-४४, और भगवान महावीर के-१२। कुल-६४ समवसरण की रचना हुई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ६०. चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति का पाठ कौन सा है?

उत्तरह्न लोगस्स।

प्रश्न ६१. लोगस्स में तीर्थंकरों का महत्त्व बताने के लिये कितनी विशेष उपमाओं का वर्णन हैं?

उत्तरह्न तीनह्नचन्द्र, सूर्य और समुद्र।

प्रश्न ६२. क्या सभी तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार समान होता है?

उत्तरह्न नहीं। भगवान ऋषभ का बारह योजन के विस्तार का, अजितनाथ से नेमिनाथ तक आधा-आधा योजन होता गया। भगवान पार्श्वनाथ के डेढ़ योजन का और भगवान महावीर का समवसरण एक योजन के विस्तार का था।

प्रश्न ६३. राजगृह में कितने तीर्थंकरों का शुभागमन हुआ?

उत्तरह्न २३ तीर्थंकरों का, वासुपूज्य प्रभु के सिवाय।

प्रश्न ६४. दीक्षा से पूर्व कौन से तीर्थंकर ने अग्नि से पक्व भोजन नहीं किया?

उत्तरह्न भगवान ऋषभ ने। उन्होंने दीक्षा से पूर्व देवों द्वारा आनीत उत्तर कुरु। एक कर्मभूमि) के फलों का आहार किया।[1]

प्रश्न ६५. भगवान ऋषभ का प्रमाद काल कितना?

उत्तरह्न एक हजार वर्ष की तपःसाधना काल में मात्र एक रात-दिन।

प्रश्न ६६. चौबीस तीर्थंकरों के माता-पिता आयुष्य पूर्ण कर कहां गये?

उत्तरह्न[2]

१ से ८ तीर्थंकरों की माता	सिद्ध	ऋषभ के पिता	नागकुमार देव में
९ से १६ तीर्थंकरों की माता	तीसरे देवलोक में	२ से ८ तीर्थंकरों के पिता	दूसरे देवलोक में
१७ से २४ तीर्थंकरों की माता	चौथे देवलोक में	९ से १६ तीर्थंकरों के पिता	तीसरे देवलोक में
		१७ से २४ तीर्थंकरों के पिता	चौथे देवलोक में।

१. आवनि १८९ चू. १ पृ. १५९,१५२।

२. प्रवचनसारोद्धार-द्वार १२, गाथा ३२५,३२६।

प्रश्न ६७. चौबीस तीर्थंकरों के समय में होने वाली प्रवर्तिनियों के नाम लिखे?

उत्तरह्न तीर्थंकर	प्रवर्तिनी
१. ऋषभ	ब्राह्मी
२. अजित	फल्गु
३. संभव	श्यामा
४. अभिनन्दन	अजिता
५. सुमति	काश्यपी
६. पद्मप्रभ	रति
७. सुपार्श्व	सोमा
८. चन्द्रप्रभु	वारुणी
१०. शीतल	सुयशा
११. श्रेयांस	धारिणी
१२. वासुपूज्य	धरिणी
१३. विमल	धरा
१४. अनन्त	पद्मा
१५. धर्म	सिवा
१६. शांति	शुभा
१७. कुंथु	दामिनी
१८. अरनाथ	रक्षी
१९. मल्लिनाथ	बन्धुमती
२०. मुनिसुव्रत	पुष्पवती
२१. नमिनाथ	अनिला
२२. नेमिनाथ	यक्षदत्ता
२३. पार्श्वनाथ	पुष्पचूला
२४. महावीर	चंदना।[1]

प्रश्न ६८. वर्तमान चौबीसी की प्रथम देशना का विषय क्या था?

उत्तरह्न १. ऋषभ प्रभुह्नज्ञान, दर्शन, चारित्र, यतिधर्म, श्रावक धर्म।
२. अजित प्रभुह्नधर्मध्यान।
३. संभव प्रभुह्नअनित्य भावना।
४. अभिनन्दन प्रभुह्नअशरण भावना।

१. प्रवचनसारोद्धार-द्वार ९, गाथा ३०७,३०९।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५. सुमति प्रभुह्नएकत्व भावना।
६. पद्म प्रभुह्नसंसार भावना।
७. सुपार्श्व प्रभुह्नअन्यत्व भावना।
८. चन्द्र प्रभुह्नअशुचि भावना।
९. सुविधि प्रभुह्नआश्रव भावना।
१०. शीतल प्रभुह्नसंवर भावना।
११. श्रेयांस प्रभुह्ननिर्जरा भावना।
१२. वासुपूज्य प्रभुह्नधर्म भावना।
१३. विमल प्रभुह्नबोधि दुर्लभ भावना।
१४. अनन्त प्रभुह्नलोक भावना, नव तत्त्व का स्वरूप।
१५. धर्म प्रभुह्नमोक्ष के उपाय, कषायों का स्वरूप।
१६. शांति प्रभुह्नइन्द्रियजय के विषय।
१७. कुंथु प्रभुह्नमनः शुद्धि।
१८. अर प्रभुह्नराग, द्वेष, मोहजय।
१९. मल्लि प्रभुह्नसामायिक साम्यता।
२०. मुनि सुव्रत प्रभुह्नयति धर्म।
२१. नमि प्रभुह्नश्रावक के करणीय।
२२. नेमि प्रभुह्नचार महाविगय, रात्रि भोजन तथा अभक्ष्य त्याग।
२३. पार्श्व प्रभुह्नचार व्रत, साठ अतिचार तथा पन्द्रह कर्मों का वर्णन।
२४. महावीर प्रभुह्नयति धर्म, गृहस्थ धर्म तथा गणधरवाद।[1]

१. वीतराग वंदना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जंबद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान काल

क्र.सं.	तीर्थंकर का नाम	गणधर	केवलज्ञानी	मनपर्यय ज्ञानी	अवधिज्ञानी	चौदह पूर्वधर	मुनियों के साथ अनशन किया
१.	श्री ऋषभदेव	८४	२००००	१२६५०	९०००	४७५०	१०००
२.	श्री अजिनाथ	९०	२००००	१२५००	९४००	३२७०	१०००
३.	श्री संभवनाथ	१०२	१५०००	१२१५०	९६००	२१५०	१०००
४.	श्री अभिनन्दन	११६	१४०००	११६५०	९८००	१५००	१०००
५.	श्री सुमति नाथ	१००	१३०००	१०४५०	११०००	२४००	१०००
६.	श्री पद्म प्रभु	१०७	१२०००	१०३००	१००००	२३००	३०८
७.	श्री सुपार्श्वनाथ	९५	११०००	९१५०	९०००	२०३०	५००
८.	श्री चन्द्र प्रभु	९३	१००००	८०००	८०००	२०००	१०००
९.	श्री सुविधिनाथ	८६	७५००	७५००	८४००	१५००	१०००
१०.	श्री शीतलनाथ	८३	७०००	७५००	७२००	१४००	१०००
११.	श्री श्रेयांसनाथ	६६	६५००	६०००	६०००	१३००	१०००
१२.	श्री वासुपूज्य	६२	६०००	६०००	५४००	१२००	६०००
१३.	श्री विमलनाथ	५६	५५००	५५००	४८००	११००	६०००
१४.	श्री अनन्तनाथ	५४	५०००	५०००	४३००	१०००	७०००
१५.	श्री धर्म नाथ	४८	४५००	४५००	३६००	९००	१०८
१६.	श्री शांतिनाथ	९०	४३००	४०००	३०००	९३००	९००
१७.	श्री कुंथुनाथ	३७	३२३२ (३२००)	८१००	९१००	६७०	१०००
१८.	श्री अरनाथ	३३	२८००	२५५१	२६००	६१०	१०००
१९.	श्री मल्लिनाथ	२८	३२००	५७००	५९००	५६८	५०० साधु ५०० साध्वी
२०.	श्री मुनिसुव्रत	१८	१८००	१५००	१८००	५००	१००० मुनि
२१.	श्री नमिनाथ	१७	१६००	१२६०	३९००	४५०	१००० मुनि
२२.	श्री अरिष्टनेमि	१८	१५००	१०००	१५००	४००	५३६मुनि के साथ
२३.	श्री पार्श्वनाथ	८	१०००	७५०	१४००	३५०	
२४.	श्री महावीर	११	७००	५००	१३००	३००	

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में हुए २४ तीर्थंकरों के गणधर आदि परिवार का कोष्ठक (नक्शा)

वैक्रिय लब्धिधारी	चर्चावादी विजय	साधु	साध्वी	श्रावक	श्राविका
२०६००	१२६५०	८४०००	३०००००	३०५०००	५५४०००
२०४००	१२४००	१०००००	३३००००	२९८०००	५४५०००
१९८००	१२०००	२०००००	३३६०००	२९३०००	६३६०००
१९०००	११०००	३०००००	६३००००	२८८०००	५२७०००
१८४००	१०६५०	३२००००	५३००००	२८१०००	५१६०००
१६८००	९६००	३३००००	४२००००	२७६०००	५०५०००
१५३००	८६००	३०००००	४३००००	२५७०००	४९३०००
१४०००	७६००	२५००००	३८००००	२५००००	४९१०००
१३०००	६०००	२०००००	१२००००	२२९०००	४७१०००
१२०००	५८००	१०००००	१०००००	२८९०००	४५८०००
११०००	५०००	८४०००	१०३०००	२७९०००	४४८०००
१००००	४७००	७२०००	१०००००	२१५०००	४३६०००
९०००	३२००	६८०००	१००८००	२०८०००	४२४०००
८०००	३२००	६६०००	६२०००	२०६०००	४१४०००
७०००	२८००	६४०००	६२४००	२०४०००	४१३०००
६००	२४००	६२०००	६१६००	२९००००	३९३०००
५१००	२०००	६००००	६०६००	१७९०००	३८१०००
७३००	१६००	५००००	६००००	१८४०००	३७२०००
२९००	१४००	४००००	५५०००	१८३०००	३७००००
२०००	१२००	३००००	५००००	१७२०००	३५००००
५०००	१०००	२००००	४१०००	१७००००	३४८०००
१५००	८००	१८०००	४००००	१६९०००	३३६०००
११००	६००	१६०००	३८०००	१६४०००	३२७०००
७००	४००	१४०००	३६०००	१५९०००	३१८०००

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	पूर्वभव का नाम	देवलोक का नाम	देवलोक आयुष्य	च्यवन नक्षत्र	च्यवन तिथि
१.	श्री ऋषभदेव	वज्रनाभ	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	उत्तराषाढ़ा	आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी
२.	श्री अजितनाथ	विमलवाहन राजा	विजय विमान	३३ सागरोपम	रोहिणी	वैशाख शुक्ला त्रयोदशी
३.	श्री संभवनाथ	विपुल वाहन	नवम देवलोक (सातवां ग्रैवेयक)	२९ सागरोपम	मृगशिरा	फाल्गुन शुक्ला अष्टमी
४.	श्री अभिनन्दन	महाबल राजा	विजय विमान	३३ सागरोपम (३२ सागरोपम)	अभिजीत	वैशाख शुक्ला चतुर्थी
५.	श्री सुमतिनाथ	पुरुषसिंह	वैजयन्त विमान	३२ सागरोपम (३२ सागरोपम)	मघा	माघ शुक्ला द्वितीया
६.	श्री पद्मप्रभु	अपराजित राजा	नवम ग्रैवेयक	३१ सागरोपम	चित्रा नक्षत्र	माघ कृष्णा षष्ठी
७.	श्री सुपार्श्वनाथ	नंदिसेण राजा	छट्ठा ग्रैवेयक	२८ सागरोपम	अनुराधा	भाद्रपद कृष्णा अष्टमी
८.	श्री चन्द्रप्रभु	पद्म राजा	वैजवन्त विमान (विजय विमान)	३३ सागरोपम (३२ सागरोपम)	अनुराधा	चैत्र कृष्णा पंचमी
९.	श्री सुविधिनाथ	महापद्म राजा	वैजयन्त विमान (नव देवलोक)	३३ सागरोपम (१९ सागरोपम)	मूल	फाल्गुन कृष्णा नवमी
१०.	श्री शीतलनाथ	पद्मोत्तर राजा	प्राणत कल्प	२० सागरोपम	पूर्वाषाढ़ा	वैशाख कृष्णा षष्ठी
११.	श्री श्रेयांसनाथ	नलिनीगुल्म	महाशुक्र (अच्युत)	१७ सागरोपम (उत्कृष्ट आयु) २२ सागरोपम	श्रवण	जेठ कृष्णा षष्ठी
१२.	श्री वासुपूज्य	पद्मोत्तर राजा	प्राणत	२० सागरोपम (उत्कृष्ट आयु)	शतभिषा	जेठ शुक्ला नवमी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जन्म नक्षत्र	जन्म तिथि	पिता का नाम	माता का नाम	नगरी	आयुष्य
उत्तराषाढ़ा	चैत्र कृष्णा अष्टमी	नाभिराजा	मरूदेवी	विनीता	८४ लाख पूर्व
रोहिणी	माघ शुक्ला अष्टमी	जितशत्रु	विजया देवी	विनीता	७२ लाख पूर्व
मृगशिरा	मिगसर शुक्ला चतुर्दशी	जितारि राजा	सेना देवी	श्रावस्ती	६० लाख पूर्व
अभीजित	माघ शुक्ला द्वितीया	संवर राजा	सिद्धार्थ रानी (सिद्धार्थ रानी)	अयोध्या	५० लाख पूर्व
मघा	वैशाख शुक्ला अष्टमी	मेघरथ राजा	मंगला रानी	विनीता	४० लाख पूर्व
चित्रा	कार्तिक कृष्णा तेरस	धर राजा (श्रीधर राजा)	सुसीमा रानी	कौशाम्बी	३० लाख पूर्व
विशाखा	जेठ शुक्ला तेरस	प्रतिष्ठ राजा (प्रतिष्ठसेन राजा)	पृथ्वी रानी	वाराणसी	२० लाख पूर्व
अनुराधा	पौष कृष्णा तेरस	महासेन राजा	लक्ष्मणा रानी	चंद्रानना (चंद्रपुरी)	१० लाख पूर्व
मूल	मिगसर कृष्णा अष्टमी	सुग्रीव राजा	रामा रानी	काकन्दी	२ लाख पूर्व
पूर्वाषाढ़ा	माघ कृष्णा बारस	दृढ़रथ राजा	नन्दा रानी	भद्दिलपुर	१ लाख पूर्व
श्रवण	फाल्गुन कृष्णा बारस	विष्णु राजा	विष्णु देवी	सिंहपुर	८४ लाख वर्ष
वरुण	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी	वसुपूज्य राजा (वसुराजा)	जया रानी	चंपा नगरी	७२ लाख वर्ष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	पूर्वभव का नाम	देवलोक का नाम	देवलोक आयुष्य	च्यवन नक्षत्र	च्यवन तिथि
१३.	विमलनाथ	पद्मसेन राजा	सहस्रार	१८ सागरोपम	उत्तराभाद्रपद	वैशाख शुक्ला बारस
१४.	अनन्तनाथ	पद्मरथ राजा	प्राणत	२० सागरोपम	रेवती	श्रावण कृष्ण सप्तमी
१५.	धर्मनाथ	दृढ़रथ राजा	वैजयन्त (विजय)	३२ सागरोपम	पुष्य	वैशाख शुक्ला सप्तमी
१६.	शांतिनाथ	मेघरथ राजा	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	भरणी	भाद्रपद कृष्णा सप्तमी
१७.	कुंथुनाथ	सिंहावह राजा	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	कृतिका	श्रावण कृष्णा नवमी
१८.	अरनाथ	धनपति राजा	नवम ग्रैवेयक मतान्तर में सर्वार्थ सिद्ध विमान	३१ सागरोपम मतान्तर में ३३ सागरोपम	रेवती	फाल्गुन शुक्ला बीज
१९.	मल्लिनाथ	महाबल राजा	वैजयन्त	३२ सागरोपम	अश्विनी	फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी
२०.	मुनिसुव्रत	सुरश्रेष्ठ राजा	प्राणतकल्प मतान्तर में अपराजित विमान	२० सागरोपम मतान्तर में ३२ सागरोपम	श्रवण	श्रावण पूर्णिमा
२१.	नमिनाथ	सिद्धार्थ राजा	अपराजित विमान	३२ सागरोपम	अश्विनी	आसोज शुक्ला पूर्णिमा
२२.	अरिष्टनेमि	शंख राजा	अपराजित विमान	३२ सागरोपम	चित्रा	कार्तिक कृष्णा बारस
२३.	पारसनाथ	सुवर्णबाहु राजा	प्राणत कल्प	२० सागरोपम	विशाखा	चैत्र कृष्णा चतुर्थी
२४.	महावीर	नन्दन मुनि	प्राणत देवलोक	२० सागरोपम	उत्तराषाढ़ा	आषाढ़ शुक्ला षष्ठी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जन्म नक्षत्र	जन्म तिथि	पिता का नाम	माता का नाम	नगरी	आयुष्य
उत्तराभाद्र पद	माघ शुक्ला तीज	कृतवर्माण राजा (कृतभानु राजा)	श्यामा देवी रानी	कांपिल्य	६० लाख वर्ष
पुष्य	वैशाख कृष्णा तेरस	सिंहसेन राजा (शंख राजा)	सुयशा रानी	अयोध्या	३० लाख वर्ष
पुष्य	माघ शुक्ला तीज	भानु राजा	सुव्रता रानी	रत्नपुर	१० लाख वर्ष
भरणी	जेठ कृष्णा तेरस	विश्वसेन राजा	अचिरा (अचला)	हस्तिनापुर	१ लाख वर्ष
कृतिका	वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	सूर राजा	श्रीदेवी रानी	हस्तिनापुर	९५ हजार वर्ष
रेवती	माघ शुक्ला दशमी	सुदर्शन राजा	महादेवी रानी	हस्तिनापुर	८४ हजार वर्ष
अश्विनी	माघ शुक्ला एकादशी	कुंभ राजा	प्रभावती	मिथिला	५५ हजार वर्ष
श्रवण	जेठ कृष्ण अष्टमी	सुमित्र राजा	पद्मावती रानी	राजगृह	३० हजार वर्ष
अश्विनी	श्रावण कृष्णा अष्टमी	विजय राजा	वप्रा रानी	मिथिला	१० हजार वर्ष
चित्रा	श्रावण शुक्ल पंचमी	समुन्द्र विजय राजा	शिवा देवी रानी	सूर्यपुर	१ हजार वर्ष
अनुराधा	पौष कृष्णा दशमी	अश्वसेन राजा	वामा देवी	वाराणसी	१०० वर्ष
उत्तराषाढ़ा	चैत्र शुक्ला तेरस	सिद्धार्थ राजा	त्रिशला देवी रानी	क्षत्रियकुंड नगर	७२ वर्ष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	कुमार वय	राज पदवी	धनुष	वर्ण	लक्षण	दीक्षा शिविका तथा उद्यान
१.	श्री ऋषभदेव	२० लाख पूर्व	६३ लाख पूर्व	५०० धनुष	सुवर्ण	वृषभ	सुदर्शन शिविका तथा सिद्धार्थ नाम उद्यान
२.	श्री अजितनाथ	१८ लाख पूर्व	५३ लाख पूर्व	४५० धनुष	सुवर्ण	गज	सुप्रभा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
३.	श्री संभवनाथ	१५ लाख पूर्व	४४ लाख पूर्व	४०० धनुष	सुवर्ण	अश्व	सिद्धार्था शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
४.	श्री अभिनन्दन	१२$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	३६$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	३५० धनुष	सुवर्ण	वानर	अर्थसिद्ध शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
५.	श्री सुमतिनाथ	१० लाख पूर्व	२९ लाख पूर्व	३०० धनुष	सुवर्ण	क्रोंचपक्षी	अभयकरा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
६.	श्री पद्मप्रभु	७$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	२१$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	२५० धनुष	पद्म (लाल)	पद्म	सुखकारी शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
७.	श्री सुपार्श्वनाथ	५ लाख पूर्व	१४ लाख पूर्व	२०० धनुष	सुवर्ण	स्वस्तिक	मनोहरा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
८.	श्री चन्द्रप्रभु	२$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	६$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	१५० धनुष	श्वेत	चन्द्र	मनोहरा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
९.	श्री सुविधिनाथ	$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व	$^{१}/_{२}$ लाख पूर्व (१ लाख पूर्व)	१०० धनुष	श्वेत	मगर	सूरप्रभा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीक्षा तिथि	कितनों के साथ दीक्षा ली	छद्मस्थ	केवलज्ञान नक्षत्र	केवलज्ञान तिथि	प्रथम गणधर	शासनदेव
चैत्र कृष्णा अष्टमी	४ हजार राजाओं के साथ	१ हजार वर्ष	उत्तराषाढ़ा	फाल्गुन कृष्णा ग्यारस	ऋषभसेन	गोमुख
माघ शुक्ला नवमी	१ हजार राजाओं के साथ	१२ वर्ष	रोहिणी	पोष शुक्ला एकादशी	सिंहसेनजी	महायक्ष
मिगसर शुक्ला पूर्णिमा	१ हजार राजाओं के साथ	१४ वर्ष	मृगशिरा	कार्तिक कृष्णा पंचमी	चारु	त्रिभुज
माघ शुक्ला बारस	१ हजार राजाओं के साथ	१८ वर्ष	अभिजीत	पोष शुक्ला चतुर्दशी	वज्रनाभ	यक्षेश्वर
वैशाख शुक्ला नवमी	१ हजार राजाओं के साथ	२० वर्ष	मघा	चैत्र शुक्ला एकादशी	चमर	तुबरु
कार्तिक कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओं के साथ	६ महीना	चित्रा	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा	सुव्रत	कुसुम
जेठ शुक्ला तेरस	१ हजार राजाओं के साथ	९ महीना	विशाखा	फाल्गुन कृष्णा षष्ठी	विदर्भ	मातग
पौष कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओं के साथ	३ महीना (६ महीना)	अनुराधा	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी	दत्त (दीनकरन)	विजय
मिगसर कृष्णा अष्टमी	१ हजार राजाओं के साथ	४ महीना	मूल	कार्तिक शुक्ला तृतीया	वराह	अजित

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	कुमार वय	राज पदवी	धनुष	वर्ण	लक्षण	दीक्षा शिविका तथा उद्यान
१०.	श्री शीतलनाथ	२५ हजार पूर्व	५० लाख पूर्व	९० धनुष	सुवर्ण	श्री वत्स	चन्द्रप्रभा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
११.	श्री श्रेयांसनाथ	२१ लाख पूर्व (२१ लाख वर्ष)	४२ लाख पूर्व (४२ लाख पूर्व)	८० धनुष	सुवर्ण	गेंडा	विमलप्रभा शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
१२.	श्री वासुपूज्य	१८ लाख पूर्व (१८ लाख वर्ष)	नहीं	७० धनुष	लाल	महिष	पृथ्वी शिविका तथा विहार ग्रह/वन उद्यान
१३.	श्री विमलनाथ	१५ लाख वर्ष	३० लाख वर्ष	६० धनुष	सुवर्ण	सूर	देवदत्ता शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
१४.	श्री अनन्तनाथ	$७^{१}/_{२}$ लाख वर्ष	१५ लाख वर्ष	५० धनुष	सुवर्ण	सिंचाण (बाज)	सागरदत्ता शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
१५.	श्री धर्मनाथ	$२^{१}/_{२}$ लाख वर्ष	५ लाख वर्ष	४५ धनुष	सुवर्ण	वज्र	नागदत्ता शिविका तथा वप्रकांचन उद्यान
१६.	श्री शांतिनाथ	२५ हजार वर्ष	२५ हजार वर्ष मंडलीक राजा २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	४० धनुष	सुवर्ण	मृगांक (मृग)	सर्वार्थ शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
१७.	श्री कुंथुनाथ	$२३^{३}/_{४}$ लाख वर्ष	$२३^{३}/_{४}$ हजार वर्ष राज पदवी $२३^{३}/_{४}$ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	३५ धनुष	सुवर्ण	बकरी	विजया शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीक्षा तिथि	कितनों के साथ दीक्षा ली	छद्मस्थ	केवलज्ञान नक्षत्र	केवलज्ञान तिथि	प्रथम गणधर	शासनदेव
माघ कृष्णा बारस	१ हजार राजाओं के साथ	३ महीना	पूर्वाषाढ़ा	पौष कृष्णा चतुर्दशी	आनन्द	ब्रह्म
फाल्गुन कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओं के साथ	२ महीना	श्रवण	माघ कृष्णा अमावस	गोशुभ (गौतम)	ईश्वर (मनुज)
फाल्गुन कृष्णा अमावस्या	६०० राजाओं के साथ	१ महीना	शतभिषा	माघ शुक्ला द्वितीया	सूक्ष्म (सोमजी)	कुमार
माघ शुक्ला चौथ	१ हजार राजाओं के साथ	२ वर्ष मतान्तर २ महीना	उत्तराभाद्रपद	पौष शुक्ला षष्ठी	मन्दर (महेन्द्रजी)	षणभुज
वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	१ हजार राजाओं के साथ	३ वर्ष मतान्तर ३ महीना	रेवती	वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	यश	पाताल
माघ शुक्ला तेरस	१ हजार राजाओं के साथ	२ वर्ष मतान्तर २ महीना	पुष्य	पौष शुक्ला पूर्णिमा	अरिष्ट	किन्नर
जेठ कृष्णा चतुर्दशी	१ हजार राजाओं के साथ	१ वर्ष मतान्तर १ महीना	भरणी	पौष शुक्ला नवमी	चक्रायुद्ध (चक्खूजी)	गरुड
वैशाख कृष्णा पंचमी	१ हजार राजाओं के साथ	१६ वर्ष मतान्तर १६ महीना	कृतिका	चैत्र शुक्ला तीज	स्वयंभू	गन्धर्व

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	कुमार वय	राज पदवी	धनुष	वर्ण	लक्षण	दीक्षा शिविका तथा उद्यान
१८.	श्री अरनाथ	२१ हजार वर्ष	२१ हजार वर्ष मंडलीक राजा २१ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	३० धनुष	सुवर्ण	नन्दावर्त	वैजयन्ती शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
१९.	श्री मल्लिनाथ	१०० वर्ष		२५ धनुष	नीला	कुंभ	जयन्ती शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
२०.	श्री मुनिसुव्रत	७$^{1}/_{2}$ हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	२० धनुष	श्याम	कूर्म	अपराजिता शिविका तथा नील गुहा/वन उद्यान
२१.	श्री नमिनाथ	२$^{1}/_{2}$ हजार वर्ष	५ हजार वर्ष	१५ धनुष	सुवर्ण	नीलकमल	देवकुरु शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
२२.	श्री अरिष्टनेमि	३०० वर्ष		१० धनुष	कृष्ण	शंख	उत्तरकुरु शिविका तथा सहस्राम वन उद्यान
२३.	श्री पारसनाथ	३० वर्ष		९ धनुष	नीला	सर्प	विशाला शिविका तथा आश्रमपद उद्यान
२४.	श्री महावीर	३० वर्ष		७ धनुष	सुवर्ण	सिंह	चंद्रप्रभा शिविका तथा ज्ञात खण्ड उद्यान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीक्षा तिथि	कितनों के साथ दीक्षा ली	छद्मस्थ	केवलज्ञान नक्षत्र	केवलज्ञान तिथि	प्रथम गणधर	शासनदेव
माघ शुक्ला एकादशी	१ हजार राजाओं के साथ	३ वर्ष मतान्तर ९ महीना	रेवती	कार्तिक शुक्ला बारस	कुंभ (करन)	षट्भुज
मिगसर शुक्ला एकादशी	१ हजार पुरुष ३०० स्त्रियों के साथ	१ प्रहरी झाझेरी	अश्विनी	मिगसर शुक्ला एकादशी	भिषक (अभिक्षक)	कुबेर
माघ शुक्ला बारस	१ हजार राजाओं के साथ	११ महीना	श्रवण	फाल्गुन कृष्णा बारस	इन्द्र	वरुण
आषाढ़ कृष्णा नवमी	१ हजार राजाओं के साथ	९ महीना	अश्विनी	मिगसर शुक्ला एकादशी	कुंभ	भृकुटी
श्रावण शुक्ला षष्ठी	१ हजार राजाओं के साथ	५४ दिन	चित्रा	असोज कृष्णा अमावस्या	वरदत्त	गोमेध
पौष कृष्णा एकादशी	३०० राजाओं के साथ	८४ दिन मतान्तर ८३ दिन	विशाखा	चैत्र कृष्णा चतुर्थी	आर्यदत्त	पार्श्व
मिगसर कृष्णा दशमी	अकेले	१२ १/२ वर्ष १५ दिन	उत्तराषाढ़ा	वैशाख शुक्ला दशमी	इन्द्रभूति	मातंगा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	शासनदेवी	दीक्षा पर्याय	निर्वाण तिथि	अन्तरमान
१.	श्री ऋषभदेव	चक्रेश्वरी	१ लाख पूर्व	माघ कृष्णा त्रयोदशी	ह्रह्र
२.	श्री अजितनाथ	अजित बला	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला पंचमी	५० लाख कोटि सागरोपम
३.	श्री संभवनाथ	दुरितारि	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला पंचमी	३० लाख कोटि सागरोपम
४.	श्री अभिनन्दन	कालिका	१ लाख पूर्व	वैशाख शुक्ला अष्टमी	१० लाख कोटि सागरोपम
५.	श्री सुमतिनाथ	महाकाली	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला नवमी	९ लाख कोटि सागरोपम
६.	श्री पद्मप्रभु	अच्युता	१ लाख पूर्व	मिगसर कृष्णा एकादशी	९००० लाख कोटि सागरोपम (९०००० लाख कोटि सागरोपम)
७.	श्री सुपार्श्वनाथ	शांता	१ लाख पूर्व	फाल्गुनी कृष्णा सप्तमी	९००० लाख कोटि सागरोपम
८.	श्री चन्द्रप्रभु	भ्रकुटी	१ लाख पूर्व	भाद्रपद कृष्णा सप्तमी	९००० लाख कोटि सागरोपम
९.	श्री सुविधिनाथ	सुतारा	१ लाख पूर्व (१/२ लाख पूर्व)	कार्तिक कृष्णा नवमी	९ लाख कोटि सागरोपम (९० लाख कोटि सागरोपम)
१०.	श्री शीतलनाथ	अशोका	२५ लाख पूर्व	वैशाख कृष्णा बीज	९ लाख कोटि सागरोपम
११.	श्री श्रेयांसनाथ	मानवी (श्री वत्सा)	२५ लाख पूर्व	श्रावण कृष्णा तृतीया	१ लाख कोटि सागरोपम में, १०० सागर ६६, लाख २६ हजार वर्ष कम
१२.	श्री वासुपूज्य	चन्द्रा	५४ लाख पूर्व	आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी	५४ सागरोपम
१३.	श्री विमलनाथ	विदिता	१५ लाख वर्ष	आषाढ़ कृष्णा सप्तमी	३० सागरोपम
१४.	श्री अनन्तनाथ	अंकुशा	११/२ लाख वर्ष	चैत्र शुक्ला पंचमी	९ सागरोपम
१५.	श्री धर्मनाथ	कन्दर्पा	२१/२ लाख वर्ष	जेठ शुक्ला पंचमी	४ सागर
१६.	श्री शांतिनाथ	निर्वाणी	२५ हजार वर्ष	जेठ कृष्णा तेरस	३ सागर में पौन पल कम (.....पौन पल्योपम कम)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	नाम	शासनदेवी	दीक्षा पर्याय	निर्वाण तिथि	अन्तरमान
१७.	श्री कुंथुनाथ	बला.	२३ ३/४ हजार वर्ष	वैशाख कृष्णा एकम	अर्ध पल्योपम
१८.	श्री अरनाथ	धारिणी	२१ हजार वर्ष	माघ शुक्ला दशमी	कोटि हजार वर्ष कम पल्योपम का चौथा भाग
१९.	श्री मल्लिनाथ	वैरोट्या	१०० वर्ष कम ५५ हजार वर्ष	फाल्गुन शुक्ला बारस	कोटि हजार वर्ष
२०.	श्री मुनिसुव्रत	नरदत्ता	७ १/२ हजार वर्ष	ज्येष्ठ कृष्णा नवमी	५४ हजार वर्ष
२१.	श्री नमिनाथ	गांधारी	२ १/२ हजार वर्ष	वैशाख कृष्णा दशमी	६ लाख वर्ष
२२.	श्री अरिष्टनेमि	अम्बिका	७०० वर्ष	आषाढ़ शुक्ला अष्टमी	५ लाख वर्ष
२३.	श्री पारसनाथ	पद्मावती	७० वर्ष	श्रावण शुक्ला अष्टमी	८३ हजार ७५० वर्ष
२४.	श्री महावीर	सिद्धायिका	४२ वर्ष	कार्तिक कृष्णा अमावस्या	२५० वर्ष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो सिद्धाणं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो सिद्धाणं

प्रश्न १. नमस्कार महामंत्र का दूसरा पद कौन सा है?

उत्तरह्नणमो सिद्धाणं।

प्रश्न २. नमस्कार महामंत्र के दूसरे पद में किन्हें नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नसिद्धों को।

प्रश्न ३. णमो सिद्धाणं पद में अक्षर कितने?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न ४. णमो सिद्धाणं में लघु और गुरु अक्षर कितने?

उत्तरह्नएक गुरु और चार लघु।

प्रश्न ५. णमो सिद्धाणं में ह्रस्व और दीर्घ अक्षर कितने?

उत्तरह्नह्रस्वह्नतीन और दीर्घ दो।

प्रश्न ६. सिद्धों का रंग कौन सा?

उत्तरह्नलाल (अरुण रंग) उदित होते हुए सूर्य के समान।

प्रश्न ७. सिद्ध पद का ध्यान कौन से चैतन्य-केन्द्र पर किया जाता है?

उत्तरह्नदर्शन-केन्द्र पर (दोनों भृकुटि का मध्य भाग)।

प्रश्न ८. सिद्धों के गुण कितने?

उत्तरह्नआठ।

प्रश्न ९. सिद्धों के आठ गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न १. केवलज्ञान
२. केवलदर्शन
३. असंवेदन
४. आत्मरमण
५. अटल अवगाहन
६. अमूर्ति
६. अगुरु-लघु
८. निरन्तराय।

प्रश्न १०. सिद्धों को आठ गुणों की प्राप्ति कैसे हुई?

उत्तरह्न १. ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय सेह्नकेवलज्ञान।
२. दर्शनावरणीय कर्म के क्षय सेह्नकेवलदर्शन।
३. वेदनीय कर्म के क्षय सेह्नअसंवेदन।
४. मोहनीय कर्म के क्षय सेह्नआत्मरमण (क्षायिक सम्यक्त्व)।
५. आयुष्य कर्म के क्षय सेह्नअटल अवगाहन।
६. नाम कर्म के क्षय सेह्नअमूर्त्ति।
७. गोत्र कर्म के क्षय सेह्नअगुरुलघु।
८. अंतराय कर्म के क्षय सेह्ननिरन्तराय।

प्रश्न ११. समवायांग, उत्तराध्ययन और आवश्यक सूत्र में सिद्धों के कितने गुणों का वर्णन मिलता है?

उत्तरह्न३१ गुणों का।

प्रश्न १२. ३१ गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नआठ कर्म की ३१ प्रकृतियों का क्षय होने से ३१ गुणों की प्राप्ति होती है। जो निम्न हैंह्नज्ञानावरणीय-५, दर्शनवारणीय-९, वेदनीय-२, मोहनीय-२, आयुष्य-४, नाम-२, गोत्र-२ और अंतराय-५।

प्रश्न १३. सिद्धों के अन्य ३१ गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नपांच संस्थान, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, तीन वेदह्नइन अठाईस पौद्गलिक भावों के क्षीण होने से २८ गुणयुक्त तथा अकाय, असंग और अरुह इन ३ गुण सहित ३१ गुणयुक्त सिद्ध होते हैं।

प्रश्न १४. मोक्ष प्राप्ति में किस-किस का समवाय होना जरूरी है?

उत्तरह्न१. काल २. स्वभाव ३. नियति (भवितव्यता) ४. पूर्वकृतकर्मक्षय ५. पुरुषार्थह्नइन पांच कारणों का समवाय होने पर प्राणी को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रश्न १५. मोक्ष का स्वरूप क्या है?

उत्तरह्नआठों कर्मों का पूर्ण रूप से क्षय होने पर आत्मा का ज्ञान-दर्शनमय स्वरूप में अवस्थित होना मोक्ष है।

प्रश्न १६. मोक्ष कहां है?

उत्तरह्नमोक्ष किसी स्थान विशेष का नहीं है अपितु कर्ममुक्त आत्मा की अवस्था ही मोक्ष है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १७. मोक्ष की नींव कब लग जाती है?

उत्तरह्नएक बार सम्यक्त्व का स्पर्श हो जाने पर।

प्रश्न १८. सिद्ध आत्मा किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो आत्मायें जन्म-मरण की शृंखला से मुक्त होकर अपने स्वरूप में अवस्थित हो गई हैं, उसे सिद्ध कहते हैं।

प्रश्न १९. मोक्ष के योग्य अधिकारी कौन?

उत्तरह्न १. भव्यसिद्धिक
२. बादर
३. त्रस
४. संज्ञी
५. पर्याप्त
६. वज्रऋषभनाराच
७. मनुष्य गति
८. अप्रमादी
९. क्षायिक सम्यक्त्वी
१०. अवेदी
११. अकषायी
१२. यथाख्यातचारित्री
१३. स्नातक निर्ग्रन्थ
१४. परम शुक्ललेश्यावाला
१५. पण्डित वीर्य
१६. शुक्लध्यानी
१७. केवलज्ञानी
१८. केवलदर्शनी
१९. चरम शरीरी।

ये जीव मोक्ष के अधिकारी है।

प्रश्न २०. इन उन्नीस बोलों में से सिद्धगति में जीव के साथ कितने बोल जाते हैं?

उत्तरह्नतीनह्नक्षायक सम्यक्त्व, केवलज्ञान और केवलदर्शन।

प्रश्न २१. मोक्ष प्राप्ति के साधन कौन से हैं?

उत्तरह्नतीन साधन हैंह्न१. सम्यक् ज्ञान २. सम्यग् दर्शन ३. सम्यक् चारित्र।

प्रश्न २२. मोक्ष और स्वर्ग में क्या अन्तर हैं?

उत्तरह्नमोक्ष परम सिद्धि हैं, शाश्वत सुख है। जबकि देवगति संसार चक्र का ही एक हिस्सा है। वहां भौतिक सुख एवं शक्ति अवश्य अधिक है।

प्रश्न २३. सिद्ध कितने द्वीप से होते हैं?

उत्तरह्नअढ़ाई द्वीप सेह्न१. जम्बूद्वीप २. धातकी खण्ड ३. अर्धपुष्कर।

प्रश्न २४. सिद्ध कितने द्वीप में रहते हैं?

उत्तरह्नभावी सिद्ध अढ़ाई द्वीप में ही रहते हैं। परन्तु, जो भव्यात्मा सिद्ध बन चुकी। उनका स्थान तिरछे लोक में नहीं है।

प्रश्न २५. सिद्धात्मा तीन लोक में से कितने लोक में है?

उत्तरह्नमात्र एकह्नऊर्ध्वलोक में।

प्रश्न २६. अढ़ाई द्वीप के बाहर से संसारी आत्मा सिद्ध क्यों नहीं होती?

उत्तरह्नप्रथम कारण अढ़ाई-द्वीप के बाहर मनुष्य नहीं है। दूसरा कारणह्नसिद्ध क्षेत्र में जाने वाली भव्यात्माओं की गति समश्रेणि में होती है। मनुष्यलोक और सिद्धशिला दोनों की लम्बाई-चौड़ाई बराबर है। अतः अढ़ाई द्वीप के बाहर से आत्मा सिद्ध नहीं होती।

प्रश्न २७. समश्रेणी और विषमश्रेणी किसे कहते हैं? और उसमें कितने घुमाव होते हैं?

उत्तरह्नमृत्यु क्षेत्र से उत्पत्ति क्षेत्र सीधी दिशा में होता है उसे समश्रेणी कहते हैं। उसमें जीव को कोई घुमाव नहीं करना पड़ता। मृत्यु क्षेत्र से उत्पत्ति क्षेत्र में टेढ़ी दिशा में होता है उसे विषम श्रेणी कहते हैं। उसमें पहुंचने के लिए जीव को १-२ या ३ घुमाव करने पड़ते हैं।

प्रश्न २८. सिद्धशिला के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नऔपपातिक सूत्र के अनुसार सिद्धशीला के बारह नाम हैह्न

१. ईषत्
२. ईषत्प्रागभारा
३. तनु
४. तनुतनु
५. सिद्धि
६. सिद्धालय
७. मुक्ति
८. मुक्तालय
९. लोकाग्र
१०. लोकाग्रस्तूपिका
११. लोकाग्रप्रतिबोधना
१२. सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा।

प्रश्न २९. सिद्धशिला सचित्त है या अचित्त?

उत्तरह्नसचित्त।

प्रश्न ३०. सिद्धशिला किसकी बनी हुई है?

उत्तरह्नपृथ्वीकाय जीवों की।

प्रश्न ३१. सिद्धशिला का आकार कैसा?

उत्तरह्नसिद्धशीला अर्जुन सुवर्णमय छत्राकार में है।

प्रश्न ३२. सिद्धशिला का विस्तार कितना है?

उत्तरह्न४५ लाख योजन।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३३. सिद्धशिला कितने रज्जू घनाकार विस्तार में हैं?

उत्तरह्नग्यारह रज्जू।

प्रश्न ३४. सिद्धशिला की मोटाई कितनी?

उत्तरह्नमध्य में आठ योजन की मोटाई है। वह पतली होते-होते किनारे पर मक्खी की पांख से भी अधिक पतली होती है।

प्रश्न ३५. सिद्धशिला का वर्ण कैसा?

उत्तरह्नसिद्धशिला का वर्ण शंख, चन्द्रमा, गोक्षीर, कुन्द का पुष्प आदि से भी कई गुना श्वेत है, यह स्फटिकमय है।

प्रश्न ३६. सिद्धशिला कहां है?

उत्तरह्नलोकान्त से एक योजन नीचे।

प्रश्न ३७. सिद्ध भगवान कहां रहते है?

उत्तरह्नचौदह रज्जू प्रमाण वाले लोक के, ऊर्ध्वलोक के अग्रभाग पर विराजमान है।

प्रश्न ३८. सिद्ध किसके सहारे लोकाग्र पर स्थित है?

उत्तरह्नअधर्मास्तिकाय के सहारे।

प्रश्न ३९. क्या सिद्ध ठीक सिद्धशिला पर स्थित है?

उत्तरह्ननहीं। सिद्धशिला से ऊपर कुछ कम एक योजन का लोकान्त है। उस योजन के ऊपर वाले कोस के छठे भाग में (३३३/१/३) धनुष्य परिमाण) लोकाग्र से सटकर विराजमान है।

प्रश्न ४०. सिद्ध लोकाग्र के कितने हिस्से में रहते हैं?

उत्तरह्नमात्र ४५ लाख योजन लम्बे-चौड़े क्षेत्र में।

प्रश्न ४१. क्या सिद्ध भगवान के सिद्धशिला का स्पर्श होता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ४२. सिद्धशिला पर जब सिद्ध नहीं रहते, फिर इसे सिद्धशीला क्यों कहा जाता है?

उत्तरह्नसिद्धशिला के बाद सिद्धों तक बीच में कोई पृथ्वी नहीं है, यही आखिरी पृथ्वी है। इससे ऊपर एक योजन है। उसके चौबीसवें भाग में सिद्ध अवस्थित हैं।

प्रश्न ४३. योजन के चौबीसवें भाग में केवल सिद्ध ही रहते हैं या और भी कोई जीव रहते हैं?

उत्तरह्नसिद्धों के साथ सूक्ष्म एकेन्द्रिय के जीव भी रहते हैं। सूक्ष्म जीव पूरे लोक में भरे हुए हैं वे सिद्ध क्षेत्र में भी व्याप्त है। बादर वायुकाय के जीव भी वहां हो सकते हैं।

प्रश्न ४४. सिद्धों के साथ रहने वाले एकेन्द्रिय जीवों को भी क्या मोक्ष सुख की अनुभूति होती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ४५. सिद्धशिला और सिद्धों के बीच में कितना अन्तर हैं?

उत्तरह्नसात हजार, छह सौ, छयासठ (७६६६) धनुष और ६४ अंगुल का अन्तर है। अर्थात् ७, ३६, ००० अंगुल का अन्तर है।

प्रश्न ४६. सिद्ध क्षेत्र में कितने प्रकार के सिद्ध हुये हैं?

उत्तरह्न१५ प्रकार के।

प्रश्न ४७. १५ प्रकार के सिद्ध कौन से है? नाम बताइये?

उत्तरह्न १. तीर्थसिद्ध
२. अतीर्थसिद्ध
३. तीर्थंकरसिद्ध
४. अतीर्थंकरसिद्ध
५. स्वलिंगसिद्ध
६. अन्यलिंगसिद्ध
७. गृहलिंगसिद्ध
८. स्त्रीलिंगसिद्ध
९. पुरुषलिंगसिद्ध
१०. नपुंसकलिंगसिद्ध
११. स्वयंबुद्धसिद्ध
१२. प्रत्येकबुद्धसिद्ध
१३. बुद्धबोधितसिद्ध
१४. एक सिद्ध और
१५. अनेकसिद्ध।

प्रश्न ४८. तीर्थसिद्ध किसे कहते है?

उत्तरह्नतीर्थंकर द्वारा तीर्थ की स्थापना के बाद सिद्ध होने वाले तीर्थसिद्ध कहलाते हैं। जैसेह्नगौतमस्वामी आदि।

प्रश्न ४९. अतीर्थसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरह्नतीर्थ स्थापना के पूर्व सिद्ध होने वाले को अतीर्थसिद्ध कहते हैं? जैसेह्नमरुदेवी माता।

प्रश्न ५०. तीर्थंकर सिद्ध किसे कहते हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरजो चार तीर्थ की स्थापना कर सिद्ध होते हैं, वे तीर्थंकर सिद्ध कहलाते हैं। जैसे–ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर।

प्रश्न ५१. अतीर्थंकर सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरतीर्थंकर के अतिरिक्त जो सामान्य केवली के रूप में मुक्त होते हैं, उन्हें अतीर्थंकर सिद्ध कहते हैं। जैसे–गौतम स्वामी।

प्रश्न ५२. स्वलिंगसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजैन साधुओं के वेष में सिद्ध होने वाले स्वलिंगसिद्ध होते हैं। जैसे–२४ तीर्थंकरों के शासनकाल में सिद्ध होने वाले अनेक मुनि।

प्रश्न ५३. अन्यलिंगसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो अन्यतीर्थी के वेष में मुक्त होता है, वह अन्यलिंगी सिद्ध है। जैसे–शिवराज ऋषि।

प्रश्न ५४. गृहलिंगसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो गृहस्थ वेश में मुक्त होता है। जैसे–मरूदेवी माता।

प्रश्न ५५. स्त्रीलिंग सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो स्त्री की शरीर रचना में मुक्त होता है, उसे स्त्रीलिंग सिद्ध कहते हैं। जैसे–चन्दनबाला, मृगावती आदि।

प्रश्न ५६. पुरुषलिंग सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरपुरुषलिंग में सिद्ध होने वाले। जैसे–गणधर आदि।

प्रश्न ५७. नपुंसकलिंग सिद्ध कौन होता है?

उत्तरजो कृत्रिम नपुंसक के रूप में मुक्त होता है उसे नपुंसकलिंगसिद्ध कहते हैं। जैसे–महर्षि गांगेय अणगार आदि।

प्रश्न ५८. प्रत्येकबुद्ध सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो किसी बाह्य निमित्त से प्रतिबोधित हो दीक्षा लेकर मुक्त होता है वह प्रत्येकबुद्ध सिद्ध हैं। जैसे–करकण्डू।

प्रश्न ५९. स्वयंबुद्धसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो स्वयं जाति-स्मरणादि ज्ञान से बोधि पाकर मुक्त होता है, उसे स्वयंबुद्धसिद्ध कहते हैं। जैसे–मृगापुत्र।

प्रश्न ६०. बुद्धबोधितसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो स्वयंबुद्ध तीर्थंकर, प्रत्येकबुद्ध, बुद्धबोधित, आचार्य आदि के द्वारा बोधि प्राप्त कर मुक्त होता है, उसे बुद्धबोधित सिद्ध कहते हैं। जैसे– मेघकुमार।

प्रश्न ६१. एक सिद्ध कौन होता है?

उत्तरजो एक समय में एक जीव सिद्ध होता है वह एक सिद्ध होता है। जैसे–महावीर स्वामी।

प्रश्न ६२. अनेकसिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तरजो एक समय में अनेक जीव सिद्ध होते हैं। जैसे–ऋषभदेव।

प्रश्न ६३. सिद्ध रूपी है या अरूपी?

उत्तरअरूपी।

प्रश्न ६४. क्या सिद्धों की कोई अवगाहना भी है?

उत्तरसिद्ध अरूप होने के कारण उनकी क्या अवगाहना होगी। पूर्व शरीर की अपेक्षा से सिद्धों की अवगाहना एक तिहाई ($^{1}/_{3}$) भाग कम रह जाती है।

प्रश्न ६५. सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना कितनी?

उत्तर३३३ धनुष, १ हाथ, ८ अंगुल होती है।

प्रश्न ६६. सिद्धों की मध्यम अवगाहना कितनी?

उत्तरचार हाथ और तीसरा भाग कम एक हाथ (सोलह अंगुल)।

प्रश्न ६७. सिद्धों की जघन्य अवगाहना कितनी?

उत्तरएक हाथ और आठ अंगुल अधिक।

प्रश्न ६८. कम से कम कितनी अवगाहना वाला जीव सिद्ध हो सकता है?

उत्तरदो हाथ की अवगाहना वाला।

प्रश्न ६९. अधिक से अधिक कितनी अवगाहना वाला जीव मोक्ष जा सकता है?

उत्तर५०० धनुष की अवगाहना वाला।

प्रश्न ७०. जघन्यतः व उत्कृष्टतः कितनी उम्र वाला जीव सिद्ध हो सकता है?

उत्तरजघन्यतः ८ वर्ष से कुछ अधिक और उत्कृष्टतः क्रोड़ पूर्व उम्र वाला।

प्रश्न ७१. क्या करोड़ पूर्व से अधिक आयु वाले सिद्ध नहीं बन सकते?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नहां। करोड़ पूर्व से अधिक आयु वाले यौगलिक कहलाते हैं अतः वे मोक्ष नहीं जा सकते।

प्रश्न ७२. कहा जाता है सिद्ध भगवान अनन्तगुणी है तो क्या हम उनको प्रत्यक्ष देख सकते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध अनन्तगुणी होने पर भी छद्मस्थ उन्हें प्रत्यक्ष नहीं देख सकते, परन्तु केवलज्ञानी प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

प्रश्न ७३. वर्तमान में इस भरत क्षेत्र से कोई सिद्ध हो सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ७४. क्या महाविदेह में भावी सिद्धात्मा विराजमान है?

उत्तरह्नहां। जैसेह्नबीस विहरमाण, सामान्य केवली आदि।

प्रश्न ७५. सिद्ध-भूमि की परिधि कितनी है?

उत्तरह्नस्थूलदृष्टि सेह्न१,४२,३०,२४९ योजन परिमाण है।

प्रश्न ७६. सिद्धभूमि सर्वार्थसिद्ध भूमि से कितनी दूर है?

उत्तरह्नबारह योजन ऊंचाई पर।

प्रश्न ७७. भावी सिद्ध जीव किस क्षेत्र से सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्नवर्तमान की दृष्टि से मुक्त जीवों का क्षेत्र एक ही है, आत्म प्रदेश अथवा आकाश प्रदेश। भूतकाल की दृष्टि से सिद्ध होने का स्थान एक नहीं है, क्योंकि जन्म की दृष्टि से १५ पन्द्रह कर्मभूमि में से कोई किसी एक कर्म भूमि से सिद्ध होते है तो कोई दूसरी कर्म भूमि से। संहरण की दृष्टि से समग्र मनुष्य क्षेत्र से सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न ७८. सिद्ध होने का काल कौन सा है?

उत्तरह्नवर्तमान की दृष्टि से सिद्ध होने का कोई लौकिक काल-चक्र नहीं है। क्योंकि एक ही समय में सिद्ध होते हैं। अतीत की दृष्टि से जन्म की अपेक्षा से अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी आदि में जन्में हुये जीव सिद्ध होते हैं। संहरण की दृष्टि से सभी कालों में सिद्ध होते हैं।

प्रश्न ७९. सिद्धों की गति का क्या हिसाब है?

उत्तरह्नवर्तमान की दृष्टि से सिद्धगति में ही सारे सिद्ध है। अतीत की अपेक्षा से यदि अंतिम भव को दृष्टि में रखकर विचार करे तो मनुष्य गति से तथा अंतिम से पहले भवों को लेकर विचार करे तो चारों गति से जीव सिद्ध होते हैं।

प्रश्न ८०. सिद्धों के लिंग से क्या तात्पर्य है?

उत्तरह्न १. वर्तमान की दृष्टि से सिद्ध लिंगत्रय-शून्य हैं। अतीत की दृष्टि से पुरुष-स्त्री-नपुंसकह्नइन तीनों लिंगों से सिद्ध हो सकते हैं।

२. वर्तमान की दृष्टि से सिद्ध अलिंगी है। अतीत की दृष्टि से यदि भाव लिंग या आंतरिक योग्यता का विचार किया जाये तो स्वलिंग, वीतरागता से ही सिद्ध होते हैं।

३. यदि द्रव्यलिंग की दृष्टि से विचार किया जाये तो स्वलिंग-जैनलिंग, जैन-वेश, परलिंग-जैनेतर वेश तथा गृहस्थलिंग-गृहस्थवेशह्न इन तीनों में होते हैं।

प्रश्न ८१. सिद्ध अनन्त शक्ति सम्पन्न होते हुये भी लोक के अग्रभाग पर स्थित रहते है, आगे क्यों नहीं जाते?

उत्तरह्नगति सहायक द्रव्य धर्मास्तिकाय का अभाव होने के कारण।

प्रश्न ८२. सिद्धात्मा को सिद्ध क्षेत्र तक पहुंचने के लिए कितना समय लगता है?

उत्तरह्नएक समय।

प्रश्न ८३. एक समय में कितनी भव्यात्माएं सिद्ध हो सकती है?

उत्तरह्नकम से कमह्नएक और अधिक से अधिकह्न१०८।[1]

प्रश्न ८४. तीर्थसिद्ध एक समय में कितने सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न ८५. अतीर्थ एक समय में कितने सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्न१०।

प्रश्न ८६. तीर्थंकर एक समय में कितने सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्न२०।

---

१. यदि प्रति समय १-२-३ यावत् ३२ जीव मोक्ष जाए तो निरन्तर आठ समय तक जा सकते हैं। इसके बाद निश्चित रूप से अन्तर पड़ता है। ३३ से लेकर ४८ जीव निरन्तर साम समय तक, ४९ से ६० जीव निरन्तर छह समय तक, ६१ से ७२ जीव निरन्तर पांच समय तक, ७३ से ८४ जीव निरन्तर चार समय तक, ८५ से ९६ तक के जीव निरन्तर तीन समय तक, ९७ से १०२ जीव निरन्तर दो समय तक और १०३ से १०८ जीव यदि मोक्ष जाये तो केवल एक समय तक जा सकते है अर्थात् एक समय में उत्कृष्ट १०८ जीव सिद्ध हो सकते है। इसके बाद अवश्य ही अन्तर पड़ता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ८७. अतीर्थंकर एक समय में कितने सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न ८८. स्वलिंगी एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न ८९. अन्यलिंगी एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०।

प्रश्न ९०. गृहस्थलिंगी एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नचार।

प्रश्न ९१. स्त्रीलिंग में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न२०।

प्रश्न ९२. पुरुषलिंग में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न ९३. नपुंसकलिंग में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०।

प्रश्न ९४. स्वयंबुद्ध एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नचार।

प्रश्न ९५. प्रत्येक बुद्ध एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०।

प्रश्न ९६. बुद्धबोधित एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न ९७. कितनी अवगाहना वाला जीव सिद्ध होता है?

उत्तरह्नदेह की अवगाहना तीन प्रकार की होती हैह्न

१. जघन्यह्न२ हाथ।
२. मध्यमह्न७ हाथ।
३. उत्कृष्टह्न५०० धनुष की।

इन तीनों प्रकार की अवगाहना वाला जीव सिद्ध हो सकता है।

प्रश्न ९८. जघन्य अवगाहना वाले एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नचार।

प्रश्न ९९. मध्यम अवगाहना वाले एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न १००. उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नदो।

प्रश्न १०१. तीन लोक में से कितने लोक से जीव सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्नतीनों लोक से।[1]

प्रश्न १०२. ऊर्ध्वलोक से एक समय में सिद्ध कितने हो सकते हैं?

उत्तरह्नचार।

प्रश्न १०३. मध्यलोक से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०८।

प्रश्न १०४. अधोलोक से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न२०।

प्रश्न १०५. क्या समुद्र, नदी, जलाशयों आदि से भी जीव सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न १०६. वहां ये चरम शरीरी जीव कहां से आते है?

उत्तरह्नपूर्व जन्म के दुश्मन देव द्वारा समुद्र आदि में फेंक देने से मुनि वहां पहुंच जाते हैं।

प्रश्न १०७. समुद्र से एक समय में कितने जीव सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नदो।

प्रश्न १०८. नदी, जलाशयों आदि में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

१. तत्त्वबोध/मोक्ष तत्त्वह्नचौदह रज्जवात्मक लोक में केवल पैंतालीस लाख योजन का मनुष्य लोक है। उसमें एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है। इसके पश्चिम महाविदेह की दो विजय एक हजार योजन नीचे गई हुई हैं, जबकि मध्यलोक नौ सौ योजन नीचे तक है। उससे आगे सौ योजन अधोलोक है। उसमें रहने वाले जीव भी मोक्ष में सकते हैं। मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई १७२१ योजन की है।
इसके ९०० योजन के बाद ऊर्ध्वलोक शुरू हो जाता है, वहां भी जीव मुक्त हो सकते हैं। मेरू पर्वत पर भी सिद्ध हो सकते हैं। पैतालीस लाख योजन प्रमाण इस मनुष्य लोक में एक अंगुल भूमि भी ऐसी नहीं हैं, जहां कोई न कोई मुक्त न हुआ हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्न ३ (तीन)।

प्रश्न १०९. क्या नरक से निकला हुआ जीव सिद्ध बन सकता है?

उत्तरह्न हां।

प्रश्न ११०. सात नरक में से किस-किस नरक से निकला हुआ जीव मनुष्य बनकर सिद्ध बन सकता है?

उत्तरह्न प्रथम चार नरक से।

प्रश्न १११. प्रथम चार नरक से निकले हुये जीव कम से कम और अधिक से अधिक कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न

नरक	कम से कम	अधिक से अधिक
प्रथम	१	१०
दूसरी	१	१०
तीसरी	१	१०
चौथी	१	४

प्रश्न ११२. क्या तिर्यंचगति से निकला हुआ जीव सिद्ध हो सकता है?

उत्तरह्न हां।

प्रश्न ११३. तिर्यंच गति से निकले हुये कौन-कौन से जीव कम से कम और अधिक से अधिक कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न

तिर्यंच	कम से कम	अधिक से अधिक
पृथ्वीकाय	१	४
अप्काय	१	४
वनस्पतिकाय	१	६
गर्भज तिर्यञ्च	१	१०
तिर्यंचणी	१	१०

प्रश्न ११४. तीन विकलेन्द्रिय, तेऊ, वायु से निकले जीव सिद्ध क्यों नहीं हो सकते?

उत्तरह्न तीन विकलेन्द्रिय, तेउ, वायु से निकले जीव अनन्तर भव में मनुष्य नहीं बन सकते। अतः मनुष्य भव के बिना मोक्ष संभव नहीं है।

प्रश्न ११५. सिद्धगति में किस गति के जीव सीधे जा सकते हैं?

उत्तरह्न मनुष्यगति के।

प्रश्न ११६. मुख्यतः मनुष्य के तीन भेद हैंह्न कर्मभूमि, अकर्मभूमि के युगलिक गर्भज और सम्मूर्च्छिम मनुष्य। इनमें से कौन से मनुष्य सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न मात्र कर्मभूमि के गर्भज मनुष्य ही सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न ११७. मनुष्य गति से निकले जीव एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न

मनुष्य	कम से कम	अधिक से अधिक
१. गर्भज	१	१०८
२. मनुष्यणी	१	२०
३. नपुंसक	१	१०

प्रश्न ११८. क्या अकर्मभूमि से सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न हां। संहरण की अपेक्षा से।

प्रश्न ११९. अकर्मभूमि से एक साथ कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न १०।

प्रश्न १२०. देवगति से निकले जीव मनुष्य बनकर सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न हां।

प्रश्न १२१. चार प्रकार के देव मनुष्य बन एक समय में कम से कम और अधिक से अधिक कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न एक समय में कौन? कितने? सिद्ध होते हैंह्न तालिका देखेंह्न

देव	कम से कम	अधिक से अधिक
१. भवनपति	१	१०
२. भवनपति देवियां	१	५
३. वाणव्यन्तरदेव	१	१०
४. वाणव्यन्तर देवियां	१	५
५. ज्योतिष देव	१	१०
६. ज्योतिष देवियां	१	१०
७. वैमानिक देव	१	१०८
८. वैमानिक देवियां	१	२०

प्रश्न १२२. कौन से देवलोक से आगत जीव मनुष्य बनकर सबसे अधिक सिद्ध हो सकते हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नप्रथम देवलोक से आकार बने मनुष्य सबसे ज्यादा (१०८) सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न १२३. प्रत्येक विजय से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नबीस।

प्रश्न १२४. पर्वत पर एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न१०। संहरण की अपेक्षा से।

प्रश्न १२५. चार वन से कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नवन का नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	संहरण की अपेक्षा से
भद्रसालवन	१	४	संहरण की अपेक्षा से
नंदनवन	१	४	संहरण की अपेक्षा से
सोमनसवन	१	४	संहरण की अपेक्षा से
पण्डुकवन	१	४	संहरण की अपेक्षा से

प्रश्न १२६. कर्मभूमि से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-१, उत्कृष्ट-१०८, संहरण की अपेक्षा से।

प्रश्न १२७. छहों आरों में एक समय से कितने सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्न आरा	जघन्य	उत्कृष्ट	
१. पहला	१	१०	संहरण की अपेक्षा
२. दूसरा	१	१०	संहरण की अपेक्षा
३. तीसरा	१	१०८	प्रथम तीर्थंकर की अपेक्षा से
४. चौथा	१	१०८	प्रथम तीर्थंकर की अपेक्षा से
५. पांचवां	१	१०	चौथे आरे के जन्म लिये हुये
६. छठा	१	१०	संहरण की अपेक्षा से

प्रश्न १२८. अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, नो अवसर्पिणी और नो उत्सर्पिणी काल में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्न काल का नाम	जघन्य	उत्कृष्ट	
१. अवसर्पिणी	१	१०८	
२. उत्सर्पिणी	१	१०८	
३. नो अवसर्पिणी	१	१०८	महाविदेह में
४. नो उत्सर्पिणी	१	१०८	महाविदेह में

प्रश्न १२९. काल की अपेक्षा से सिद्ध होने की स्थिति क्या है?

उत्तरह्न ● उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के तीसरे व चौथे आरे में १०८ सिद्ध होते हैं।

● अवसर्पिणी के पांचवें आरे में २० सिद्ध हो सकते हैं।

● उत्सर्पिणी के पांचवें आरे में तीर्थ का अभाव होने से कोई भी जीव सिद्ध नहीं होता।

● उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी के शेष आरों में संहरण की अपेक्षा से १०-१० सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न १३०. सिद्ध जीव घटते हैं, बढ़ते हैं या अवस्थित रहते हैं?

उत्तरह्नसिद्ध जीव सर्वकाल में बढ़ते ही रहते हैं और अवस्थित भी रहते हैं परन्तु, घटते कभी नहीं।

प्रश्न १३१. सिद्ध कितने काल तक बढ़ते हैं?

उत्तरह्नजघन्यह्नएक समय और उत्कृष्ट आठ समय तक।

प्रश्न १३२. क्या एक सिद्ध होने के बाद दूसरे सिद्ध होने में कुछ अन्तर पड़ता है? पड़ता है तो कितना?

उत्तरह्नहां। जघन्यतः एक समय का और उत्कृष्टतः छह मास का।

प्रश्न १३३. एक साथ १०८ सिद्ध होने के बाद कितने समय तक पुनः १०८ सिद्ध नहीं हो सकते?

उत्तरह्नकम से कम सात समय तक।

प्रश्न १३४. सात समयों में सिद्ध होते हैं या नहीं? होते हैं तो कितने?

उत्तरह्नसिद्ध प्रति समय हो सकते हैं। उन सात समय में ज्यादा से ज्यादा होने वाले सिद्धों की संख्या क्रमशः इस प्रकार हैंह्न

पहला समयह्न१०२
दूसरा समयह्न९६
तीसरा समयह्न८४
चौथा समयह्न७२
पांचवां समयह्न६०
छठा समयह्न४८
सातवां समयह्न३२।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १३५. क्या सिद्धों का एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानान्तरण होता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १३६. सिद्धात्मा और हमारे बीच में कितना अन्तर हैं?

उत्तरह्नलोक की ऊंचाई चौदह रज्जू है। एक रज्जू का क्षेत्र इस प्रकार माना गया हैह्नतीन करोड़ इक्यासी लाख बारह हजार नौ सो सत्तर (३,८१,१२, ९७०) मण का एक भार, ऐसे एक हजार भार वजन का गोला जब ऊपर से फेंकने में आये और वह गोला ६ मास, ६ दिन, ६ प्रहर, ६ घड़ी और छह पल में जितना नीचे गिरेगा, उतना ही क्षेत्र एक रज्जू का है। ऐसे सात रज्जू और कुछ कम अपने और सिद्धों के बीच अन्तर है।

प्रश्न १३७. एक समय में सात रज्जू क्षेत्र को पार करने की तीव्र गति सिद्ध होने वाले जीव के स्वयं की होती है या किसी अन्य की?

उत्तरह्नस्वयं की।

प्रश्न १३८. सिद्ध भगवान कहां नहीं जा सकते?

उत्तरह्नअलोक में। क्योंकि वहां धर्मास्तिकाय नहीं है। शरीर (कर्म) मुक्त होने के कारण लोक में नीचे भी नहीं आ सकते।

प्रश्न १३९. सिद्ध, मुक्तावस्था में कितने समय तक रहते हैं?

उत्तरह्नअनन्तकाल तक।

प्रश्न १४०. क्या रत्नप्रभा आदि नरक से नीचे सिद्ध रहते हैं?

उत्तरह्ननहीं। क्योंकि ये नरक लोक हैं।

प्रश्न १४१. क्या सौधर्म से लेकर पांच अनुत्तरविमान तक के देवलोक से नीचे सिद्ध रहते हैं?

उत्तरह्ननहीं। ये सब देवलोक हैं।

प्रश्न १४२. क्या सिद्ध, सिद्धशिला के नीचे रहते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १४३. सिद्ध सादि-अपर्यवसित है या अनादि अपर्यवसित?

उत्तरह्नसादि अपर्यवसित। अनादि काल से लगे हुये कर्मों का क्षय कर सिद्ध बने इस अपेक्षा से सादि और उनका पुनः जन्म-मरण नहीं होता अतः वे अपर्यवसित हैं।

प्रश्न १४४. भावी सिद्धात्मा छह संस्थानों में से कौन से संस्थान से सिद्ध होती हैं?

उत्तरह्नछहों संस्थान से।

प्रश्न १४५. भावी सिद्ध का संहनन कौन सा?

उत्तरह्नवज्र-ऋषभनाराच। यह नियमा है कि वज्रऋषभनाराच संहनन वाला जीव ही मुक्ति की प्राप्त करेगा।

प्रश्न १४६. क्या केवलज्ञानी की तरह सिद्ध भगवान बोलते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १४७. सिद्ध क्यों नहीं बोलते?

उत्तरह्नसिद्ध उत्थान, कर्म, बल, वीर्य एवं पुरुषाकार पराक्रम से रहित होने के कारण नहीं बोलते।

प्रश्न १४८. सिद्ध संसार समापन्नक होते हैं या असंसारसमापनक?

उत्तरह्नअसंसार-समापन्नक। जो जीव संसारावस्था में संस्थित होते हैं वे संसार-समापन्नक कहलाते हैं और जो जीव कर्मों का क्षय कर संसार के आवागमन से छूट जाते हैं वे सिद्ध जीव हैं।

प्रश्न १४९. सिद्ध सादि-सान्त है, अनादि-सान्त है या अनादि-अनन्त?

उत्तरह्नसिद्ध एकह्नएक की अपेक्षा से सादि-अनन्त और बहुत्व की अपेक्षा से अनादि-अनन्त हैं।

प्रश्न १५०. जीव का भवसिद्धिकत्व स्वाभाविक है या पारिणामिक?

उत्तरह्नस्वाभाविक।

प्रश्न १५१. सिद्धों की गति ऋजु या वक्र?

उत्तरह्नऋजुगति।

प्रश्न १५२. ओज, रोग और कवल इन तीन प्रकार के आहार में से सिद्ध कौन सा आहार करते हैं?

उत्तरह्नकोई सा नहीं।

प्रश्न १५३. चौदह प्रकार के दान में से सिद्ध कितने प्रकार का दान ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नएक भी प्रकार का नहीं।

प्रश्न १५४. सिद्ध जीव आहारक होते हैं या अनाहारक?

उत्तरह्नअनाहारक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १५५. सिद्ध संज्ञी है या असंज्ञी?

उत्तरह्नसिद्ध न संज्ञी है और न असंज्ञी। अतः वे नो संज्ञी-नो असंज्ञी कहलाते हैं।

प्रश्न १५६. सिद्धों में चारित्र से क्या संबंध है?

उत्तरह्नवर्तमान की अपेक्षा से सिद्ध जीव न तो चारित्री ही होते हैं और न अचारित्री ही। अतीत की दृष्टि यदि अंतिम दो समय को लेकर विचार किया जाये तो यथाख्यात चारित्री ही सिद्ध होते हैं तथा उसके पूर्व के समय को ले तो तीन, चार और पांच चारित्रों से भी सिद्ध होते हैं।

प्रश्न १५७. जीव किस ज्ञान से सिद्धत्व प्राप्त करते हैं?

उत्तरह्नवर्तमान की अपेक्षा केवलज्ञान से और अतीत की अपेक्षा से दो, तीन और प्रथम चार ज्ञान वाले भी सिद्धत्व प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न १५८. सिद्ध सवेदी है या निर्वेदी?

उत्तरह्ननिर्वेदी।

प्रश्न १५९. तीन वेद में से कौन सी वेद वाला जीव सिद्धत्व प्राप्त कर सकता है?

उत्तरह्नवेद अर्थात् विकार। वेद-विकार के होते हुए कोई मुक्त नहीं होता। वेद की समाप्ति के बाद कोई किसी लिंग में हो, मुक्त होने में कोई बाधा नहीं है।

प्रश्न १६०. क्या जन्मना नपुंसक सिद्ध हो सकता है?

उत्तरह्ननहीं। क्योंकि टीकाकारों का ऐसा अभिमत है कि जन्मना नपुंसक सम्यक्त्वी नहीं होता। सो सम्यक्त्व के अभाव में सिद्धत्व भी प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न १६१. सिद्ध सरागी है या वीतरागी?

उत्तरह्नवीतरागी।

प्रश्न १६२. मन-वचन-काय में से सिद्ध में कितने योग है?

उत्तरह्नएक भी नहीं। वे अयोगी है।

प्रश्न १६३. चौदहवां गुणस्थानवर्ती जीव को भी अयोगी और सिद्धों को भी अयोगी कहा है। तो फिर इसमें अन्तर क्या है?

उत्तरह्नदोनों अयोगी में सिर्फ अन्तर इतना ही है कि चौदहवां गुणस्थान वाला

जीव नाम-कर्म के उदय स्वरूप तीनों योगों की प्राप्ति होने पर भी उसका व्यापार नहीं होता। अयोग-संवर वाले होते हैं। जबकि सिद्धों के नाम कर्म का क्षय हो गया है तो योगों का व्यापार ही कहां से होगा अर्थात् संवर भी नहीं होगा।

प्रश्न १६४. सिद्धों में उदय के तेतीस बोलों में से कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १६५. सिद्धों में उपशम के कितने बोल पा सकते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १६६. सिद्धों में क्षायिक के कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नआठों ही।

प्रश्न १६७. सिद्धों में क्षयोपशम के ३२ बोलों में से कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १६८. सिद्धों में भाव कितने?

उत्तरह्नदोह्नक्षायिक और पारिणामिक।

प्रश्न १६९. सिद्धों का मरण कौन सा?

उत्तरह्नकोई सा भी नहीं। वे अजर-अमर है।

प्रश्न १७०. सिद्धों का संहरण होता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १७१. भावी सिद्ध किस आसन से मुक्त होते हैं?

उत्तरह्नभावी सिद्ध का आसन या मुद्रा के साथ किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। सुखासन, पद्मासन, गोदोहिकासन, खड़े, बैठे या किसी भी अवस्था में जीवात्मा सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सकती है।

प्रश्न १७२. सिद्धात्माएं लोक के कितने भाग को घेरे हुये हैं?

उत्तरह्नअसंख्यातप्रदेशी लोक के एक भाग को।

प्रश्न १७३. जगत में सिद्ध अधिक है या संसारी?

उत्तरह्नसंसारी। संसारी जीवों के अनन्तवें भाग जितने सिद्ध हैं।

प्रश्न १७४. कौन से कुल में जन्मी आत्मा सिद्ध हो सकती है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नकुल और पवित्रता का कोई अनुबंध नहीं है। जो आत्मा कर्ममुक्त बन जाती है वही सिद्ध बन जाती है।

प्रश्न १७५. क्या सिद्धात्मा संसारी जीवों को तारने का कार्य करती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १७६. सिद्ध-गति किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो कर्मोदय जन्य नहीं है परन्तु जहां जीव कर्मरहित हो गमन करता है वह सिद्धगति है।

प्रश्न १७७. सिद्ध गति के जीव कहां जा सकते हैं?

उत्तरह्नआने-जाने का क्रम संसारी जीवों का होता है, सिद्धों का नहीं।

प्रश्न १७८. सिद्धों का संहनन कौन सा?

उत्तरह्नकोई सा नहीं।

प्रश्न १७९. सिद्धों का संस्थान कौन सा?

उत्तरह्नकोई सा नहीं।

प्रश्न १८०. चार गति में से सिद्ध जीव का किस गति में समावेश होता है?

उत्तरह्नकिसी में भी नहीं।

प्रश्न १८१. सिद्धों की जाति कौन सी?

उत्तरह्नकोई सी भी नहीं।

प्रश्न १८२. छह काया में से सिद्धों की काया कौन सी?

उत्तरह्नकोई सी भी नहीं।

प्रश्न १८३. सिद्धों में इन्द्रियां कितनी?

उत्तरह्नएक भी नहीं। वे अनिन्द्रिय हैं।

प्रश्न १८४. सिद्ध पांच इन्द्रियों के २३ विषयों में से कितने विषयों का भोग-उपभोग करते हैं?

उत्तरह्नएक का भी नहीं।

प्रश्न १८५. सिद्धों में पर्याप्तियां कितनी?

उत्तरह्नएक भी नहीं। वे नो पर्याप्ता और नो अपर्याप्ता है।

प्रश्न १८६. सिद्धों में प्राण कितने?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १८७. मोक्ष जाते समय जीव के साथ कितने शरीर होते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १८८. सिद्ध सशरीरी है या अशरीरी?

उत्तरह्नअशरीरी।

प्रश्न १८९. क्या सिद्धावस्था में एक भी शरीर नहीं होता?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १९०. क्या शरीर के बिना सिद्धात्मा रह सकती है?

उत्तरह्नहां, रह सकती है।

प्रश्न १९१. सिद्धों में योग कितने?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १९२. सिद्धों में उपयोग कितने?

उत्तरह्नदोह्नकेवलज्ञान और केवलदर्शन।

प्रश्न १९३. सिद्धों में साकार उपयोग होता है या अनाकार?

उत्तरह्नदोनोंह्नकेवलज्ञान की अपेक्षा साकार और केवलदर्शन की अपेक्षा अनाकार।

प्रश्न १९४. सिद्धों के कितने कर्म हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं। वे सम्पूर्ण रूप से कर्ममुक्त है।

प्रश्न १९५. क्या सिद्धों का संसार में पुनरवतार होता है?

उत्तरह्ननहीं। जैसे बीज नष्ट होने पर पुनः उगता नहीं है वैसे ही कर्मों का नाश होने पर पुनः सिद्ध संसार में नहीं आते।

प्रश्न १९६. सिद्धों में गुणस्थान कौन सा?

उत्तरह्नकोई सा भी नहीं।

प्रश्न १९७. कौन से गुणस्थान से जीव सिद्ध होता है?

उत्तरह्नकोई भी गुणस्थान से जीव सिद्ध नहीं होता। गुणस्थान पूर्ण होने पर ही जीव सिद्धावस्था को प्राप्त करता है।

प्रश्न १९८. सिद्धों का वर्ण/गंध कौन सा?

उत्तरह्नकोई भी नहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १९९. सिद्धों में नव तत्त्व में से कितने तत्त्व?

उत्तरह्नदोह्नजीव और मोक्ष।

प्रश्न २००. सिद्धों में आत्मा कितनी?

उत्तरह्नचारह्नद्रव्य आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, उपयोग आत्मा।

प्रश्न २०१. मोक्ष में कोई क्रिया नहीं है फिर आत्मा के भेद क्यों?

उत्तरह्नमोक्ष में योगजन्य क्रिया नहीं है, किन्तु ज्ञान और दर्शन का उपयोग सतत चालू रहता है। इस दृष्टि से वहां भी आत्मा के भेद किये गये हैं।

प्रश्न २०२. सिद्धों का दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नकौन सा भी नहीं। क्योंकि दण्डकों का क्रम संसारी जीवों के लिए है मुक्त जीवों के लिये नहीं।

प्रश्न २०३. सिद्ध सलेश्यी या अलेश्यी?

उत्तरह्नअलेश्यी।

प्रश्न २०४. सिद्धों में चार ध्यान में से कितने ध्यान है?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २०५. सिद्धों में दृष्टि कौन सी?

उत्तरह्नएकह्नसम्यक् दृष्टि।

प्रश्न २०६. सिद्धों में जीव का भेद कौन सा?

उत्तरह्नकोई सा नहीं।

प्रश्न २०७. सिद्धों का किस द्रव्य में समावेश होता है?

उत्तरह्नजीव द्रव्य में।

प्रश्न २०८. चार गति में से किस गति से जीव सिद्धावस्था को प्राप्त होता है?

उत्तरह्नमनुष्यगति से।

प्रश्न २०९. सिद्धात्मा को नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चार निक्षेपों में से किसमें गिना जाता है?

उत्तरह्नभाव निक्षेप में।

प्रश्न २१०. बावीस परीषह में से सिद्धों के कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २११. आहार, भय, मैथुन और परिग्रह इन चार संज्ञाओं में से सिद्धों के कितनी संज्ञा होती है?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २१२. सिद्ध भगवान के ज्ञान और दर्शन क्षयोपशम भाव जन्य है या क्षायिक भाव जन्य?

उत्तरह्नक्षायिकभावजन्य।

प्रश्न २१३. सिद्धों के २५ क्रियाओं में से कितनी क्रिया होती है?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २१४. सिद्ध सक्रिय है या निष्क्रिय?

उत्तरह्नसिद्धात्मा के प्रत्येक समय में ज्ञान और दर्शन का परिणमन होता रहता है इस अपेक्षा से सक्रिय है।

प्रश्न २१५. सिद्ध स्वामी है या सेवक?

उत्तरह्नसिद्ध स्व की अपेक्षा से न स्वामी है और न सेवक। संसारी जीवों की अपेक्षा स्वामी है।

प्रश्न २१६. सिद्ध भगवान किसी भी ज्ञानी आत्मा को नमस्कार करते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २१७. सिद्ध प्रतिक्रमण करते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २१८. सिद्ध पुण्य का उपार्जन अथवा सेवन करते हैं क्या?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २१९. सिद्धावस्था प्राप्त करने में पुण्य साधक तत्त्व है या बाधक?

उत्तरह्नबाधक।

प्रश्न २२०. सिद्धात्मा कर्म निर्जरा करती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२१. सिद्धों में संवर क्यों नहीं माना जाता?

उत्तरह्नसिद्ध अकर्मा है, कृतकार्य है। उन्हें किसी प्रकार के त्याग की अपेक्षा नहीं रहती। अतः उज्ज्वलता होते हुये भी संवर नहीं होता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २२२. सिद्धात्माएं जहां स्थित रहती हैं वहां छह आरे में से कौन से आरे के कालक्रम की विद्यमानता रहती है?

उत्तरह्नकिसी भी आरे की नहीं।

प्रश्न २२३. सिद्धों के जन्म, बुढ़ापा, रोग और मरण संबंधी पीड़ा होती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२४. सिद्ध अनशन तप करते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२५. सिद्धात्मा गोचरी करती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२६. सिद्धात्मा प्रायश्चित्त तप करती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२७. अभवी आत्मा सिद्धावस्था प्राप्त कर सकती है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २२८. श्रेणी दो प्रकार की होती हैह्नउपशम और क्षपक। सिद्धात्मा किस श्रेणी का आरोहण करती है?

उत्तरह्नदोनों का नहीं।

प्रश्न २२९. पांच पदों में सिद्ध-पद को श्रेष्ठ क्यों माना गया है?

उत्तरह्नसिद्ध-पद को श्रेष्ठ इसलिये माना गया है कि शेष चार पदों का लक्ष्य भी सिद्धावस्था प्राप्त करना ही है। सिद्ध-पद अनन्त है और शेष चार पदों का अंत हो सकता है।

प्रश्न २३०. निश्चय में इसी भव में सिद्ध कौन हो सकता है?

उत्तरह्नजिस आत्मा ने तीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति के साथ जन्म लिया हो, चरम शरीरी हो अथवा अरिहंत हो ये आत्माएं इसी भव में सिद्ध हो सकती है।

प्रश्न २३१. सिद्ध पद में द्रव्य, गुण और पर्याय क्या है?

उत्तरह्नसिद्धों की आत्मा द्रव्य है। केवलज्ञान-केवलदर्शन आदि उनके गुण है। चार घाति कर्म का क्षय करने के बाद क्षायिक भाव में प्रकट होने के कारण पर्याय हैं।

प्रश्न २३२. सिद्ध कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नदो प्रकार केह्नद्रव्य सिद्ध और भाव सिद्ध।

१. द्रव्यसिद्धह्नजो जीव अभी तक सिद्ध बने नहीं, भविष्य में बनने वाले हैं, वे सारे द्रव्यसिद्ध हैं।

२. भावसिद्धह्नजो जीव सिद्धावस्था प्राप्त कर चुके वे सारे भाव सिद्ध हैं।

प्रश्न २३३. क्या केवली समुद्घात में मोक्ष हो सकता हैं?

उत्तरह्ननहीं। समुद्घात के बाद अंतर्मुहूर्त्त में जीव मुक्त हो सकता है।

प्रश्न २३४. सिद्ध कौन सा समुद्घात करते हैं?

उत्तरह्नकोई सा नहीं।

प्रश्न २३५. क्या सिद्ध-सिद्ध सभी समान है?

उत्तरह्नहां। आत्मिक विकास की दृष्टि से सभी सिद्ध समान हैं।

प्रश्न २३६. एक-दूसरे सिद्ध में असमानता क्या है?

उत्तरह्नअवगाहना, आसन, मुद्रा (आत्म प्रदेश के फैलने में) आदि की दृष्टि से असमानता है।

प्रश्न २३७. क्या सिद्ध जीव समूचे लोक में व्याप्त हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २३८. सिद्ध पांच प्रकार की स्वाध्याय में से कितने प्रकार का स्वाध्याय करते हैं?

उत्तरह्नएक भी प्रकार का नहीं।

प्रश्न २३९. वैयावृत्त्य, कायक्लेश और कायोत्सर्ग तप सिद्ध भगवान करते हैं क्या?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २४०. जिस क्षेत्र में एक सिद्ध विराजते हो वहां अनेक सिद्ध विराज सकते हैं क्या?

उत्तरह्नहां। अनेक ही नहीं, अनन्त सिद्ध विराजमान हो सकते हैं।

प्रश्न २४१. एक सिद्ध के साथ अनन्त सिद्ध कैसे रह सकते हैं?

उत्तरह्नजिस प्रकार एक ही स्थान पर धर्मादिक द्रव्य परस्पर अवगाढ़रूप में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्थित रहते हैं उसी प्रकार सिद्धात्मा भी एक ही स्थान पर परस्पर में अवगाढ़ रूप से रहते हैं।

प्रश्न २४२. क्या सिद्ध परस्पर में अवगाढ़ रूप से रहते हुये अपने-अपने चैतन्य स्वरूप का परित्याग करते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २४३. एक सिद्ध कितने सिद्धों का स्पर्श करते हैं?

उत्तरह्नएक सिद्ध आत्मा के असंख्यात प्रदेशों द्वारा अनन्त सिद्धों का स्पर्श करते हैं।

प्रश्न २४४. सिद्ध देश व प्रदेशों से कितने हैं?

उत्तरह्नअसंख्यातगुणित। अर्थात् समस्त आत्मप्रदेशों से अनन्त सिद्ध स्पृष्ट है। एक सिद्ध की आत्मा अनन्त सिद्धों की अवगाहना होने से तथा एक-एक देश से एवं प्रदेश से वे सिद्ध अनन्त हैं। अतः एक-एक सिद्ध असंख्यात देश-प्रदेशात्मक हैं।

प्रश्न २४५. सिद्धों में २३ उत्तम पदवी में से कितनी पदवी रहती हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न २४६. क्या कर्मभूमि के सभी गर्भज मनुष्य सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं। आर्य, भव्य मनुष्य ही सिद्ध हो सकते हैं। अनार्य भव्य में से सिद्ध अवस्था को कदाचित् ही जीव प्राप्त होते हैं। उदाहरणतः आर्द्रकुमार।

प्रश्न २४७. सिद्ध संसारी है या नहीं?

उत्तरह्नद्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव इन पांचों का सिद्धों में अभाव होने के कारण संसारी नहीं है।

प्रश्न २४८. आठ कर्म की १४८ प्रकृतियों में से ऐसी कौन सी प्रकृति है, जो निश्चित रूप से मोक्ष दिलाती है?

उत्तरह्नतीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति।

प्रश्न २४९. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र से कौन से तीर्थंकर अंतिम में सिद्ध हुये?

उत्तरह्नभगवान महावीर स्वामी।

प्रश्न २५०. भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गणधर पद से कौन सिद्ध हुये?

उत्तरह्नश्री गौतम स्वामी।

प्रश्न २५१. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र से अन्तिम मोक्षगामी जीव कौन?

उत्तरह्नजम्बू स्वामी।

प्रश्न २५२. सिद्धों के शिष्य होते है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २५३. सिद्ध भगवान में गुरु-शिष्य की परम्परा चलती है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २५४. सिद्धों के कितने कल्याणक मनाये जाते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं। पंच कल्याणक अरहंत को छोड़कर किसी के भी नहीं मनाये जाते।

प्रश्न २५५. एकाभवतारी सिद्ध होने वाले देव कौन से हैं?

उत्तरह्नसर्वार्थ सिद्ध विमान के देव।

प्रश्न २५६. एकेन्द्रिय में भी क्या एकाभवतारी जीव होते हैं?

उत्तरह्नहो सकते हैं। पृथ्वी, पानी, वनस्पति से निकले जीव मनुष्य बनकर मोक्ष जा सकते हैं।

प्रश्न २५७. सिद्ध देव है या गुरु?

उत्तरह्नदेवाधिदेव हैं।

प्रश्न २५८. सिद्धगति के जीव कहां जा सकते हैं?

उत्तरह्नकहीं नहीं।

प्रश्न २५९. सिद्धों के प्रतिनिधि कौन?

उत्तरह्नवैसे तो अरहंत उनके प्रतिनिधि होते हैं। परन्तु वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में अरहंत की अनुपस्थिति होने के कारण आचार्य ही उनके प्रतिनिधि हैं।

प्रश्न २६०. सिद्धों के द्रव्य-मन होता है या भाव मन?

उत्तरह्नदोनों नहीं।

प्रश्न २६१. सिद्ध उपदेश देते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २६२. भरत और ऐरावत क्षेत्र से कितने सिद्ध हो गये?

उत्तरह्नअतीत में भी अनन्त सिद्ध हो गये और भविष्य में भी अनन्त सिद्ध होंगें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २६३. महाविदेह क्षेत्र से कितने सिद्ध हो गये?

उत्तरह्नआज तक अनन्त जीव सिद्ध हो गये और भविष्य में भी यहां से अनन्त सिद्ध होंगे।

प्रश्न २६४. वर्तमान में इस भरत क्षेत्र से कोई सीधा सिद्धगति में जानेवाला जीव है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २६५. सिद्ध जीवों की संख्या किससे कम हैं?

उत्तरह्नएकेन्द्रिय जीवों से।

प्रश्न २६६. क्या सिद्ध सृष्टि के कर्त्ता-हर्त्ता हैं? नहीं तो संसार कैसे चलता है?

उत्तरह्नसिद्ध भगवान मात्र ज्ञाता, द्रष्टा हैं। प्रकृति अपने नियम से चलती है। भगवान यदि सृष्टि को रचे तो एक नरक एवं एक स्वर्ग क्यों बनायेंगे। वे तो समदर्शी हैं।

प्रश्न २६७. सिद्ध सोपक्रमी होते है या निरूपक्रमी?

उत्तरह्नभावी सिद्ध निरूपक्रमी होते हैं और सिद्धावस्था को प्राप्त जीव न सोपक्रमी होते हैं और न ही निरूपक्रमी।

प्रश्न २६८. स्वर्ग और मोक्ष एक या दो?

उत्तरह्नदोह्नस्वर्ग में जाकर तो लौटना पड़ता है, जबकि मोक्ष से पुनरागमन नहीं होता है।

प्रश्न २६९. क्या मोक्ष में भी संसारी जीव है?

उत्तरह्नहां। सिद्ध स्थान की दृष्टि से। पृथ्वी, अप, वनस्पति आदि के जीव वहां भी मौजूद है।

प्रश्न २७०. सिद्धों में आगति का दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नइक्कीसवांह्नमनुष्य का।

प्रश्न २७१. सम्यक्त्व की अपेक्षा एक समय में कितने जीव सिद्ध होते हैं?

उत्तरह्नप्रतिपाती सम्यक्त्व वाले अनन्त काल संसार में परिभ्रमण कर एक समय में १०८, असंख्यात काल परिभ्रमण कर एक समय में १०, अप्रतिपाती सम्यक्त्व की अपेक्षा एक समय में चार जीव सिद्ध होते हैं।

प्रश्न २७२. भगवान महावीर के निर्वाण के कितने वर्षों बाद भरत क्षेत्र से जीव का मोक्ष जाना बंध हुआ?

उत्तरह्न६४ वर्ष, ३ महिनें और ८ दिन बाद।

प्रश्न २७३. जीव को प्रथम सम्पूर्ण भाव मोक्ष किस लोक से होता है?

उत्तरह्नमध्यलोक और अधोलोक से।

प्रश्न २७४. सिद्ध भगवान कौन सी आत्मा में आते हैंह्नबहिरात्मा, अंतरात्मा या परमात्मा में?

उत्तरह्नपरमात्मा में।

प्रश्न २७५. सिद्ध भगवान हीयमान होते हैं या नहीं?

उत्तरह्नसिद्ध भगवान संख्या से, प्रदेश से, अवगाहना से, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव और गुण से हीयमान नहीं होते।

प्रश्न २७६. सिद्ध भगवान को दूसरे किन-किन नाम से पुकारा जाता हैं?

उत्तरह्ननिरंजन, निराकार, मुक्तात्मा, परमात्मा, अजर, अमर, शिव, अक्षय, अणंत, अव्याबाध आदि।

प्रश्न २७७. सिद्ध गति से च्यवन होता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७८. सिद्धों में अज्ञान होता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७९. भावी सिद्धों की उत्पत्ति किस गति में होती है?

उत्तरह्नमनुष्य गति में।

प्रश्न २८०. सम्पूर्ण कर्मों का क्षय होने के पश्चात् जीव के कौन से तीन कार्य एक साथ सम्पादित होते हैं?

उत्तरह्न१. शरीर का वियोग २. ऊर्ध्वगति ३. लोकान्त प्राप्ति।

प्रश्न २८१. भावी सिद्धों की ५६३ भेद में से कितने भेद से आगति है?

उत्तरह्न१०८ भेद से।

ह्न८१ देव जाति के पर्याप्ता।
ह्न१५ कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता।
ह्न५ संज्ञी तिर्यंच के पर्याप्ता।
ह्न३ पृथ्वी, पानी, वनस्पति के पर्याप्ता।
ह्न४ नरक के पर्याप्ता।
कुलह्न१०८ भेद।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २८२. मोक्ष जाते समय भव्यात्मा के आत्म प्रदेश कौन से आकार के हो जाते हैं?

उत्तरह्नसंसारी अवस्था में आत्म प्रदेश और कर्म प्रदेश मिले-जुले रहते हैं। लेकिन मोक्ष जाते समय कर्म प्रदेश अलग होने से आत्मप्रदेश धनुष्याकार के हो जाते है।

प्रश्न २८३. सिद्धों के आत्मप्रदेश लोकान्त भाग में यों ही छितर जाते हैं या किसी आकार विशेष में अवस्थित होते हैं?

उत्तरह्नसिद्धों का कोई आकार नहीं होता, फिर भी उनके आत्मप्रदेश पूर्व संस्थान के अनुरूप अवस्थित होते हैं। बैठे, खड़े या लेटे जिस मुद्रा में मुक्त होते हैं, उसी मुद्रा में आत्म-प्रदेश स्थिर हो जाते हैं।

प्रश्न २८४. महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने में क्या अर (आरा) का प्रभाव रहता हैं?

उत्तरह्नवैसे महाविदेह क्षेत्र में न तो उत्सर्पिणी, न ही अवसर्पिणी काल रहता है। वहां अर का कोई प्रभाव नहीं रहता। एक साथ सिद्ध होने में अर का प्रभाव जरूर रहता है।

भरत व ऐरावत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल का जब पहला, दूसरा, पांचवां व छठा अर रहता है तब महाविदेह में एक साथ दस सिद्ध हो सकते हैं तथा तीसरे, चौथे आरे में एक साथ १०८ सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न २८५. सिद्ध स्वरूपतः शाश्वत होते हैं या अशाश्वत?

उत्तरह्नशाश्वत।

प्रश्न २८६. सिद्ध भगवान सोते भी है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २८७. भावी सिद्धों का मरण कौन सा?

उत्तरह्नपण्डितमरण।

प्रश्न २८८. भावी सिद्धों का कौन से संथारे में मरण होता हैं?

उत्तरह्नपादोपगमन।

प्रश्न २८९. मोक्ष के कितने द्वार हैं?

उत्तरह्ननौह्न१. सत्पदपरूपणाद्वार २. द्रव्यद्वार ३. क्षेत्रद्वार ४. स्पर्शनाद्वार ५. काल-द्वार ६. भागद्वार ७. भावद्वार ८. अन्तरद्वार और ९. अल्पबहुत्वद्वार।

प्रश्न २९०. क्या सिद्ध आत्मा में भेद होता है?

उत्तरह्नऐसे तो सिद्ध आत्मा में किसी प्रकार का भेद नहीं होता, किन्तु उनके अतीत और वर्तमान की अपेक्षा से भेद हो सकता है।[२]

प्रश्न २९१. सिद्धों में पासणिया कितने होते हैं?

उत्तरह्नदोह्नकेवलज्ञान, केवलदर्शन।

प्रश्न २९२. सिद्ध स्थिर है या अस्थिर?

उत्तरह्नपहले समय अस्थिर। दूसरे समय स्थिर। जीव यहां से सिद्ध होकर सिद्धशिला तक जाता है उसमें वह अस्थिर होता है। बाद में स्थिर हो जाता है।

प्रश्न २९३. सिद्धों की गति कम, अधिक या समान है?

उत्तरह्नऊंचे लोक में जो सिद्ध है, उनकी गति कम है। नीचे लोक में जो सिद्ध होते हैं, उनकी गति अधिक है। तिर्यक् लोक में जो सिद्ध होते हैं, उनकी गति मध्यम है। समतल भूमि से नीचे हजार योजन तक तिर्यक् लोक में सिद्ध होते हैं इसलिये गति मध्यम है।

प्रश्न २९४. सर्वाधिक कौन से जीव मोक्ष जाते हैं?

उत्तरह्नसर्वाधिक प्रथम देवलोक से आये हुए जीव मोक्ष जाते हैं।

---

१. देखिए परिशिष्ट।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो आयरियाणं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो आयरियाणं

प्रश्न १. नमस्कार महामंत्र में तीसरा पद कौन सा है?

उत्तरह्नणमो आयरियाणं।

प्रश्न २. नमस्कार महामंत्र के तीसरे पद में किसको नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नआचार्यों को।

प्रश्न ३. णमो आयरियाणं पद में अक्षर कितने?

उत्तरह्नसात।

प्रश्न ४. णमो आयरियाणं में लघु और गुरु अक्षर कितने?

उत्तरह्नगुरु अक्षर नहीं, लघु सात।

प्रश्न ५. णमो आयरियाणं में ह्रस्व कितने और दीर्घ अक्षर कितने?

उत्तरह्नह्रस्वह्नचार और दीर्घह्नतीन।

प्रश्न ६. आचार्य का रंग कौन सा?

उत्तरह्नपीला।

प्रश्न ७. आचार्य का ध्यान कौन से केन्द्र पर किस रंग के साथ किया जाता है?

उत्तरह्नविशुद्धि केन्द्र (कंठ पर) पर पीले रंग का।

प्रश्न ८. आचार्य के कितने गुण होते हैं?

उत्तरह्नआचार्य के ३६ गुण होते हैं।

प्रश्न ९. आचार्य के छत्तीस गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नपांच महाव्रत, पंचेन्द्रिय-निग्रह, चार कषाय वर्जन, पांच आचार, पांच समिति, तीन गुप्ति और नवबाड़ सहित ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करनाह्नये ३६ गुण है।

प्रश्न १०. आचार्य किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो पांच महाव्रत का स्वयं पालन करते हैं और धर्मसंघ के अधिशास्ता होते हैं वे आचार्य कहलाते हैं।

प्रश्न ११. आचार्य के और दूसरे छत्तीस गुण कौन-कौन से हो सकते है?

उत्तरह्न १. देशयुत
२. कुलयुत
३. जातियुत
४. रूपयुत
५. संहननयुत
६. धृतियुत
७. अनाशंसी
८. अविकत्सन
९. अमायी
१०. स्थिरपरिपाटी
११. गृहीत वाक्य
१२. जितपर्षद
१३. निप्राजयी
१४. मध्यस्थ
१५. देशज्ञ
१६. कालज्ञ
१७. भावज्ञ
१८. आसन्नलब्धप्रतिभा
१९. नानाविधदेशभाषज्ञ
२०. पंचविध आचारयुक्त
२१. सूत्रविधिज्ञ
२२. अर्थविधिज्ञ
२३. तदुभयविधिज्ञ
२४. आहरण निपुण
२५. हेतु निपुण
२६. उपनय निपुण
२७. नय निपुण
२८. ग्राहणाकुशल
२९. स्वसमयवित्
३०. परसमयवित्
३१. गंभीर
३२. दीप्तिमान
३३. शिव
३४. सोम
३५. गुणशतकलित
३६. प्रवचनयुक्त।[1]

प्रश्न १२. आचार्य में ३६ गुण से अतिरिक्त और क्या विशेषताएं हो सकती हैं?

उत्तरह्नआचार्य में ३६ गुणों से अतिरिक्त 'सम्पदाएं' उनकी विशेषताएं हैं।

प्रश्न १३. सम्पदा किसे कहते हैं और वह गणि सम्पदा कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तरह्नसम्पदा-अर्थात् 'समृद्धि'। गणि सम्पदा आठ प्रकार की होती हैंह्न

१. आचार सम्पदा
२. श्रुत सम्पदा
३. शरीर सम्पदा
४. वचन सम्पदा
५. वाचना सम्पदा
६. मति सम्पदा
७. प्रयोग सम्पदा
८. संग्रह परिज्ञा सम्पदा

१. प्रवचनसारोद्धार, द्वार-६४, गाथा-५४८, बृहत्कल्पभाष्य।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १४. स्थानांग सूत्र के अतिरिक्त आठ सम्पदाओं का विस्तृत वर्णन कौन से सूत्र में मिलता है?

उत्तरह्नदशाश्रुतस्कंध (दशाचार में) में, व्यवहारभाष्य में।

प्रश्न १५. आचार-सम्पदा किसे कहते हैं? और इसके कितने भेद हैं?

उत्तरह्नचारित्र की विशेष दृढ़ता को आचार संपदा कहते हैं। इसके चार भेद हैंह्न

१. संयमध्रुवयोगयुक्तताह्नचारित्र में सदा समाधियुक्त होना।
२. असंप्रग्रहह्नजाति, श्रुत आदि मदों का परिहार।
३. अनियतवृत्तिह्नअनियत विहार।
४. बुद्धशीलताह्नअचंचलता, शरीर और मन की निर्विकारता।

प्रश्न १६. श्रुत-सम्पदा किसे कहते हैं? और इसके कितने प्रकार है?

उत्तरह्नपरमार्थ का ज्ञाता होना, शास्त्रों का विशाल ज्ञान-होना आचार्य की श्रुत-सम्पदा है। इसके चार प्रकार हैंह्न

१. बहुश्रुतताह्नअंग और उपांग में निष्णातता, युगप्रधान पुरुष।
२. परिचितसूत्रताह्नआगमों से चिरपरिचित होना।
३. विविधसूत्रताह्नउत्सर्ग, अपवाद, स्वदर्शन और परदर्शन के ज्ञाता।
४. घोषविशुद्धिकर्ताह्नउदात्त, अनुदात्तादि स्वरों की विशुद्धि से युक्त सूत्रोच्चारण करने वाले।

प्रश्न १७. शरीर सम्पदा किस प्रकार की होनी चाहिये?

उत्तरह्नशरीर का सुसंगठित और प्रभावशाली होना आचार्य की शरीर सम्पदा है। इसका वर्णन चार प्रकार से किया जा सकता हैंह्न

१. आरोहपरिणाहयुक्ताह्नशरीर की लंबाई-चौड़ाई का प्रमाणयुक्त होना।
२. अनपत्रपनाह्नअलज्जनीय अंग वाला होना अर्थात् सर्वांग होना।
३. परिपूर्ण इन्द्रियताह्नपांचों इन्द्रियों की परिपूर्णता।
४. स्थिरसंहननताह्नवज्रऋषभनाराच संहनन से युक्त।

प्रश्न १८. वचन-सम्पदा क्या है? और इसके कितने भेद हैं?

उत्तरह्नवाक्-कौशलता आचार्य की चौथी वचन सम्पदा है। इसके चार भेद हैंह्न

१. आदेयवचनताह्नजिसके वचनों को सभी स्वीकार करते हों।
२. मधुरवचनताह्नअर्थयुक्त, क्षीराश्रव आदि लब्धियुक्त वचन।
३. अनिश्रितवचनह्नराग-द्वेष से रहित अर्थात् मध्यस्थ वचन।
४. असंदिग्धवचनह्नआसानी से समझ में आने वाला वचन।

प्रश्न १९. वाचना-सम्पदा का क्या तात्वर्य है? और इसके कितने भेद हैं?

उत्तरह्न'अध्यापन कौशल' आचार्य की पांचवीं वाचना-सम्पदा है। इसके चार भेद हैंह्न

१. विदित्वोद्देशनह्नशिष्य की योग्यता को जानकर उद्देशन करना।
२. विदित्वा समुद्देशनह्नशिष्य की योग्यता जानकर समुद्देशन करना।
३. परिनिर्वाप्यवाचनाह्नपहले दी गई वाचना को पूर्ण हृदयंगम कराकर आगे की वाचना देना।
४. अर्थ नियार्पणाह्नअर्थ के पौर्वापर्य का बोध कराना।

प्रश्न २०. मति-सम्पदा किसे कहते हैं?

उत्तरह्न'बुद्धि कौशल' आचार्य की छठी मति-सम्पदा है। इसके चार भेद हैंह्न

१. अवग्रह २. ईहा ३. अवाय ४. धारणा।

प्रश्न २१. प्रयोग सम्पदा किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं?

उत्तरह्न'वाद-कौशल' परवादियों को पराजित करने की कुशलता को प्रयोग सम्पदा कहते हैं। इसके चार भेद हैंह्न

१. आत्म-परिज्ञानह्नवाद या धर्मकथा में अपने सामर्थ्य का परिज्ञान।
२. पुरुष परिज्ञान-वादी के मत का ज्ञान, परिषद् का ज्ञान।
३. क्षेत्र परिज्ञानह्नवाद करने के क्षेत्र का ज्ञान।
४. वस्तु परिज्ञान-वाद काल में निर्याणक के रूप में स्वीकृत सभापति आदि का ज्ञान।

प्रश्न २२. संग्रह-परिज्ञा-सम्पदा क्या है यह कितने प्रकार की होती है?

उत्तरह्नसंघ-व्यवस्था में निपुणता आचार्य की आठवीं संग्रह परिज्ञा सम्पदा है। यह चार प्रकार की होती है।

१. बालादियोग्यक्षेत्रह्नसाधुओं के लिए योग्यक्षेत्र का सम्पादन करने में कुशल।
२. पीठ और फलक का आनयन करना चाहिये क्योंकि ये दोनों वर्षा ऋतु में आचीर्ण हैं।
३. कालसमानयानह्नकाल का यथा समय समनयन करना (उपयुक्त काल में उपयुक्त क्रिया करना)।
४. गुरुपूजाह्नयथोचित विनय की व्यवस्था बनाये रखना।

प्रश्न २३. आचार्य बनने का अधिकारी कौन होता है?

उत्तरह्ननिम्नोक्त छह गुणों से सम्पन्न साधु आचार्य बनने का अधिकारी होता हैह्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१. जो श्रद्धावान हो
२. जो सत्यवादी हो
३. जो मेधावी हो
४. जो बहुश्रुत हो
५. जो शक्तिमान हो
६. जो अल्पाधिकरण हो।[1]

प्रश्न २४. आचार्य बनने वाला साधु कम से कम कितने वर्ष का दीक्षित होना चाहिये?

उत्तरह्नपांच वर्ष के दीक्षित साधु को आचार्यपद दिया जा सकता है।[2] लेकिन वह आचार कुशल, संयमकुशल, प्रवचन कुशल, प्रज्ञप्ति (प्रायश्चित्त देने में) कुशल, संग्रत-उपग्रह कुशल, अक्षुन्नाचार, अशबलाचार, अभिन्नाचार, असंक्लिष्टाचार एवं दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प तथा व्यवहार सूत्र का ज्ञाता अवश्य होना चाहिए।

प्रश्न २५. आचार्य के क्या कर्त्तव्य होते हैं?

उत्तरह्नआचार्य के छह कर्त्तव्य होते हैं[3]ह्न

१. सूत्र के विवादग्रस्त अर्थों का निश्चय करना।
२. सबके साथ नम्रता से व्यवहार करना।
३. अपने से बड़े साधुओं की भक्ति करना।
४. शिक्षा ग्रहण करने वाले नवदीक्षित साधुओं का सत्कार करना।
५. दान देने वाले व्यक्तियों की उपदेशादि द्वारा श्रद्धा बढ़ाना।
६. शिष्यों की बुद्धि तथा आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाना।

इसके अतिरिक्त अपने शिष्य को चार प्रकार की विनय प्रतिपत्ति सिखाना भी आचार्य के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न २६. चार प्रकार की विनय प्रतिपत्ति कौन सी है?

उत्तरह्न१. आचार विनय
२. श्रुत विनय
३. विक्षेपणा विनय
४. दोषनिर्घातनाविनय।[4]

प्रश्न २७. आचार विनय की शिक्षा में आचार्य अपने शिष्य को क्या सिखाते हैं?

उत्तरह्नआचार विनय की शिक्षा में आचार्य अपने शिष्य को ये चार बातें सिखाते हैंह्न

१. साधुओं को सत्रह प्रकार के संयम में सुदृढ़ रखना।

१. स्थानांग ६/४७५।
२. व्यवहार ७/२० तथा व्यवहार ३/५।
३. स्थानांग ७/५७० टीका।
४. दशाश्रुतस्कन्ध, दशाचार।

२. १२ प्रकार की तपस्या में प्रोत्साहित करना।
३. गण की सारणा-वारणा करते हुये रोगी, बाल, वृद्ध एवं दुर्बल साधुओं की उचित व्यवस्था करना।
४. योग्य साधुओं को एकाकीविहार-प्रतिमा स्वीकार करने के लिए प्रेरित करना।

प्रश्न २८. श्रुत विनय की शिक्षा में अपने शिष्य को क्या सिखाते हैं?

उत्तरह्नश्रुत विनय की शिक्षा में आचार्य अपने शिष्य को पढ़ाने की विधि सिखाते हैं। जैसेह्नपहले मूलसूत्र पढ़ना, फिर अर्थ पढ़ना, विद्यार्थी का हित हो वह पढ़ाना, फिर प्रमाण-नय-निक्षेपादि द्वारा तत्त्व को सांगोपांग समझाना।

प्रश्न २९. विक्षेपणाविनय की शिक्षा में आचार्य अपने शिष्य को क्या सिखाते हैं?

उत्तरह्नविक्षेपणाविनय की शिक्षा में आचार्य अपने शिष्य को निम्नोक्त चार बातें हैंह्न

१. मिथ्यात्वी को सम्यक् दृष्टि बनाना।
२. सम्यग्दृष्टि को सर्वविरति बनाना।
३. सम्यक्त्व चारित्र से गिरे हुये व्यक्ति को पुनः खड़ा करना।
४. चारित्र धर्म की वृद्धि करने वाले अनुष्ठानों में तत्पर रहना।

प्रश्न ३०. दोषनिर्घातनाविनय में आचार्य अपने शिष्य को क्या सिखाते हैं?

उत्तरह्नदोषनिर्घातनाविनय में आचार्य अपने शिष्य को निम्नोक्त चार बातें सिखातें हैंह्न

१. क्रोधी के क्रोध को उपदेश से शान्त करना।
२. दोषी के दोष को दूर करना।
३. शंका कांक्षा करने वालों को उससे निवृत्त करना।
४. स्वय पूर्वोक्त दोषों से मुक्त होना।

प्रश्न ३१. आचार्य के पांच आचार कौन से हैं?

उत्तरह्न १. ज्ञाना चार
२. दर्शनाचार
३. चारित्राचार
४. तपाचार
५. वीर्याचार।

प्रश्न ३२. आचार किसे कहते हैं? और वे कितने हैं?

उत्तरह्नआत्मिक गुणों की वृद्धि के लिये किये जाने वाले ज्ञानादि आसेवन रूप

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुष्ठान विशेष को आचार कहते हैं। आचार पांच प्रकार का होता है।[1]

प्रश्न ३३. आचार्य की ऋद्धि कितने प्रकार की होती है?

उत्तरतीन प्रकार की[2]

१. ज्ञान ऋद्धिविशिष्ट ज्ञान सहित होना।

२. दर्शन ऋद्धिशंकादि दोषों से रहित दृढ़ सम्यक्त्वी होना।

३. चारित्र ऋद्धिनिरतिचार चारित्र पालने वाला होना।

दूसरी तरह से भी तीन प्रकार की ऋद्धि होती है

१. सचित्त ऋद्धियोग्य शिष्यों की सम्पदा होना।

२. अचित्त ऋद्धिअन्य साधुओं की अपेक्षा वस्त्र-पात्रादि उपकरणों का उत्कृष्ट होना।

३. मिश्र ऋद्धिवस्त्रादि संपन्नशिष्यों की सम्पदा होना।

प्रश्न ३४. आचार्य तीन लोक में से कितने लोक में होते हैं?

उत्तरदो लोक मेंमध्यलोक और अधोलोक (सलिलावती महाविदेह की अपेक्षा)।

प्रश्न ३५. ऊर्ध्वलोक में आचार्य क्यों नहीं होते?

उत्तरऊर्ध्वलोक में मनुष्य जाति का अभाव होने के कारण आचार्य नहीं होते। क्योंकि जो सन्नी पंचेन्द्रिय मनुष्य होगा वही आचार्य बन सकता है।

प्रश्न ३६. आचार्य कितने द्वीप में होते हैं?

उत्तरअढ़ाई द्वीप में।

प्रश्न ३७. क्या वर्तमान में ही अढ़ाई द्वीप में आचार्य हो रहे हैं?

उत्तरनहीं। आचार्य अढ़ाई द्वीप में अतीत में भी हुये, वर्तमान में भी हो रहे हैं, और भविष्य में भी होंगे।

प्रश्न ३८. अढ़ाई के बाहर आचार्य होते हैं या नहीं?

उत्तरनहीं।

प्रश्न ३९. १५ कर्मभूमि में से कितनी कर्मभूमि में आचार्य बनते हैं?

उत्तरपन्द्रह की पन्द्रह कर्मभूमि में आचार्य बनते हैं।

---

१. स्थानांग ५/२/४३२।

२. स्थानांग ३/४/२१४।

प्रश्न ४०. आचार्य कालक्रम के कौन-कौन से आरे में होते हैं?

उत्तरअवसर्पिणी काल में ३,४,५ वें आरे में और उत्सर्पिणी के तीसरे व चौथे आरे में आचार्य होते हैं।

प्रश्न ४१. अढ़ाई द्वीप में कहां-कहां पर आचार्य का विरहकाल नहीं पड़ता?

उत्तरपांच महाविदेह में।

प्रश्न ४२. भरत और ऐरवत में आचार्य का विरहकाल कितने समय का होता है?

उत्तरउत्कृष्ट अठारह क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम का और जघन्य ६३ हजार वर्ष का।

प्रश्न ४३. इस अवसर्पिणी में भरत क्षेत्र में अंतिम आचार्य कौन होंगे?

उत्तरदुपस्सह नाम के आचार्य।

प्रश्न ४४. भगवान महावीर के बाद प्रथम आचार्य कौन हुये?

उत्तरजम्बूस्वामी।

प्रश्न ४५. किस कुल में जन्मी आत्मा आचार्य बन सकती है?

उत्तरउत्तम कुल में।

प्रश्न ४६. अभवी जीव आचार्य बन सकते हैं या नहीं?

उत्तरअभवी जीव आचार्य बन सकते हैं, किन्तु वे द्रव्य आचार्य होते हैं।

प्रश्न ४७. भावी आचार्य को आचार्य-पद से कौन विभूषित करता है?

उत्तरधर्मसंघ।

प्रश्न ४८. उत्तरवर्ती आचार्य का चुनाव कौन करता है?

उत्तरपूर्ववर्ती आचार्य।

प्रश्न ४९. यदि पूर्ववर्ती आचार्य अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति किये बिना महाप्रयाण कर दे तो फिर उस पद की नियुक्ति कौन करता है?

उत्तरसंघ द्वारा आचार्य पद की नियुक्ति होती है।

प्रश्न ५०. क्या विकलांग साधु को आचार्य पद से सुशोभित किया जा सकता है?

उत्तरनहीं।

प्रश्न ५१. क्या रोग से घिरे हुय साधु को आचार्य पद दिया जा सकता है?

उत्तरनहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ५२. छत्तीस गुणों से युक्त होते हुये भी किस प्रकार के साधु को आचार्य पद नहीं दिया जा सकता?

उत्तरह्नजिसने पांच महाव्रतों में एक भी महाव्रत भंग किया हो वैसे साधु को आचार्य पद नहीं दिया जाता।

प्रश्न ५३. कोई साधु वेदोदय के कारण गण से अलग हो, मैथुन सेवन करता है पुनः संघ में सम्मिलित होता है तो उसे कितने वर्ष तक आचार्य पद पर नियुक्त नहीं किया जा सकता?

उत्तरह्न३ वर्ष तक।

प्रश्न ५४. अन्य वेष या गृहस्थ वेष में रहे हुये साधक को आचार्य पद दिया जा सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ५५. क्या मुनि को इत्वरिक (अल्पकाल के लिये) आचार्य पद दिया जा सकता है?

उत्तरह्नहां। दो कारणों से इत्वरिक आचार्य पद दिया जा सकता हैंह्न

१. आचार्य पद के योग्य कोई साधु न हो तो।

२. प्रमाद से अभिनव आचार्य बनाये बिना ही पूर्व आचार्य काल धर्म को प्राप्त हो गये हों।

प्रश्न ५६. आचार्य पद सादि-सान्त, अनादि-सान्त, अनादि-अनन्त में से क्या हैं?

उत्तरह्नसादि-सान्त।

प्रश्न ५७. आचार्य के कितने कल्याणक होते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न ५८. आचार्य किसको नमस्कार करते हैं?

उत्तरह्नअरिहंत, सिद्ध, केवली और अपने से रत्नाधिक साधु को नमस्कार करते हैं। वैसे भाव से सभी को (णमो नोए सव्वसाहूणं) नमस्कार करते हैं।

प्रश्न ५९. आचार्य की गति कौनसी?

उत्तरह्नमनुष्य गति।

प्रश्न ६०. किस गति से आया हुआ जीव आचार्य बन सकता है?

उत्तरह्नचारों गति से।

प्रश्न ६१. आचार्य अपना आयुष्य पूर्ण कर कौन सी गति में जाते हैं?

उत्तरह्नदेवगति में (आराधक अवस्था हो तो)।

प्रश्न ६२. आचार्य का जीव काल धर्म प्राप्त कर चार प्रकार के देवों में से कौन से देव बनते हैं?

उत्तरह्नवैमानिक देव।

प्रश्न ६३. मनुष्य गति को छोड़कर शेष तीन गति में आचार्य हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ६४. कितनी नरक से आगत जीव साधु बन आचार्य बन सकता है?

उत्तरह्नप्रथम पांच नरक से।

प्रश्न ६५. भावी आचार्य जीव के ५६३ भेदों में से कितने भेद में आता है?

उत्तरह्न२७५ भेद में से। १०१ सम्मूर्च्छिम मनुष्य के अपर्याप्ता, १५ कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता और अपर्याप्ता, ४० तिर्यंच के (तेऊ और वायु के ८ भेद को छोड़कर) ९९ जाति देव के पर्याप्ता और प्रथम ५ नरक के पर्याप्ता।

प्रश्न ६६. आचार्य की जाति कौन सी?

उत्तरह्नपंचेन्द्रिय।

प्रश्न ६७. आचार्य की काया कौन सी?

उत्तरह्नत्रसकाय।

प्रश्न ६८. आचार्य के इन्द्रियां कितनी?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न ६९. आचार्य के जो पांच इन्द्रियां होती है वे द्रव्येन्द्रियां है या भावेन्द्रियां?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न ७०. आचार्य के पर्याप्तियां कितनी?

उत्तरह्नछह।

प्रश्न ७१. आचार्य में प्राण कितने?

उत्तरह्नदस।

प्रश्न ७२. आचार्य के शरीर कितने?

उत्तरह्नआचार्य के मुख्यतः तीन शरीर होते हैंह्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१. औदारिक २. तैजस ३. कार्मण।

प्रश्न ७३. आचार्य के पन्द्रह योग में से कितने योग हैं?

उत्तरह्नयोग ९। चार मन के, चार वचन के और एक औदारिक काययोग।

प्रश्न ७४. आचार्य में उपयोग कितने?

उत्तरह्नकिसी के चार, किसी के छह या सात उपयोग भी हो सकते हैं।

प्रश्न ७५. आचार्य का श्रुतज्ञान कितना होता है?

उत्तरह्नउत्कृष्टतः दृष्टिवाद सहित चौदहपूर्व और कम से कम छेद सूत्र सहित वर्तमान कालीन विषयों का ज्ञान।

प्रश्न ७६. आचार्य के कर्म कितने?

उत्तरह्नकर्म आठ।

प्रश्न ७७. आचार्य में गुणस्थान कौन सा?

उत्तरह्नछठा। अनेक जीवों की अपेक्षा छह से चौदह।

प्रश्न ७८. पांच इन्द्रियों के २३ विषयों में से आचार्य में कितने?

उत्तरह्नपूरे २३ विषय।

प्रश्न ७९. आचार्य का ज्ञान प्रत्यक्ष है या परोक्ष?

उत्तरह्नपरोक्ष।

प्रश्न ८०. आचार्य में नव तत्त्व में से कितने तत्त्व है?

उत्तरह्ननव तत्त्व।

प्रश्न ८१. आचार्य में जीव का भेद कौन सा है?

उत्तरह्नचौदहवां सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता।

प्रश्न ८२. आचार्य के पुण्य-पाप का बंधन होता है या नहीं?

उत्तरह्नहोता है।

प्रश्न ८३. आचार्य को पूर्वकृत पुण्य-पाप का भोग करना पड़ता है या नहीं?

उत्तरह्नकरना पड़ता है।

प्रश्न ८४. आश्रव के दो भेद हैं शुभ योग और अशुभ योग आश्रव। आचार्य के इन दो में से किसके द्वारा कर्मों का आगमन होता है?

उत्तरह्नदोनों द्वारा। शुभयोगाश्रव से पुण्य का और अशुभयोगाश्रव से पाप का बंध होता है।

प्रश्न ८५. आचार्य के पांच आश्रव में से कितने आश्रव?

उत्तरह्नतीनह्नप्रमाद, कषाय और योगाश्रव।

प्रश्न ८६. आचार्य के संवर होता है या नहीं?

उत्तरह्नहोता है।

प्रश्न ८७. आचार्य के पांच संवर में से कितने संवर?

उत्तरह्नदोह्नसम्यक्त्व और व्रत संवर।

प्रश्न ८८. आचार्य के निर्जरा होती है या नहीं?

उत्तरह्नहोती है। आचार्य के शुभ प्रवृति के साथ पुण्य का बंध होता है और पुण्य बंध के साथ निर्जरा होना नियमा है।

प्रश्न ८९. बारह प्रकार की निर्जरा में से कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तरह्न१२ प्रकार की।

प्रश्न ९०. आचार्य के सकाम निर्जरा होती है या अकाम?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न ९१. आचार्य उपवास आदि तप करते हैं?

उत्तरह्नहां। साध्य की प्राप्ति के अभाव में कर्म निर्जरा के लिये अनशन तप करते हैं।

प्रश्न ९२. आचार्य ऊनोदरी तप करते हैं?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न ९३. आचार्य के द्रव्य ऊनोदरी होती है या भाव ऊनोदरी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न ९४. आचार्य गोचरी के लिये जाते हैं या नहीं?

उत्तरह्नजा सकते हैं।

प्रश्न ९५. आचार्य गोचरी क्यों जाते हैं?

उत्तरह्नमार्ग में, कर्कश क्षेत्र में, सहयोगी के न होने पर, ग्लान, प्राघूर्णक, बाल, वृद्ध, असहह्नइनके लिये प्रायोग्य भोजनह्नपान लाने के लिये अथवा इनके लिये लाया गया भोजन पान पर्याप्त न होने पर आचार्य स्वयं भिक्षा के लिये जा सकते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ९६. आचार्य यदि गोचरी में समय न लगायो तो उससे उनको क्या लाभ है?

उत्तरह्नआचार्य यदि गोचरी नहीं जाते हैं तो वे उस समय में विश्वस्त होकर एकांत स्थान में सूत्रार्थ का गुणन, विद्या, मंत्र, निमित्त शास्त्र, योग-शास्त्र का परावर्तन कर सकते हैं। रहस्य सूत्रों का अभ्यास कर हस्तगत कर सकते हैं।

प्रश्न ९७. आचार्य के रसपरित्याग, कायक्लेश, प्रतिसंलीनता के माध्यम से निर्जरा होती है या नहीं?

उत्तरह्नहोती है।

प्रश्न ९८. आचार्य दोषों की शुद्धि के लिये प्रायश्चित्त करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं।

प्रश्न ९९. क्या आचार्य को भी कोई दोष लगता है?

उत्तरह्नहां। छद्मस्थता के कारण दोष लगने की संभावना रहती ही है।

प्रश्न १००. आचार्य विनय तप करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नआचार्य ज्ञान-दर्शन-चारित्रादि का तथा रत्नाधिक साधुओं का विनय करते हैं।

प्रश्न १०१. आचार्य को किस समय वंदना करने से अविनय होता है?

उत्तरह्नआचार्य को निम्नोक्त समय में वंदना करने से अविनय होता हैह्न

१. प्रवचन देने में दत्तचित्त हो।
२. सम्मुख बैठे हुये न हो।
३. प्रमत्त अवस्था में हो।
४. आहार करते हो।
५. निहार-उच्चार करते हो।

प्रश्न १०२. आचार्य वैयावृत्त्य करते हैं?

उत्तरह्नहां। रोगी, बाल, वृद्ध, स्थविरह्नइन सबको चित्तसमाधि देना वैयावृत्त्य ही है।

प्रश्न १०३. आचार्य स्वाध्याय करते हैं?

उत्तरह्नहां। आचार्य पांचों प्रकार का स्वाध्याय करते हैं।

प्रश्न १०४. आचार्य में आत्मा कितनी होती हैं?

उत्तरह्नसामान्यतः आचार्य में आठ आत्मा होती है। यदि छद्मस्थ-वीतराग की अवस्था हो तो कषाय आत्मा को छोड़कर सात आत्मा पाती है।

प्रश्न १०५. आचार्य में दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नएक-इक्कीसवां। क्योंकि मनुष्य पंचेन्द्रिय दण्डक वाला जीव ही साधु बन सकता है।

प्रश्न १०६. आचार्य में लेश्या कितनी?

उत्तरह्नछह। वैसे भाव लेश्या बदलती रहती है।

प्रश्न १०७. आचार्य में दृष्टि कौन-सी?

उत्तरह्नएकह्नसम्यक्दृष्टि।

प्रश्न १०८. आचार्य में चार ध्यान में से कितने ध्यान होते हैं?

उत्तरह्नतीन ध्यान (रौद्रध्यान को छोड़कर)।

प्रश्न १०९. आचार्य का किस द्रव्य में समावेश होता है?

उत्तरह्नजीवास्तिकाय में।

प्रश्न ११०. आचार्य के त्याग कितने करण-योग से होते हैं?

उत्तरह्नतीन करणह्नतीन योग से।

प्रश्न १११. वर्तमान में विचरने वाले आचार्य कितने चारित्र की स्पर्शना करते हैं?

उत्तरह्नदो चारित्रह्नसामायिक व छेदोपस्थापनीय चारित्र।

प्रश्न ११२. आचार्य कितने चारित्र की स्पर्शना करते हैं?

उत्तरह्न
- महाविदेह क्षेत्र मेंह्नछेदोपस्थापनीय चारित्र को छोड़कर शेष चार चारित्रों का स्पर्श करते हैं।
- भरत-ऐरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के समय पांचों चारित्र का स्पर्श करते हैं।
- भरत-ऐरवत क्षेत्र में दूसरे से तेइसवें तीर्थंकर के समय में आचार्य छेदोपस्थापनीय चारित्र को छोड़ कर शेष चार चारित्र का स्पर्श करते हैं।

प्रश्न ११३. आचार्य पद में २३ पदवी में से कितनी पदवी होती है?

उत्तरह्नदो पदवीह्नसाधु और सम्यक्त्वी।

प्रश्न ११४. भावी आचार्य में तेवीस पदवी में से कितनी पदवी हो सकती हैं?

उत्तरह्नग्यारह।

- उत्तम नौ पदवी में से आठ पदवी (वासुदेव को छोड़कर)
- सात पंचेन्द्रिय रत्न में से-३ सेनापति, पुरोहित और गाथा पति।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इन ग्यारह पदवी वाला आचार्य बन सकता है।

प्रश्न ११५. आचार्य पद हेय, ज्ञेय और उपादेय इनमें से क्या हैं?

उत्तरह्नतीनोंह्न

१. सम्पूर्ण जीव जगत की अपेक्षा आचार्य पद ज्ञेय है।
२. चार-तीर्थ, उपाध्याय, अविरत सम्यक्दृष्टि जीवों के लिये उपादेय है।
३. अरिहंत, सिद्ध, केवली की अपेक्षा हेय है।

प्रश्न ११६. आचार्य कितने कल्पी विहारी होते हैं?

उत्तरह्ननव कल्पी।

प्रश्न ११७. आचार्य का संहरण होता है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ११८. आचार्य के कितनी कषाय होती हैं?

उत्तरह्नआचार्य के संज्वलनह्नक्रोध, मान, माया और लोभ ये कषाय उदय में रहते हैं।

प्रश्न ११९. अभवी आचार्य के कितनी कषाय उदय में रहती है?

उत्तरह्नअभवी आचार्य के अनन्तानुबंधीह्नक्रोध, मान, माया और लोभह्नये चार कषाय उदय में रहती हैं।

प्रश्न १२०. तीन वेद में से कौन से वेद में आचार्य होते हैं?

उत्तरह्नपुरुषवेद में।

प्रश्न १२१. पांच प्रकार के देवों में से आचार्य का किसमें समावेश होता है?

उत्तरह्नधर्म देव में।

प्रश्न १२२. आचार्य संसार के जीवों के कितने हिस्से में हैं?

उत्तरह्नअनन्तवें हिस्से में।

प्रश्न १२३. आचार्य का विचरण लोक के कितने भाग में होता है?

उत्तरह्नअसंख्यातवें भाग में।

प्रश्न १२४. गण में आचार्य-उपाध्याय के सात अति-शेष कौन-कौन से होते हैं?

उत्तरह्न१. बाहर से आकर उपाश्रय में पैरों की धूलि को झाड़ना।
२. उपाश्रय में उच्चार-प्रस्रवण का व्युत्सर्ग और विशोधन करना।
३. उनके लिये सेवा की ऐच्छिकता।
४. एक-दो रात उपाश्रय में अकेले रह सकते हैं।

५. एक दो रात उपाश्रय से बाहर अकेले रह सकते हैं।
६. वस्त्र उपकरण आदि उज्ज्वल रखना।
७. भक्तपान की विशेषताह्नस्थिरबुद्धि के लिए उपयुक्त मृदु-स्निग्ध भोजन करना। ये आचार्य के अतिशेष (विशेषताएं) है।[1]

प्रश्न १२५. व्यवहार भाष्य में आचार्य के कौन से पांच अतिशेषों का वर्णन आया हैं?

उत्तरह्न१. उत्कृष्ट
२. उत्कृष्ट पान
३. वस्त्र प्रक्षालन
४. प्रशंसन
५. हाथ, पैर, नयन, दांत आदि धोना।

प्रश्न १२६. आचार्यों के लिये उपरोक्त अतिशेष क्यों कहे गये हैं?

उत्तरह्नआचार्यों के लिये अतिशेष के वर्णन के मुख्य कारणह्न

१. वे तीर्थंकर के संदेशवाहक होते हैं।
२. वे सूत्र और अर्थ रूप प्रवचन के दायक होते हैं।
३. उनकी वैयावृत्त्य से महान निर्जरा होती है।
४. वे सापेक्षता के सूत्रधार होते हैं।
५. वे तीर्थ की अव्यवच्छित्ति के हेतु होते हैं।

प्रश्न १२७. आचार्य के चारों ओर कितने क्षेत्र का अवग्रह होता है?

उत्तरह्नअवग्रह अर्थात् अनुज्ञापित क्षेत्र। चारों दिशाओं में साढ़े तीन हाथ का गुरु का अवग्रह होता है, उसमें गुरु की आज्ञा के बिना प्रवेश नहीं करना चाहिये।

प्रश्न १२८. क्या आचार्य उपदेश देते हैं?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न १२९. आचार्य के छत्तीस गुण पांच भावों में से किस भाव में समावेश होता है?

उत्तरह्नएकह्नक्षयोपशम-भाव में।

प्रश्न १३०. आचार्य पद रूपी या अरूपी?

उत्तरह्नदोनों नहीं। यह तो शुभ नाम कर्म के उदय से प्राप्त होता है।

प्रश्न १३१. आचार्य रूपी या अरुपी?

उत्तरह्नदोनों। आत्मा अरूपी है और शरीर रूपी।

१. स्थानांग ७/८१।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १३२. गण धारण करने वाले भावी आचार्य का लक्ष्य क्या होना चाहिये?

उत्तरह्ननिर्जरा व कर्त्तव्य बुद्धि से गण संचालन, पूजा प्रतिष्ठा नहीं।

प्रश्न १३३. गण धारण के योग्य कौन होता है?

उत्तरह्नजो साधु आहार वस्त्र आदि की लब्धि से युक्त है, जो आदेयवाक्य है, जो परिपूर्ण देह वाला है, जो लोक में सत्कारभाक्-विद्ववज्जनपूज्य है, जो मतिमान् है, शैक्ष जिसकी पूजा करते है, सामान्य लोग भी जिसे बहुमान देते है, वह गणधारण योग्य होता है।

प्रश्न १३४. गणधारण के अयोग्य कौन होता है?

उत्तरह्नजो बहुश्रुत और गीतार्थ होने पर भी आहार, पूजा आदि के लिये गण को धारण करता है, जो तिंतिण स्वभाव वाला है, जो चलचित्त अवस्थित और दुर्बल देह वाला होता है, ये सब गण धारण के अयोग्य होते हैं।

प्रश्न १३५. प्रशस्य आचार्य कौन होता है?

उत्तरह्नजो आचार्य सूत्र और अर्थ का पारगामी हो, जो आगाढ़प्रज्ञ[1] शास्त्रों से भावित हो, जो आभिजात्य हो, जिसका चिन्तन विशद हो, ऐसे गुणसम्पन्न आचार्य प्रशस्य आचार्य होते हैं।

प्रश्न १३६. आचार्य गुरु बनाते हैं या नहीं?

उत्तरह्नभावी आचार्य अपने गुरु के मार्गदर्शन में ही संयम जीवन जीते हैं। अर्थात् आचार्य बनने से पूर्व गुरु स्वीकार करते ही हैं।

प्रश्न १३७. आचार्य समुद्घात करते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १३८. आचार्य के चार संज्ञा में से कितनी संज्ञा है?

उत्तरह्नचारों ही।

प्रश्न १३९. आचार्य सन्नी होते हैं या असन्नी?

उत्तरह्नसन्नी।

प्रश्न १४०. क्या परस्पर दो आचार्यों का मिलन होता है?

उत्तरह्नहां।

१. जिन शास्त्रों के अध्ययन में गहन प्रज्ञा का उपयोग करना होता है, उन गहन गंभीर शास्त्रों के तात्पर्यार्थ पकड़ने में जिसकी बुद्धि निपुण हो।

प्रश्न १४१. आचार्य चौदह प्रकार के दान में से कितने प्रकार का दान ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नचौदह प्रकार का।

प्रश्न १४२. आचार्य के अभी कितने भव बाकी है?

उत्तरह्नभाव आचार्य के क्षेत्र काल की अनुकूलता हो तो उसी भव में मोक्ष जा सकते हैं। साधना में कुछ कमी हो तो एक-दो-तीन भव में मोक्ष जा सकते हैं।

प्रश्न १४३. क्या वर्तमान में भरतक्षेत्र में विचरने वाले आचार्य यहां से सीधा मोक्ष जा सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १४४. क्या आचार्य द्वारा दीक्षित साधु आचार्य से पहले मोक्ष जा सकते हैं?

उत्तरह्नहां, काल, क्षेत्र की अनुकूलता हो तो।

प्रश्न १४५. आचार्य प्रतिक्रमण करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं।

प्रश्न १४६. आचार्य प्रतिक्रमण कब करते हैं?

उत्तरह्न● भरत व ऐरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के समय में दोनों समय प्रतिक्रमण करते हैं।

● भरत व ऐरवत क्षेत्र में मध्यवर्ती २२ तीर्थंकरों के समय में और महाविदेह क्षेत्र में जब दोष लगे तभी प्रतिक्रमण कर लेते हैं।

प्रश्न १४७. आचार्य स्थावर तीर्थ है या जंगम?

उत्तरह्नजंगम।

प्रश्न १४८. आचार्य हंसते या नहीं?

उत्तरह्नहंसते है। हास्य मोहनीय कर्म का उदय होने से आचार्य हंसते भी है और हंसाते भी हैं। नौवें गुणस्थान से ऊपर वाले आचार्य न हंसते है और न हंसाते हैं।

प्रश्न १४९. आचार्य को रोग आते हैं या नहीं?

उत्तरह्नअसातावेदनीय का उदय होने के कारण बीमारी आ सकती है।

प्रश्न १५०. आचार्य रोग आने पर औषधि का प्रयोग कर सकते हैं?

उत्तरह्नहां, कर सकते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १५१. आचार्य संसारी जीव है या मुक्त जीव?

उत्तरह्नसंसारी।

प्रश्न १५२. आचार्य छद्मस्थ है या वीतरागी?

उत्तरह्नछद्मस्थ।

प्रश्न १५३. आचार्य का ज्ञान और दर्शन क्षायिक भाव है या क्षायोपशमिक?

उत्तरह्नक्षायोपशमिक।

प्रश्न १५४. आचार्य का ज्ञान प्रत्यक्ष है या परोक्ष?

उत्तरह्नजो आचार्य मात्र मति और श्रुतज्ञान के धारक हैं उनका ज्ञान परोक्ष है। जो आचार्य अवधिज्ञानी और मनःपर्यवज्ञानी हैं उनका ज्ञान प्रत्यक्ष है।

प्रश्न १५५. आचार्य सोपक्रमी होते हैं या निरूपक्रमी?

उत्तरह्नदोनों। चरमशरीरी की अपेक्षा निरूपक्रमी और शेष आचार्य का आयुष्य सोपक्रमी भी हो सकता है और निरूपक्रमी भी हो सकता है।[1]

प्रश्न १५६. आचार्य अमर होते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १५७. आचार्य का मरण कौन सा?

उत्तरह्नपंडितमरण।

प्रश्न १५८. आचार्य की इन तीन आत्माओं में से (बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा) कौनसी आत्मा है?

उत्तरह्नअंतरात्मा।

प्रश्न १५९. आचार्य स्वामी हैं या सेवक?

उत्तरह्ननवकार मंत्र के प्रथम दो पद की अपेक्षा सेवक है और अंतिम दो पद की अपेक्षा स्वामी है।

प्रश्न १६०. आचार्य साधक हैं या साध्यदशा को प्राप्त हो गये हैं?

उत्तरह्नआचार्य अभी साधक है। क्योंकि उनका साध्य हैह्नसिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनना। जब तक अपने साध्य को प्राप्त नहीं करेंगे तब तक साधक ही रहेंगे।

प्रश्न १६१. आचार्य सरागी है या वीतरागी?

उत्तरह्नसरागी।

१. सिद्धपरमेष्टि में प्रश्नोत्तर १२३।

प्रश्न १६२. आचार्य सयोगी है या अयोगी?

उत्तरह्नसयोगी।

प्रश्न १६३. आचार्य के कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्नबावीस।

प्रश्न १६४. आचार्य पद पर स्थित आचार्य आराधक होते है या विराधक?

उत्तरह्नसाधना में जागरुक रहने से आराधक होते हैं यदि वे अपनी साधना में जागरुक नहीं रहते, कृत प्रमाद का प्रायश्चित्त नहीं करते हैं तो विराधक भी हो सकते हैं।

प्रश्न १६५. आचार्य आचार्य पद को कितने समय तक भोग सकते हैं?

उत्तरह्नकम से कम अंतर्मुहूर्त्त और उत्कृष्टतः कुछ न्यून क्रोड़ पूर्व का।

प्रश्न १६६. आचार्य पद शाश्वत है या नहीं?

उत्तरह्नआचार्य पद अशाश्वत है।

प्रश्न १६७. आचार्य द्रव्य, गुण, पर्याय में से क्या है?

उत्तरह्नपर्याय।

प्रश्न १६८. क्या आचार्य नींद लेते हैं?

उत्तरह्नहां। शरीरधारी हैं तो नींद भी लेनी पड़ती है।

प्रश्न १६९. आचार्य को स्वप्न आते हैं या नहीं?

उत्तरह्नआते हैं।

प्रश्न १७०. आचार्य को स्वप्न अच्छे आते है या बुरे?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १७१. आचार्य का ज्यादा से ज्यादा और कम से कम आयुष्य कितना होता है?

उत्तरह्नअधिक से अधिक न्यून क्रोड़ पूर्व का और कम से कम न्यून बीस वर्ष का।

प्रश्न १७२. आचार्य सकर्मी होते हैं या अकर्मी?

उत्तरह्नदोनों। दैनिक प्रवृत्ति के अनुसार सकर्मी और जितनी-जितनी राग-द्वेष से उनकी निवृत्ति है उस दृष्टि से अकर्मी भी हैं।

प्रश्न १७३. कौन आचार्य इहलोक में हितकारी होता है और कौन परलोक में?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्न१. जो आचार्य समस्त साधुओं के भक्त-पान-वस्त्र आदि की पूर्ति करता है, परन्तु सारणा-वारणा नहीं करता वह इहलोक का हितकारी है, परलोक का नहीं।

२. जो आचार्य सारणा-वारणा करता है, परन्तु भक्त-पान आदि की पूर्ति नहीं करता, केवल स्फुट बोलता है, वह परलोक का हितकारी है, इहलोक का नहीं।

३. जो भक्त-पान आदि की भी पूर्ति करता है, और सारणा-वारणा भी करता है वह इहलोक व परलोक दोनों का हितकारी है।

४. जो दोनों नहीं करता, वह न इहलोक का हितकारी है और न परलोक का।

प्रश्न १७४. गण में शांति रखने के लिये आचार्य को क्या-क्या करना चाहिये?

उत्तरह्नपांच कार्य करते रहने से गण में शांति रहती हैह्न

१. आज्ञा-धारणा की सम्यक् प्रवृत्ति करते रहने से।

२. रत्नाधिक (दीक्षा वृद्ध) साधुओं का उचित विनय करते एवं करवाते रहने से।

३. उचित समय पर सूत्रों की सम्यक् वाचना देते रहने से।

४. ग्लान, नवदीक्षित एवं रोगी साधुओं की उचित सेवा करवाते रहने से।

५. साधु-साध्वियों की सलाह लेकर दूर देश में विहार करने से।

इन पांच बातों में जो आचार्य ध्यान नहीं रखते उनके संघ में कलह-अशांति होती है।

प्रश्न १७५. क्या आचार्य का गण से निर्गमन होता है?

उत्तरह्नहां। पांच कारणों से वे गण से अलग हो सकते हैं।[1] यथाह्न

१. गण में आज्ञा-धारणा का अच्छी तरह प्रयोग न कर सकने से।

२. वंदन व विनय का सम्यग् प्रयोग न कर सकने से।

३. आचार्य अपने प्रमाद आदि कारणों से समुचित ढंग से वाचना न देने पर।

४. अपने गण या दूसरे गण की साध्वी में आसक्त हो जाने से।

५. अपने मित्र या ज्ञाति गण से निर्गत हो जाये तो उन्हें पुनः स्थिर करने के लिये या सहयोग करने के लिये।

१. स्थानांग ५/२/४३९।

प्रश्न १७६. आचार्य की क्या विशेषता होती है?

उत्तरह्न'तिन्नाणं तारयाणं' ये स्वयं संसार सागर से तरते हैं और दूसरों को तारते हैं संघ की सारणा-वारणा (सार-संभाल) उनका मुख्य कार्य है।

प्रश्न १७७. साधु-साध्वी को आलोचना देकर युद्ध कौन करता है?

उत्तरह्नआचार्य।

प्रश्न १७८. आचार्य आलोचना क्यों करवाते हैं?

उत्तरह्नआलोचना करने सेह्न

१. पंचाचार का सम्यक् पालन होता है।

२. विनयगुण का प्रवर्तन होता है।

३. कल्प-परिपाटी का उपदर्शन होता है।

४. आत्मा की विशोधि-निःशल्यता होती है।

५. ऋजुभाव-संयम का पालन होता है।

६. आर्जव, मार्दव और लाघव की वृद्धि होती है।

७. मैं निःशल्य हो गया हूं ऐसी तुष्टि होती है।

८. मैंने आलोचना नहीं की। इस परितप्ति का नाश होता है, आह्लाद पैदा होता है।

प्रश्न १७९. आचार्य धम्म जागरणा करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं।

प्रश्न १८०. आचार्य का संहनन कौन सा?

उत्तरह्नछहों संहनन हो सकते हैं।

प्रश्न १८१. आचार्य का संस्थान कौन सा?

उत्तरह्नछहों संस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न १८२. आचार्य की गति ऋजु या वक्र?

उत्तरह्नचरम शरीरी की अपेक्षा ऋजु अन्यथा वक्रगति।

प्रश्न १८३. आचार्य भवी होते है या अभवी?

उत्तरह्नभवी।

प्रश्न १८४. आचार्य में वीर्य कौन सा?

उत्तरह्नपण्डितवीर्य।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १८५. आचार्य में पांच भावों में से कितने भाव पा सकते हैं?

उत्तरह्नअधिकतम आचार्यों में पांच भाव पाते हैं। कम से कम तीन भाव-औदयिक क्षायोपशमिक और पारिणामिक भाव सभी आचार्यों में पाते हैं।

प्रश्न १८६. आचार्य में उदय के तेतीस बोलों में से कितने पा सकते हैं?

उत्तरह्न१७। गतिह्नएक मनुष्य, काय-एक-त्रस, लेश्या-६, कषाय-४, वेद-१, पुरुषवेद-१, आहारता, सयोगिता, संसारता और छद्मस्थता।

प्रश्न १८७. आचार्य में उपशम के कितने बोल पा सकते हैं?

उत्तरह्नदोह्नऔपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र।

प्रश्न १८८. आचार्य में क्षायिक भाव के आठ बोलों में से कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नआचार्य में जो क्षायिक भाव लिया गया है वह क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा से है। परन्तु क्षायक भाव के आठ बोलों में से आचार्य में एक भी नहीं पाता।

प्रश्न १८९. आचार्य में क्षयोपशम के कितने बोल पा सकते है?

उत्तरह्नआचार्य में क्षयोपशम के ३२ बोलों में से २४ बोल पाते हैं (उपाध्याय व साधु की तरह)।

प्रश्न १९०. आचार्य में जीवाश्रित पारिणामिक के कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्न१०।

प्रश्न १९१. आचार्य कौन सी क्रिया वाले होते हैं ईर्यापथिकी या साम्परायिकी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १९२. क्या साध्वी आचार्य बन सकती है?

उत्तरह्नहां। आचार्य बनने वाली साध्वी के ६० वर्ष का संयम पर्याय होना जरूरी है।[1] दूसरा जब तक साधु आचार्य-पद के योग्य न हो जाये तब तक साध्वी को आचार्य बनाया जा सकता है।

प्रश्न १९३. आचार्य के कितने भेद हैं?

उत्तरह्नचार भेद।

प्रश्न १९४. आचार्य के चार भेद कौन-कौन से है?

उत्तरह्न१. प्रव्रज्याचार्य
२. उपस्थापनाचार्य
३. उपदेशाचार्य
४. धर्माचार्य।

१. व्यवहार ७/१९-२०।

प्रश्न १९५. आचार्य किस श्रेणी का आरोहण कर सकते हैं उपशम या क्षपक?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १९६. आचार्य पद छह में कौन? नौ में कौन?

उत्तरह्नछह में जीव, नौ में दोह्नजीव, संवर।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो उवज्झायाणं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो उवज्झायाणं

प्रश्न १. नमस्कार महामंत्र में चौथा पद कौन सा है?

उत्तरह्नणमो उवज्झायाणं।

प्रश्न २. नमस्कार महामंत्र के चौथे पद में किसे नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नउपाध्यायों को।

प्रश्न ३. णमो उवज्झायाणं पद में अक्षर कितने?

उत्तरह्नसात।

प्रश्न ४. णमो उवज्झायाणं में लघु और गुरु अक्षर कितने?

उत्तरह्नलघु-२ और गुरु-५।

प्रश्न ५. णमो उवज्झायाणं में ह्रस्व और दीर्घ अक्षर कितने?

उत्तरह्नह्रस्व-चार और दीर्घ-तीन।

प्रश्न ६. उपाध्याय का रंग कौन सा?

उत्तरह्नहरा रंग।

प्रश्न ७. उपाध्याय का ध्यान कौन से केन्द्र पर किस रंग के साथ कराया जाता है?

उत्तरह्नआनन्द केन्द्र (हृदय के पास) पर हरे रंग का।

प्रश्न ८. उपाध्याय किसे कहते है?

उत्तरह्नजो स्वयं अर्हत् वाणी का अध्ययन करते हैं तथा दूसरों को अध्ययन करवाते हैं उन्हें उपाध्याय कहते हैं।

प्रश्न ९. उपाध्याय के गुण कितने?

उत्तरह्न२५।

प्रश्न १०. उपाध्याय के पच्चीस गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न११ अंग, १२ उपांग के ज्ञाता, स्वयं अध्ययन करना तथा दूसरों को अध्ययन करवाना।

प्रश्न ११. बहुश्रुत उपाध्याय को किन-किन उपमाओं से उपमित किया गया है?

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र में बहुश्रुत उपाध्याय को निम्नलिखित १५ प्रकार की उपमाओं से उपमित किया गया हैंह्न

१. आकीर्ण अश्व
२. योद्धा
३. हाथी
४. वृषभ
५. सिंह
६. वासुदेव
७. चक्रवर्ती
८. शक्र
९. सूर्य
१०. चन्द्र
११. कोठार
१२. जम्बूवृक्ष
१३. सीतानदी
१४.मन्दर पर्वत
१५. स्वयंभूरमण समुद्र।

प्रश्न १२. आगम के कितने प्रकार हैं?

उत्तरह्नतीन प्रकारह्न१. आत्मागम २. अनन्तरागम ३. परम्परागम।

- तीर्थंकरों के लिए अर्थह्नआत्मागम है।
- गणधरों के लिए सूत्र आत्मागम और अर्थ अनन्तरागम है।
- गणधर शिष्यों के लिए सूत्र अनन्तरागम है और अर्थ परम्परागम है।

उनके बाद शेष सबके लिए सूत्र और अर्थ दोनों ही न आत्मागम है और न ही अनन्तरागम है। वे परम्परागम है।

प्रश्न १३. सूत्र कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नदो प्रकार केह्नकालिक और उत्कालिक।

प्रश्न १४. कालिक सूत्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजिस सूत्र की स्वाध्याय दिन व रात की प्रथम प्रहर में और दिन व रात की चतुर्थ प्रहर में आवश्यक का कालमान छोड़कर की जाती हैं उसे कालिक सूत्र कहते हैं।

प्रश्न १५. उत्कालिक सूत्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजिस सूत्र का स्वाध्याय चार अकाल का समय छोड़कर किया जाता है, उसे उत्कालिक सूत्र कहा जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १६. चार अकाल कौन से हैं?

उत्तरह्न१. सूर्योदय से पूर्व ४८ मिनिट का।
२. सूर्यास्त के पश्चात् ४८ मिनिट का।
३. मध्याह्नह्न११.३० से १२.३०।
४. अर्धरात्रिह्न११.३० से १२.३०।

प्रश्न १७. कालिक सूत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नकालिक सूत्र अनेक प्रकार के कहे गये हैंह्न११ अंग तथाह्न

१. उत्तराध्ययन
२. दशा
३. कल्प
४. व्यवहार
५. निशीथ
६. महानिशीथ
७. ऋषिभाषित
८. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
९. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति
१०. चन्द्रप्रज्ञप्ति
११. क्षुल्लिक विमान प्रविभक्ति
१२. महती विमान प्रविभक्ति
१३. अंगचूलिका
१४. वर्गचूलिका
१५. व्याख्यानचूलिका
१६. अरुणोपपात
१७. वरुणोपपात
१८. गरुड़ोपपात
१९. धरणोपपात
२०. वैश्रमणोपपात
२१. वेलंधरोपपात
२२. देवेन्द्रोपपात
२३. उत्थानश्रुत
२४. समुत्थानश्रुत
२५. नागपर्यापनिका
२६. निरयावलिका
२७. कल्पवतंसिका
२८. पुष्पिका
२९. पुष्पचूलिका
३०. वृष्णिदशा।

प्रश्न १८. कालिकश्रुत के ग्रहण और परावर्तन में कितना समय लगता है?

उत्तरह्नग्रहण में बारह वर्ष और परावर्तन में एक वर्ष।

प्रश्न १९. उत्कालिक सूत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्नउत्कालिक सूत्र अनेक प्रकार के कहे गये हैंह्न

१. दशवैकालिक
२. कल्पिकाकल्पिक
३. क्षुल्लककल्पश्रुत
४. महाकल्पश्रुत
५. औपपातिक
६. राजप्रसेणिक
७. जीवाभिगम
८. प्रज्ञापना

९. महाप्रज्ञापना
१०. प्रमादप्रवाद
११. नंदी
१२. अनुयोगद्वार
१३. देवेन्द्रस्तव
१४. नंदुलवैचारिक
१५. चन्द्रवेध्यक
१६. सूर्यप्रज्ञप्ति
१७. पोरसी मण्डल
१८. मण्डल प्रवेश
१९. विद्याचरण विनिश्चय
२०. गणविद्या
२१. ध्यान विभक्ति
२२. मरण विभक्ति
२३. आत्मविशोधि
२४. वीतरागश्रुत
२५. संलेखनाश्रुत
२६. विहारकल्प
२७. चरणविधि
२८. आतुरप्रत्याख्यान
२९. महाप्रत्याख्यान
३०. दृष्टिवाद।

प्रश्न २०. वर्तमान में कितने सूत्रों की विद्यमानता है?

उत्तरह्न३२ सूत्रों की।

प्रश्न २१. बत्तीस सूत्रों की श्लोक संख्या कितनी हैं?

उत्तरह्नलगभग ७०८५२ श्लोक हैं। ग्यारह अंगों के ३५७१६, बारह उपांगों के २५८८३, चार मूल सूत्रों के ५४०५, चार छेद सूत्रों के ३७२३ और आवश्यक के १२५ श्लोक हैं।

प्रश्न २२. ३२ सूत्रों को कितने भागों में विभक्त किया गया है?

उत्तरह्नपांच भागों मेंह्न

१. अंगह्न११
२. उपांगह्न१२
३. मूलसूत्रह्न४
४. छेदसूत्रह्न४
५. आवश्यक सूत्रह्न१।

प्रश्न २३. ग्यारह अंग कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न१. आचारांग
२. सूत्रकृतांग
३. स्थानांग
४. समवायांग
५. विवाहप्रज्ञप्ति
६. ज्ञाताधर्मकथा
७. उपासकदशा
८. अन्तकृतदशा
९. अनुत्तरोपपातिक
१०. प्रश्नव्याकरण
११. विपाकश्रुत
१२. दृष्टिवाद।

प्रश्न २४. अंगों का सार क्या हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्लआचार।

प्रश्न २५. अंग प्रविष्ट का दूसरा नाम क्या हैं?

उत्तरह्लद्वादशांगी।

प्रश्न २६. अंग प्रविष्ट बारह सूत्र है फिर यहां ग्यारह सूत्रों की ही संख्या दी, ऐसा क्यों?

उत्तरह्लबारह सूत्र में से दृष्टिवाद वर्तमान में अनुपलब्ध है अतः ग्यारह सूत्रों का ही यहां नाम है।

प्रश्न २७. उपांग किसे कहते हैं, और बारह उपांगों के नाम बताइये?

उत्तरह्ल१२ अंगों के अध्ययन में जो सहयोगी सूत्र हैं उसे उपांग कहते हैं। वे निम्नलिखित हैंह्ल

१. औपपातिक
२. राजप्रश्नीय
३. जीवाभिगम
४. प्रज्ञापना
५. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति
६. चन्द्रप्रज्ञप्ति
७. सूर्यप्रज्ञप्ति
८. निरयावलिका
९. कल्पवतंसिका
१०. पुष्पिका
११. पुष्पचूलिका
१२. वृष्णिदशा।

प्रश्न २८. मूलसूत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्ल१. उत्तरध्ययन
२. दशवैकालिक
३. नंदी
४. अनुयोगद्वार।

प्रश्न २९. 'छेद' का तात्पर्य क्या है, और वे छेद सूत्र कौन से हैं?

उत्तरह्लजो सूत्र कृत दोषों का प्रायश्चित्त कर आत्मा को शुद्ध बनाने में सहयोगी बनते हैं उन्हें छेद सूत्र कहते हैं। छेदसूत्र चार हैंह्ल

१. व्यवहार सूत्र
२. बृहत्कल्प
३. निशीथ
४. दशाश्रुत स्कन्ध

प्रश्न ३०. अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य में क्या अन्तर है?

उत्तरह्ल१. ● अंग प्रविष्टह्लये सूत्र तीर्थंकर द्वारा कथित और गणधरों द्वारा रचित हैं।

● अंग बाह्यह्लये सूत्र छद्मस्थ, पूर्वधारी और विशिष्ट ज्ञाता द्वारा रचित होते हैं।

२. ● अंग प्रविष्ट श्रुत गणधरों द्वारा पूछे गए और तीर्थंकर भगवान द्वारा दिये गये उत्तरों से निष्पन्न होता है आचारांग आदि।

● अंग बाह्य में अप्रश्नपूर्वक प्रतिपादन होता है। जैसेह्लआवश्यक आदि।

प्रश्न ३१. आगमों का अध्ययन क्यों करवाना चाहिये?

उत्तरह्लआगमों का अध्यापन करवाने के पांच कारण हैंह्ल

१. संग्रह के लिएह्लशिष्यों को श्रुत सम्पन्न करने के लिये।
२. उपग्रह के लिएह्लभक्त-पान व उपकरणों की विधिवत् उपलब्धि कर सके, वैसी क्षमता उत्पन्न करने के लिये।
३. निर्जरा के लिएह्लकर्मक्षय के लिये।
४. अध्यापन से मेरा श्रुत पर्यवजातह्लपरिस्फुट होगा इसलिए।
५. श्रुत परम्परा को अव्यवच्छिन्न रखने के लिए।

प्रश्न ३२. साधक श्रुत का अध्ययन क्यों करता है?

उत्तरह्लसाधक के श्रुत का अध्ययन करने में पांच कारण हैंह्ल

१. ज्ञान के लिए
२. दर्शन के लिए
३. चारित्र के लिए
४. व्युद्ग्रह विमोचन के लिए।
५. यथार्थ भावों को जानने के लिए।

साधु श्रुत का अध्ययन करता है।

प्रश्न ३३. वाचना देने के योग्य कौन होता हैं?

उत्तरह्लठाणं सूत्र के अनुसार तीन प्रकार के व्यक्ति वाचना देने के योग्य होते हैंह्ल

१. जो विनीत हो।
२. विकृति में अप्रतिबद्ध हो।
३. कलह को उपशान्त करने वाला हो।

प्रश्न ३४. वाचना देने के अयोग्य कौन होता है?

उत्तरह्ल१. अविनीत
२. रस लोलुपी
३. कलह उपशांत न करने वाला।

प्रश्न ३५. उपाध्याय किस प्रकार के व्यक्ति को ज्ञान नहीं देते?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार पांच प्रकार के व्यक्तियों को उपाध्याय ज्ञान नहीं देतेह्न

१. जो अहंकारी हो।
२. जो क्रोधी हो।
३. जो प्रमादी हो।
४. जो रोगी हो और
५. जो आलसी हो।

प्रश्न ३६. ज्ञान प्राप्ति का अधिकारी कौन होता है?

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार आठ लक्षणों से युक्त व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्ति का अधिकारी होता हैह्न

१. जो हास्य नहीं करता।
२. जो इन्द्रिय और मन का दमन करता है।
३. जो मर्म प्रकाशित नहीं करता।
४. जो चरित्रवान होता है।
५. जो दुःशील नहीं होता।
६. जो रस लोलुपी नहीं होता।
७. जो क्रोध नहीं करता और
८. जो सत्य में रत रहता है।

प्रश्न ३७. उपाध्याय में भाव कितने होते हैं?

उत्तरह्नभाव ५। सामान्यतः औदयिक, क्षायोपशमि और पारिणामिकह्नये तीन भाव सभी उपाध्याय में होते हैं। औपशमिक सम्यक्त्व की अपेक्षा किसी-किसी के औपशमिक भाव और क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा किसी-किसी उपाध्याय के क्षायिक भाव भी होता है।

प्रश्न ३८. उपाध्याय पद कौन से भाव में मिलता है?

उत्तरह्नक्षयोपशम भाव में।

प्रश्न ३९. उपाध्याय को ज्ञान-दर्शन कौन से भाव में होता हैं?

उत्तरह्नक्षयोपशमजन्य और क्षायिक जन्य दोनों होता है।

प्रश्न ४०. उपाध्याय की गति कौन सी?

उत्तरह्नमनुष्य गति।

प्रश्न ४१. उपाध्याय की जाति कौन सी?

उत्तरह्नपंचेन्द्रिय।

प्रश्न ४२. उपाध्याय की काया कौन सी?

उत्तरह्नत्रस काया।

प्रश्न ४३. उपाध्याय के इन्द्रियां कितनी?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न ४४. क्या इन्द्रिय-विकल साधु या व्यक्ति को उपाध्याय बनाया जा सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ४५. उपाध्याय के पर्याप्तियां कितनी?

उत्तरह्नछह।

प्रश्न ४६. उपाध्याय में दस प्राण में से कितने प्राण?

उत्तरह्नउपाध्याय में दसों ही प्राण होते हैं।

प्रश्न ४७. उपाध्याय के शरीर कितने?

उत्तरह्नसामान्यतः उपाध्याय के तीन शरीर होते हैंह्नऔदारिक, तैजस, कार्मण। वैसे चौदह पूर्वधारी साधु को आहारक शरीर भी होता है और विशिष्ट लब्धिधारी साधु के वैक्रिय शरीर भी हो सकता है।

प्रश्न ४८. उपाध्याय के पन्द्रह योगों में से कितने योग हो सकते हैं?

उत्तरह्नसामान्यतः उपाध्याय में पन्द्रह योग होते हैं। एक समय में पूछा जाये तो चार योगह्न१ मन का, १ वचन का और शरीर का दो औदारिक व कार्मण।

प्रश्न ४९. उपाध्याय में उपयोग कितने?

उत्तरह्नउपाध्याय में उपयोग कम से कम चारह्नप्रथम दो ज्ञान और प्रथम दो दर्शन। अधिक से अधिकह्नसात उपयोगह्नचार ज्ञान (प्रथम), तीन दर्शन (प्रथम)।

प्रश्न ५०. उपाध्याय के कर्म कितने?

उत्तरह्नआठ।

प्रश्न ५१. उपाध्याय के कौन से चारित्र में कितने कर्म का बंध होता हैं?

उत्तरह्नउपाध्याय के प्रथम दो या तीन चारित्र में सात-आठ कर्म का बंध, सूक्ष्म

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संपराय चारित्र की स्पर्शना में ६ कर्म का बंध (मोहनीय व आयुष्य को छोड़कर) और यथाख्यात चारित्र की स्पर्शना में मात्र सातावेदनीय का बंध होता है।

प्रश्न ५२. उपाध्याय में गुणस्थान कौन सा?

उत्तरह्नगुणस्थान एक-छठा (प्रमत्तसंयत)।

प्रश्न ५३. पांच इन्द्रियों के २३ विषयों में से उपाध्याय के कितने विषय होते हैं?

उत्तरह्न२३।

प्रश्न ५४. उपाध्याय में जीव का भेद कौन सा?

उत्तरह्नएक चौदहवां (सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता)।

प्रश्न ५५. उपाध्याय पुण्य का उपार्जन और उपभोग करते हैं?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न ५६. उपाध्याय के पाप का बंध और उसका उदय होता है?

उत्तरह्नहां, होता है।

प्रश्न ५७. उपाध्याय के पांच आश्रव द्वारों में से कितने द्वार खुले हुये हैं?

उत्तरह्नतीनह्नप्रमाद, कषाय और योग आश्रव।

प्रश्न ५८. उपाध्याय के पांच संवर में से कौन सा संवर नहीं होता?

उत्तरह्नअप्रमाद, अकषाय और अयोग संवर नहीं होता।

प्रश्न ५९. उपाध्याय के कितने प्रकार की निर्जरा होती है?

उत्तरह्न१२ प्रकार की।

प्रश्न ६०. उपाध्याय के कर्म बंधन होता है क्या?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न ६१. उपाध्याय में आत्मा कितनी?

उत्तरह्नआठ आत्मा।

प्रश्न ६२. उपाध्याय में दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नदण्डकह्नएक 'इक्कीसवां' (मनुष्य पंचेन्द्रिय का)।

प्रश्न ६३. उपाध्याय में लेश्या कितनी?

उत्तरह्नछह।

प्रश्न ६४. उपाध्याय की दृष्टि कौन सी?

उत्तरह्नसम्यक् दृष्टि।

प्रश्न ६५. उपाध्याय में चार ध्यान में से कितने ध्यान पाते हैं?

उत्तरह्नतीन ध्यान (रौद्रध्यान को छोड़कर)।

प्रश्न ६६. उपाध्याय का छह द्रव्यों में से किस द्रव्य में समावेश होता है?

उत्तरह्नजीव द्रव्य में।

प्रश्न ६७. उपाध्याय किस राशि में आते हैं?

उत्तरह्नजीव राशि।

प्रश्न ६८. राशि दो प्रकार की होती है व्यवहार राशि और अव्यवहार राशि। उपाध्याय किस राशि के जीव है?

उत्तरह्नव्यवहारराशि के।

प्रश्न ६९. उपाध्याय के प्रत्याख्यान कितने करण-योग से होते हैं?

उत्तरह्नतीन करण और तीन योग से।

प्रश्न ७०. उपाध्याय के पांच चारित्र में से कौन सा चारित्र है?

उत्तरह्नछेदोपस्थापनीय चारित्र।

प्रश्न ७१. आगम का स्वाध्याय कितने प्रकार से होता है?

उत्तरह्नआगम-स्वाध्याय दो प्रकार से होता हैह्नसूत्रागम पठन और अर्थागम पठन।

प्रश्न ७२. सूत्रागम और अर्थागम इन दोनों में से कौन सा स्वाध्याय करना चाहिये?

उत्तरह्नदोनों प्रकार का स्वाध्याय करना चाहिये।

प्रश्न ७३. सूत्रार्थ की वाचना कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तरह्नतीन प्रकार कीह्न

१. आवलिकाह्नविच्छिन्न रूप से एकांत में होने वाली मण्डली।
२. मण्डलिकाह्नस्वस्थान में होनेवाली।
३. घोटक कंडूयितह्नबारी-बारी से परस्पर पृच्छा।

आवश्यक आदि सूत्र से लेकर दृष्टिवाद गत समस्त सूत्रों तक वाचना देना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ७४. श्रुत अध्येता मुनि के लिये विशेष क्या चर्या होती है?

उत्तरह्न१. श्रुत अध्ययन काल में योगवहन (चित्त समाधि की विशिष्ट साधना) करना।
२. श्रुत अध्ययन काल में तपस्या करना।
३. अल्पनिद्रा लेना।
४. प्रथम दो प्रहरों में श्रुत और अर्थ का बार-बार अभ्यास करना।
५. अध्येतव्य ग्रंथ को छोड़कर नया ग्रंथ नहीं पढ़ना।
६. पहले जो कुछ सीखा हो, उसे नहीं भूलना।
७. हास्य, विकथा, कलह आदि न करना।
८. धीमे-धीमे शब्दों में बोलना।
९. काम क्रोध आदि का निग्रह करना।

प्रश्न ७५. उपाध्याय को किस प्रकार श्रुत का अध्यापन करवाना चाहिये?

उत्तरह्न१. उपाध्याय सर्वप्रथम सूत्र का सूत्रार्थ समझाये।
२. दूसरी बार में सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति सहित सूत्रार्थ समझाये।
८. तीसरी बार में शंका-समाधान सहित विस्तार के साथ सूत्रार्थ प्रतिपादन करे।

प्रश्न ७६. श्रुत की श्रवण-विधि क्या है?

उत्तरह्नशिष्य को गुरु मुख से निकली हुई श्रुतशिखा को किस प्रकार सुनना चाहिये, इसका समाधान करते हुये शास्त्रकारों ने कहा हैं[1]ह्न
१. सर्वप्रथम मन-वचन-काया को संयत करके मौन भाव से श्रवण करे।
२. दूसरी बार में हुंकार दे।
३. तीसरी बार में तहत् कहे।
४. चौथी बार में सूत्र के पूर्वापर संबंध को थोड़ा समझकर प्रश्न पूछे।
५. पांचवीं बार में जिज्ञासा करे।
६. बार-बार विशेष रूप में पारायण करे।
७. सातवीं बार में श्रवण की परिपूर्णता प्राप्त करे अर्थात् जैसे गुरु ने कहा है वैसा ही स्वयं भी बोले।

प्रश्न ७७. श्रुत ग्रहण की विधि क्या है?

उत्तरह्नशास्त्रकारों ने शिष्य को श्रुत ग्रहण की विधि के आठ गुणों का वर्णन किया है। जो इस प्रकार हैंह्न

१. नंदी सूत्र ५७ गाथा ९६ तथा विशेषावश्यक, भाष्य गाथा ५९५।

सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हइय ईहए या वि।
ततो अपोहए वा धारेइ करेइ वा सम्मं॥[1]

१. विनययुक्त शिष्य गुरु मुख से शास्त्र को सुनने की इच्छा रखता है।
२. पुनः पुनः पूछता है अर्थात् अधीन श्रुत को निःशंकित करता है।
३. अधीत श्रुत के अर्थ को सुनता है।
४. सुनकर अवग्रह से ग्रहण करता है।
५. ग्रहण करके ईहा द्वारा पर्यालोचन करता है कि यह ऐसा होना चाहिये।
६. तत्पश्चात् गुरु ने ऐसा कहा है, इस बात को निश्चित करता है।
७. अर्थ को निश्चित करके उसे सदैव चित्त में धारण करना है।
८. तत्पश्चात् गुरु के आदेशानुसार अनुष्ठान करता है।

प्रश्न ७८. सूत्र बलवान होता है या अर्थ?

उत्तरह्नअर्थ। अर्थ तीर्थंकर स्थान है, सूत्र गणधर स्थान है। अर्थ से सूत्र की अभिव्यंजना होती है। अतः सूत्र से अर्थ बलवान होता है।

प्रश्न ७९. सूत्र और अर्थ का क्या संबंध है?

उत्तरह्नअर्थ और सूत्र का संबंध सर्वथा अप्रतिषिद्ध है। सूत्र अर्थ की अपेक्षा रखता है और अर्थ भी सूत्र का अतिक्रमण नहीं करता।

प्रश्न ८०. स्वाध्याय करने से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उत्तरह्नस्वाध्याय करने से जीव के ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

प्रश्न ८१. स्वाध्याय किन-किन ग्रंथों का करना चाहिए?

उत्तरह्नसर्वज्ञ कथित आगम वाणी का।

प्रश्न ८२. स्वाध्याय के कितने प्रकार हैं और कौन से?

उत्तरह्नस्वाध्याय के पांच प्रकार हैंह्न

१. वाचना
२. पृच्छना
३. परिवर्तना
४. अनुप्रेक्षा
५. धर्मकथा।

प्रश्न ८३. वाचना का क्या अर्थ है और वाचना करने से क्या लाभ है?

उत्तरह्नवाचना अर्थात् अध्यापन करना। वाचना के परिणामह्न
१. निर्जरा-संस्कारक्षय।

१. नंदी सूत्र ५७ गाथा ९५।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२. श्रुत की अनाशातनाह्नज्ञान का विनय।

३. तीर्थ धर्म का अवलम्बनह्नधर्म परम्परा की अविच्छिन्नता।

४. चरम साध्य की प्राप्ति।

प्रश्न ८४. पृच्छना किसे कहते है और इसके क्या परिणाम है?

उत्तरह्नपृच्छना अर्थात् अज्ञात विषय की जानकारी या ज्ञात विषय की विशेष जानकारी के लिये प्रश्न करना। पृच्छना के दो परिणाम हैंह्न

१. सूत्र, अर्थ और सूत्रार्थ की विशुद्धिह्नसंशय, विपर्यय का निराकरण।

२. कांक्षाह्नमोहनीय कर्म का विच्छेद।

प्रश्न ८५. परिवर्तना का अर्थ और परिणाम बतायें?

उत्तरह्न'परिवर्तना' अर्थात् परिचित विषय को स्थिर रखने के लिये बार-बार दोहराना। परिवर्तना के दो परिणाम हैंह्न

१. स्मृत की पुष्टि और विस्मृत की याद।

२. व्यञ्जन-लब्धि पदानुसारिणी बुद्धि का विकास।

प्रश्न ८६. अनुप्रेक्षा का तात्पर्य व लाभ बताये?

उत्तरह्नअनुप्रेक्षा अर्थात् परिचित और स्थिर विषय पर चिनतन करना। अनुप्रेक्षा पूर्वक स्वाध्याय करने से होने वाले छह लाभह्न

१. सघन कर्म का शिथिलीकरण।

२. दीर्घकालीन कर्मस्थिति का संक्षिप्तिकरण।

३. तीव्र अनुभाव का मंदीकरण।

४. प्रदेश परिमाण का अल्पीकरण।

५. असातवेदनीय का अनुपचय।

६. संसार से शीघ्रमुक्ति।

प्रश्न ८७. धर्मकथा किसे कहते हैं और उसे करने से क्या लाभ हैं?

उत्तरह्नधर्मकथा अर्थात् अध्यात्म में स्थिर करने के लिये और आत्म चिन्तन विषय के लिये उपदेश देना। धर्मकथा करने से तीन लाभ होते हैंह्न

१. निर्जरा

२. प्रवचन-धर्मशासन की प्रभावना।

३. कुशल कर्मों का अर्जन।

प्रश्न ८८. स्वाध्याय में लीन साधक के पांच समितियों में से कितनी समिति की आराधना होती है?

उत्तरह्नसाधारणतया पांचों समिति की आराधना होती है और विशेष रूप से भाषा-समिति की।

प्रश्न ८९. उपाध्याय के अपर नाम क्या हो सकते हैं?

उत्तरह्नबहुश्रुत, श्रुतधर आदि।

प्रश्न ९०. बहुश्रुत कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नबृहत्कल्प भाष्य के अनुसार बहुश्रुत तीन प्रकार के होते हैंह्न

१. जघन्य बहुश्रुतह्ननिशीथ के ज्ञाता।

२. मध्यम बहुश्रुतह्नकल्प और व्यवहार का ज्ञाता।

३. उत्कृष्ट बहुश्रुतह्ननौवें और दसवें पूर्व का ज्ञाता।

निशीथ चूर्णि के अनुसार धवला में बारह अंगों के धारक को बहुश्रुत कहा गया हैंह्न

१. जघन्य बहुश्रुतह्ननिशीथ के ज्ञाता।

२. मध्यम बहुश्रुतह्ननिशीथ व चौदह पूर्व के मध्यवर्ती के ज्ञाता।

३. उत्कृष्ट बहुश्रुतह्न चतुर्दशपूर्वी।

प्रश्न ९१. अबहुश्रुत की क्या पहचान है?

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र के अनुसारह्न

१. जो विद्याहीन हो।

२. ज्ञान के साथ अभिमानी हो।

३. जो अरस-सरस आहार में लुब्ध हो।

४. जो जितेन्द्रिय न हो।

५. जो बार-बार असंबद्ध बोलता हो।

६. जो अविनीत हो।

वह अबहुश्रुत कहलाता है।

प्रश्न ९२. उपाध्याय किस प्रकार के शिष्य को कभी आगम वाचना नहीं देते?

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र के अनुसारह्न

१. जो बार-बार क्रोध करता है।

२. जो क्रोध को टिकाकर रखता है।

३. मित्र भाव रखने वाले को भी ठुकराता है।

४. जो श्रुत प्राप्त कर मद करता है।

५. जो किसी की स्खलना होने पर उसका तिरस्कार करता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६. जो मित्रों पर कुपित होता है।

७. जो अत्यन्त प्रिय मित्र की भी एकांत में बुराई करता है।

८. जो असंबद्धभाषी है।

९. जो द्रोही है।

१०. जो अभिमानी है।

११. जो सरसाहारादि में लुब्ध है।

१२. जो अजितेन्द्रिय है।

१३. जो असंविभागी है।

२४. जो अप्रीतिकर है।

अतः उपरोक्त अवगुणों से युक्त साधक को उपाध्याय कभी आगम वाचना नहीं करवाते।

प्रश्न ९३. उपाध्याय से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी कौन होता है?

उत्तरह्लउत्तराध्ययन सूत्र में बताया गया है, जो सदा गुरुकुल में वास करता है, जो एकाग्र होता है, जो उपधान (श्रुत अध्ययन के समय तप) करता है, जो प्रिय व्यवहार करता है, जो प्रिय बोलता है वह साधक उपाध्याय से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी होता है।

प्रश्न ९४. श्रुत की आराधना से जीव क्या प्राप्त करता है?

उत्तरह्लश्रुत की आराधना से जीवह्लअज्ञान का क्षय करता है और क्लेश को नष्ट करता है।

प्रश्न ९५. श्रुत अध्ययन करने का क्या कारण है, अथवा श्रुत अध्ययन क्यों किया जाता है?

उत्तरह्लदशवैकालिक के अनुसार श्रुत अध्ययन के चार कारण हैंह्ल

१. मुझे श्रुत होगा, इसलिए अध्ययन करना चाहिये।

२. मैं एकाग्र चित्त होऊंगा, इसलिये श्रुत का अध्ययन करना चाहिये।

३. मैं आत्मा को धर्म में स्थापित करूंगा, इसलिये अध्ययन करना चाहिये।

४. मैं धर्म में स्थिर होकर दूसरे को धर्म में स्थापित करूंगा, इसलिये श्रुत का अध्ययन करना चाहिये।

प्रश्न ९६. श्रुतज्ञान की आराधना के लिये और क्या-क्या करना चाहिये?

उत्तरह्लनये ज्ञान की प्राप्ति के लिये और प्राप्त ज्ञान की रक्षा के लिये आठ आचरण कहे हैं, जो ज्ञानाचार के नाम से प्रसिद्ध हैंह्ल

१. कालह्लजिस समय जो सूत्र पढ़ने की आज्ञा है, उसे उसी समय में पढ़ना कालाचार है।

२. विनय-ज्ञान दाता गुरु का विनय करना विनयाचार है।

३. बहुमानह्लज्ञान प्राप्ति के प्रति आंतरिक अनुराग, बहुमानाचार है।

४. उपधानह्लश्रुत वाचन के समय में किया जाने वाला तप।

५. अनिह्नवनह्लअपने वाचनाचार्य का गोपन न करना।

६. व्यञ्जनह्लसूत्र का वाचन करना।

७. अर्थह्लअर्थ बोध करना।

८. सूत्रार्थह्लसूत्र और अर्थ का बोध करना।

प्रश्न ९७. सूत्र पढ़ते समय विशेष रूप से ध्यान देने की और क्या क्या बातें हैं?

उत्तरह्लश्रुतज्ञान के चौदह अतिचार हैं।[1] अतः पढ़ते समय उनका पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहियेह्ल

१. वाइद्धंह्लसूत्र पाठ को आगे-पीछे पढ़ना।

२. वच्चामेलियंह्लमूल पाठ में अन्य पाठ का मिश्रण करना।

३. हीणक्खरंह्लअक्षरों की न्यूनता करना।

४. अच्चक्खरंह्लअक्षरों की अधिकता करना।

५. पयहीणंह्लपदों की न्यूनता करना।

६. विणयहीणंह्लविराम रहित पढ़ना।

७. घोसहीणंह्लघोष रहित पढ़ना।

८. जोगहीणंह्लसंबंध रहित पढ़ना।

९. सुट्ठुदिन्नंह्लज्ञान अच्छी तरह से नहीं देना।

१०. दुट्ठुपडिच्छियंह्लज्ञान को अच्छी तरह से ग्रहण न करना।

११. अकालेकओ सज्झाओह्लअकाल में स्वाध्याय करना।

१२. काले न कओ सज्झाओह्लकाल में स्वाध्याय न करना।

१३. असज्झाइय सज्झाइयंह्लअस्वाध्यायी में स्वाध्याय करना।

१४. सज्झाइय न सज्झाइयंह्लस्वाध्याय में स्वाध्याय न करना।

प्रश्न ९८. कौन से मनुष्य उपाध्याय बन सकते हैं? कर्मभूमि के गर्भज, अकर्मभूमि के गर्भज या सम्मूर्च्छिम मनुष्य?

उत्तरह्लकर्मभूमि के गर्भज मनुष्य उपाध्याय बन सकते हैं।

प्रश्न ९९. क्या कर्मभूमि के सभी गर्भज मनुष्य उपाध्याय बन सकते हैं?

१. हरिभद्रीय आवश्यक अ. ४ के आधार से।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्लनहीं। कर्म भूमि के साथ-साथ आर्य क्षेत्र का भी होना चाहिये।

प्रश्न १००. कितनी दीक्षा पर्याय वाले साधु को उपाध्याय बना सकते हैं?

उत्तरह्ल५ वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले साधु को उपाध्याय बना सकते हैं।

प्रश्न १०१. उपाध्याय पद की घोषणा कौन करता है?

उत्तरह्लचतुर्विध धर्मसंघ के मध्य आचार्य अपने योग्य शिष्य को उपाध्याय पद से अलंकृत करते हैं।

प्रश्न १०२. वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ में उपाध्याय कौन है?

उत्तरह्लकोई नहीं। सातों पदों का दायित्व आचार्य-प्रवर ही संभालते हैं।

प्रश्न १०३. उपाध्याय स्थावर तीर्थ है या जंगम?

उत्तरह्लजंगम तीर्थ।

प्रश्न १०४. अभवी जीव उपाध्याय बन सकता है क्या?

उत्तरह्लहां, परन्तु वह भाव उपाध्याय न कहलाकर द्रव्य उपाध्याय कहलायेगा।

प्रश्न १०५. क्या विकलांग उपाध्याय बन सकता है या उसे बना सकते हैं?

उत्तरह्लनहीं।

प्रश्न १०६. तीर्थंकर जिन चार तीर्थ की स्थापना कर तीर्थंकर कहलाते हैं, उपाध्याय का उन चार तीर्थ में से किस तीर्थ में समावेश होता है?

उत्तरह्लसाधु तीर्थ में।

प्रश्न १०७. उपाध्याय तीन लोक में से कितने लोक में होते हैं?

उत्तरह्लदो लोक मेंह्ल१. मध्यलोक और २. अधोलोक (सलिलावती विजय की दृष्टि से।

प्रश्न १०८. ऊर्ध्वलोक में उपाध्याय क्यों नहीं होते?

उत्तरह्लऊर्ध्वलोक में उपाध्याय नहीं होते। साधु को भी संहरण की अपेक्षा से ऊर्ध्वलोक में माना गया है। उपाध्याय का संहरण नहीं होता अतः वे ऊर्ध्वलोक में नहीं होते।

प्रश्न १०९. उपाध्याय कितने द्वीप में होते हैं? हुए हैं और होंगे?

उत्तरह्लउपाध्याय अढ़ाई द्वीप में होते हैं, हुये हैं और भविष्य में होंगे।

प्रश्न ११०. क्या अढ़ाई द्वीप के बाहर उपाध्याय नहीं होते?

उत्तरह्लहां, अढ़ाई द्वीप के बाहर उपाध्याय नहीं होते। क्योंकि उसके बाहर मनुष्य की बस्ती नहीं है।

प्रश्न १११. कालचक्र के कौन-कौन से समय में उपाध्याय होते हैं?

उत्तरह्लकालचक्र के दो भाग है अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी। अवसर्पिणी के ३,४ और ५वें आरे में और उत्सर्पिणी के ३,४ आरे में उपाध्याय होते हैं।

प्रश्न ११२. वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में उपाध्याय हैं या नहीं?

उत्तरह्लहैं।

प्रश्न ११३. ऐरावत क्षेत्र में उपाध्याय हैं या नहीं?

उत्तरह्लहैं।

प्रश्न ११४. भरत-ऐरावत क्षेत्र में उपाध्याय पद कब तक रहेगा?

उत्तरह्लपांचवें आरे के अंत तक।

प्रश्न ११५. वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में उपाध्याय की विद्यमानता है या नहीं?

उत्तरह्लहैं। महाविदेह क्षेत्र में सर्वकाल में उपाध्याय की विद्यमानता रहती है।

प्रश्न ११६. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में अंतिम उपाध्याय कौन होंगे?

उत्तरह्लकौन होंगे, यह नाम निश्चित नहीं है पर भगवती सूत्र के अनुसार परमेष्ठी के अंतिम तीन पद पंचम आरे के अंत तक रहेंगे।[1]

प्रश्न ११७. उपाध्याय का विहरकाल पड़ता है या नहीं?

उत्तरह्लमहाविदेह क्षेत्र में उपाध्याय का विरहकाल नहीं पड़ता। भरत और ऐरावत में काल प्रवर्तना के कारण उपाध्याय का विरह-काल पड़ता है।

प्रश्न ११८. भरत और ऐरावत में उपाध्याय का विरहकाल कितने समय का पड़ता है?

उत्तरह्लउत्कृष्टतः न्यून अठारह क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम का और जघन्य ६३ हजार वर्ष का।

प्रश्न ११९. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में कितने उपाध्याय हुये?

उत्तरह्लअसंख्याता।

प्रश्न १२०. इस अवसर्पिणी काल में ऐरावत क्षेत्र में कितने उपाध्याय हुये?

उत्तरह्लअसंख्याता।

१. नवकार मंथन से उद्धृत।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १२१. उपाध्याय अरिहंत बन सकते हैं क्या?

उत्तरह्नउपाध्याय-उपाध्याय पद पर रहते हुये अरिहंत नहीं बन सकते।

प्रश्न १२२. उपाध्याय साधना की उत्कर्षता के कारण सामान्य केवली हो सकते हैं या नहीं?

उत्तरह्नहो सकते हैं।

प्रश्न १२३. उपाध्याय-उपाध्याय पद में सिद्ध हो सकते है या नहीं?

उत्तरह्नउपाध्याय उपाध्याय पद के गुणों में रहेंगे तक तक सिद्ध नहीं हो सकते। आठ कर्म का क्षय कर उपाध्याय सिद्ध हो सकते हैं।

प्रश्न १२४. वर्तमान में भरत व ऐरावत क्षेत्र में विराजित उपाध्याय सिद्ध हो सकते हैं क्या?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १२५. महाविदेह क्षेत्र से उपाध्याय सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नहां, हो सकते हैं।

प्रश्न १२६. कितनी गति से आया हुआ जीव उपाध्याय बन सकता है?

उत्तरह्नचारों गति से।

प्रश्न १२७. कितनी नरक से आया हुआ जीव उपाध्याय बन सकता हैं?

उत्तरह्नप्रथम पांच नरक तक से आया हुआ जीव उपाध्याय बन सकता है।

प्रश्न १२८. तिर्यंचगति से आये हुये कौन से तिर्यंच मनुष्य बन कर उपाध्याय बन सकते हैं?

उत्तरह्नतेऊ और वायु के जीव को छोड़कर शेष सारे तिर्यंच मनुष्य बन कर उपाध्याय बन सकते हैं।

प्रश्न १२९. चार प्रकार के देव जाति में से कौन से देव मनुष्य बन कर उपाध्याय बन सकते हैं?

उत्तरह्नचारों जाति के देव।

प्रश्न १३०. भावी उपाध्याय जीव के ५६३ भेद में से कितने भेद में से आते हैं?

उत्तरह्न१०१ सम्मूर्च्छिम मनुष्य के पर्याप्ता+१५ कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्त और अपर्याप्ता ३०+४० तिर्यंच के (तेऊ और वायु के आठ भेद छोड़कर)+९९ जाति के देव पर्याप्ता+५ प्रथम पांच नरक के पर्याप्ता=२७५ भेद में से भावी उपाध्याय का जीव आता है।

प्रश्न१३१. उपाध्याय के कौन सा संहनन होता है?

उत्तरह्नअवसर्पिणी काल के तीसरे और उत्सर्पिणी काल के चौथे आरे में वज्रऋषभनाराच संहनन होता है। अवसर्पिणी के चौथे, पांचवें और उत्सर्पिणी के तीसरे आरे में छहों संहनन होते हैं।

प्रश्न १३२. उपाध्याय के संस्थान कौन सा?

उत्तरह्नअवसर्पिणी के तीसरे और उत्सर्पिणी के चौथे आरे में समचतुरस्र संस्थान होता है। अवसर्पिणी के चौथे, पांचवें के प्रारंभ में और उत्सर्पिणी के तीसरे आरे में छहों संस्थान होते हैं। अवसर्पिणी के अंत में हुण्डक संस्थान होता है।

प्रश्न १३३. उपाध्याय का मरण कौन सा?

उत्तरह्नपण्डितमरण।

प्रश्न १३४. उपाध्याय सरागी हैं या वीतरागी?

उत्तरह्नसरागी।

प्रश्न १३५. उपाध्याय सोपक्रमी आयु वाले हैं या निरूपक्रमी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १३६. उपाध्याय बीमार होते है या नहीं?

उत्तरह्नजब तक असातावेदनीय कर्म का उदय रहेगा। तब तक बीमारी आने की संभावना रहती हैं।

प्रश्न १३७. उपाध्याय बीमारी आने पर औषधि का सेवन करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं।

प्रश्न १३८. उपाध्याय के जीवन में जरावस्था आती हैं या नहीं?

उत्तरह्नआ सकती है।

प्रश्न १३९. उपाध्याय भिक्षाचरी करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं।

प्रश्न १४०. उपाध्याय कितने कल्पी विहारी होते हैं?

उत्तरह्ननवकल्पी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १४१. उपाध्याय का ज्ञान प्रत्यक्ष है या परोक्ष?

उत्तरह्नपरोक्ष।

प्रश्न १४२. उपाध्याय द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव से संसारी हैं या नहीं?

उत्तरह्नहैं।

प्रश्न १४३. उपाध्याय के कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्नबावीस।

प्रश्न १४४. क्या उपाध्याय को स्वप्न आते हैं?

उत्तरह्नहां, आते हैं।

प्रश्न १४५. उपाध्याय को स्वप्न अच्छे आते हैं या बुरे?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १४६. उपाध्याय रूपी है या अरूपी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १४७. उपाध्याय नींद लेते हैं या नहीं?

उत्तरह्नलेते हैं। क्योंकि अभी उनके दर्शनावरणीय कर्म का उदय रहता है।

प्रश्न १४८. उपाध्याय के कितने कल्याणक मनाये जाते हैं?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १४९. उपाध्याय प्रवचन करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकर सकते हैं।

प्रश्न १५०. क्या हम भी पहले अतीत में कभी उपाध्याय बने हुये हैं?

उत्तरह्नहां। ऐसा हो सकता है।

प्रश्न १५१. क्या हम भविष्य में उपाध्याय पद प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तरह्नक्यों नहीं।

प्रश्न १५२. उपाध्याय के गुरु होते हैं या नहीं?

उत्तरह्नहोते हैं।

प्रश्न १५३. उपाध्याय का ज्ञान गुरुगम्य होता है या नहीं?

उत्तरह्नउपाध्याय का ज्ञान गुरुगम्य होता है।

प्रश्न १५४. उपाध्याय देव है या गुरु?

उत्तरह्नदेव है। वैसे ज्ञान दाता की दृष्टि से शिष्य के लिये गुरु हैं।

प्रश्न १५५. पांच प्रकार के देवों में से उपाध्याय कौन से देव हैं?

उत्तरह्नधर्मदेव।

प्रश्न १५६. उपाध्याय-उपाध्याय में कोई अन्तर होता है या नहीं?

उत्तरह्न२५ गुणों की दृष्टि से सभी में समानता हैं। लेकिन ज्ञान, वाचना और आंतरिक गुणों की दृष्टि से अन्तर हो सकता है।

प्रश्न १५७. उपाध्याय-उपाध्याय आपस में मिल सकते हैं?

उत्तरह्नहां।

प्रश्न १५८. उपाध्याय-रत्नाधिक उपाध्याय को वंदन करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं। रत्नाधिक साधु उपाध्याय पद पर हो या, ना हो उपाध्याय उन्हें वंदना करते हैं।

प्रश्न १५९. उपाध्याय के लिये वंदनीय कौन-कौन होते हैं?

उत्तरह्नउपाध्याय के लिये अरहंत, सिद्ध, आचार्य और ज्ञान-दर्शन-चारित्र से रत्नाधिक साधु वंदनीय होते हैं।

प्रश्न १६०. क्या एक से अधिक उपाध्याय साथ में रह सकते हैं?

उत्तरह्नसम-सामाचारी हो तो रह सकते हैं?

प्रश्न १६१. चारित्र पर्याय में बड़े संतों के सामने छोटे साधु को उपाध्याय बना सकते हैं क्या?

उत्तरह्नक्यों नहीं। योग्यता हो तो बनाया जा सकता है।

प्रश्न १६२. भावी उपाध्याय का चयन कौन करता है?

उत्तरह्नआचार्य।

प्रश्न १६३. उपाध्याय पद किसे नहीं दिया जाता?

उत्तरह्नव्यवहार सूत्र के अनुसार माया-सहित झूठ बोलने वाले साधु को उपाध्याय पद नहीं दिया जाता।

प्रश्न १६४. उपाध्याय आराधक होते हैं या विराधक?

उत्तरह्नदोनों। २५ गुणों में हमेशा अप्रमत्त रहने वाले उपाध्याय आराधक और निजगुणों में प्रमाद कर प्रायश्चित्त न करने वाले विराधक होते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १६५. अभवी उपाध्याय आराधक होते हैं या विराधक?

उत्तरह्नअभवी उपाध्याय निश्चित ही विराधक होते हैं।

प्रश्न १६६. उपाध्याय छद्मस्थ है या वीतराग?

उत्तरह्नछद्मस्थ।

प्रश्न १६७. मनुष्यगति के अतिरिक्त शेष तीन गतियों में जीव उपाध्याय बन सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १६८. उपाध्याय पद शाश्वत है या अशाश्वत?

उत्तरह्नमहाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा शाश्वत और भरत व ऐरावत की अपेक्षा अशाश्वत है।

प्रश्न १६९. उपाध्याय पद कौन से भाव में मिलता है?

उत्तरह्नक्षयोपशम भाव में।

प्रश्न १७०. उपाध्याय को चातुर्मास में कितने साधुओं के साथ रहना कल्पता हैं?

उत्तरह्नव्यवहार सूत्र के अनुसार स्वयं को मिलाकर तीन साधुओं के साथ उपाध्याय को चातुर्मास में रहना कल्पता है।

प्रश्न १७१. चौदह प्रकार के दान में से उपाध्याय कितने प्रकार का दान ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नचौदह ही प्रकार का।

प्रश्न १७२. कम से कम कितने पूर्वधारी साधु तक की रचनाओं को प्रामाणिक माना जाता हैं?

उत्तरह्नदस पूर्व से आगे के पूर्वधर साधु तक ही रचना को प्रामाणिक माना जाता है।

प्रश्न १७३. दस पूर्व से कम पढ़े हुये साधुओं की रचना प्रामाणिक मानी जाती है या नहीं?

उत्तरह्ननहीं। क्योंकि वे छद्मस्थ होने के साथ-साथ उनमें मिथ्यात्व की संभावना है।

प्रश्न १७४. क्या गृहस्थ सूत्र-पाठ की स्वाध्याय कर सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं। अर्थानुवाद की स्वाध्याय कर सकते हैं।

प्रश्न १७५. उपाध्याय शेष काल (चातुर्मास के अतिरिक्त) में कितने साधुओं के साथ विचरण कर सकते हैं?

उत्तरह्नस्वयं को मिलाकर दो साधुओं के साथ।

प्रश्न १७६. उपाध्याय पद हेय है, ज्ञेय हैं या उपादेय?

उत्तरह्नतीनोंह्न

- अरिहंत, सिद्ध और केवली की अपेक्षा हेय हैं।
- समस्त जीवों की अपेक्षा ज्ञेय है।
- अविरत सम्यक्दृष्टि व चार तीर्थ की अपेक्षा उपाध्याय पद उपादेय है।

प्रश्न १७७. उपाध्याय हंसते हैं या नहीं?

उत्तरह्नउपाध्याय स्वयं हंसते भी हैं और दूसरों को हंसाते भी है, हास्य मोहनीय कर्म का उदय होने से।

प्रश्न १७८. उपाध्याय प्रतिक्रमण करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकरते हैं। कृत दोषों का प्रायश्चित्त करने के लिये उपाध्याय को भी प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

प्रश्न १७९. उपाध्याय को ज्ञान और दर्शन कौन से भाव में होता है?

उत्तरह्नउपाध्याय को ज्ञान और दर्शन क्षयोपशमजन्य और क्षायकजन्य दोनों होता हैं।

प्रश्न १८०. उपाध्याय सयोगी है या अयोगी?

उत्तरह्नसयोगी।

प्रश्न १८१. तीन वेद में से कौन से वेद युक्त आत्मा उपाध्याय पद को सुशोभित कर सकती है?

उत्तरह्नपुरुष-वेद युक्त।

प्रश्न १८२. क्या स्त्री वेद (साध्वी) युक्त आत्मा उपाध्याय बन सकती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १८३. उपाध्याय के चार कषाय में से कौन सी कषाय होती है?

उत्तरह्नन्यूनाधिकता की अपेक्षा कषाय चार प्रकार की होती हैंह्न

१. अनन्तानुबंधी चतुष्क
२. अप्रत्याख्यान चतुष्क
३. प्रत्याख्यान चतुष्क
४. संज्ज्वलन चतुष्य।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उपाध्याय के इन चार में से संज्वल क्रोध, मान, माया और लोभ कषाय होती है।

प्रश्न १८४. उपाध्याय लोक के कौन से भाग में रहते हैं?

उत्तरह्नलोक के असंख्यातवें भाग में अर्थात् मात्र ४५ लाख योजन में उपाध्याय रहते हैं।

प्रश्न १८५. उपाध्याय पद में तेइस पदवियों में से कितनी पदवी मिलती हैं?

उत्तरह्नदोह्नसाधु व सम्यक्त्वी की।

प्रश्न १८६. भावी उपाध्याय को कितनी पदवी मिल सकती है?

उत्तरह्नदस।

१. चक्रवर्ती	६. सम्यक्त्वी
२. बलदेव	७. गाथापति
३. माण्डलिक राजा	८. सेनापति
४. साधु	९. वार्धिक
५. श्रावक	१०. पुरोहित।

प्रश्न १८७. उपाध्याय उपशम व क्षपक इन दो श्रेणियों में से कौनसी श्रेणि पर आरोहण कर सकते हैं?

उत्तरह्नदोनों श्रेणि का।

प्रश्न १८८. उपाध्याय के दोष लगता है क्या?

उत्तरह्नहां, जब तक प्रमाद अवस्था रहेगी, मोहनीय कर्म उदय में रहेगा, तब तक दोष लगने की संभावना रहेगी।

प्रश्न १८९. क्या उपाध्याय को लगे दोष की आलोचना करनी पड़ती है?

उत्तरह्नहां। क्योंकि आलोचना किये बिना दोषों की शुद्धि नहीं होगी।

प्रश्न १९०. उपाध्याय पद का द्रव्य गुण और पर्याय क्या है?

उत्तरह्नउपाध्याय की आत्मा द्रव्य हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र उसके गुण हैं और क्षयोपशम भाव से पद मिलने के कारण पर्याय है।

प्रश्न १९१. क्या गृहस्थलिंग या अन्यलिंग में उपाध्याय बन सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १९२. उपाध्याय सादि सपर्यवसित हैं या अनादि अपर्यवसित?

उत्तरह्नदोनों। एक उपाध्याय की अपेक्षा आदि सपर्यवसित और अनन्त उपाध्याय की अपेक्षा अनादि अपर्यवसित हैं।

प्रश्न १९३. उपाध्याय आदि सान्त हैं या सादि अनन्त?

उत्तरह्नसादि-सान्त।

प्रश्न १९४. उपाध्याय शिष्यों को वाचना क्यों देते हैं?

उत्तरह्नउपाध्याय शिष्यों को वाचना इसलिये देते है कि उनके स्वयं के सूत्र और अर्थ में स्थिरता आ जाती है। ऋण मुक्त होते हैं। भविष्य में आचार्य पद का अप्रतिबंध होता है। वे आचार्य पद योग्य हो जाते हैं। गणान्तर से आये हुये शिष्य अनुग्रहीत हो जाते हैं। मोह कम होता है।

प्रश्न १९५. स्वाध्याय भूमि कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तरह्नदो प्रकार कीह्नआगाढ़ और अनगाढ़।

प्रश्न १९६. आगाढ़ स्वाध्याय भूमि का जघन्य व उत्कृष्ट काल-कितना?

उत्तरह्नजघन्यतः तीन अहोरात्र-कल्पिका-कल्पिका आदि का।

उत्कृष्टतः छह मास काह्नव्याख्या-प्रज्ञप्ति का।

प्रश्न १९७. अनागाढ़ स्वाध्याय भूमि का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना?

उत्तरह्नजघन्य तीन दिन और उत्कृष्ट बारह वर्ष। (नंदी आदि के अध्ययन न में) दृष्टिवाद के महाकल्पश्रुत की अपेक्षा)

प्रश्न १९८. साधु की निश्रा में साध्वी को अकाल में श्रुत स्वाध्याय करना कल्पता है या नहीं?

उत्तरह्नकल्पता है।

प्रश्न १९९. उपाध्याय सूत्र मण्डली में वाचना देते हुए प्राघूर्णक आदि आने पर उठते है या नहीं, अभ्युत्थान करते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननियमतः उठते भी है और अभ्युत्थान भी करते हैं।

प्रश्न २००. अर्थ मण्डली में वाचना देते हुए उपाध्याय प्राघूर्णक आदि आने पर उठते हैं या नहीं?

उत्तरह्नकेवल प्रवाचक को छोड़कर किसी के आने पर उपाध्याय नहीं उठते फिर चाहे वे दीक्षा गुरु भी क्यों नहीं। उदाहरणतः गौतम स्वामी जब अर्थ की वाचना देते तब भगवान महावीर के सिवाय किसी के आने पर स्वयं नहीं उठते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २०१. क्या आपवादिक स्थिति में अस्वाध्यायिक कल्प में स्वाध्याय करना कल्पता है?

उत्तरह्नहां। १. आगाढ़ योग के वहन करते समय।

२. गृहस्थ के घर में प्रतिचारणा आदि के अनिष्ट शब्द सुनाई न दे इसलिये।

३. मुनि के कालगत हो जाने पर जागरण के निमित्त।

४. अभी-अभी जो श्रुत जिसके पास ग्रहण किया है उसके मर जाने पर उस श्रुत का व्युच्छेद न हो जाए इसलिये।

प्रश्न २०२. कौनसी चार प्रतिपदाएं सूत्र की स्वाध्याय के लिये वर्जित है?

उत्तरह्न१. आषाढ़ प्रतिपदाह्नआषाढ़ पूर्णिका की बाद की तिथि, सावन का प्रथम दिन।

२. इन्द्रमह प्रतिपदाह्नआश्विन पूर्णिमा के बाद की तिथि, कार्तिक का प्रथम दिन।

३. कार्तिक प्रतिपदा-कार्तिक पूर्णिमा के बाद की तिथि, मृगसर का प्रथम दिन।

४.सुग्रीष्म प्रतिपदाह्नचैत्र पूर्णिमा के बाद की तिथि, वैशाख का प्रथम दिन।

इन प्रतिपदाओं में आगम स्वाध्याय नहीं करना चाहिये।

प्रश्न २०३. आगम स्वाध्याय का काल कौन सा है?

उत्तरह्ननिम्नोक्त चार काल में आगम स्वाध्याय करनी चाहियेह्न

पूर्वाह्ण मेंह्नदिन के प्रथम प्रहर में।

अपराह्ण मेंह्नदिन के अंतिम प्रहर में।

प्रदोष मेंह्नरात्रि के प्रथम प्रहर में।

प्रत्यूष मेंह्नरात्रि के अंतिम प्रहर में।

प्रश्न २०४. अंतरिक्ष (आकाश) संबंधी अस्वाध्याय के कितने प्रकार हैं?

उत्तरह्नदस।

१. उल्कापात (प्रकाशमान तारे के टूटना) एक प्रहर तक अस्वाध्याय।

२. दिग्दाहह्न(दिशाओं का जलना) एक प्रहर तक अस्वाध्याय।

३. गर्जनह्न(बादलों की गर्जना) दो प्रहर तक अस्वाध्याय।

४. विद्युतह्न(बिजली चमकना) एक प्रहर तक अस्वाध्याय।

५. निर्घातह्न(बिजली कड़कना) चार प्रहर तक अस्वाध्याय।

६. यूपकह्नशुक्ल पक्ष की एकम, दूज व तीज इन तीन दिनों में रात्रि के प्रथम प्रहर में चन्द्रमा विद्यमान रहे। वहां तक अस्वाध्याय।

७. यक्षादीप्तह्नएक प्रहर तक अस्वाध्याय।

८-९. धूमिका-मिहिकाह्नजब जक गिरे तब तक अस्वाध्याय।

१०. रजोद्घातह्नतेज आंधी जब तक चले तब तक अस्वाध्याय।

प्रश्न २०५. औदारिक संबंधी अस्वाध्याय के कितने प्रकार हैं?

उत्तरह्न१-३. अस्थि, मांस और रक्तह्नतिर्यंच पंचेन्द्रिय के हो तो साठ हाथ तक एवं मनुष्य के हो तो सौ हाथ तक अस्वाध्याय मानी जाती है।

४. अशुचिह्नमल-मूत्र सामने होने से अस्वाध्याय।

५. श्मशान के पासह्नशव स्थान के समीप अस्वाध्याय। चारों ओर सौ-सौ हाथ का अस्वाध्याय।

६-७. चन्द्रग्रहण-सूर्यग्रहणह्नसामान्य स्थिति में चार प्रहर और विशेष स्थिति में आठ प्रहर का अस्वाध्याय।

८. पतनह्नकिसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु होने पर जब तक क्षोभ नहीं मिटता तब तक अस्वाध्याय।

९. राज-व्युद्ग्रहह्नराजा आदि के परस्पर विग्रह हो जाने पर जब तक विग्रह शान्त न हो तब तक अस्वाध्याय।

१०. पंचेन्द्रिय का शवह्नसौ हाथ तक अस्वाध्याय।

प्रश्न २०६. अन्य सूत्रों की तरह अकाल में आवश्यक का निषेध क्यों नहीं किया गया?

उत्तरह्नदोनों संध्याओं में गृह्यक देव होम आदि कार्यों में लोगों द्वारा आहूत होने के कारण वहां ठहर जाते हैं अतः संध्या के समय आवश्यक कर सकते हैं।

प्रश्न २०७. सूत्रों की भाषा क्या है?

उत्तरह्नअर्धमागधी।

प्रश्न २०८. अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने से क्या होता है?

उत्तरह्नअस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने से होने वाले दोषह्न

१. आज्ञा का अतिक्रमण

२. अनवस्था (दोष शृंखला का प्रारंभ)

३. मिथ्यात्व की प्राप्ति।

४. ज्ञान की विराधना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५. लोक विरुद्ध व्यवहार।

६. प्रमत्त छलना।

७. विद्या साधन का वैगुण्य।

८. श्रुतज्ञान के आचार की विराधना।

प्रश्न २०९. श्रुतज्ञान की आशातना का इहलौकिक और पारलौकिक फल क्या है?

उत्तरह्नश्रुतज्ञान की आशातना का इहलौकिक फलह्न

१. उन्माद की प्राप्ति।

२. रोग और आतंक की दीर्घ काल तक प्राप्ति।

३. तीर्थंकरों के वचनों से अथवा संयम से भ्रष्ट होना।

श्रुतज्ञान की आशातना का पारलौकिक फलह्न

● मोक्ष की अप्राप्ति।

प्रश्न २१०. पूर्व किसे कहते हैं?

उत्तरह्नतीर्थ का प्रवर्तन करते समय तीर्थंकर जिस अर्थ का गणधरों को पहले पहल उपदेश देते हैं। अथवा गणधर पहले पहल जिस अर्थ का सूत्र रूप में गूंथते हैं उन्हें पूर्व कहा जाता है।

प्रश्न २११. पूर्व कितने हैं? नाम बताइये?

उत्तरह्नपूर्व चौदह हैं[1]ह्न

१. उत्पाद	८. कर्म प्रवाद
२. आग्रयणी प्रवाद	९. प्रत्याख्यान प्रवाद
३. वीर्य प्रवाद	१०. विद्या प्रवाद
४. अस्ति-नास्ति प्रवाद	११. अवन्ध्यपूर्व
५. ज्ञान प्रवाद	१२. प्राणायु प्रवाद
६. सत्य प्रवाद	१३. क्रिया विशाल प्रवाद
७. आत्म प्रवाद	१४. लोक बिन्दुसार।

प्रश्न २१२. क्या साध्वियां पूर्वों का ज्ञान पढ़ सकती हैं?

उत्तरह्नसाध्वियों के लिये पूर्वों का ज्ञान पढ़ना निषिद्ध है।

प्रश्न २१३. इस अवसर्पिणी के अंतिम चतुर्दशपूर्वधर कौन थे?

१. नंदी सूत्र ५६ तथा समवायांग सं. १४, सूत्र ४८ परिशिष्ट देखिएह्नविस्तार से जानकारी के लिए।

उत्तरह्नआचार्य भद्रबाहु स्वामी।

प्रश्न २१४. श्रुतज्ञान सादि सपर्यवसित है या अनादि अपर्यवसित?

उत्तरह्नश्रुतज्ञान एक जीव की अपेक्षा सादि सपर्यवसित है और समस्त जीवों की अपेक्षा अनादि अपर्यवसित है।

प्रश्न २१५. श्रुत सम्यक् होता है या मिथ्या?

उत्तरह्नचौदह पूर्व से लेकर दस पूर्व तक का श्रुत निश्चित ही सम्यक् श्रुत होता है और कुछ कम दस पूर्व से लेकर सामायिक पर्यन्त श्रुत वाला सम्यक् दृष्टि भी हो सकता है और कोई मिथ्यात्व के उदय से मिथ्यादृष्टि भी हो सकता है।

प्रश्न २१६. उपाध्याय के अतिशेष (विशेष विधियां) कितनी और कौन सी होती हैं?

उत्तरह्नठाणं सूत्र में उपाध्याय के पांच अतिशेषों का उल्लेख किया गया हैह्न

१. उपाध्याय उपाश्रय में पैरों की धूलि को यतनापूर्वक झाड़ते हुये, प्रमार्जित करते हुये आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करते।

२. उपाध्याय उपाश्रय में उच्चार-प्रस्रवण का व्युत्सर्ग और विशोधन करते हुये आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करते।

३. साधु की सेवा उपाध्याय के लिये ऐच्छिक होती है।

४. उपाध्याय उपाश्रय में एक या दो रात अकेले रहते हुये आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करते।

५. उपाध्याय उपाश्रय से बाहर एक या दो रात अकेले रहते हुये आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करते।

प्रश्न २१७. उपाध्याय स्वामी है या सेवक? कैसे?

उत्तरह्नदोनों। प्रथम तीन परमेष्ठी व रत्नाधिक साधु इनकी दृष्टि से उपाध्याय सेवक हैं और संयम पर्याय में रत्नाधिक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका इनके लिये उपाध्याय स्वामी है।

प्रश्न २१८. उपाध्याय पद को कितने समय भोगा जा सकता हैं?

उत्तरह्नजघन्य अंतर्मुहर्त्त और उत्कृष्ट एक क्रोड़ पूर्व कुछ कम।

प्रश्न २१९. सूत्र वाचना की काल-मर्यादा क्या हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नसूत्र नाम		काल मर्यादा
१. आचारांग	ह्न	तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
२. सूत्रकृतांग	ह्न	चार वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
३. दशाश्रुतस्कन्ध	ह्न	पांच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
४. बृहत्कल्प	ह्न	पांच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
५. व्यवहार सूत्र	ह्न	पांच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
६. ठाणं	ह्न	आठ वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
७. समवायांग	ह्न	आठ वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
८. विवाहप्रज्ञप्ति (भगवती)	ह्न	दस वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
९. दृष्टिवाद	ह्न	उन्नीस वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले
१०. सर्वश्रुत	ह्न	बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले

प्रश्न २२०. वर्तमान में भरत क्षेत्र से उपाध्याय सिद्ध नहीं हो सकते तो फिर अपना आयुष्य पूर्ण कर कहां जाते हैं?

उत्तरह्नदेवगति में।

प्रश्न २२१. देव गति में चार प्रकार के देव होते हैंह्नभवनपति, वाण-व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक। उपाध्याय आयुष्य पूर्ण कर कौन से देवता बनते हैं?

उत्तरह्नसम्यक् साधना करने वाले उपाध्याय मात्र वैमानिक में ही पैदा होते हैं।

प्रश्न २२२. जीव के ५६३ भेद में से उपाध्याय की गति कहां-कहां हैं?

उत्तरह्न१२ देवलोक+९ लोकान्तिक+९ ग्रेवेयक + ५ अनुत्तर विमान के पर्याप्ता और अपर्याप्ता कुल ७० भेद में उपाध्याय की गति है।

प्रश्न २२३. उपधान तप से क्या तात्पर्य हैं?

उत्तरह्नसूत्र पढ़ते समय श्रुतज्ञान की आराधना के लिये जो तप किया जाता है उसे उपधान तप कहते है। उपधानतपपूर्वक पढ़ा हुआ ज्ञान विशेष लाभदायक होता है। उपधान में आयंबिल या नीवी तप माना जाता है।

प्रश्न २२४. बताये कि किस-किस सूत्र के अध्ययन काल में कितने-कितने आयंबिल करना चाहिये?

उत्तरह्नसूत्र	आयंबिल	सूत्र	आयंबिल
१. आचारांग	४०	१७. चन्द्रप्रज्ञप्ति	३
२. सूत्रकृतांग	३०	१८. सूर्यप्रज्ञप्ति	३
३. स्थानांग	१८	१९. निरयावलिका	७
४. समवायांग	३	२०. कल्पवतंसिका	७
५. भगवती	१८३	२१. पुष्पिका	७
६. ज्ञाताधर्मकथा	३३	२२. पुष्पचूलिका	७
७. उपासक दशा	१४	२३. वृष्णिदशा	७
८. अन्तकृतदशा	१२	२४. दशवैकालिक	१५
९. अनुत्तरोपपातिकदशा	७	२५. उत्तराध्ययन	१९
१०. प्रश्नव्याकरण	५	२६. अनुयोगद्वार	२९
११. विपाकश्रुत	२४	२७. नंदी	३
१२. औपपातिक	३	२८. निशीथ	१०
१३. राजप्रश्नीय	३	२९. व्यवहार	२०
१४. जीवाजीवाभिगम	३	३०. बृहत्कल्प	२०
१५. प्रज्ञापना	३	३१. दशाश्रुतस्कन्ध	२०
१६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	३	३२. आवश्यक	८

प्रश्न २२५. उपाध्याय की गति ऋजु या वक्र?

उत्तरह्नचरम शरीरी हो तो ऋजुगति वरना उपाध्याय की वक्रगति होती है।

प्रश्न २२६. उपाध्याय में संज्ञा कितनी होती हैं?

उत्तरह्नचार संज्ञा।

प्रश्न २२७. उदय के तेतीस बोलों में से उपाध्याय में कितने पा सकते हैं?

उत्तरह्न१७। गतिह्नएक मनुष्य, काय एकह्नत्रस, लेश्या-६, कषाय-४, वेद-१ पुरुष, आहारता, सयोगिता, संसारता और छद्मस्थता।

प्रश्न २२८. उपाध्याय में औपशमिक के कितने बोल पा सकते हैं?

उत्तरह्नदोह्नऔपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र।

प्रश्न २२९. क्षायिक भाव के आठ बोलों में से उपाध्याय में कितने?

उत्तरह्नउपाध्याय में क्षायिक भाव जो लिया गया है व क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा से है। परन्तु क्षायक भाव के आठ बोलों में से उपाध्याय में एक भी नहीं पाता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २३०. उपाध्याय में क्षयोपशम के कितने बोल पा सकते हैं?

उत्तरह्नउपाध्याय में क्षयोपशम के ३२ बोल में से २४ बोल पाते हैं।

ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम केह्न५ (तीन अज्ञान को छोड़कर)।

दर्शनावरणीय के क्षयोपशम केह्न८ (५ इन्द्रियां और तीन दर्शन)।

मोहनीय के क्षयोपशम केह्न५ (चार चारित्र और सम्यक्‌दृष्टि)।

अंतराय के क्षयोपशम केह्न६ (बाल और बाल-पंडित वीर्य को छोड़कर)।

प्रश्न २३१. उपाध्याय के जीवाश्रित पारिणामिक के कितने भेद पाते हैं?

उत्तरह्नदस।

प्रश्न २३२. क्या चतुर्दशपूर्वी आहारक-लब्धि का प्रयोग करते हैं?

उत्तरह्नकर सकते हैं।

प्रश्न २३३. क्या आर्य-अनार्य दोनों क्षेत्र से उपाध्याय बन सकते हैं?

उत्तरह्नमूल में तो आर्य-क्षेत्र के मनुष्य साधु बन कर उपाध्याय होते हैं परन्तु अपवाद रूप से अनार्य क्षेत्र का मनुष्य भी साधु बन उपाध्याय बन सकता है।

प्रश्न २३४. उपाध्याय कौनसी क्रिया वाले होते हैं? ईर्यापथिक या सांपरायिक?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न २३५. उपाध्याय के सकाम निर्जरा होती है या अकाम निर्जरा?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न २३६. उपाध्याय पद का उल्लेख कौन से अंग-उपांग में मिलता हैं?

उत्तरह्नउपाध्याय का उल्लेख ११ अंगों तथा १२ उपांगों में नहीं मिलता। विआहपण्णत्ती (भगवती) में आगम टीकाकार अभयदेवसूरि ने पूरे पांच पदों की व्याख्या की है। वह भी भगवान् महावीर के निर्वाण के सैकड़ों वर्ष पश्चात्। अतः महावीर के पूर्व २३ तीर्थंकरों तथा महाविदेह के तीर्थंकरों के शासन काल में यही पंच परमेष्ठी प्रचलित रहते हो आवश्यक नहीं लगता। वही महावीर के समय में भी पंच परमेष्ठी का प्रचलन रहा हो उल्लेख नहीं मिलता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो लोए सव्वसाहूणं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो लोए सव्वसाहूणं

प्रश्न १. नमस्कार महामंत्र का पांचवां पद कौन सा है?

उत्तरह्नणमो लोए सव्वसाहूणं।

प्रश्न २. पांचवें पद में किसे नमस्कार किया गया है?

उत्तरह्नलोक के समस्त साधु-साध्वी को।

प्रश्न ३. पांचवें पद की संख्या कितनी?

उत्तरह्नभगवती सूत्र शतक २५। उद्देश्य ६/७ के अनुसार पांचवें पद की अर्थात् साधु-साध्वियों की जघन्य दो हजार करोड़ और उत्कृष्ट नौ हजार करोड़ की।

प्रश्न ४. पांचवें पद में अक्षर कितने?

उत्तरह्ननौ।

प्रश्न ५. 'णमो लोए सव्वसाहूणं' में लघु कितने और गुरु कितने?

उत्तरह्नलघुह्न८ और गुरुह्न१।

प्रश्न ६. णमो लोए सव्वसाहूणं' में ह्रस्व कितने और दीर्घ कितने?

उत्तरह्नह्रस्वह्न४ और दीर्घह्न५।

प्रश्न ७. णमो लोए सव्वसाहूणं का ध्यान किस रंग के साथ किया जाता है?

उत्तरह्ननीले या काले रंग के साथ।

प्रश्न ८. णमो लोए सव्वसाहूणं का ध्यान किस केन्द्र पर किया जाता है?

उत्तरह्नतेजस केन्द्र (नाभि पर)।

प्रश्न ९. साधु किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो पांच महाव्रतों का पालन करते हैं, उन्हें साधु कहते हैं।

प्रश्न १०. साधु के कितने गुण होते हैं?

उत्तरह्न२७।

प्रश्न ११. साधु के सत्ताइस गुण कौन-कौन से है?

उत्तरह्नपांच, महाव्रत, पंचेन्द्रिय निग्रह, चार कषाय वर्जन, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमा, वैराग्य, मन-वचन-काय समाहरणता, ज्ञान-दर्शन-चारित्र सम्पन्नता, वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता।

प्रश्न १२. मुमुक्षु किन-किन कारणों से प्रेरित होकर साधुत्व स्वीकार करता है?

उत्तरह्नसाधुत्व स्वीकार करने के अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु ठाणं सूत्र के दसवें ठाणे में दस कारणों का उल्लेख मिलता हैह्न

१. छन्दाह्नस्व या पर की इच्छा से ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नगौतम स्वामी, गोविन्दवाचक।

२. रोषाह्नक्रोध में आकर ली जानेवाली दीक्षा। जैसेह्नशिवभूति।

३. परिद्यूनाह्नदरिद्रता के कारण ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नआचार्य सुहस्ति के पास एक भिखारी का लड़का।

४. प्रतिश्रुनाह्नपहले की हुई प्रतिज्ञा के कारण ली जाने वाली दीक्षा। जैसे धनजी मुनि (शालिभद्र का साला)।

५. स्वप्नाह्नस्वप्न के निमित्त या स्वप्न में ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नसाध्वी पुष्पचूला।

६. स्मारणिकाह्नजन्मान्तरों की स्मृति होने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नभगवान मल्लिनाथ।

७. रोगणिकाह्नरोग का निमित्त मिलने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नचक्रवर्ती सनत्कुमार।

८. अनादृताह्नअनादर होने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्ननंदीषेण, कार्तिक-सेठ आदि।

९. देव संज्ञप्तिह्नदेवता के द्वारा प्रतिबद्ध होकर ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नमेतार्य।

१०. वत्सानुबन्धिकाह्नदीक्षित होते हुये पुत्र के निमित्त से ली जाने वाली दीक्षा। जैसेह्नभृगुपुरोहित, सुनन्दा।

प्रश्न १३. क्या अभवी दीक्षा ले सकते हैं? यदि ले सकते है तो उनकी दीक्षा कौन सी?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नहां, अभवी दीक्षा ले सकते है किन्तु उनकी दीक्षा द्रव्य दीक्षा कहलाती है।

प्रश्न १४. अनगार धर्म स्वीकार करने वाला साधक क्या प्रतिज्ञा करता है?

उत्तरह्नकरेमि भंते! सामाइयं सव्वं सावज्जं जोग पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

प्रश्न १५. क्या विकलांग व्यक्ति साधु बन सकता है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न १६. क्या नपुंसक को दीक्षा जा सकती है?

उत्तरह्नहां, कृत नपुंसक को दीक्षा दी जा सकती है।

प्रश्न १७. दीक्षा के योग्य अर्थात् कृत नपुंसक किस प्रकार के हो सकते हैं?

उत्तरह्नदीक्षा के योग्य अर्थात् कृत नपुंसक छह प्रकार के हो सकते हैंह्न

१. वर्द्धितकह्नअन्तःपुर की रक्षा के लिये जिसका पुरुष चिह्न बचपन में ही छेद कर या गलाकर जिन्हें नपुंसक बना दिया हो।

२. चिप्पितह्नजन्म से ही जिनका पुरुष चिह्न मर्दन कर गला दिया हो।

३-४. मंत्र या औषधि के प्रभाव से स्त्रीवेद या पुरुषवेद नष्ट हो जाने के कारण जो नपुंसक बन गये हो।

५. ऋषिशापह्नऋषि आदि के शाप से जो नपुंसक बने हो।

६. देवशापह्नदेव के शाप से जो नपुंसक बने हो।

प्रश्न १८. किस प्रकार के पुरुष दीक्षा के अयोग्य होते हैं?

उत्तरह्न१. बाल २. वृद्ध ३. नपुंसक[1] ४. क्लीव[2] ५. जड़ ६. रोगी ७. चोर ८. राजद्रोही ९. उन्मत्त १०. अंध ११. दास १२. दुष्ट १३. मूढ़ १४. कर्जदार १५. निन्दित १६. परतंत्र १७. भृत्य[3] १८. शैक्षनिस्फेटिका।[4]

---

१. पुरुष नपुंसक।

२. स्त्री द्वारा भोग की याचना करने पर, स्त्री के अंगोपांग देखकर, कामोद्दीपक वचन सुनकर जो अपने आप को संयम में न रख सकें।

३. चोर।

४. माता-पिता की आज्ञा के बिना अपहरण कर के किसी को दीक्षा नहीं देना।

ये अठारह प्रकार के पुरुष दीक्षा के अयोग्य होते हैं।

प्रश्न १९. चारित्र की प्राप्ति कब होती हैं?

उत्तरह्नप्रत्याख्यान चतुष्क, क्रोध, मान, माया और लोभ के क्षय से और दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों के क्षयोपशम से चारित्र की प्राप्ति होती है।

प्रश्न २०. चारित्र के कितने प्रकार हैंह्न

उत्तरह्नचारित्र के पांच प्रकार हैंह्न

१. सामायिक
२. छेदोपस्थापनीय
३. परिहार विशुद्धि
४. सूक्ष्मसम्पराय
५. यथाख्यात चारित्र।

प्रश्न २१. दीक्षा के समय कौन सा चारित्र ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नसामायिक चारित्र।

प्रश्न २२. सामायिक चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नसर्व सावद्ययोग का प्रत्याख्यान करना सामायिक चारित्र है।

प्रश्न २३. सामायिक चारित्र कितने प्रकार का होता हैं?

उत्तरह्नदो प्रकार काह्न

१. अल्पकालिकह्नयह प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के समय में होता है। जघन्यह्न७ दिन, मध्यमह्न४ माह व उत्कृष्टह्न६ माह का होता है।

२. यावत्कथिक (यावज्जीवन)ह्नयह मध्यवर्ती २२ तीर्थंकरों के काल में व महाविदेह क्षेत्र में होता है। इसकी स्थिति यावज्जीवन की होती है।

प्रश्न २४. सामायिक चारित्र की आराधना करने वाला साधु कौन से स्वर्ग तक जा सकता है?

उत्तरह्नसर्वार्थ सिद्ध तक।

प्रश्न २५. छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नविस्तार से विभागपूर्वक महाव्रतों की उपस्थापना करना व पूर्व पर्याय का छेद होने पर जो चारित्र मिलता है उसे छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

प्रश्न २६. छेदोपस्थापनीय चारित्र कितने प्रकार का होता है?

उत्तरह्नदो प्रकार काह्नअतिचार सहित और अतिचार रहित।

प्रश्न २७. अतिचार सहित छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्नमूल गुण का घात हो जाने पर पुनः महाव्रतों का आरोपण करना, अतिचार सहित छेदोपस्थापनीय चारित्र है।

प्रश्न २८. निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नतेइसवें तीर्थंकर के शासन के मुनि जब चौबीसवें तीर्थंकर के धर्म शासन में आते हैं उनको और नवदीक्षित मुनि को दिया जाने वाला चारित्र निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र है।

प्रश्न २९. परिहार विशुद्धि चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तरह्नआत्म विशुद्धि की सावधिक निर्धारित तपस्या पूर्वक साधना को परिहार विशुद्धि चारित्र कहते हैं।

प्रश्न ३०. परिहार विशुद्धि चारित्र के दो भेद कौन से हैं?

उत्तरह्न१. नियट्टमाणह्ननिर्विशमान 'परिहारविशुद्धि' तप में संलग्न होना।

२. नियट्टकायह्ननिर्विष्टकाय तप की पूर्णता।

प्रश्न ३१. परिहार विशुद्धि चारित्र सभी तीर्थंकरों के समय में होता है?

उत्तरह्ननहीं। केवल प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के समय में।

प्रश्न ३२. परिहार विशुद्धि तप कितने व्यक्ति स्वीकार करते हैं?

उत्तरह्ननौ साधुओं के द्वारा यह तप स्वीकार किया जाता है।

प्रश्न ३३. परिहार विशुद्धि तप का कालमान कितना है?

उत्तरह्न१८ महिनों का पारिहारिक, अनुपारिहारिक और कल्पस्थितह्नतीनों में से प्रत्येक के छह-छह महीने का तप होता है।

प्रश्न ३४. यह तप किसके पास स्वीकार किया जाता है?

उत्तरह्नतीर्थंकर के पास या जो तीर्थंकर के पास यह तप कर चुका हो उसके पास।

प्रश्न ३५. यह तप कब स्वीकार किया जाता है?

उत्तरह्नतीर्थंकर भगवान की विद्यमानता में ही, उनके शासन काल में ही स्वीकार किया जाता है। शासन की स्थापना से पूर्व या विच्छेद होने के बाद यह कल्प स्वीकार नहीं किया जाता है।

प्रश्न ३६. इस तप को कौन स्वीकार कर सकता है?

उत्तरह्नवज्रऋषभनाराच संहननवाला, नौ पूर्व की तीसरी आचार वस्तु के ज्ञाता,

जघन्य २० वर्ष की दीक्षा पर्याय वाला और उत्कृष्ट देशोन पूर्व करोड़ वर्ष वाला इस तप को स्वीकार कर सकता है।

प्रश्न ३७. परिहार तप की विधि क्या है?

उत्तरह्नतप का क्रम

समय	ऋतु	जघन्य	मध्यम	उत्कृष्ट
१. प्रथम छमाही में	ग्रीष्म	उपवास	बेला	तेला
२. द्वितीय छमाही में	शीत	बेला	तेला	चोला
३. तृतीय छमही में	वर्षा	तेला	चोला	पंचोला

प्रश्न ३८. तप की आहार-विधि क्या है?

उत्तरह्नपारणे में आयंबिल।

प्रश्न ३९. परिहार विशुद्धि चारित्र का क्या स्वरूप है?

उत्तरह्न● नौ मुनि मिलकर इस तप को स्वीकार करते हैं। प्रथम छह महीनों में चार मुनि तप करते हैं, चार मुनि उनकी सेवा करते हैं, और एक साधु को आचार्य नियुक्त कर दिया जाता है।

● दूसरी छमाही में तप करने वाले परिचर्या और परिचर्या करने करने वाले तप करते हैं। आचार्य वही रहते हैं।

● तीसरी व अंतिम छमाही में आचार्य तप करते हैं, शेष आठ मुनियों में से एक को आचार्य चुन लिया जाता है और सात मुनि परिचर्या करते हैं।

प्रश्न ४०. परिहारविशुद्धि संयमी का आहार और विहार कौनसी प्रहर में होता है?

उत्तरह्नतीसरी प्रहर में। शेष समय में कायोत्सर्ग करते हैं।

प्रश्न ४१. परिहार विशुद्धि संयमी क्या अपवाद मार्ग का सेवन करते हैं?

उत्तरह्ननहीं। किसी भी परिस्थिति में, घोर संकट में भी अपवाद मार्ग का सहारा नहीं लेते।

प्रश्न ४२. क्या साध्वी इस तप को स्वीकार कर सकती है?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न ४३. इस तप का क्रम पूर्ण होने के बाद मुनि क्या करते हैं?

उत्तरह्नकोई पुनः स्वीकार कर लेता है, कोई जिनकल्पी हो जाता है। कोई संघ में प्रवेश कर लेता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ४४. परिहार विशुद्धि संयमी स्थितकल्पी होते हैं या अस्थितकल्पी ?

उत्तरह्नस्थिरकल्पी।

प्रश्न ४५. स्थितकल्प और अस्थितकल्प क्या है ?

उत्तरह्न● स्थितकल्पह्न'स्थित' अर्थात् सतत आचरण करने योग्य 'कल्प' अर्थात् साधु सामाचारी।

● अस्थितकल्पह्नजिन मुनियों को दस कल्पों को पालने की अनिवार्यता नहीं होती वे अस्थितकल्पी कहलाते हैं।

प्रश्न ४६. क्या यह चारित्र संघबद्ध साधना में होता है ?

उत्तरह्नइस चारित्र वालों की चर्या पृथक् होती है। उनका संघ से सीधा संबंध नहीं रहता।

प्रश्न ४७. इस तप की आराधना करने वाले संयमी कहां तक जा सकते हैं ?

उत्तरह्नआठवें स्वर्ग तक।

प्रश्न ४८. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र किसे कहते हैं ?

उत्तरह्नदसवें गुणस्थान में होने वाले चारित्र को सूक्ष्मसम्पराय चारित्र कहते हैं। इस चारित्र में क्रोध, मान, माया का सम्पूर्ण उपशम या क्षय हो जाता है। केवल सूक्ष्म लोभांश विद्यमान रहता है।

प्रश्न ४९. सूक्ष्म-सम्पराय चारित्र के कितने भेद हैं ?

उत्तरह्नदोह्न१. संक्लेसमाणह्नश्रेणी पतन के समय।

२. विशुद्धमानह्नश्रेणी आरोहण के समय।

प्रश्न ५०. यथाख्यात चारित्र किसे कहते हैं ?

उत्तरह्नवीतराग के चारित्र को यथाख्यात चारित्र कहते हैं।

प्रश्न ५१. यथाख्यात चारित्र कितने प्रकार का होता है ?

उत्तरह्नदो प्रकार काह्न

१. छद्मस्थह्नग्यारहवें व बारहवें गुणस्थान में।

२. केवलीह्नतेरहवें व चौदहवें गुणस्थान में।

प्रश्न ५२. चारित्र कौन से कर्म का उदय भाव है ?

उत्तरह्नचारित्र किसी भी कर्म का उदय भाव नहीं है।

प्रश्न ५३. चारित्र कौन से कर्म का उपशम, क्षायक, क्षयोपशम भाव है ?

उत्तरह्नमोहनीय कर्म का।

प्रश्न ५४. चारित्र जीव है या अजीव ?

उत्तरह्नजीव।

प्रश्न ५५. चारित्र सरागी है या वीतरागी ?

उत्तरह्नदोनों। प्रथम चार चारित्र सरागी व यथाख्यात वीतरागी है।

प्रश्न ५६. क्या चारित्र की प्राप्ति तीर्थं स्थापना के बाद होती है ?

उत्तरह्नतीर्थ स्थापना के बाद पांचों ही चारित्र हो सकते हैं। तीर्थ स्थापना से पूर्व सामायिक, सूक्ष्म सम्पराय, यथाख्यात इन चारित्र की प्राप्ति हो सकती है।

प्रश्न ५७. चारित्र में ज्ञान कितने होते हैं ?

उत्तरह्नप्रथम चार चारित्र में दो, तीन, चार ज्ञान हो सकते हैं। यथाख्यात में दो, तीन, चार व एक हो सकता है।

प्रश्न ५८. चारित्र में श्रुतज्ञान कितना हो सकता है ?

उत्तरह्नपरिहार विशुद्धि चारित्र वाले जघन्य नौवें पूर्व की तीन आचार वस्तु, उत्कृष्ट कुछ कम दस पूर्व का अध्ययन करते हैं। शेष चार चारित्र जघन्य-आठ प्रवचन माता, उत्कृष्ट चौदह पूर्व यथाख्यात चारित्र वाले। केवली सूत्र व्यतिरिक्त ज्ञान वाले भी होते हैं।

प्रश्न ५९. चारित्र में शरीर कितने ?

उत्तरह्नप्रथम दो चारित्र में औदारिक, तैजस व कार्मण, वैक्रिय व आहारक लब्धि की अपेक्षा पांच शरीर होते हैं। अंतिम तीन चारित्र में औदारिक तैजस और कार्मण ये तीन शरीर होते हैं।

प्रश्न ६०. चारित्र में लेश्या कितनी ?

उत्तरह्नप्रथम दो चारित्र में छह, परिहारविशुद्धि में प्रवेश व सम्पन्नता के समय तीन शुभ लेश्या और मध्यवर्ती काल में छहों ही लेश्या हो सकती है। यथाख्यातह्न११, १२,१३ वें गुणस्थान की अपेक्षा एक शुक्ल लेश्या १४वें गुणस्थान की अपेक्षा की अपेक्षा अलेश्यी होते हैं।

प्रश्न ६१. एक भव की दृष्टि से जीव कितनी बार चारित्र को प्राप्त कर सकता हैं ?

उत्तरह्नएक भव की दृष्टि से सभी चारित्र जघन्य एक बार, उत्कृष्ट सामायिक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९००, छेदोपस्थापनीय-१२०, परिहारविशुद्धि-३, सूक्ष्मसम्पराय चार व यथाख्यात २ बार प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न ६२. अनेक भवों की दृष्टि से जीव कितनी बार चारित्र को प्राप्त कर सकता है?

उत्तरह्नमोक्षगमन से पूर्व सभी चारित्र वाले जीव जघन्य दो बार, उत्कृष्ट सामायिक ७२००, छेदोपस्थापनीय ९६०, परिहारविशुद्धि ७, सूक्ष्म सम्पराय ९ व यथाख्यात ५ बार, उसी चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न ६३. चारित्र की स्थिति कितनी हैं?

उत्तरह्नएक भव में पांचों चारित्र की जघन्य स्थिति एक समय; उत्कृष्ट सामायिक, छेदोपस्थापनीय व यथाख्यात की कुछ कम करोड़ पूर्व, परिहार विशुद्धि की उनतीस वर्ष न्यून करोड़ पूर्व तथा सूक्ष्मसम्पराय की अंतर्मुहूर्त्त है।

अनेक व्यक्तियों की अपेक्षा से सामायिक व यथाख्यात की सर्वकाल, छेदोपस्थापनीय की जघन्य कुछ अधिक २५० वर्ष, उत्कृष्ट कुछ अधिक ५० लाख करोड़ सागर, परिहार विशुद्धि की जघन्य कुछ कम २०० वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो करोड़ पूर्व, सूक्ष्मसम्पराय की जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त स्थिति है।

प्रश्न ६४. एक भव में चारित्र की सम्यक् आराधना करने वाले जीव आगे कितने भवों में चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तरह्नप्रथम दो चारित्र वाले जघन्य एक भव, उत्कृष्ट आठ भव में, शेष तीन चारित्र वाले जघन्य एक, उत्कृष्ट तीन भव में इस चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न ६५. चारित्र छह द्रव्य में कौन व नौ तत्त्व में कौन?

उत्तरह्नपांचों ही चारित्र छह में जीव। नौ में परिहारविशुद्धि तीनह्नजीव, संवर, निर्जरा। शेष चार चारित्र नौ मेंह्नदोह्नजीव, संवर।

प्रश्न ६६. आठ आत्मा में से चारित्र कौन सी आत्मा?

उत्तरह्नआत्मा एकह्नचारित्र।

प्रश्न ६७. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र वाले संयमी आयुष्य पूरा कर कहां जाते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-उत्कृष्ट अनुत्तर विमान में इनकी गति है।

प्रश्न ६८. छेदोपस्थापनीय संयमी आयुष्य पूरा कर कहां जाते हैं?

उत्तरह्नइनकी गति जघन्य प्रथम देवलोक और उत्कृष्ट अनुत्तर विमान है।

प्रश्न ६९. यथाख्यात चारित्र वाले संयमी आयुष्य पूरा कर कहां जाते हैं?

उत्तरह्नइनकी गति सर्वार्थसिद्ध विमान अथवा मोक्ष है।

प्रश्न ७०. चारित्र का उत्थान कहां होता है?

उत्तरह्नसामायिक चारित्र का उत्थान होने पर छेदोपस्थापनीय व सूक्ष्मसम्पराय चारित्र को प्राप्त होते हैं। छेदोपस्थापनीय वाले परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसम्पराय, सूक्ष्मसम्पराय वाले यथाख्यात व यथाख्यात वाले उत्थान होने पर मोक्ष को प्राप्त होते हैं। परिहारविशुद्धि का उत्थान नहीं होता।

प्रश्न ७१. चारित्र का पतन कहां होता है?

उत्तरह्नपतन होने पर सामयिक वाले असंयति व श्रावकत्व को प्राप्त होते हैं। छेदोपस्थापनीय वाले सामायिक, संयतासंयति असंयति; परिहारविशुद्धि वाले छेदोपस्थापनीय व असंयति; सूक्ष्मसम्पराय वाले सामायिक, छेदोपस्थापनीय व असंयति; यथाख्यात वाले सूक्ष्मसम्पराय व असंयति को प्राप्त होते हैं।

प्रश्न ७२. कौन-से चारित्र के जीव अधिक है?

उत्तरह्नसामायिक चारित्र वाले।

प्रश्न ७३. कौन से चारित्र वाले जीव सबसे कम है?

उत्तरह्नसूक्ष्मसम्पराय वाले।

प्रश्न ७४. चारित्र कौन से गुणस्थान में होते हैं?

उत्तरह्नप्रथम दो चारित्र छठे से नौवें, परिहारविशुद्धि छठे व सातवें, सूक्ष्मसम्पराय दसवें तथा यथाख्यात अंतिम चार गुणस्थान में होता है।

प्रश्न ७५. तिरेसठ शलाकापुरुष जीवों में कौन-से शलाका पुरुष चारित्र स्वीकार करते हैं?

उत्तरह्न
- तीर्थंकर, बलदेव तो निश्चित ही दीक्षा लेते हैं।
- चक्रवर्ती में कोई चारित्र ग्रहण करता है कोई नहीं करते।[1]
- वासुदेव, प्रतिवासुदेव दोनों चारित्र ग्रहण नहीं कर सकते।

१. निदान करके आये चक्रवर्ती में संयम नहीं आ सकता, वैसे ही वासुदेव।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ७६. सामायिक चारित्र शाश्वत है या अशाश्वत है?

उत्तरह्नमहाविदेह की अपेक्षा शाश्वत है।

प्रश्न ७७. आराधक-विराधक साधु कौन होते हैं?

उत्तरह्नजो अपने ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सम्यक् आराधना करते हैं वे साधु आराधक कहलाते हैं और सम्यग् आराधना न करने वाले विराधक कहलाते हैं।

प्रश्न ७८. आराधना कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तरह्नआराधक तीन प्रकार की होती हैंह्न१. उत्कृष्ट २. मध्यम ३. जघन्य।

प्रश्न ७९. किस प्रकार की आराधना करने वाले कितने भव करते हैं?

उत्तरह्न

आराधना करने वाले मुनि	जघन्य भव	उत्कृष्ट भव
१. उत्कृष्ट आराधना करने वाले	एक	दो
२. मध्यम आराधना करने वाले	दो	तीन
३. जघन्य आराधना करने वाले	तीन	सात-आठ

प्रश्न ८०. निर्ग्रन्थ कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्ननिर्ग्रन्थ पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. पुलाक
२. बकुश
३. कुशल
४. निर्ग्रन्थ
५. स्नातक।

प्रश्न ८१. पुलाक किसे कहते हैं और कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्ननिःसार धान्य कणों की भांति जिसका संयम निःसार हो उसे पुलाक निर्ग्रन्थ कहते हैं। पुलाक पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. ज्ञान पुलाकह्नस्खलित, मिलित आदि ज्ञान के अतिचारों का सेवन करने वाला।

२. दर्शन पुलाकह्नसम्यक्त्व के अतिचारों का सेवन करने वाला।

३. चरित्र पुलाकह्नमूलगुण व उत्तरगुण दोनों में ही दोष लगाने वाला।

४. लिंग पुलाकह्नशास्त्र विहित उपकरणों से अधिक उपकरण रखने वाला या बिना ही कारण अन्य लिंग को धारण करने वाला।

५. यथासूक्ष्म पुलाकह्नप्रमाद वश अकल्पनीय वस्तु को ग्रहण करने का मन में भी चिन्तन करने वाला।

प्रश्न ८२. बकुश किसे कहते हैं और वे कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नशरीर विभूषा आदि के द्वारा उत्तरगुणों में दोष लगाने वाला बकुश निर्ग्रन्थ कहलाता है। बकुश पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. आभोग बकुशह्नजान-बूझकर शरीर की विभूषा करने वाला।

२. अनाभोग बकुशह्नअनजान में शरीर की विभूषा करने वाला।

३. संवृत बकुशह्नछिप-छिपकर शरीर आदि की विभूषा करने वाला।

४. असंवृत बकुशह्नप्रकट रूप में शरीर की विभूषा करने वाला।

५. यथासूक्ष्म बकुशह्नप्रकट या अप्रकट में शरीर आदि की सूक्ष्म विभूषा करने वाला।

प्रश्न ८३. कुशील किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नमूल तथा उत्तरगुणों में दोष लगाने वाला कुशील निर्ग्रन्थ कहलाता है। कुशील पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. ज्ञान कुशीलह्नकाल, विनय आदि ज्ञानाचार की प्रतिपालना नहीं करने वाला।

२. दर्शन कुशीलह्ननिष्कांक्षित आदि दर्शनाचार की प्रतिपालना नहीं करने वाला।

३. चरित्र कुशीलह्नकौतुक, भूतिकर्म, प्रश्नाप्रश्न, निमित्त, आजीविका, लक्षण, विद्या तथा मंत्र का प्रयोग करने वाला।

४. लिंगकुशीलह्नवेष में आजीविका करने वाला।

५. यथासूक्ष्म कुशीलह्नअपने को तपस्वी आदि कहने से हर्षित होने वाला।

प्रश्न ८४. निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नजिसका मोहनीय कर्म छिन्न हो गया हो, वह निर्ग्रन्थ है। निर्ग्रन्थ पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. प्रथम समय निर्ग्रन्थह्ननिर्ग्रन्थ की कालस्थिति अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण होती है। उस काल में प्रथम समय में वर्तमान निर्ग्रन्थ।

२. अप्रथमसमय निर्ग्रन्थह्नप्रथम समय के अतिरिक्त शेष काल में वर्तमान निर्ग्रन्थ।

३. चरमसमयह्ननिर्ग्रन्थह्नअंतिम समय में वर्तमान निर्ग्रन्थ।

४. अचरमसमय निर्ग्रन्थह्नअंतिम समय के अतिरिक्त शेष समय में वर्तमान निर्ग्रन्थ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५. यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थह्नप्रथम या अंतिम समय की अपेक्षा किये बिना सामान्य रूप से सभी समयों में वर्तमान निर्ग्रन्थ।

प्रश्न ८५. स्नातक किसे कहते है और ये कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तरह्नजिसके चार घाति कर्म क्षय हो गये हो, वह स्नातक है। स्नातक निर्ग्रन्थ पांच प्रकार के होते हैंह्न

१. अच्छवीह्नकाय योग का निरोध करने वाला।
२. अशबलह्ननिरतिचार साधुत्व का पालन करने वाला।
३. अकर्मांशह्नघात्यकर्मों का पूर्णतः क्षय करने वाला।
४. सशुद्ध ज्ञान-दर्शनधारीह्नअर्हत्, जिन, केवली।
५. अपरिश्रावीह्नसम्पूर्ण काय-योग का निरोध करने वाला।

प्रश्न ८६. निर्ग्रन्थ में ज्ञान कितने होते हैं?

उत्तरह्नपुलाक व बकुश मेंह्नतीन ज्ञान प्रथम, कुशील व निर्ग्रन्थ में प्रथम चार ज्ञान हो सकते हैं और स्नातक में एक केवलज्ञान होता है।

प्रश्न ८७. निर्ग्रन्थ में चारित्र कितने?

उत्तरह्नपुलाक व बकुश में प्रथम दो चारित्र, कुशील में प्रथम चार चारित्र, निर्ग्रन्थ व स्नातक में एकह्नयथाख्यात चारित्र होता है।

प्रश्न ८८. निर्ग्रन्थ में शरीर कितने होते हैं?

उत्तरह्नपुलाक, निर्ग्रन्थ और स्नातक में तीन शरीर-औदादिक, तैजस और कार्मण। बकुश में चार शरीर (आहारक छोड़कर), कुशील में पांचों शरीर हो सकते हैं।

प्रश्न ८९. निर्ग्रन्थ मरकर किस गति में जाते हैं?

उत्तरह्नपुलाकह्नआराधक अवस्था में मरकर आठवें स्वर्ग तक।
बकुशह्नआराधक अवस्था में मरकर बारहवें स्वर्ग तक।
कुशीलह्नआराधक दशा में मरकर छब्बीसवें स्वर्ग तक।
निर्ग्रन्थह्नपांच अनुत्तर विमान में।
स्नातकह्नसिद्धगति में (मोक्ष में)।

प्रश्न ९०. पांचों प्रकार के निर्ग्रन्थ जघन्य व उत्कृष्ट कितने होते हैं?

उत्तरह्ननिर्ग्रन्थ		जघन्य	उत्कृष्ट
पुलाक	ह्न	दो हजार	नौ हजार
बकुश	ह्न	दौ सौ करोड़	चार सौ पचास करोड़
प्रतिसेवनाकुशील	ह्न	चार सौ करोड़	नौ सौ करोड़
कषाय कुशल	ह्न	दो हजार करोड़	७६४०९९९०१००
निर्ग्रन्थ	ह्न	(कभी होते है और कभी नहीं होते)	नौ सौ
स्नातक	ह्न	दो करोड़	नव करोड़

प्रश्न ९१. पांच प्रकार के निर्ग्रन्थों में किसका संहरण नहीं होता?

उत्तरह्नअंतिम दो काह्ननिर्ग्रन्थ और स्नातक का।

प्रश्न ९२. वर्तमान में कितने निर्ग्रन्थों का विच्छेद हो चुका है।

उत्तरह्नतीन प्रकार के निर्ग्रन्थों काह्न१. निग्रन्थ २. स्नातक ३. पुलाक।

प्रश्न ९३. निर्ग्रन्थ की दशा जघन्य व उत्कृष्ट कितनी बार आती है?

उत्तरह्न१. पुलाकह्नएक जन्म की अपेक्षा जघन्य एक बार, उत्कृष्ट तीन बार। तीन जन्मों की अपेक्षा जघन्य दो बार, उत्कृष्ट सात बार।

२. बकुशह्नबकुशता एक भव की अपेक्षा उत्कृष्ट ९०० बार और आठ भवों की अपेक्षा ७२०० बार आ सकती है।

३. कुशीलह्नकषायकुशील की दशा एक भव की दृष्टि से उत्कृष्ट ९०० बार एवं आठ भवों की दृष्टि से ७२०० बार प्राप्त हो सकती है।

४. निर्ग्रन्थह्ननिर्ग्रन्थ दशा एक भव की अपेक्षा दो बार और तीन भवों की अपेक्षा पांच बार आ सकती है।

५. स्नातकह्नस्नातक दशा जन्म में एक बार ही आती है।

प्रश्न ९४. साधु के कितने महाव्रत होते हैं?

उत्तरह्नपांच महाव्रतह्न१. अहिंसा २. सत्य ३. अचौर्य ४. ब्रह्मचर्य ५.अपरिग्रह।

प्रश्न ९५. अहिंसा महाव्रत क्या है?

उत्तरह्नसब जीवों के प्रति संयम रखना अहिंसा है।[1] एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के सूक्ष्म-बादर, त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा करने का जीवन भर के लिए तीन करण-तीन योग से त्याग करना, अहिंसा महाव्रत है।

प्रश्न ९६. सत्य महाव्रत क्या है?

उत्तरह्नक्रोध, लोभ, भय और हास्यवश असत्य बोलने का जीवन भर के लिये तीन करण-तीन योग से त्याग करना, सत्य महाव्रत है।

प्रश्न ९७. अचौर्य महाव्रत क्या है?

१. द. ६/८।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्वमालिक की आज्ञा के बिना वस्तु गहण न करना अचौर्य महाव्रत है। गांव, नगर, जंगल कहीं भी कोई वस्तु स्वामी की आज्ञा के बिना लेने का जीवन भर के लिए तीन करण-तीन योग से त्याग करना, अचौर्य महाव्रत है।

प्रश्न ९८. साधु जंगलादि में से तृण-धूल आदि किसकी आज्ञा से लेते हैं?

उत्तरह्वदेवेन्द्र (शकेन्द्र) की आज्ञा से।

प्रश्न ९९. ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है?

उत्तरह्वब्रह्मचर्य का अर्थ हैह्ववस्तिसंयम, मैथुनविरति, आत्म-रमण।

प्रश्न १००. ब्रह्मचर्य महाव्रत का स्वरूप क्या है?

उत्तरह्वदेवता, मनुष्य और तिर्यंच संबंधी मैथुन सेवन करने का तीन करण-तीन योग से त्याग करना, ब्रह्मचर्य महाव्रत है।

प्रश्न १०१. ब्रह्मचर्य के कितने भेद हैं और कौन से?

उत्तरह्वब्रह्मचर्य के अठारह भेद हैह्व

● वैक्रिय शरीर संबंधी, दिव्य विषयों की भोगसाक्ति का तीन करण और तीन योग से त्याग करने से ३ह्व३=९ भेद।

● औदारिक शरीर संबंधी भोगों का तीन करण और तीन योग से त्याग करने से ३ह्व३=९ भेद।

९+९=१८।

प्रश्न १०२. ब्रह्मचर्य की सुरक्षा के लिये नवबाड़े कौन सी हैं?

उत्तरह्व१. शुद्ध स्थान सेवन
२. स्त्रीकथा वर्जन
३. एकासन त्याग
४. दृष्टि संयम
५. श्रवण निषेध
६. स्मृति संयम
७. सरस आहार त्याग
८. अति आहार त्याग
९. विभूषा परित्याग।

प्रश्न १०३. परिग्रह कितने प्रकार का होता है?

उत्तरह्वदो प्रकार काह्वबाह्य और आभ्यन्तर।

प्रश्न १०४. बाह्य परिग्रह कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्वधन्य, धान्य, सोना, चांदी, क्षेत्र, वस्तु, द्विपद, चतुष्पद, कुप्य आदि।

प्रश्न १०५. आभ्यन्तर परिग्रह कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्वहास्य, रति आदि नौ कषाय, चार कषाय और मिथ्यात्व आभ्यन्तर परिग्रह है।[1]

प्रश्न १०६. पांच महाव्रत की भावनाएं कितनी हैं?

उत्तरह्वपच्चीस। प्रत्येक महाव्रत की ५-५ भावनाएं है जो महाव्रतों की पुष्टि में हेतुभूत बनती हैं।

प्रश्न १०७. अहिंसा महाव्रत की पांच भावनाएं कौनसी हैं?

उत्तरह्व१. ईर्या समितिह्वगमन क्रिया में जागरुकता।
२. मनो गुप्तिह्वअकुशल मन का निरोध।
३. वचन गुप्तिह्वअकुशल वाणी का निरोध।
४. आलोक-भाजन भोजनह्वचौड़े मुंह वाले पात्र में भोजन करना।
५. आदान भाण्डमात्रनिक्षेपणा समितिह्ववस्त्र, पात्रादि उपकरणों को लेने रखने में विधि का ध्यान रखना।

प्रश्न १०८. सत्य महाव्रत की ५ भावनाएं कौन सी हैं?

उत्तरह्व१. अनुवीचि भाषणताह्वचिन्तनपूर्वक विधिवत् बोलना।
२. क्रोध विवेकह्वक्रोध का परिहार।
३. लोभ विवेकह्वलोभ का परिहार।
४. भय विवेकह्वभय का परिहार।
५. हास्य विवेकह्वहास्य का परिहार।

प्रश्न १०९. अचौर्य महाव्रत की पांच भावनाएं कौन सी हैं?

उत्तरह्व१. अवग्रह अनुज्ञापनह्वस्थान के लिए गृह स्वामी की आज्ञा लेना।
२. अवग्रह सीमा ज्ञानह्वगृह स्वामी द्वारा अनुज्ञात स्थान की सीमा को जानना।
३. स्वयमेव अवग्रह-अनुज्ञापनह्वअनुज्ञात स्थान में रहना।
४. साधार्मिक अवग्रह अनुज्ञाप्य परिभोगह्वसाधार्मिकों द्वारा याचिक स्थान में उनकी आज्ञा से रहना।
५. साधारण भक्तपान अनुज्ञाप्य परिभोगह्वसमुच्चय के आहार पानी आदि का आचार्य की आज्ञा से परिभोग करना।

प्रश्न ११०. ब्रह्मचर्य महाव्रत की पांच भावनाएं कौन सी है?

उत्तरह्व१. स्त्री, पशु और नपुंसक से आकीर्ण स्थान में नहीं रहना।

१. बृहत्कल्प उ. १ भाष्य गाथा ८३१।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२. काम कथा का वर्जन करना।

३. वासना को उत्तेजित करने वाली इन्द्रियों के अवलोकन का वर्जन करना।

४. पूर्वभुक्त और पूर्वक्रीड़ित कामभोगों की स्मृति का वर्जन करना।

५. प्रणीत-गरिष्ठ भोजन का वर्जन करना।

प्रश्न १११. अपरिग्रह महाव्रत की पांच भावनाएं कौन सी है?

उत्तरह्न१. श्रोत्रेन्द्रिय के राग से उपरत होना।

२. चक्षुःइन्द्रिय के राग से उपरत होना।

३. घ्राणेन्द्रिय के राग से उपरत होना।

४. रसनेन्द्रिय के राग से उपरत होना।

५. स्पर्शनेन्द्रिय के राग से उपरत होना।

प्रश्न ११२. पांच महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्नदो सौ बावन (२५२)।

प्रश्न ११३. अहिंसा महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्नअहिंसा महाव्रत के भांगेह्न८१।

पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और एक पंचेन्द्रिय इन नौ का नौ कोटि से हिंसा करने का त्याग करना। ९ह्न९=८१।

प्रश्न ११४. सत्य महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्न३६ (छत्तीस)। क्रोध, लोभ, भय और हास्यवश असत्य बोलने का नौ कोटि से त्याग करना। ४ह्न९=३६।

प्रश्न ११५. अचौर्य महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्न५४ (चोपन)। अल्प, बहु, अणु, स्थूल, सचित्त और अचित्त इन छह प्रकार के पदार्थों की चोरी करने का नौ कोटि से त्याग करना ६ह्न९=५४।

प्रश्न ११६. ब्रह्मचर्य महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्न२७ (सत्ताइस)। देव, मनुष्य और तिर्यंच संबंधी मैथुन सेवन करने का नौ कोटि से त्या करना ३ह्न९=२७।

प्रश्न ११७. अपरिग्रह महाव्रत के भांगे कितने?

उत्तरह्न५४ (चोपन)। अल्प, बहु, अणु, स्थूल, सचित्त और अचित्तह्नइन छह भेदों का नौ कोटि से परिग्रह का त्याग ६ह्न९=५४।

प्रश्न ११८. प्रवचन माता कितनी हैं?

उत्तरह्नप्रवचन माता आठ हैंह्नपांच समिति और तीन गुप्ति।

प्रश्न ११९. प्रवचन माता क्या है?

उत्तरह्नजो साधु के ५ महाव्रतों के पालन में हर पल सहयोग करती है। माता के समान साधक की रक्षा करती है, वह प्रवचन माता है।

● पांच समिति और गुप्ति में सारा प्रवचन समा जाता है, इस दृष्टि से भी इन्हें प्रवचन माता कहा जाता हैं।

प्रश्न १२०. ईर्या-समिति से क्या तात्पर्य है?

उत्तरह्नयुग-प्रमाण (शरीर प्रमाण) भूमि को देखकर चलना।

प्रश्न १२१. ईर्या-समिति की शुद्धि के लिये मुनि को किन-किन बातों का ध्यान रखते हुए चलना चाहिए?

उत्तरह्नईर्या-समिति की शुद्धि के लिए आलम्बन शुद्धि, काल शुद्धि, मार्ग शुद्धि और यतना शुद्धि इन चार बातों का ध्यान रखते हुये चलना चाहिए।

प्रश्न १२२. भाषा-समिति किसे कहते हैं?

उत्तरह्नउत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय, मौखर्य और विकथा इन आठ स्थानों को छोड़ साधु के द्वारा उचित अवसर पर निरवद्य और मित भाषा का प्रयोग करना भाषा समिति है। अथवा बोलते समय हित, परिमित और असंदिग्ध वाक्यों का प्रयोग करना भाषा-समिति है।

प्रश्न १२३. भाषा कितने प्रकार की होती है और साधु उनमें से कितने प्रकार की भाषा का प्रयोग कर सकता है?

उत्तरह्नभाषा के चार प्रकार हैंह्न१. सत्य २. असत्य ३. मिस्र और ४. व्यवहार।

साधु सत्य और व्यवहार इन दो भाषाओं का प्रयोग कर सकता है।

प्रश्न १२४. एषणा समिति किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो मुनि गोचर-चर्या के समय सावधानी पूर्वक नव कोटि परिशुद्ध भिक्षा ग्रहण करता है, उसे एषणा समिति कहते हैं।

प्रश्न १२५. एषणा कितने प्रकार की होती है?

उत्तरह्नतीन प्रकार कीह्न

१. गवेषणाह्नशुद्ध आहार की खोज करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२. ग्रहणैषणाह्नशुद्ध आहार को ग्रहण करना।

३. परिभोगैषणाह्नमांडला के पांच दोषों को टालने हुए उपभोग करना, परिभोगैषणा है।

प्रश्न १२६. साधु की भिक्षाचरी को क्या कहते हैं?

उत्तरह्नमाधुकरी वृत्ति, भ्रामरी, गोचरी आदि।

प्रश्न १२७. साधु को कितने दोष टालकर भिक्षा ग्रहण करनी चाहिये?

उत्तरह्न४२ दोष टालकर।

प्रश्न १२८. ४२ दोष कौन से हैं?

उत्तरह्नउद्गम केह्न१६ जो गृहस्थ के द्वारा लगते हैं।

उत्पादन केह्न१६ह्नजो साधु के द्वारा लगते हैं।

एषणा केह्न१०ह्नजो साधु व गृहस्थ दोनों के सम्मिश्रण से लगते हैं।

प्रश्न १२९. उद्गम के १६ (सोलह) दोष कौन से हैं?

उत्तरह्न१. आधाकर्मी
२. औद्देशिक
३. पूतिकर्म
४. मिश्र जात
५. स्थापना
६. प्राभृतिका
७. प्रादुष्करण
८. क्रीत
९. प्रामित्यक
१०. परिवर्तित
११. अभ्याहृत
१२. उद्भिन्न
१३. मालापहृत
१४. आच्छेद्य
१५. अनिसृष्ट
१६. अध्यवपूर्वक।

प्रश्न १३०. उत्पादन के सोलह दोष कौन से हैं?

उत्तरह्न१. धात्री कर्म
२. दूती कर्म
३. निमित्तपिण्ड
४. आजीविकापिण्ड
५. वनीपक
६. चिकित्सा
७. क्रोध
८. मान
९. माया
१०. लोभ
११. पूर्वपश्चात्संस्तव
१२. विद्या
१३. मंत्र
१४. चूर्ण
१५. योग
१६. मूलकर्म।

प्रश्न १३१. ग्रहणैषणा के दस दोष कौन से हैं?

उत्तरह्न१. शंकित
२. म्रक्षित
३. निक्षिप्त
४. पिहित
५. संहृत
६. दायक
७. उन्मिश्र
८. अपरिणत
९. लिप्त
१०. छर्दित।

प्रश्न १३२. साधु आहार क्यों करते हैं?

उत्तरह्नसाधु के आहार करने के छह कारण हैंह्न
१. भूख मिटाने के लिए
२. सेवा के लिए
३. ईर्या-समिति के पालन के लिए
४. संयम पालने के लिए
५. प्राण रक्षा के लिए
६. धर्म चिन्तन के लिये।

प्रश्न १३३. साधु को किन छह कारणों से आहार नहीं करना चाहिए?

उत्तरह्न१. रोगोत्पत्ति हो जाने पर
२. उपसर्ग आने पर
३. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिये
४. छह काय की रक्षा के लिये
५. तपस्या के लक्ष्य से
६. शरीर त्यागने के लिये।

प्रश्न १३४. साधु को किन पांच बातों का ध्यान रखते हुये आहार-करना चाहिये?

उत्तरह्नसाधुह्न१. स्वाद के लिये न खाएं।
२. मात्रा से अधिक न खाएं।
३. लोलुपता से न खाएं।
४. आहार और दाता की निंदा करने हुए न खाएं।
५. कारण बिना न खाएं।

प्रश्न १३५. साधु का आहार व्रत में है या अव्रत में?

उत्तरह्नव्रत में।

प्रश्न १३६. साधु को किस प्रकार आहार ग्रहण करना चाहिए?

उत्तरह्न१. क्षेत्रातीत
२. कालातीत
३. मार्गातीत
४. प्रमाणातीत।

प्रश्न १३७. क्या साधु शय्यातर पिण्ड ले सकता है और वह कितने प्रकार का होता हैं?

उत्तरह्नसाधु-शय्यातर पिण्ड नहीं ले सकते। वह शय्यातर पिण्ड १२ प्रकार का होता हैह्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१. अशन
२. पान
३. खादिम
४. स्वादिम
५. पादप्रोंछन
६. पात्र
७. कंबल
८. सूई
९. वस्त्र
१०. छुरी, कैंची
११. कान कुचरणी
१२. नखछेदनिका।

प्रश्न १३८. साधु शय्यातर की कौन सी वस्तुएं ले सकता हैं?

उत्तरह्नसाधु शय्यातर की तृण, डंगल, शंख, कफ आदि थूंकने का भाजन, शय्या, संथारा, पीठ फलक, लेप, दीक्षा की सामाग्री सहित दीक्षार्थी को ले सकते हैं।

प्रश्न १३९. रात्रि भोजन विरमण व्रत में कितने प्रकार के आहार का त्याग किया जाता है?

उत्तरह्नचार प्रकार के आहार काह्न

१. अशनह्नजिससे भूख शान्त हो। जैसेह्नदाल, चावल आदि।
२. पानह्नजिससे प्यास शान्त हो। जैसेह्नप्रासुक पानी।
३. खादिमह्नफल-मेवा-मिष्टान्न आदि।
४. स्वादिमह्नपान-सुपारी-लौंग-इलायची आदि।

प्रश्न १४०. क्या साधु आहारादि की चिंता से मुक्त रहते हैं?

उत्तरह्नहां। तीन प्रकार के साधु आहारादि की चिन्ता से मुक्त रहते हैंह्न

१. पुलाकह्नपुलाकलब्धि उपजीवी।
२. निर्ग्रन्थह्नमोहनीय कर्म से मुक्त।
३. स्नातकह्नघात्य कर्मों से मुक्त।

प्रश्न १४१. साधु कितने प्रकार का अचित्त पानी ग्रहण कर सकते हैं?

उत्तरह्नआचारांग के अनुसार २१[1] प्रकार का पानी कल्पनीय हैह्न

१. आटे का धोवन
२. चावलों का धोवन
३. तिल आदि का धोवन
४. तुषों का जल
५. जवों का जल
६. ओसामण
७. छाछ के ऊपर का पानी
८. उष्ण जल
९. आम का धोवन
१०. आम्रातक का धोवन
११. कबीट का पानी
१२. बिजोरे का पानी

१. आचारांग श्रु. २, अ. १, उ. ७-८।

१३. दाखों का पानी
१४. अनार का पानी
१५. खजूर का पानी
१६. नारियल का पानी
१७. कैरों का धोवन
१८. बेरों का धोवन
१९. आंवलों का धोवन
२०. इमली का धोवन
२१. ढोकलों का धोवन।

इसके अतिरिक्त इसी प्रकार का अन्य पानी जिसका वर्ण-गंध-रस-स्पर्श बदल जाये, वह कल्पनीय होता है।

प्रश्न १४२. नव कोटि-विशुद्ध भिक्षा क्या है?

उत्तरह्नसाधु को आहार आदि के लिये हिंसा करनी नहीं, करवानी नहीं एवं हिंसा करने वाले को अच्छा जानना नहीं। साधु को आहारादि पकाना नहीं, पकवाना नहीं, पकाते हुये को अच्छा जानना नहीं। आहारादि खरीदना नहीं, खरीदवाना नहीं एवं खरीदने वाले को अच्छा समझना नहीं, ऐसे नव प्रकार से शुद्ध भिक्षा लेनी चाहिये। इसी का नाम नव कोटि-विशुद्ध भिक्षा है।

प्रश्न १४३. साधुओं का आहार करना सावद्य है या निरवद्य?

उत्तरह्नभगवती १/९ के अनुसार प्रासुक-निर्दोष आहार करता हुआ साधु सात-साठ कर्मों के बंधनों को ढीला करता है अतः उनका आहार करना निरवद्य एवं संयम को पुष्ट करने वाला है।

प्रश्न १४४. आदान-निक्षेप समिति से आप क्या समझते हैं?

उत्तरह्नवस्त्र, पात्र, बाट, बाजोट आदि को संयमपूर्वक लेने-रखने में प्रमाद न करना, आदान निक्षेप समिति है।

प्रश्न १४५. अप्रमादयुक्त प्रतिलेखना के कितने प्रकार हैं?

उत्तरह्नछह।

१. अनर्तितह्नवस्त्र या शरीर को न नचाएं।
२. अवलितह्न मोड़ें।
३. अननुबन्धिह्नवस्त्र का जोर से न झटकना।
४. अमोसलीह्नवस्त्र का दीवार आदि से स्पर्श न करे।
५. षट्पुरिमह्ननवखोटकाह्नवस्त्र के छह पूर्व और नौ खोटक करे।
६. पाणि-प्राणि विशोधनह्नहाथ में प्राणियों का विशोधन करे।

प्रश्न १४६. प्रतिलेखना कितने प्रकार की होती है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरह्न २५ प्रकार कीह्न ९ अखोड़े+९ पखोड़े+पूरिम+दृष्टिपडिलेहण।

प्रश्न १४७. साधु प्रतिलेखना करता हुआ क्या न करें?

उत्तरह्न साधु प्रतिलेखन करते समयह्न १. बात न करे। २. प्रत्याख्यान न कराये। ३. ज्ञान न दे और न ले। इस प्रकार करने वाला साधु प्रमादी व षट्काय विराधक होता है।

प्रश्न १४८. प्रतिलेखन का काल कौन सा?

उत्तरह्न प्रतिलेखन के दो काल हैंह्न
१. प्रथम प्रहर (सूर्योदय के समय)।
२. चतुर्थ प्रहर (दिन की तीसरी प्रहर के बाद)।

प्रश्न १४९. उत्सर्ग समिति किसे कहते हैं?

उत्तरह्न उच्चार-प्रस्रवण, खेल-जल-श्लेष्म आदि का संयम पूर्वक परिष्ठापन उत्सर्ग-समिति है।

प्रश्न १५०. गुप्ति का क्या अर्थ है और वे कितनी हैं?

उत्तरह्न गुप्ति का अर्थ हैह्न आगमोक्त विधि से प्रवृत्ति करना तथा उन्मार्ग से निवृत्त होना।[1] सम्यक् रूप से मन, वचन और काययोग का निग्रह करना गुप्ति है। गुप्ति के तीन प्रकार हैंह्न १. मन गुप्ति २. वचन गुप्ति और ३. काय गुप्ति।

प्रश्न १५१. समिति और गुप्ति में क्या अन्तर है?

उत्तरह्न समिति प्रवृत्ति रूप और गुप्ति निवृत्ति रूप है।

प्रश्न १५२. साधु के लिए अनाचार क्या हैं?

उत्तरह्न अनाचार-अर्थात्-अकरणीय कार्य, उन्मार्ग गमन, सावद्य प्रवृत्ति।

प्रश्न १५३. साधु कितने अनाचारों का वर्जन करता हुआ विचरण करता है?

उत्तरह्न ५२ अनाचारों का।[2]

प्रश्न १५४. साधु-साध्वियों का विचरण कहां-कहां होता हैं?

उत्तरह्न अढ़ाई द्वीप और पन्द्रह क्षेत्र में।

प्रश्न १५५. साधु के तीन मनोरथ कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न १. कब मैं अल्प या बहुश्रुत का अध्ययन करूंगा।

१. उशावृ प. ५१४।
२. दशवै. ३।२ से ९।

२. कब मैं एकलविहार प्रतिमा को स्वीकार कर विहरण करूंगा।

३. कब मैं संलेखना युक्त अनशन स्वीकार कर मृत्यु की आकांक्षा न करते हुये विहरण करूंगा।

तीन योगों से इस प्रकार की भावना व्यक्त करता हुआ साधु महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

प्रश्न १५६. परीषह किसे कहते हैं? और साधु के कितने परीषह होते हैं?

उत्तरह्न जो कष्ट मार्ग से अविच्युति और निर्जरा के लिए संयमी द्वारा सहे जाते हैं वे परीषह कहलाते हैं। साधु के २२ (बावीस) परीषह होते हैं।

प्रश्न १५७. ये बावीस परीषह किस कर्म के उदय से प्राप्त होते हैं?

उत्तरह्न ज्ञानावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, और अंतराय कर्म के उदय से ये बावीस परीषह प्राप्त होते हैं।

प्रश्न १५८. पडिमा किसे कहते हैं?

उत्तरह्न काय मर्यादा युक्त साधु की प्रतिज्ञा विशेष को पडिमा कहते हैं।

प्रश्न १५९. साधु के कितनी पडिमाएं होती है और कौन सी?

उत्तरह्न १२ पडिमाएंह्न
१. एक मासिकी पडिमा
२. दो मासिकी पडिमा
३. तीन मासिकी पडिमा
४. चार मासिकी पडिमा
५. पांच मासिकी पडिमा
६. छह मासिकी पडिमा
७. सात मासिकी पडिमा
८. तत्पश्चात् प्रथम सात दिन-रात की भिक्षु पडिमा
९. दूसरी सात दिन-रात की
१०. तीसरी सात दिन-रात की भिक्षु पडिमा
११. एक अहोरात्रि की भिक्षु पडिमा
१२. एक रात्रिकी पडिमा।

प्रश्न १६०. भिक्षु पडिमा कौन कर सकता है?

उत्तरह्न केवल श्रमण ही कर सकता है, श्रमणियां नहीं। क्योंकि पडिमाधारी साधक को अकेले रहना पड़ता है जबकि श्रमणी अकेली नहीं रह सकती।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १६१. आशातना किसे कहते है? और वह कितने प्रकार की होती है?

उत्तरह्नसम्यक्त्व, ज्ञान आदि की उपलब्धि में बाधा अथवा न्यूनता उत्पन्न करने वाली अवज्ञापूर्ण प्रवृत्ति आशातना कहलाती है। यह तेतीस प्रकार की होती है।

प्रश्न १६२. आशातना करने से क्या हानि होती है?

उत्तरह्नतीर्थंकर, गणधर, आचार्य, प्रवचन और जिनशासन की आशातना करने वाला जीव अनन्तकाल तक संसार में परिभ्रमण करता है।

प्रश्न १६३. साधु की साधना को आगे बढ़ाने में कौन से शल्य बाधक हैं?

उत्तरह्नशल्य अर्थात् अन्तर में घुसा हुआ दोष अथवा जिससे विकास बाधित होता है उसे शल्य कहते है। वे तीन हैंह्न

१. माया शल्यह्नमाया पूर्ण आचरण।

२. निदानशल्यह्नऐहिक या पारलौकिक उपलब्धि के लिए धर्म का विनिमय।

३. मिथ्यादर्शन शल्यह्नआत्मा का मिथ्यात्वमय दृष्टिकोण। निःशल्य साधक ही महाव्रतों की साधना कर सकता है।

प्रश्न १६४. साधु को किसका गौरव नहीं करना चाहिये?

उत्तरह्न'गौरव' अर्थात् अपनी उपलब्धि के अभिमान से ग्रस्त चित्त वाले व्यक्ति का अध्यवसाय। गौरव तीन प्रकार का होता हैह्न

१. ऋद्धि गौरव-प्रचुर लोगों अथवा राजाओं तथा देवों द्वारा वंदना पूजा प्राप्त होने पर उसके प्रति होने वाली प्रतिबद्धता।

२. रस गौरवह्नरस लोलुपता, जिह्वेन्द्रिय की आसक्ति।

३. साता गौरवह्नसुविधाजनक शयन, आसन, स्थान, वस्त्रादि सुखकारक पदार्थों के प्रति प्रतिबद्धता।

प्रश्न १६५. साधु के कितने हजार शीलांग होते हैं?

उत्तरह्न१८००० (अट्ठारह हजार)।

प्रश्न १६६. साधु के १८००० शीलांग कैसे बनते हैं?

उत्तरह्न३ करण (करना, कराना, अनुमोदन करना) + तीन योग (मन, वचन, काय) = ९ह्न४ संज्ञा (आहार, भय, मैथुन और परिग्रह) = ३६ह्न५ इन्द्रियां (श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसन और स्पर्श) = १८०ह्न९ जीव +१ अजीव (५ स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव + [1]अजीव) महामूल्यवान वस्त्र, पात्र, सोना, चांदी आदि) = १८००ह्न१० श्रमण धर्म (क्षमा मार्दव आदि) = १८००० शीलांग मुनि के होते हैं।

प्रश्न १६७. साधु की गति कौन सी?

उत्तरह्नमनुष्य गति।

प्रश्न १६८. साधु की जाति कौन सी?

उत्तरह्नपंचेन्द्रिय।

प्रश्न १६९. साधु की काया कौन सी?

उत्तरह्नत्रस काया।

प्रश्न १७०. साधु के इन्द्रियां कितनी?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न १७१. साधु में पर्याप्तियां कितनी?

उत्तरह्नछह।

प्रश्न १७२. साधु में प्राण कितने?

उत्तरह्नदस।

प्रश्न १७३. साधु में शरीर कितने?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न १७४. साधु में पन्द्रह योगों में से कितने योग?

उत्तरह्न● सामान्य साधु में योगह्न९। चार मन के, चार वचन के और एक औदारिक काययोग।

● केवलज्ञानी साधु में योग-७। सत्य मन, व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिक मिश्र और कार्मण काययोग।

प्रश्न १७५. साधु में उपयोग कितने?

उत्तरह्न● साधु में उपयोग सात। प्रथम चार ज्ञान (केवलज्ञान को छोड़कर) और तीन दर्शन (केवल दर्शन को छोड़कर)।

● केवली में उपयोग दोह्नकेवलज्ञान और केवलदर्शन।

प्रश्न १७६. आठ कर्मों में से साधु के कितने कर्म हैं?

उत्तरह्न● सामान्य साधु के कर्मह्नआठ।

● केवली के कर्म-चार अघाति कर्म।

प्रश्न १७७. साधु में गुणस्थान कितने?

उत्तरह्ननौह्नछठे से चौदहवें तक।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न १७८. पांच इन्द्रियों के २३ विषयों में से साधु में कितने विषय?

उत्तरह्नसामान्यतया २३ विषय।

प्रश्न १७९. साधु सम्यक्त्वी है या मिथ्यात्वी?

उत्तरह्नसम्यक्त्वी। क्योंकि सम्यक्त्वी जीव ही साधु बन सकता है।

प्रश्न १८०. साधु में जीव का भेद कौन सा?

उत्तरह्नएक चौदहवां। सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त।

प्रश्न १८१. साधु में आत्मा कितनी?

उत्तरह्नआठ।

प्रश्न १८२. साधु का दण्डक कौन सा?

उत्तरह्नएकह्नइक्कीसवां (सन्नी पंचेन्द्रिय का)।

प्रश्न १८३. साधु में दृष्टि कितनी?

उत्तरह्नएकह्नसम्यक्दृष्टि।

प्रश्न १८४. साधु में लेश्या कितनी?

उत्तरह्नछह।

प्रश्न १८५. साधु में चार ध्यान में से कितने ध्यान?

उत्तरह्नकेवली में एकह्नशुक्लध्यान साधु मेंह्न(रौद्रध्यान को छोड़कर) तीन ध्यान।

प्रश्न १८६. छह द्रव्यों में से साधु किस द्रव्य में समाहित होते हैं?

उत्तरह्नजीवास्तिकाय में।

प्रश्न १८७. साधु किस राशि में आते हैं?

उत्तरह्नजीव राशि में।

प्रश्न १८८. साधु में अणुव्रत कितने?

उत्तरह्नएक भी नहीं।

प्रश्न १८९. साधु में महाव्रत कितने होते हैं?

उत्तरह्नपांच।

प्रश्न १९०. पांच चारित्र में से साधु में कौन-कौन से चारित्र होते हैं?

उत्तरह्नपांचों ही।

प्रश्न १९१. साधु की गति कौन सी? ऋजु या वक्र?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न १९२. साधु का मरण कौन सा?

उत्तरह्नपण्डितमरण।

प्रश्न १९३. गर्भज, उपपात और सम्मूर्च्छिम इन तीन प्रकार के जन्म में से साधु का कौन सा जन्म?

उत्तरह्नगर्भज।

प्रश्न १९४. ओज, रोम और कवल इनमें से साधु कितने प्रकार का आहार ग्रहण करता है?

उत्तरह्नदोह्नरोम और कवल।

प्रश्न १९५. साधु में वीर्य कौन सा?

उत्तरह्नपंडित वीर्य।

प्रश्न १९६. पांच लब्धि में से साधु में कितनी लब्धि?

उत्तरह्नपांचों ही।

प्रश्न १९७. साधु के छहों संस्थान में से कौन सा संस्थान हो सकता है?

उत्तरह्नछहों संस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न १९८. छह प्रकार के संहननों में से साधु कितने प्रकार के संहनन वाले होते हैं?

उत्तरह्नअढ़ाई द्वीप की अपेक्षा छहों प्रकार के संहनन वाले मनुष्य साधु बन सकते हैं।

प्रश्न १९९. साधु व्यवहार राशि के जीव है या अव्यवहारराशि के?

उत्तरह्नव्यवहार-राशि के।

प्रश्न २००. क्या साधु समुद्घात करते हैं?

उत्तरह्नहां, कर सकते हैं।

प्रश्न २०१. सात प्रकार के समुद्घात में से साधु कौन-कौन से समुद्घात करते हैं?

उत्तरह्नसामान्य साधु समुद्घात नहीं कर सकते। आहारक लब्धि सम्पन्न चौदह पूर्वधर-आहारक समुद्घात और केवली, केवली समुद्घात कर सकते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २०२. केवली समुद्घात के समय केवली का जीव आहारक होता है या अनाहारक?

उत्तरह्नकेवली समुद्घात के ३,४ व ५वें समय में स्थित केवली अनाहारक होता है और शेष समय में आहारक।

प्रश्न २०३. अपहरण किसका नहीं होता?

उत्तरह्न१. साध्वी २. केवलज्ञानी ३. परिहारविशुद्धि संयमी ५. पुलाकलब्धि सम्पन्न ५. अप्रमत्तसंयत ६. चौदहपूर्वी और ७. आहारक शरीरी इनका अपहरण नहीं होता।

प्रश्न २०४. जैन धर्म के अनुसार साधक कितनी स्थितियों में अकेला रह सकता है?

उत्तरह्नतीन प्रकार की स्थितियों मेंह्न

१. एकलविहार प्रतिमा स्वीकार करने पर।

२. जिनकल्पी साधना स्वीकार करने पर।

३. मासिक आदि भिक्षु पडिमाएं स्वीकार करने पर।

प्रश्न २०५. जिनकल्पी किसे कहते हैं?

उत्तरह्नसाधना विशेष को लक्ष्य बनाकर गण से निकले हुये साधु विशेष का आचार जिनकल्प है। उसका आचरण करने वाले जिनकल्पी कहलाते हैं।

प्रश्न २०६. जिनकल्पी साधना स्वीकार करने की कसौटियां क्या हैं?

उत्तरह्नजिनकल्पी साधना स्वीकर्ता की पांच कसौटियां हैंह्न

१. तपह्नउपवास से लेकर छह महिने का तप करते हुये पीड़ित न बने तो ही यह साधना स्वीकार की जा सकती है।

२. सूत्रह्ननौ पूर्व का ऐसा अभ्यास होना चाहिये कि पश्चानुपूर्वी से भी उनका परावर्तन कर सके।

३. सत्त्वह्नमानसिक स्थिरता। भय जनक, शून्य धर, श्मशान आदि में कायोत्सर्ग करना। उपसर्ग, परिषह आने पर विचलित न होने वाला जिनकल्पी बन सकता है।

४. एकत्वह्नएकाकी विचरण में निर्भीकता।

५. बलह्नशरीर बल और धृति बल जिनका मजबूत हो, वही जिनकल्पी बन सकता है।

प्रश्न २०७. जिनकल्पी साधना कौन स्वीकार कर सकते हैं?

उत्तरह्नआचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर और गणावच्छेदक प्रायः ये पांच ही यह साधना स्वीकार करते हैं।

प्रश्न २०८. जिनकल्पिक साधना कब स्वीकार की जाती है?

उत्तरह्नतीर्थंकर के शासन काल में इस साधना को स्वीकार किया जाता है। तीर्थ की स्थापना से पूर्व या विच्छेद होने के बाद नहीं।

प्रश्न २०९. जिनकल्पी को कितना ज्ञान होना आवश्यक है?

उत्तरह्नजघन्यतः नौवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु तक का और उत्कृष्टतः दस पूर्व का।

प्रश्न २१०. जिनकल्पी कालचक्र के कौन-कौन से आरे में होते हैं?

उत्तरह्नअवसर्पिणी में जन्मतः तीसरे और चौथे आरे में और व्रत की अपेक्षा तीसरे, चौथे व पांचवें आरे में।

उत्सर्पिणी में जन्मतः दूसरे, तीसरे व चौथे आरे में और व्रत की अपेक्षा तीसरे व चौथे आरे में।

प्रश्न २११. जिनकल्पी कौन सी श्रेणी का आरोहण नहीं करते?

उत्तरह्नक्षपक श्रेणी का।

प्रश्न २१२. कौन से संहनन वाला मुनि जिनकल्पी बन सकता है?

उत्तरह्नवज्रऋषभनाराच वाला।

प्रश्न २१३. यथालंदिक साधना का क्या कालमान है?

उत्तरह्नलन्द अर्थात् काल। उसके तीन भेद हैंह्न

१. जघन्यह्नगीले हाथ, जितने समय में सूख जाये वह समयावधि जघन्य लंद है।

२. उत्कृष्टह्नपूर्व करोड़ वर्ष।

३. मध्यमह्नजघन्य और उत्कृष्ट के बीच का कालह्नवर्ष मास आदि।

प्रश्न २१४. साधु उपशम या क्षपक दोनों में से कौन सी श्रेणी का आरोहण कर सकता है?

उत्तरह्नदोनों श्रेणी का साधु आरोहण कर सकता है।

● संसार में रहते हुये एक जीव उपशम श्रेणी ४ बार कर सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- संसार में रहते हुये एक जीव क्षपक श्रेणी एक बार कर सकता है।
- एक जीव एक भव में उपशम श्रेणी दो बार कर सकता है।
- एक जीव भव में क्षपक श्रेणी १ बार कर सकता है।

प्रश्न २१५. क्या दीक्षा लिये बिना मोक्ष की प्राप्ति हो सकती हैं?

उत्तरह्नहां, बाहर से वेश परिवर्तन करना जरूरी नहीं है। भावों में चारित्र आना जरूरी है। जैसेह्नमरूदेवी माता।

प्रश्न २१६. क्या साधु-साध्वी चातुर्मास में ग्रामानुग्राम विहार कर सकते हैं?

उत्तरह्नहां, साधु-साध्वी निम्नोक्त पांच कारणों से चातुर्मास में ग्रामानुग्राम विहार कर सकते हैंह्न

१. ज्ञान के लिए
२. दर्शन के लिए
३. चारित्र के लिए
४. आचार्य या उपाध्याय की मृत्यु के अवसर पर
५. वर्षा क्षेत्र से बारह रहे हुये आचार्य या उपाध्याय की वैयावृत्त्य करने के लिये।

प्रश्न २१७. साधु गण को धारण करने में कब समर्थ होता है?

उत्तरह्नजो साधु निम्नोक्त छह गुणों से सम्पन्न होता है, वही गण को धारण करने में समर्थ होता हैंह्न

१. श्रद्धाशील
२. सत्यवादी
३. मेधावी
४. बहुश्रुत
५. शक्तिशाली
६. कलहरहित।

प्रश्न २१८. चातुर्मास के अतिरिक्त (शेष काल में) बिना कारण एक गांव में साधु-साध्वी अधिक से अधिक कितने समय तक रह सकते हैं?

उत्तरह्नसाधु एक मास और साध्वियां दो मास।

प्रश्न २१९. साधु का साधुपन कितने कारणों से जाता है?

उत्तरह्नतीन कारणों सेह्न

१. पांच महाव्रतों में से किसी एक महाव्रत में मोटा दोष सेवन करे तो।
२. तीर्थंकर की वाणी में शंका करे तो।
३. तीर्थंकरों की वाणी के विरुद्ध प्ररूपणा करे तो।

प्रश्न २२०. साधु की निश्रा कितनी व कौन सी?

उत्तरह्नसाधु की निश्रा है पांचह्न

१. श्रावक
२. राजा
३. संघ
४. शरीर
५. छह काय के पुद्गल।

प्रश्न २२१. क्या साधु चातुर्मास में विहार कर सकते है?

उत्तरह्नहां, विशेष परिस्थिति में कर सकते हैंह्नजैसे राजाज्ञा, दैविक उपद्रव, प्लेग आदि रोग, आचार्य, उपाध्याय का संथारा, ग्लान-सेवा आदि दस कारण बतायो गये है।

प्रश्न २२२. संयम किसे कहते है? साधु के संयम कितने प्रकार का होता है?

उत्तरह्नआत्म-शुद्धि के आचरण में लगना संयम है। वह सत्रह प्रकार का होता हैंह्न

१. पृथ्वीकाय का संयम
२. अप्काय का संयम
३. तेजसकाय का संयम
४. वायुकाय का संयम
५. वनस्पतिकाय का संयम
६. बेइन्द्रिय का संयम
७. त्रीन्द्रिय का संयम
८. चतुरिन्द्रिय का संयम
९. पंचेन्द्रिय का संयम
१०. अजीवकाय का संयम
११. प्रेक्षा
१२. उपेक्षा
१३. परिष्ठापन
१४. प्रमार्जन
१५. मनः संयम
१६. वचन संयम
१७. काय संयम।

प्रश्न २२३. ऐसा कौन सा क्षेत्र है? जहां सर्वकाल, सर्वसमय में साधु-साध्वियों का विचरण होता है?

उत्तरह्नमहाविदेह।

प्रश्न २२४. कौन साधु आलोचना करने के योग्य होता है?

उत्तरह्नजो साधु निम्नलिखित दस स्थानों से सम्पन्न होता है वही अपने दोषों की आलोचना करने योग्य होता हैह्न

१. जाति सम्पन्न
२. कुल सम्पन्न
३. विनय सम्पन्न
४. ज्ञान सम्पन्न
५. दर्शन सम्पन्न
६. चारित्र सम्पन्न
७. क्षांत
८. दांत
९. अमायावी
१०. अपश्चातापी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २२५. आलोचना देने का अधिकारी कौन होता है?

उत्तरह्नजो साधु अथवा आचार्य निम्नलिखित दस विशेषताओं से सम्पन्न होता है वह आलोचना देने योग्य होता हैह्न

१. आचारवान्
२. आधारवान्
३. व्यवहारवान्
४. अपव्रीडक
५. प्रकारी
६. अपरिशावी
७. निर्यापक
८. अपायदर्शी
९. प्रियधर्मा
१०. दृढ़धर्मा।

प्रश्न २२६. प्रायश्चित्त कितने प्रकार का होता है?

उत्तरह्नदस प्रकार काह्न

१. आलोचना योग्यह्नगुरु के समक्ष अपने दोषों का निवेदन।
२. प्रतिक्रमण योग्यह्न'मिथ्या में दुष्कृतं'ह्नमेरा दुष्कृत निष्फल हो इसका भावना पूर्वक उच्चारण।
३. तदुभय योग्यह्नआलोचना और प्रतिक्रमण।
४. विवेक योग्यह्नअशुद्ध आहारादि का उत्सर्ग।
५. व्युत्सर्ग योग्यह्नकायोत्सर्ग।
६. तप योग्यह्नअनशन ऊनोदरी आदि।
७. छेदयोग्यह्नदीक्षा पर्याय का छेदन।
८. मूल योग्यह्नपुनर्दीक्षा।
९. अनवस्थाप्य योग्यह्नतपस्यापूर्वक पुनर्दीक्षा।
१०. पारांचित योग्यह्नभर्त्सना एवं अवहेलनापूर्वक पुनर्दीक्षा।

प्रश्न २२७. साधु प्रायश्चित्त क्यों ग्रहण करता है?

उत्तरह्न१. प्रमादजनित दोषों का निराकरण करने के लिये।
२. भावों की प्रसन्नता के लिये।
३. शल्य रहित होने के लिये।
४. अव्यवस्था का निवारण करने के लिये।
५. मर्यादा का पालन करने के लिये।
६. संयम की दृढ़ता के लिये।
७. आराधना के लिये।

प्रश्न २२८. एक सिंघाड़े में कम से कम कितने साधु-साध्वी होना आवश्यक है?

उत्तरह्नसाधु कम से कम दो और साध्वियां कम से कम तीन।

प्रश्न २२९. साधु के सामायिक कितने समय की होती है?

उत्तरह्नजीवन भर की।

प्रश्न २३०. रत्नाधिक किसे कहते हैं?

उत्तरह्नजो मुनि दीक्षा पर्याय में बड़े होते हैं उन्हें रत्नाधिक कहा जाता है।?

प्रश्न २३१. क्या जैन साधु रात्रि में खुले आकाश में सो सकते है अथवा घूम-फिर सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं। क्योंकि सूक्ष्म अप्काय के जीवों की हिंसा होने की संभावना रहती है, या होती है।

प्रश्न २३२. साधु सामायिक में आहार कर सकते हैं क्या? यदि हां तो क्यों?

उत्तरह्नहां, साधु सामायिक में आहार कर सकते हैं। क्योंकि उनके जीवन भर के लिए सर्व सावद्य योग के त्याग होते हैं।

प्रश्न २३३. क्या अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीप के मनुष्यों में चारित्र होता है?

उत्तरह्ननहीं। यहां के मनुष्य साधु या श्रावक नहीं होते। वे न ज्यादा पाप करते हैं और न ही ज्यादा धर्म करते हैं।

प्रश्न २३४. जैन मुनि किस घर से भिक्षा ले सकते हैं?

उत्तरह्नसाधु के लिये जैन-अजैन का कोई प्रश्न नहीं है। जहां भी निर्दोष आहार उपलब्ध हो सके वहीं से साधु ले सकते है। शास्त्र में बारह कुल की गोचरी कही हैह्न

१. उग्र कुल
२. भोग कुल
३. राजन्य कुल
४. क्षत्रिय कुल
५. इक्ष्वाकुकुल
६. हरिवंशकुल
७. ग्वालादिक कुल
८. वैश्य (वणिक्) कुल
९. नापित कुल
१०. ग्रामरक्षक कुल
११. सुथार कुल
१२. तंतुवाय कुल।

प्रश्न २३५. पादोपगमन कौन स्वीकार करता है?

उत्तरह्नवज्रऋषभनाराच संहनन वाला, तीर्थंकर या विशिष्ट मुनि ही स्वीकार करते हैं।

प्रश्न २३६. तीन लोक में साधु-साध्वी कितने लोक में रहते हैं?

उत्तरह्नमध्यलोक और अधोलोक में।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २३७. साधुओं की कितनी मण्डलियां होती हैं?

उत्तरह्नमण्डलीह्नअर्थात् क्रिया-कलाप के लिये एकत्रित समूह को मण्डली कहते हैं। मण्डली सात हैंह्न

१. सूत्र मण्डली
२. अर्थ मण्डली
३. भोजन मण्डली
४. काल मण्डली
५. आवश्यक मण्डली
६. स्वाध्याय मण्डली
७. संथारा मण्डली।

प्रश्न २३८. साध्वाचार के छह पलिमंथु कौन-कौन से हैं?

उत्तरह्न १. कौकुंचितह्नचपलता करने वालाह्नसंयम का पलिमंथु है।
२. मौखरिकह्नवाचलता-सत्यवचन का पलिमंथु।
३. चक्षुलोलुपह्नदृष्टि आसक्तह्नईर्यासमिति का पलिमंथु।
४. तिंतिणकह्नचिड़चिड़े स्वभाववालाह्नएषणासमिति का पलिमंथु।
५. इच्छालौभिकह्नअतिलोभीह्नमुक्तिमार्ग का पलिमंथु।
६. भिध्यनिदानकरणह्नआसक्त भाव से किया जाने वाला पौद्गलिक सुखों का संकल्प मोक्षमार्ग का पलिमंथु है।

प्रश्न २३९. साधु किस प्रकार के उपसर्गों को सहता हुआ संसार में नहीं रहता?

उत्तरह्नजो साधु देव, तिर्यंच और मनुष्य संबंधी उपसर्गों को समता पूर्वक सहता है, वह संसार में नहीं रहता।

प्रश्न २४०. साधु कितने कारणों से अनादि-अनन्त संसार समुद्र से पार हो सकता है?

उत्तरह्नतीन कारणों सेह्न
१. अनिदानताह्नजो साधु भोग प्राप्ति के लिये संकल्प नहीं करता।
२. दृष्टि सम्पन्नताह्नसम्यक् दृष्टि युक्त साधु होने से।
३. योगवाहिताह्नसमाधिस्थ रहने वाला।

प्रश्न २४१. क्या साधु-साध्वी को होता-होता विशिष्ट ज्ञान रूक जाता है?

उत्तरह्नहां। उत्तराध्ययन सूत्र में इसके चार कारण बताये हैंह्न
१. जो साधु बार-बार स्त्री-भक्त-देश-राजकथा करते हैं।
२. जो साधु विवेक और व्युत्सर्ग के द्वारा आत्मा को सम्यक् प्रकार से भावित नहीं करते।
३. जो रात्रि के प्रथम व अंतिम भाग में धम्म जागरण नहीं करते।

४. जो वाञ्छनीय, एषणीय और उञ्छ सामुदानिक शिक्षा की सम्यक् प्रकार से गवेषणा नहीं करते।

इस प्रकार के साधु को आता-आता विशिष्ट ज्ञान रूक जाता है। जो ऐसा नहीं करते उन्हें विशिष्ट ज्ञान-दर्शन की प्राप्ति होती है।

प्रश्न २४२. कौन सी गति आया हुआ जीव साधु बन सकता है?

उत्तरह्नचारों गति से।

प्रश्न २४३. साधु देवलोक होकर कौन सी गति में जा सकते हैं?

उत्तरह्नचारों गति में।

प्रश्न २४४. कितनी नरक तक का जीव साधु बन सकता हैं?

उत्तरह्नप्रथम पांच नरक से आया हुआ जीव साधु बन सकता है।

प्रश्न २४५. विराधक साधु कहां तक जाते हैं?

उत्तरह्नभवनपति तक।

प्रश्न २४६. मिथ्यादृष्टि, अभव्य श्रमण जघन्य व उत्कृष्ट कितने देव लोक में जाते हैं?

उत्तरह्नजघन्य-भवनपति और उत्कृष्टतः नौ ग्रैवेयक।

प्रश्न २४७. कौन से निर्ग्रन्थ का किस गति में गमन होता है?

उत्तरह्न१. चौदहपूर्वधारी २. आहारक लब्धिधारी ३. उपशान्तमोही ४. अवधिज्ञानी ५. मनःपर्यवज्ञानी। इन पांच प्रकार के निर्ग्रन्थों का चारों गति में गमन होता है।

प्रश्न २४८. छद्मस्थ मुनि की उत्कृष्टतः गति कहां की हो सकती है?

उत्तरह्नसर्वार्थ सिद्ध विमान।

प्रश्न २४९. चौदह पूर्वधरों की गति जघन्यतः व उत्कृष्टतः कहां की है?

उत्तरह्नजघन्यतः लान्तकदेव और उत्कृष्टतः सर्वार्थसिद्धविमान। कर्मक्षय होने पर मोक्ष भी जाते हैं।

प्रश्न २५०. केवली के पांच अनुत्तर कौन से हैं?

उत्तरह्न१. अनुत्तर ज्ञान २. अनुत्तर दर्शन ३. अनुत्तर चारित्र ४. अनुत्तर तप ५. अनुत्तर वीर्य।

प्रश्न २५१. २३ पदवी में से केवली और साधु की पदवी सावद्य है या निरवद्य?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तरनिरवद्य।

प्रश्न २५२. केवली पदवी किस कर्म के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम से निष्पन्न होती है?

उत्तरकेवली पदवी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तरायइन तीन कर्मों के क्षय से निष्पन्न है।

प्रश्न २५३. केवल की पदवी कौन सा भाव? कौन सी आत्मा?

उत्तरकेवली पदवीभाव २ क्षायिक, पारिणामिक। आत्माउपयोग।

प्रश्न २५४. केवली पदवीछह में कौन?, नव में कौन?

उत्तरकेवली पदवीछह में जीव, नव मेंजीव, निर्जरा।

प्रश्न २५५. साधु पदवी किस कर्म के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम से निष्पन्न होती है?

उत्तरसाधु पदवीचारित्र मोहनीय कर्म के उपशम, क्षय, क्षयोपशम से निष्पन्न होते हैं।

प्रश्न २५६. साधु पदवीछह में कौन?, नव में कौन?

उत्तरसाधु पदवीछह में जीव, नव मेंजीव, संवर।

प्रश्न २५७. केवली और साधु पदवी शाश्वत है या अशाश्वत?

उत्तरएक जीव की अपेक्षा सभी अशाश्वत है। अनेक जीवों की अपेक्षा शाश्वत हैं।

प्रश्न २५८. चौबीस दण्डकों में से कितने दण्डकों से आया हुआ जीव केवली बन सकता हैं?

उत्तरउन्नीस दण्डकों से (तेजस, वायु, तीन विकलेन्द्रिय को छोड़कर)।

प्रश्न २५९. पांच आश्रव में से साधु के कितने आश्रव हैं?

उत्तरछठे गुणस्थानवर्ती साधु केतीन आश्रवप्रमाद, कषाय और योग। सातवें से दसवें गुणस्थानवर्ती साधु के दो कषाय और योग। ११वें से १३वें गुणस्थानवर्ती साधु एक आश्रवयोगाश्रव। १४वें गुणस्थान मेंआश्रव नहीं।

प्रश्न २६०. पांच संवर में से साधु में कितने संवर पाते हैं?

उत्तरछठे गुणस्थानवर्ती साधु के दोसम्यक्त्व और व्रत संवर। सातवें से

दसवें गुणस्थानवर्ती साधु के तीन संवरसम्यक्त्व, व्रत और अप्रमाद। ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थानवर्ती साधु के चार संवरअयोग को छोड़कर चौदहवें गुणस्थान में पांचों संवर पाते हैं।

प्रश्न २६१. बारह प्रकार की निर्जरा में से साधु के कितने प्रकार की निर्जरा होती है?

उत्तर१२ प्रकार की।

प्रश्न २६२. क्या साधु पुण्य का बंध और उसका उपभोग करता है?

उत्तरहां।

प्रश्न २६३. क्या साधु के पाप का बंध होता है?

उत्तरहां। जब तक मोहनीय कर्म का क्षय नहीं होता, तब तक पाप-कर्म का बंध होता रहता है।

प्रश्न २६४. साधु कितने प्रकार की स्वाध्याय करता है?

उत्तरपांच प्रकार कीं१. वाचना २. पृच्छना ३. परिवर्तना ४. अनुप्रेक्षा ५. धर्मकथा।

प्रश्न २६५. साधु भवी होते हैं या अभवी?

उत्तरभवी।

प्रश्न २६६. साधु में भाव कितने हैं?

उत्तरपांचऔदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक व पारिणामिक।

प्रश्न २६७. उदय के तेतीस बोलों में से साधु में कितने? और कौन से?

उत्तर१७। गतिएक मनुष्य, काय एकत्रस, लेश्या६, कषाय४, वेद-१, आहारता, संयोगिता, संसारता और छद्मस्थता।

प्रश्न २६८. साधु में औपशमिक के कितने बोल पाते हैं?

उत्तरदोऔपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र।

प्रश्न २६९. क्षायिक भाव के आठ बोलों में से साधु में कितने?

उत्तरकेवलज्ञानी में चारकेवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिक चारित्र और निरन्तराय। शेष साधुओं में इन आठ बोलों में से एक भी नहीं पाता। यहां साधु में जो क्षायक भाव लिया गया है वह क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा लिया गया है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न २७०. साधु में क्षयोपशम के कितने बोल पाते हैं?

उत्तरह्नसाधु में क्षयोपशम के ३२ बोलों में से २४ बोल पाते हैं। ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम केह्न५ (तीन अज्ञान को छोड़कर)। दर्शनावरणीय के क्षयोपशम केह्न८ (५ इन्द्रिय और तीन दर्शन)। मोहनीय के क्षयोपशम केह्न५ (चार चारित्र और सम्यक्दृष्टि)। अन्तराय के क्षयोपशम केह्न६ (बाल वीर्य और बाल-पण्डित वीर्य को छोड़कर)।

प्रश्न २७१. साधु में जीवाश्रित पारिणामिक के कितने भेद पाते हैं?

उत्तरह्नदस।

प्रश्न २७२. साधु बनने वाला जीव आर्य क्षेत्र का होता है या अनार्य क्षेत्र का?

उत्तरह्नआर्य क्षेत्र का।

प्रश्न २७३. जीव के ५६३ भेदों में से साधु में कितने? अथवा साधु की गति-आगति क्या है?

उत्तरह्नसाधु की आगतिह्न१०१ सम्मूर्च्छिम मनुष्य के पर्याप्ता + १५ कर्मभूमि मनुष्य के पर्याप्ता और अपर्याप्ता ३० + ४० तिर्यंच के (तेजस् और वायु के ८ भेद छोड़कर) + ९९ जाति के देव के पर्याप्ता + प्रथम पांच नरक के पर्याप्ता ५ = २७५ में से भावी साधु का जीव आता है।

प्रश्न २७४. क्या कर्मभूमि के सभी गर्भज मनुष्य साधु बन सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २७५. साधु पद का अन्तर विरह पड़ता है या नहीं?

उत्तरह्नमहाविदेह क्षेत्र में नहीं पड़ता। भरत और ऐरावत क्षेत्र में पड़ता है।

प्रश्न २७६. भरत और ऐरावत क्षेत्र में साधु का विरह पड़े तो कितने समय का पड़ता है?

उत्तरह्नकम से कम ६३ हजार वर्ष का और अधिक से अधिक कुछ कम अठारह क्रोड़ाकोड़ी सागरोपम का।

प्रश्न २७७. क्षपक श्रेणी का अधिकारी कौन?

उत्तरह्न
- आठ वर्ष से अधिक आयु वाला।
- वज्रऋषभनाराच संघयणी।
- शुद्धध्यानी।
- ४-५-६ या ७ गुणस्थानवर्ती।

प्रश्न २७८. साधु कैसा हो?

उत्तरह्नआचार कुशल, संयम कुशल, प्रवचन कुशल, प्रज्ञप्ति कुशल, संग्रह कुशल, उपग्रह कुशल, अक्षताचार सम्पन्न, अशबलाचार सम्पन्न, असंक्लिष्टाचार सम्पन्न होना चाहिए।

प्रश्न २७९. क्या साधु-साध्वी एक-दूसरे से आपस में आलोचना ले सकते हैं?

उत्तरह्ननहीं।

प्रश्न २८०. चौदहपूर्वी मुनि परोक्षज्ञानी है या प्रत्यक्षज्ञानी?

उत्तरह्नपरोक्षज्ञानी।

प्रश्न २८१. सर्वाक्षर सन्निपाती किसे कहते है?

उत्तरह्नजिसका श्रुतज्ञान, प्रकृष्ट हो जाता है, वह अक्षरों के सब सन्निपातों को जानने लगता है इस प्रकार का ज्ञानी सर्वाक्षर सन्निपाती कहलाता है।

प्रश्न २८२. सर्वाक्षर सन्निपाती कौन होता है?

उत्तरह्नचतुर्दश पूर्वधारी।

प्रश्न २८३. 'णमो लोए सव्वसाहूणं' में कितने पद समाहित होते हैं?

उत्तरह्नसात पदह्न

१. आचार्यह्नअर्थ की वाचना देने वाला।
२. उपाध्याय-सूत्र पाठ की वाचना देने वाला।
३. प्रवर्त्तकह्नवैयावृत्त्य तपस्या आदि में साधुओं की नियुक्ति करनेवाला।
४. स्थविरह्नसंयम से अस्थिर होने वालों को पुनः स्थिर करनेवाला।
५. गणीह्नगणनायक।
६. गणधरह्नसाध्वियों के विहार आदि की व्यवस्था वाला।
७. गणावच्छेदकह्नप्रचार, उपधि-लाभ आदि कारणों से, गण से अन्यत्र विहार करने वाला।

प्रश्न २८४. साधु प्रतिक्रमण करते हैं या नहीं?

उत्तरह्नसाधु प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रश्न २८५. साधु के प्रतिक्रमण कितने प्रकार का होता है?

उत्तरह्नछह प्रकार काह्न

१. उच्चार प्रतिक्रमणह्नमलत्याग करने के बाद वापस आकर ईर्यापथिकी सूत्र के द्वारा प्रतिक्रमण करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२. प्रस्रवण प्रतिक्रमणह्नमूत्र त्याग करने के बाद पुनः आकर ईर्यापथिकी सूत्र के द्वारा प्रतिक्रमण करना।

३. इत्वरिक प्रतिक्रमणह्नदैवसिक, रात्रिक आदि प्रतिक्रमण करना।

४. यावत्कथिक प्रतिक्रमणह्नहिंसा आदि से सर्वथा निवृत्त होना अथवा आजीवन अनशन करना।

५. यत्किञ्चित मिथ्यादुष्कतं प्रतिक्रमणह्नसाधारण अयतना होने पर उसकी विशुद्धि के लिये 'मिच्छामि दुक्कडं' करना।

६. स्वप्नान्तिक प्रतिक्रमणह्नसोकर उठने के बाद ईर्यापथिकी सूत्र के द्वारा प्रतिक्रमण करना।

प्रश्न २८६. साधु किसके लिये जागरूक रहे, किंचिज्त भी प्रमाद न करे?

उत्तरह्नठाणं सूत्र के अनुसार साधु निम्नालिखित आठ स्थानों में प्रति सदा सदा जागरूक रहेह्न

१. अश्रुत धर्म को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए।

२. सुने हुये धर्मों के मानसिक ग्रहण व उनकी स्थिर स्मृति के लिए।

३. संयम के द्वारा नये कर्मों का निरोध करने के लिए।

४. तपस्या के द्वारा पुराने कर्मों का विशोधन करने के लिए।

५. शिष्यों को आश्रय देने के लिए।

६. शैक्ष को आचार-गोचर का सम्यक् बोध कराने के लिए।

७. ग्लान की अग्लान भाव से वैयावृत्त्य करने के लिए।

८. कलह को उपशान्त करने के लिए।

प्रश्न २८७. चतुर्दशपूर्वी की क्या विशेषताएं हैं?

उत्तरह्नचतुर्दशपूर्वी जिन नहीं होते हुए भी जिन सदृश होते हैं। सब अक्षरों के संयोगों के ज्ञाता तथा श्रव्य अक्षरों के वक्ता और जिन भगवान समान अवितथ व्याकरण करने वाले होते हैं।

प्रश्न २८८. साधु इस भव में (वर्तमान भव में) सिद्ध हो सकते हैं?

उत्तरह्नमहाविदेह क्षेत्र से हो सकते हैं, भरत और ऐरावत क्षेत्र से सिद्ध नहीं हो सकते।

प्रश्न २८९. साधु पद शाश्वत है या अशाश्वत?

उत्तरह्नमहाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा शाश्वत है और भरत व ऐरावत की अपेक्षा साधु पद अशाश्वत हैं।

प्रश्न २९०. साधु रूपी है या अरूपी?

उत्तरह्नदोनोंह्नउनका शरीर रूपी है लेकिन उनके गुण अरूपी है।

प्रश्न २९१. साधु को स्वप्न आते है या नहीं?

उत्तरह्नआते हैं।

प्रश्न २९२. अढ़ाई द्वीप से बाहर वाले जीव साधु बन सकते हैं या नहीं?

उत्तरह्ननहीं। वहां मनुष्यों की बस्ती नहीं है। तिर्यंच है लेकिन वे साधु नहीं बन सकते।

प्रश्न २९३. साधु लोक के कौन से भाग में रहते हैं?

उत्तरह्नमात्र पैंतालीस लाख योजन में (अढ़ाई द्वीप) अर्थात् लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं।

प्रश्न २९४. साधु सौपक्रमी होते हैं या निरूपक्रमी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न २९५. साधु का मरण सकाम या अकाम?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न २९६. साधु साधक है या साध्य?

उत्तरह्नसाधक।

प्रश्न २९७. साधु धर्म देव है या देवाधिदेव?

उत्तरह्नधर्मदेव।

प्रश्न २९८. साधु छद्मस्थ है या वीतरागी?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न २९९. साधु सादि सान्त है या सादि अनन्त?

उत्तरह्नसादि-सान्त।

प्रश्न ३००. साधु कौन सी क्रिया वाले होते हैं ईर्यापथिक या साम्परायिक?

उत्तरह्नदोनों।

प्रश्न ३०१. साधु चौदह प्रकार के दान में से कितने प्रकार का दान ग्रहण करते हैं?

उत्तरह्नचौदह प्रकार का।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३०२. साधु जंगम तीर्थ है या स्थावर?

उत्तरह्नजंगम।

प्रश्न ३०३. णमो लोए सव्वसाहूणं में 'सव्वसाहूणं' अर्थात् सर्व साधु से क्या तात्पर्य है?

उत्तरह्नसर्व साधु शब्द से सामायिक आदि विशेषणों से युक्त, प्रमत्त, पुलाक आदि अथवा जिनकल्पिक, प्रतिमाधारी, परिहारविशुद्धि चारित्री, स्थविरकल्पी, स्थितकल्पी, कल्पातीत, प्रत्येकबुद्ध, स्वयंबुद्ध, बुद्धबोधित, भरत क्षेत्रादि क्षेत्रों में तथा सुषम-सुषमादि कालों में होने वाले सभी प्रकार के साधु समझना चाहिये।

प्रश्न ३०४. नमस्कार महामंत्र के प्रथम चार पद में 'लोए' शब्द का प्रयोग न होकर केवल पांचवें पद में ही लोए शब्द का प्रयोग क्यों हुआ?

उत्तरह्नसमाधान के रूप में कहा जा सकता है कि साधु अढ़ाई द्वीप रूप मनुष्य लोक में ही होते हैं, पर जो मुनि देवशक्ति, केवली समुद्घात, लब्धि विशेष के द्वारा मनुष्य लोक के बाहर कहीं भी हैं, वे भी वंदनीय तथा अर्चनीय हैं। जैसेह्न

१. मध्यलोक में साधु का विचरण है ही। अधोलोक में सलिलावती विजय, जो महाविदेह क्षेत्र का एक भाग हैह्नवहां साधु सदा काल होते हैं, यह बताने के लिये 'लोए' शब्द का प्रयोग हुआ है।

२. कोई देव साधु का अपहरण कर पंडकवन आदि ऊर्ध्वलोक में रख आते हैं इस अपेक्षा से 'लोए' शब्द का प्रयोग हुआ है।

३. केवली समुद्घात करते हैं तब उनके आत्म प्रदेश १४ रज्जू लोक में फैल जाते हैं, अतः 'लोए' शब्द का प्रयोग हुआ है।

लोए शब्द में तीनों लोक का समावेश है। लोए में सम्पूर्ण लोक के साधुओं का समावेश हो गया।

प्रश्न ३०५. क्या जैन दीक्षा में कोई जाति संबंधी नियम है?

उत्तरह्ननहीं। जिसके भी वैराग्य हो, वही दीक्षा ले सकता है। जैसेह्नचौबीस तीर्थंकर, नव बलदेव, दस चक्रवर्ती एवं अनेक राजाह्नमहाराजा दीक्षित हुएह्नये सभी क्षत्रिय थे। गौतमादि ग्यारह गणधर ब्राह्मण थे। जम्बू स्वामी वैश्य (वणिक्) एवं हरिकेशी मुनि शूद्र-चाण्डाल थे।

प्रश्न ३०६. साधुओं का सुख कैसा होता है?

उत्तरह्नसंयम में रमण करने वाले साधुओं के सुख देवलोक के सुखों के समान है। भगवती १४।९ में कहा हैह्न

समय	सुख
एक मास का दीक्षित साधुह्न	व्यंतर देवों के सुखों का अतिक्रमण करता है।
दो मास का दीक्षित साधुह्न	असुरेन्द्रवर्णितह्नभवनपति देवों के सुखों का।
तीन मास का दीक्षित साधुह्न	असुरकुमार देवों के सुखों का।
चार मास का दीक्षित साधुह्न	ग्रह, नक्षत्र तारों के सुखों का।
पांच मास का दीक्षित साधुह्न	चन्द्र सूर्य के सुखों का।
छह मास का दीक्षित साधुह्न	प्रथम-द्वितीय स्वर्ग के सुखों का।
सात मास का दीक्षित साधुह्न	तीसरे चौथे स्वर्ग के सुखों का।
आठ मास का दीक्षित साधुह्न	पांचवें-छठे स्वर्ग के सुखों का।
नव मास का दीक्षित साधुह्न	सातवें आठवें स्वर्ग के सुखों का।
दस मास का दीक्षित साधुह्न	ग्यारहवें, बारहवें स्वर्ग के सुखों का।
ग्यारह मास का दीक्षित साधुह्न	ग्रैवेयक (१३ से २१ वे स्वर्ग) के सुखों का।
बारह मास का दीक्षित साधुह्न	अनुत्तर विमानह्न(२२ से २६वें स्वर्ग तक) निवासी देवों के सुखों का व्यतिक्रमण करता है।

प्रश्न ३०७. साधु को दान देना पुण्य का उदय या पाप का?

उत्तरह्नदोनों नहीं। सुपात्र को दान देना चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम भाव है। देने की जो प्रक्रिया है वह शुभ योग निर्जरा है।

प्रश्न ३०८. साधु में पासणिया (गहराई से देखना) कितने होते हैं?

उत्तरह्नसात। चार साकार पासणियाह्नश्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान केवलज्ञान। अनाकार पासणिया तीनह्नचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन व केवलदर्शन।

प्रश्न ३०९. साधु को नमस्कार करना छह में कौन? नौ में कौन?

उत्तरह्नछह में जीव, नौ में तीनह्नजीव, आश्रव, शुभ योग आश्रव, निर्जरा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रश्न ३१०. साधु में कौन सा वीर्य है?

उत्तरह्नपण्डित वीर्य।

प्रश्न ३११. साधुपन द्रव्य जीव है या भाव जीव?

उत्तरह्नभाव जीव।

प्रश्न ३१२. साधुत्व सम्यक् दृष्टि है या मिथ्या दृष्टि?

उत्तरह्नदोनों नहीं।

प्रश्न ३१३. साधुपन लोक है या अलोक?

उत्तरह्नदोनों नहीं।

प्रश्न ३१४. साधु दस प्रत्याख्यान रूप जो तप करते हैं वे मूलगुण है या उत्तरगुण हैं?

उत्तरह्नये सब उत्तरगुण हैं।

प्रश्न ३१५. साधु किसमें शूर होते हैं?

उत्तरह्नतप में।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-१

नमस्कार महामंत्र के विभाग, पद, सम्पदाएं तथा अक्षर-प्रमाण

पद	अध्ययन	पादक्रम	सम्पदाएं	अक्षर प्रमाण	गुरु	लघु
णमो अरहंताणं	१	१	१	७	०	७
णमो सिद्धाणं	१	२	२	५	१	४
णमो आयरियाणं	१	३	३	७	०	७
णमो उवज्झायाणं	१	४	४	७	१	६
णमो लोए सव्वसाहणं	१	५	५	९	१	८
एसो पंच णमोक्कारो	ह्न	६	६	८	१	७
सव्वपावप्पणासणो	ह्न	७	७	८	२	६
मंगलाणं च सव्वेसिं	ह्न	८	८	८	१	७
पढमं हवइ मंगलं	ह्न	९	८	९	०	९

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमस्कार मंत्र के वर्ण और तत्त्व

वर्ण	तत्त्व	वर्ण	तत्त्व
णमो	आकाश	णं	आकाश
अ	वायु	णमो	आकाश
र	अग्नि	उ	पृथ्वी
हं	आकाश	व	जल
ता	वायु	ज्झा	पृथ्वी-जल
णं	आकाश	या	वायु
णमो	आकाश	णं	आकाश
सि	जल	णमो	आकाश
द्धा	पृथ्वी-जल	लो	पृथ्वी
णं	आकाश	ए	वायु
णमो	आकाश	स	जल
आ	वायु	व्व	जल
य	वायु	सा	जल
रि	आकाश	हू	आकाश
या	वायु	णं	आकाश

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर और सामान्य केवली में अन्तर

१. तीर्थंकर के तीर्थंकर नाम कर्म का उदय होता है, सामान्य केवली के नहीं।

२. तीर्थंकर पूर्व जन्म में दो भव से निश्चित सम्यक्दृष्टि होते हैं, केवली के ऐसा नियम नहीं।

३. तीर्थंकर गर्भ में अवधिज्ञानी होते हैं, केवली के लिए नियम नहीं।

४. तीर्थंकर की माता १४ स्वप्न देखती है, केवली की माता के लिए जरूरी नहीं है।

५. तीर्थंकर पुरुष होते हैं, केवली स्त्री, पुरुष और कृतनपुंसक सभी हो सकते हैं।

६. तीर्थंकर स्तनपान नहीं करते, जबकि केवली करते हैं?

७. तीर्थंकर दीक्षा से पूर्व नियमित वर्षीदान देते हैं, केवली दे सकते है, पर ऐसा नियम नहीं है।

८. तीर्थंकर केवलज्ञान की प्राप्ति से पहले प्रवचन नहीं करते, प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। सामान्य केवली छद्मस्थ अवस्था में भी उपदेश देते हैं।

९. तीर्थंकर के पांच कल्याणक होते हैं, केवली के नहीं।

१०. तीर्थंकर को दीक्षा लेते ही मनःपर्यवज्ञान हो जाता है, केवली को नहीं।

११. तीर्थंकर स्वयंबुद्ध होते हैं, केवली के लिए यह नियम नहीं।

१२. तीर्थंकर को दीक्षा के पूर्व लोकान्तिक देव उद्बोधन देते हैं (देवों का जीताचार हैं), सामान्य केवली के लिए देव नहीं आते।

१३. तीर्थंकर चतुर्विध तीर्थ की स्थापना करते हैं, केवली नहीं।

१४. तीर्थंकर का शासन चलता है, सामान्य केवली का नहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१५. तीर्थंकर के मुख्य शिष्य गणधर होते हैं, केवली के शिष्य नहीं।

१६. तीर्थंकर के अष्ट प्रातिहार्य होते हैं, केवली के नहीं।

१७. तीर्थंकर के ३४ अतिशय होते हैं केवली के नहीं।

१८. तीर्थंकर के ३५ वचनातिशय होते हैं, केवली के नहीं।

१९. तीर्थंकर भव में १,२,३,५ और ११वां गुणस्थान स्पर्श नहीं करते, जबकि केवली ११वां छोड़ सभी गुणस्थान का स्पर्श कर सकते हैं।

२०. तीर्थंकर के केवली समुद्घात नहीं होता, जबकि केवली के हो सकता है।

२१. तीर्थंकर का जन्म क्षत्रिय कुल में ही होता है, केवली सभी कुलों से हो सकते हैं।

२२. तीर्थंकर के समचतुरस्र संस्थान ही होता है, केवली के छहः में से कोई भी हो सकता है।

२३. तीर्थंकर का आयुष्य जघन्य ७२ वर्ष उत्कृष्ट ८४ लाख पूर्व का होता है। सामान्य केवली आयुष्य जघन्य ९ वर्ष उत्कृष्ट करोड़ पूर्व का होता है।

२४. तीर्थंकर की अवगाहना जघन्य ७ हाथ उत्कृष्ट ५०० धनुष की होती है। सामान्य केवली की अवगाहना जघन्य २ हाथ उत्कृष्ट ५०० धनुष।

२५. तीर्थंकर मात्र १५ कर्म भूमि में ही होते हैं, केवली संहरण की अपेक्षा सम्पूर्ण अढ़ाई द्वीप में हो सकते हैं।

२६. तीर्थंकर स्वयं ही दीक्षा लेते हैं। केवली स्वयं या गुरु से भी दीक्षा ले सकते हैं।

२७. तीर्थंकर तीसरे-चौथे आरे में ही होते हैं, सामान्य केवली सामान्यतः चौथे आरे में जन्मे हुये पांचवें आरे में भी केवली हो सकते हैं।

२८. दो तीर्थंकर आपस में मिलते नहीं, केवली मिलते हैं।

२९. तीर्थंकर जघन्य २० और उत्कृष्ट १७० होते हैं। केवली जघन्य २ करोड़, उत्कृष्ट ९ करोड़ होते हैं।

३०. तीर्थंकर के अर्थ रूपी उपदेश से गणधर द्वादशांगी की रचना करते हैं, केवली के ऐसा नहीं होता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३१. तीर्थंकर के केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद उपसर्ग आते नहीं, केवली के उपसर्ग आ सकते हैं।

३२. समवसरण की रचना तीर्थंकर के लिए होती है केवली के लिये नहीं।

३३. तीर्थंकर का प्रथम उपदेश खाली नहीं जाता, केवली के लिए ऐसा नियम नहीं है।

३४. नरक या देवगति से आये हुये मनुष्य ही तीर्थंकर बनते हैं, जबकि केवली चारों गति से आकर जन्में हुये बन सकते हैं।

३५. तीर्थंकर के वेदनीय कर्म शुभाशुभ, शेष तीन अघाति कर्म एकान्त शुभ, केवली के आयुष्य कर्म-शुभ, शेष तीन शुभाशुभ होते हैं।

३६. अभवी तीर्थंकर की सभा में नहीं आते हैं, केवली के सभा में आ सकते हैं।

३७. तीर्थंकर एक क्षेत्र में एक ही होते हैं, केवली अनेक हो सकते हैं।

३८. तीर्थंकर देवाधिदेव हैं, सामान्य केवली धर्मदेव है।

३९. तीर्थंकर प्रवचन करते हैं, केवली तीर्थंकर की सभा में श्रोतारूप में उपस्थित रहते हैं।

४०. तीर्थंकर किसी के शासन में नहीं रहते, स्वयं अपना शासन चलाते है। केवली शासन का प्रवर्तन नहीं कर सकते, शासन में चलते है।

४१. तीर्थंकर राजा के समान है, केवली प्रजा के समान।

४२. तीर्थंकर की शिष्य सम्पदा व श्रावक-श्राविकाओं की संख्या का वर्णन मिलता है, केवली के ऐसा वर्णन नहीं मिलता।

४३. तीर्थंकर जब-जब पारणा करते हैं तब तब साढ़े बारह करोड़ सोनैया की बरसात होती है,केवली के लिए यह बात नहीं हैं।

वीतराग वंदना से उधृत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दस आश्चर्य

दस आश्चर्य

१. उपसर्गह्वकेवलज्ञान होने के बाद तीर्थंकरों को उपसर्ग नहीं हुआ करते, किन्तु भगवान महावीर पर गोशालक ने तेजोलेश्या फेंकी, उसके प्रभाव से शरीर में भीषण रक्त विकार हुआ।

२. गर्भहरणह्वतीर्थंकरों के गर्भ का साहरण नहीं होता। किन्तु भावीवश इन्द्र के आदेश से हरिणगमैषी देव ने भगवान महावीर के जीव को देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि से निकालकर त्रिशला महारानी की कुक्षि में स्थापित किया।

३. स्त्रीतीर्थह्वतीर्थंकर सारे पुरुष ही होते हैं। परन्तु, होनहार वश उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लीनाथजी स्त्रीरूप में हुये।

४. अप्रत्यायानी परिषद्ह्वतीर्थंकरों का उपदेश कभी खाली नहीं जाता। उससे कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान अवश्य होता है परन्तु मनुष्यों की उपस्थिति के अभाव में भगवान महावीर की प्रथम देशना खाली गई।

५. कृष्ण का अमरकंकागमनह्ववासुदेव से वासुदेव मिला नहीं करते। लेकिन द्रोपदी को लेकर घातकी खण्डद्वीप की अमरकंकापुरी से लौटते समय श्रीकृष्ण वासुदेव शंख द्वारा वहां के कपिल वासुदेव से मिले।

६. सूर्यचन्द्र का अवतरणह्वदेवता मूल रूप से अपने स्थान को छोड़कर कहीं नहीं जाया करते। उत्तर वैक्रिय करके ही जाते हैं। किन्तु, भगवान महावीर के दर्शन करने के लिए चन्द्र-सूर्य मूलरूप में आये थे।

७. हरिवंश कुलोत्पत्तिह्वयौगलिकों की गति देवलोक ही है, किन्तु पूर्व वैरवश एक देवता ने हरिवंश क्षेत्र के एक यौगलिक को इस भरतक्षेत्र में रखा। और वह मद्य-मांसादिक का सेवन करके नरकगामी हुआ एवं उसके नाम से हरिवंश कुल की उत्पत्तित्त हुई।

८. चमरोत्पातह्वभवनपति देवता प्रथम स्वर्ग में नहीं जाया करते। किन्तु,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

असुरपति चमरेन्द्र ने भगवान महावीर की शरण लेकर सौधर्म स्वर्ग में जाकर वहां भीषण उत्पात बचाया।

९. एक सौ आठ सिद्धह्नउत्कृष्ट अवगाहना वाले एक साथ दो से अधिक सिद्ध नहीं हुआ करते। लेकिन ऋषभदेव भगवान के समय में एक ही साथ एक सौ आठ सिद्ध होने का प्रसंग आ गया था।

१०. असंयती की पूजाह्नसंयती ही पूजनीय और वंदनीय होते हैं। पर नौवें तीर्थंकर सुविधिनाथ के शासन में श्रमण-श्रमणी के अभाव में असंयति की ही पूजा हुई, अतः यह आश्चर्य माना गया है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मोक्ष को अनेक कोणों से जानने के बिन्दु

१. सत्पदपरूपणाद्वमोक्ष चूंकि एक शुद्ध पद है, अत एव उसकी सत्ता अवश्य है। मोक्ष पूर्व में भी था। वर्तमान में भी है और आगामी काल में भी होगा।

२. द्रव्यद्वारद्वसिद्ध अनन्त है। अभव्य जीवों से अनन्तगुण अधिक है। वनस्पति (निगोद) के जीवों को छोड़कर दूसरे २३ दण्डकों के जीवों से सिद्ध अनन्त गुण है।

३. क्षेत्रद्वारद्वसिद्ध जीव सिद्धशीला के ऊपर एक योजन के अंतिम कोस के छठे भाग में २३३ धनुष, ३२ अंगुल प्रमाण क्षेत्र में सिद्ध जीव रहते है।

४. स्पर्शना द्वारद्वसिद्ध क्षेत्र के आस-पास जितने क्षेत्र को सिद्ध छू रहे है, वह उनकी स्पर्शना है। क्षेत्र से कुछ अधिक स्पर्शना होती है।

५. कालद्वारद्वएक सिद्ध की अपेक्षा मोक्षा की आदि है, किन्तु अन्त नहीं। सर्व सिद्धों की अपेक्षा मोक्ष अनादि-अनन्त हैं।

६. भाग द्वारद्वसब जीवों की अपेक्षा से सिद्ध अनन्तवें भाग है और वे लोक के असंख्यातवें भाग सिद्ध क्षेत्र में रहते हैं।

७. भाव द्वारद्वसिद्धों में क्षायिक भाव केवलज्ञान, केवलदर्शन क्षायिक सम्यक्त्व आदि है, और जीवत्व आदि पारिणामिक भाव है।

८. अन्तर द्वारद्वसिद्ध जीव पुनः लौटकर नहीं आते, अतः अन्तर नहीं है।

९. अल्पबहुत्व द्वारद्वकम से कम नपुंसक सिद्ध, उससे संख्यात गुणा स्त्री सिद्ध और उससे संख्यात गुणा पुरुष सिद्ध। एक समय में नपुंसक १०, स्त्री २० और पुरुष १०८ सिद्ध हो सकते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिद्ध आत्मा में अतीत और वर्तमान की दृष्टि से भेद की जानकारी के कुछ बिन्दु :ह्न

१. क्षेत्रह्नवर्तमान भाव की दृष्टि से सभी मुक्त जीवों के सिद्ध होने का स्थान एक ही सिद्ध क्षेत्र है। अर्थात् आत्मप्रदेश या आकाशप्रदेश है। भूत भाव की दृष्टि से जन्मापेक्षा पन्द्रह कर्मभूमियों से सिद्ध होते है और संहरण की अपेक्षा से समग्र मनुष्य क्षेत्र से सिद्ध हो सकते हैं।

२. कालह्नवर्तमान भाव से सिद्ध होने का कोई लौकिक कालचक्र नहीं है, क्योंकि एक ही समय में सिद्ध होते हैं। भूत भाव से अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, अनवसर्पिणी, अनुत्सर्पिणी में जन्मे जीव सिद्ध होते हैं। संहरण की अपेक्षा भी सभी कालों में सिद्ध होते हैं।

३. गतिह्नवर्तमान भाव से सिद्धगति में ही सिद्ध होते हैं। भूत भाव से मनुष्य गति से सिद्ध होते हैं और यदि पूर्व के भवों को ले तो चारों गतियों से सिद्ध होते हैं।

४. लिंगह्नवर्तमान भाव से अवेदी ही सिद्ध होते हैं, भूत भाव से स्त्री, पुरुष, नपुंसक, इन तीनों वेदों से सिद्ध हो सकते हैं। जब लिंग का अर्थ वेश करते हैं तो वर्तमान दृष्टि से वेश-रहितता से सिद्ध होते हैं। भूत दृष्टि से स्वलिंग (जैन लिंग) परलिंग और गृहस्थलिंग इन तीनों से सिद्ध होते हैं।

५. तीर्थह्नकोई तीर्थंकर रूप में और कोई अतीर्थंकर रूप में सिद्ध होते हैं। अतीर्थंकर में कोई तीर्थ प्रवर्तित हो, तब होते हैं और कोई तीर्थ प्रवर्तित न हो, तब भी होते हैं।

६. चारित्रह्नवर्तमान दृष्टि से सिद्ध जीव क्षायिक चारित्री ही होते हैं। अतीत की दृष्टि से यथाख्यात-चारित्री सिद्ध होते हैं। उसके पूर्व के समय को ले तो पांचों चारित्रों से सिद्ध होते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७. प्रत्येक-बुद्धबोधितह्नप्रत्येक बोधित और बुद्धबोधित दोनों सिद्ध होते हैं। जो दूसरे के उपदेश के बिना बोध प्राप्त करते हैं। वे स्वयंबुद्ध दो प्रकार के होते हैंह्नएक तो अरहंत और दूसरे जो किसी बाह्य निमित्त से वैराग्य और ज्ञान प्राप्त करते है। ये दोनों प्रत्येक बुद्ध है जो दूसरे ज्ञानी से उपदेश ग्रहण करते हैं, वे बुद्धबोधित है। इनमें से कोई तो दूसरे को बोध कराने वाले होते है और कोई आत्मकल्याण साधक होते हैं।

८. ज्ञानह्नवर्तमान भाव से केवलज्ञानी ही सिद्ध होते हैं। भूत भाव से दो, तीन, चार ज्ञान वाले भी सिद्ध होते हैं।

९. अवगाहनाह्नजघन्य दो हाथ और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष जितनी अवगाहना से सिद्ध होते हैं। यह भूत भाव से है। वर्तमान दृष्टि से जिस अवगाहना से सिद्ध हुआ हो, उसकी दो तृतीयांश अवगाहना होती है।

१०. अन्तरह्नकिसी एक जीव के सिद्ध होने के बाद तुरन्त ही जब दूसरा जीव सिद्ध होता है, तो उसे निरन्तर सिद्ध कहते हैं। जघन्य दो समय और उत्कृष्ट आठ समय तक निरन्तर सिद्धि चलती रहती है। जब किसी के सिद्धि के बाद अमुक समय व्यतीत हो जाने पर कोई सिद्ध होता है, तब वह अन्तर सिद्ध कहलाता है। दोनों के बीच की सिद्धि का अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट छह भास होता है।

११. संख्याह्नएक समय में जघन्य एक और उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होते हैं।

१२. अल्पबहुत्वह्नक्षेत्र आदि जिन बातों का विचार किया गया है उनके विषय में संभाव्य भेदों की परस्पर में न्यूनाधिकता का विचार करना ही अल्पबहुत्व हैं। जैसे क्षेत्र सिद्ध में संहरण सिद्ध की अपेक्षा जन्म सिद्ध संख्यात गुणाधिक होते हैं। ऊर्ध्वलोक से सिद्ध सबसे कम, अधोलोक सिद्ध उनसे संख्यात गुणाधिक और तिर्यक्लोक सिद्ध उनसे भी संख्यात गुणाधिक होते हैं। समुद्र सिद्ध सबसे कम द्वीप सिद्ध उनसे संख्यात गुणाधिक होते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौदह पूर्व का ज्ञान

१. उत्पाद पूर्वह्नइस पूर्व में सभी द्रव्यों और सभी पर्यायों के उत्पाद को लेकर प्ररूपणा की गई है। उत्पाद पूर्व में एक करोड़ पद हैं।

२. अग्रायणीय पूर्वह्नइसमें सभी द्रव्य, सभी पर्याय और सभी जीवों के परिणाम का वर्णन है। अग्रायणीय पूर्व में छयानवें लाख पद हैं।

३. वीर्यप्रवाद पूर्वह्नइसमें कर्मसहित और बिना कर्म वाले जीव तथा अजीवों के वीर्य (शक्ति) का वर्णन है। वीर्य प्रवाद पूर्व में सत्तर लाख पद हैं।

४. अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्वह्नसंसार में धर्मास्तिकाय आदि जो वस्तुएं विद्यमान हैं तथा आकाश कुसुम वगैरह जो अविद्यमान हैं, उन सबका वर्णन अस्तिनास्ति प्रवाद में है। इसमें साठ लाख पद हैं।

५. ज्ञानप्रवाद पूर्वह्नइसमें मतिज्ञान आदि ज्ञान के पांच भेदों का विस्तृत वर्णन हैं। इसमें एक कम एक करोड़ पद हैं।

६. सत्यप्रवाद पूर्वह्नइसमें सत्य रूप संयम या सत्य वचन का विस्तृत वर्णन है। इसमें छह अधिक एक करोड़ पद हैं।

७. आत्मप्रवाद पूर्वह्नइसमें अनेक नय तथा मतों की अपेक्षा आत्मा का प्रतिपादन किया गया है। इसमें छब्बीस करोड़ पद हैं।

८. कर्मप्रवाद पूर्वह्नजिसमें आठ कर्मों का निरूपण प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश आदि भेदों द्वारा विस्तृत रूप में किया गया हैं। इसमें एक करोड़ अस्सी लाख पद हैं।

९. प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वह्नइसमें प्रत्याख्यानों का भेदप्रवाद पूर्वक वर्णन है। इसमें चौरासी लाख पद हैं।

१०. विद्यानुप्रवाद पूर्वह्नइस पूर्व में विविध प्रकार की विद्या और सिद्धियों का वर्णन है। इसमें एक करोड़ दस लाख पद हैं।

११. अवन्ध्यपूर्वह्नइसमें ज्ञान, तप, संयम आदि शुभ फल वाले तथा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रमाद आदि अशुभ फल वाले अवन्ध्य अर्थात् निष्फल न जाने वाले कार्यों का वर्णन है। इसमें छब्बीस करोड़ पद हैं।

१२. प्राणायुप्रवाद पूर्वह्नइसमें दस प्राण और आयु आदि का भेद-प्रभेद पूर्वक विस्तृत वर्णन है। इसमें एक करोड़ छप्पन लाख पद हैं।

१३. क्रियाविशाल पूर्वह्नइसमें कायिकी, अधिकरणिकी आदि तथा संयम में उपकारक क्रियाओं का वर्णन हैं। इसमें नौ करोड़ पद हैं।

१४. लोकबिन्दुसार पूर्वह्नलोक में अर्थात् संसार में श्रुतज्ञान में जो शस्त्र बिन्दु की तरह सबसे श्रेष्ठ है, वह लोकबिन्दुसार है। इसमें साढ़े बारह करोड़ पद हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-२

नमस्कार महामंत्र कुछ अभ्यास पद्धतियां

- ॐ नमः सिद्धं
  स्थानह्न ॐह्नभ्रुयुग्म पर
  नह्ननासाग्र पर
  मःह्न ओष्ठ युगल पर
  सिह्नकर्णपाली पर
  द्धंह्नग्रीवा पर
  फलह्नकर्मक्षय। यह रक्षा कवच है।
- णमो अरहंताणं
  स्थानह्न जो साधक दूरश्रवण आदि लब्धियों को प्राप्त करना चाहता है, वह इस सप्ताक्षरी मंत्र को सात मुख छिद्रों में स्थापित करे।
  ० दो कानह्नण मो
  ० दो नथुनेह्नअ र
  ० दो आंखेह्नहं ता
  ० एक मुखह्नणं।
  फलह्न इस मंत्र जाप से चक्षु आदि की सीमा से परे वाले रूप भी प्रत्यक्ष होते हैं।
- दाह शान्ति
  जापह्न 'ॐ नमो ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमो अरहंताणं नमः'।
  फलह्न हृदय कमल में १०८ बार जपने से उपवास का फल। इस मंत्र से पानी को मंत्रित कर अग्नि या दावानल के आगे उस पानी की रेखा खींचने से दाह-शांति।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- जापह्न ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ अ सि आ उ सा नमः।
  यह त्रिभुवन स्वामिनी विद्या है। एक लाख जाप। सर्वसिद्धि।
- विषनाशक
  जापह्न ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा क्लीं नमः।
- वाद विजय
  जापह्न ॐ ह्रां ॐ ह्रीं अर्हं ऐं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

ऐसो पंच णमुक्कारो से उधृत.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमस्कार महामंत्र उपासना

जितने भी मंत्र हैं उन सबमें नमस्कार महामंत्र सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। इसमें आत्म-विशुद्धि तो होती ही है, उसके साथ-साथ ऐहिक उपलब्धियों में भी सहयोग मिलता है, इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से ग्रह शांति, विघ्न शांति, आरोग्य प्राप्ति आदि के भी विविध प्रयोग प्रचलित हैं। आत्म-रक्षा कवच में रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

निर्धारित विधि से पूरक और कुंभक के साथ महामंत्र का ध्यान करने से मानसिक स्थिरता, शारीरिक स्वास्थ्य तथा रासायनिक परिवर्तन से निर्मल भाव धारा का निर्माण होता है।

१. पूरक (श्वास का भीतर भरना) करें। उसके बाद कुंभक (श्वास को भीतर में रोकना) कर अरहंत के गुणों का चिन्तन करते हुए पहले पद णमो अरहंताणं का जप/ध्यान करें। रेचक (श्वास को छोड़ना) कर मूल स्थिति में आएं।

२. पूरक करें। कुंभक कर सिद्ध के गुणों का चिन्तन करते हुए दूसरे पद णमो सिद्धाणं का जप/ध्यान करें। रेचक कर मूल स्थिति में आएं।

३. पूरक करें। कुंभक कर आचार्य के गुणों का चिन्तन करते हुए तीसरे पद णमो आयरियाणं का जप/ध्यान करें। रेचक कर मूल स्थिति में आएं।

४. पूरक करें। कुंभक कर उपाध्याय के गुणों का चिन्तन करते हुए चौथे पद णमो उवज्झायाणं का जप/ध्यान करें। रेचक कर मूल स्थिति में आएं।

५. पूरक करें। कुंभक का साधु के गुणों का चिन्तन करते हुए हुए पांचवें पद णमो लोए सव्व साहूणं का जप/ध्यान करें। रेचक कर मूल स्थिति में आएं।

६. पूरक करें। कुंभक कर यह नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है' ऐसा अनुचिन्तन करें।

● इस महामंत्र की ९ बार, २१ बार, ५१ बार तथा १०८ बार आवृत्ति की जाती है।

● प्राण/श्वास को भीतर भरकर जप करने से मंत्र की शक्ति शत गुणित हो जाती है। इसका प्रभाव स्वयं प्रयोग कर अनुभव करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हं उपासना

'अ' इमरतमय कोष है, 'र' तेजोमय स्पष्ट।

प्राण शक्ति का केन्द्र 'ह', बिन्दु हरे सब कष्ट॥

'अ' अमृत से भरा हुआ अक्षय भण्डार है। 'र' तेजस्व को प्रकट करता है।

'ह' प्राण/जीवनीशक्ति का स्रोत है।

श्वेतचन्द्र रेखा में श्वेत रंग का बिन्दु अनुपम शक्ति प्रदाता है। यह अर्हं सब सिद्धियों को देने वाला बीज मंत्र है।

दूसरी दृष्टि से देखें तो 'अ' वर्णमाला का आदि अक्षर है तथा 'ह' अन्तिम अक्षर है। समस्त ज्ञान 'अ' और 'ह' में समाहित है। 'र' उच्चारण की ऊर्जा/शक्ति का प्रतीक है। शून्य परम/आत्मा का वाचक है।

हृदय/आनन्द केन्द्र पर ज्योतिर्मय अर्हं का ध्यान करने से शांति और शक्ति का जागरण होता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऊँकार उपासना

'ॐ' पंच परमेष्ठी का वाचक है।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनिह्ये पांच परम इष्ट हैं।

अ=अरहंत, अ=अशरीरी (सिद्ध), आ=आचार्य, उ=उपाध्याय, म=मुनि।

इस प्रकार पांचों के आदि अक्षरों को मिलाने से 'ॐकार' की रचना हुई है।

ॐकार के जप से मानसिक निर्मलता तथा नाड़ी संस्थान का शोधन होता है।

● तनाव मुक्ति, मन की स्थिरता और कलह निवारण के लिए 'ज्ञान केन्द्र' (मस्तक) पर श्वेत रंग की धारणा के साथ ॐकार का जप करें।

● स्मृति विकास, ज्ञान तन्तुओं को सक्रिय करने के लिए 'ज्ञान केन्द्र' पर पीले रंग की धारणा के साथ ॐकार का जप करें।

● शक्ति वृद्धि और अनिष्ट निवारण के लिए 'दर्शन केन्द्र' (भृकुटि मध्य) पर अरुण रंग की धारणा के साथ ॐकार का जप करें।

● पारिवारिक-सामंजस्य और मैत्री के लिए 'आनन्द केन्द्र' (सीने के मध्य) पर हरे रंग की धारणा के साथ ॐकार का जप करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नवपद उपासना

जैन परम्परा में 'सिद्धचक्र यंत्र' नाम से प्रसिद्ध नवपद आराधना के संबंध में अनेक चमत्कारी अनुश्रुतियां प्रचलित हैं। इसमें पांच पद नमस्कार महामंत्र के तथा णमो णाणस्स, णमो दंसणस्स, णमो चरित्तस्स, णमो तवस्स चार पद, यों नवपद बनते हैं। नव का अंक अक्षय माना जाता है। पंच परमेष्ठी पदों के साथ ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का सुयोग भावना को पुष्ट बनाता है।

प्रत्येक पद का उसी रंग की धारणा के साथ उसी रंग की माला से १०८ बार जप करें। प्रत्येक पद की एक-एक माला जपते हुए पूरे नवपद की आवृत्ति करें।

चैत्र और आश्विन मास में नवपद आराधना अनुष्ठान विधि

सर्वप्रथम पूज्यवरों से बृहत् मंगल पाठ सुनें। ध्यान मुद्रा में नौ लोगस्स चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करें। पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख पंक्ति बद्ध शान्त रहकर जप करेंह्न

- नौ दिन आयंबिल करें। एकासन करें तो नौ द्रव्य से अधिक न खाएं।
- सचित्त वस्तु, मिठाई एवं तली हुई चीजों का सर्वथा वर्जन करें।
- असत्य का वर्जन करें। शील की अनुपालना करें।
- प्रतिदिन सामायिक एवं १५ मिनट नमस्कार मंत्र का रंगों के साथ ध्यान करें।

१. णमो अरहंताणं	सफेद धान (चावल)	१२ माला	सफेद
२. णमो सिद्धाणं	लाल धान (राजमा)	८ माला	लाल
३. णमो आयरियाणं	पीला धान (चना)	३६ माला	पीली
४. णमो उवज्झायाणं	हरा धान (मूंग)	२४ माला	हरी
५. णमो लोए सव्वसाहूणं	काला-नीला (उड़द, तिल)	२७ माला	नीली
६. णमो णाणस्स	सफेद धान (चावल आदि)	६७ माला	सफेद
७. णमो दंसणस्स	सफेद धान (चावल आदि)	६७ माला	सफेद
८. णमो चरित्तस्स	सफेद धान (चावल आदि)	७० माला	सफेद
९. णमो तवस्स	सफेद धान (चावल आदि)	५० माला	सफेद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चैतन्य केन्द्रों पर
नमस्कार-महामंत्र का ध्यान

शरीर के भिन्न-भिन्न चैतन्य केन्द्रों पर नमस्कार-महामंत्र का ध्यान करने से वह केन्द्र जागृत होता है। प्राण जागृत होता है। जागृत प्राण मंत्र के साथ एकात्म बनकर एक नई ऊर्जा पैदा करता है।

'णमो अरहंताणं' पद को चमकते हुए श्वेत रंग के अक्षरों में ज्ञान केन्द्र पर देखें और एकाग्र तथा जागरूक होकर जप करें। इससे समता भाव की वृद्धि होती है।

'णमो सिद्धाणं' पद को चमकते हुए अरुण रंग के अक्षरों में दर्शन केन्द्र पर देखें और एकाग्र तथा जागरूक होकर जप करें। इससे अतीन्द्रिय चेतना विकसित होती है।

'णमो आयरियाणं' पद को चमकते हुए पीले रंग के अक्षरों में 'विशुद्धि केन्द्र' (कण्ठ) पर देखें और एकाग्र तथा जागरूक होकर जप करें। इससे वृत्तियां शांत होती हैं और कला में रुचि बढ़ती है।

'णमो उवज्झायाणं' पद को चमकते हुए हरे रंग के अक्षरों में आनन्द केन्द्र पर देखें और एकाग्र तथा जागरूक होकर जप करें। इससे भावधारा निर्मल होती है और सामंजस्य का भाव बढ़ता है।

'णमो लोए सव्वसाहूणं' पद को चमकते हुए नीले रंग में तेजस् एवं शक्ति केन्द्र पर देखें और एकाग्र तथा जागरूक होकर जप करें। इससे शक्ति जागरण और रोग निवारण होता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ग्रह दोष-शांति उपासना (मंत्र)

आचार्य भद्रबाहु तथा अन्य आचार्यों द्वारा रचित ग्रह-शांति स्तोत्रों के अनुसार नमस्कार महामंत्र के नियमित जप से तथा तीर्थंकरों के मंत्र पाठ से अमुक ग्रहों का दोष शान्त होता है। रंगों के अनुसार पांच पदों के मंत्र नवग्रह के साथ इस प्रकार योजित किये गये हैंह्लचन्द्र और शुक्र ग्रह का श्वेत वर्ण है, सूर्य और मंगल का लाल, बुध का हरा, गुरु का पीला, शनि, केतु और राहु का नीला वर्ण है। किस ग्रह के लिए किस मंत्र पद का जप करना चाहिए। चित्र देखें।

विशेष मंत्र-साधना तथा तीर्थंकरों का जप मंत्र इस प्रकार हैह्ल

ग्रह दोष शुद्धि मंत्र

१. सूर्यह्लतैजस केन्द्र (नाभि) पर एकाग्रता के साथ अरुण (बाल सूर्य) रंग में 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्लॐ ह्रीं पद्मप्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। लाल रंग की माला से ७ हजार जप।

२. चन्द्रह्लविशुद्धि केन्द्र (कण्ठ) पर एकाग्रता के साथ श्वेत रंग में 'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्लॐ ह्रीं चन्द्रप्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। श्वेत रंग की माला से ६ हजार जप।

३. मंगलह्लआनन्द केन्द्र (हृदय) पर एकाग्रता के साथ अरुण रंग में 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्लॐ ह्रीं वासुपूज्य प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। लाल रंग की माला से ८ हजार जप।

४. बुधह्लशक्ति केन्द्र (मूलाधार) पर एकाग्रता के साथ हरे रंग में 'ॐ ह्रीं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो उवज्झायाणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं शान्तिनाथ प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। पीले रंग की माला से १० हजार जप।

५. गुरुह्नदर्शन केन्द्र (भृकुटि) पर एकाग्रता के साथ पीले रंग में 'ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं ऋषभ प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। पीले रंग की माला से १२ हजार जप।

६. शुक्रह्नस्वास्थ्य केन्द्र पर एकाग्रता के साथ श्वेत रंग में 'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं सुविधिनाथ प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। श्वेत रंग की माला से ११ हजार जप।

७. शनिह्नज्ञान केन्द्र (मस्तक) पर एकाग्रता के साथ नीले रंग में 'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं मुनिसुव्रत प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। नीले रंग की माला से ३२ हजार जप।

८. केतुह्नशक्ति केन्द्र पर एकाग्रता के साथ नीले रंग में 'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं पार्श्वनाथ प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। नीले रंग की माला से २१ हजार जप।

९. राहुह्नशक्ति केन्द्र पर एकाग्रता के साथ नीले रंग में 'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं' की प्रतिदिन १० माला (२१ दिन तक) उसके बाद प्रतिदिन एक माला।

विशेष जपह्नॐ ह्रीं नेमिनाथ प्रभो! नमस्तुभ्यं मम शान्तिः शान्तिः। नीले रंग की माला से २१ हजार जप।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-३

सहायक ग्रंथों की सूची

१. स्थानांग सूत्र
२. औपपातिक सूत्र
३. उत्तराध्ययन सूत्र
४. एसो पंच णमुक्कारो
५. नवकार मंथन
६. अरिहंत
७. णमो सिद्धाणं
८. जिण धम्मो
९. अवबोध
१०. चारित्र प्रकाश
११. जैन ज्ञान प्रश्नोत्तरी
१२. प्रवचन सारोद्धार (भाग-१)
१३. प्रवचन सारोद्धार (भाग-२)
१४. नंदी सूत्र
१५. श्री भिक्षु आगम विश्व कोष
१६. वीतराग वंदना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org